निवेदन

'प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाला'नो आ पांचमो ग्रन्थ—भालणकृत 'नलाख्यान' प्रकट करतां आनंद थाय छे. गुजराती आख्यानकाव्यना पिता तरीके जेने ओळखवामां आवे छे ते कवि भालणनी ए श्रेष्ठ आख्यानकृति छे. गुजरातना प्रसिद्ध पुरातत्त्वविद् अने पाटण हाईस्कूलमां मारा शिक्षक स्व. रामलाल चुनीलाल मोदीए आ आख्यान सने १९२४मां संपादित करीने छपाव्युं हतुं अने त्यार पछी गुजरातना विद्यारसिक वर्गमां एनो वहोळो उपयोग थयो हतो. मुंबई युनिवर्सिटीनी एम. ए. सुधीनी परीक्षाओमां पण ए संपादन अनेक वार पाठ्यपुस्तक तरीके नियत थतुं हतुं. छेल्लां दशेक वर्षथी ए पुस्तक मळतुं नथी.

स्व. रामलाल मोदीनी वाचनानी भाषा एमने मळेली अर्वाचीन हस्तप्रतोने कारणे अर्वाचीनप्रायः छे. मारा साहित्यरसिक मित्र श्री. नटवरलाल दुर्गाशंकर दवे पासेथी आ काव्यनी, भालणकृत 'कादंबरी' जेवुं जूनुं भाषास्वरूप साचवती हस्तप्रत मने मळी हती अने तेनो परिचय 'बुद्धिप्रकाश'ना जान्युआरी १९४२ना अंकमां में आप्यो हतो. ए प्रतने आधारे 'नलाख्यान'नुं पुन.संपादन करवानो स्व. मोदीनो मनोभाव हतो, पण ए कार्य करी शके त्यार पहेलां एमनो देहविलय थयो. आपणा आरूढ विद्वान अने भाषाशास्त्री श्री. केशवराम का. शास्त्रीने हस्ते हवे एनुं संपादन थयुं छे. उपर्युक्त जूनी विश्वसनीय हस्तप्रतने आधारे पाठ तैयार करवा उपरांत श्री. शास्त्रीजीए आ विशिष्ट आख्यानकाव्यनी विद्वत्तापूर्ण प्रस्तावना लखी छे तथा भाषाशास्त्रीय महत्त्व धरावतो विस्तृत शब्दकोश तैयार कर्यो छे.

विद्वानोने तेम ज विद्यार्थीओने आ संपादन उपयोगी थई पडशे एवी आशा छे.

'अध्यापक निवास,'
वडोदरा,
वैशाखी पूर्णिमा (बुद्ध जयंती),
सं. २०१२

भोगीलाल जयचंदभाई सांडेसरा
सामान्य संपादक

अनुक्रम

प्रस्तावना

१. हाथप्रत

आजथी ३२ वर्ष उपर गुजरातना एक जाणीता संशोधक स्व. रामलाल चुनीलाल मोदिए भालणकृत बे नळाख्यान प्रसिद्ध कर्यां हतां. आमांनुं पहेलुं नळाख्यान प्रथम वार ज प्रसिद्ध थतुं हतुं, ज्यारे बीजुं नळाख्यान ए पूर्वे वडोदराथी प्रसिद्ध थयेल प्राचीन काव्यमाळाना ११मा अंक (ई. स. १८८९) मां अने मुंबईथी प्रसिद्ध थयेला बृहत्काव्यदोहनना ५ मा ग्रंथ (ई. स. १८९५) मां छपायुं हतुं. आ पाछला बीजा नळाख्याननी कोई हाथप्रत स्व. मोदीने मळेली न होई एमणे आ बे छपायेली वाचनानी मददथी एनो पाठ साध्यो. पहेला नळाख्याननी एमने एक हाथप्रत गुटकाना रूपमां मळेली हती. एमां नळाख्यान आखुं होवा छतां केटलेक स्थळे अक्षरो उपर घमारो लागेलो तेमज सामान्य वाणियाशाही हाथे प्रत उतारवामां आवेली होई केटलेय स्थळे स्व. मोदीए पाठ-सुधारणा करी हती. एमणे एवा बधा ज सुधारा मोटां बीबांमां छपावेला ने असलना भ्रष्ट लागता पाठ पादटीपमां नीचे आपेला. ए समयना संपादकीय प्रघात प्रमाणे एमणे प्रचलित जोडणीमां वाचना आपी हती. एमनी ए प्रत गुजराती प्रेसनी हती. भाषाभूमिकानी दृष्टिए ए वाचना अर्वाचीन गुजरातीनी हती. वर्षो सुधी एनी कोई बीजी हाथप्रत जाणवामां आवी नहोती. एवी स्थितिमां एनुं फरीथी संपादन करवानुं कार्य खूब ज विकट थई पडतुं हतुं. सद्‌भाग्ये पाटणमांथी ज प्रो. डॉ. भोगीलाल सांडेसराने सं. १७३३ नी एक हाथप्रत मळी आवी ने एनो शरूनो भाग एमणे "बुद्धिप्रकाश" जान्युआरी १९४२मां छपाव्यो पण खरो. आनंदनी वात तो ए हती के हाथप्रतमां अशुद्धि प्रमाणमां वधु होवा छतां एनी भाषाभूमिका गुज. विद्यासभानी कादंबरीनी

हाथप्रतमांनी भाषाभूमिकाना जेवी ज—एटले के हुं जेने मध्यकालीन गुजरातीनी मिश्र चोथी भूमिका कहुं छुं ते—हती. स्व. के. ह. ध्रुवे 'कादंबरी'नुं संपादन करती वेळा भाषाभूमिका सुधारी—हुं जेने मध्यकालीन गुजरातीनी शुद्ध त्रीजी भूमिका कहुं छुं तेवी करी नाखेली—होई आपणने कादंबरीनी एकमात्र अने महत्त्वनी हाथप्रतनी भाषा-भूमिकानो ख्याल जोइतो होय तो वाचना नीचे पादटीपोमां असल पाठ मूक्या छे ते जोवाथी ज मळी शके. कोई पण वाचक आवी तकलीफमां ऊतरतो होतो नथी. भालणना ज समयनी कोई हाथप्रतो न मळे त्यांसुधी तो कादंबरीनी अने नळाख्याननी आ प्रतोमां प्राप्त थती भाषाभूमिकाने ज अनिवार्य रीते वळगी रहेवानी संपादकीय नीतिनो में 'कादंबरी'ना संपादनमां अमल कर्यो छे अने आ पहेला 'नळाख्यान'ना संपादनमां पण ए ज नीतिनो समादर कर्यो छे. अशुद्धिओ विशेष छे ज अने एवी अशुद्धिओ या लेखनभेद के जे कांई नडे एवुं छे ते पादटीपमां अक्षरशः नोंधी शुद्ध स्वरूप वाचनामां उपर आपवामां आवेलुं छे. आम करवा जतां खूब ज सावचेती राखवामां आवी छे के क्यांय पण भाषा-भूमिकाना कोई पण रूपनी भूमिका लेश मात्र पण फरे नहि.

आ प्रत आडा ५"×ऊभा ५॥" ना गुटकाना रूपमां छे; लेखन-भाग ४" × ३"; दरेक पृष्ठ उपर १६ लीटी अने सरेरास दरेक लीटीमां ३० अक्षर छे. शरूआतनां २ पानां नष्ट थयां छे तेम वच्चे पण केटलांक पानां करपायेलां छे. पाठ साधती वखते स्व. मोदीनी मुद्रित वाचनामांथी खूटतुं लेवामां आव्युं छे. गुटकाना मध्यना चरोवर ४७ पाने नळाख्यान पूरुं थाय छे, ज्या नीचे मुजबनी पुष्पिका मळे छे :

इति श्रीनळाख्यान समाप्तः ॥ सं० १७२६ वर्षे प्रथम श्रावण वदि १६ वार भृगुदिने लिखितं मोढज्ञातीयमुद्गवः ॥ : ॥ : ॥ शुभं भवतुः ॥ : ॥ : ॥ श्री

प्रत सुंदर अने सुवाच्य ब्राह्मणी मरोडना देवनागरी अक्षरोमां लखायेली छे. (अक्षरोनो घाट चोरस वननीक टाईपना जेवो लगभग लागे). प्रतना उत्तरार्धमां २४ पानामां जरा मोटा अक्षरोमां लघुनाकरनो "ईश्वरविवाह" ए ज संवत् १७३३ वर्षे एटला अंतभागथी लखायेलो छे.

लेखनभेदनी दृष्टिए जोतां त्रणेक वस्तु ध्यान खेंचे छे :—

(१) ओकार सर्वत्र उ आ रीते लखायो छे:

(२) थोडां ज स्थाने ख, बाकी सर्वत्र 'ख' ने चालु ष थी बताववामां आव्यो छे.

(३) केटलेक स्थळे ज मळे छे; आम छतां 'ज' ने स्थळे पण—खास करीने सर्वनामोमां अने **करजे-करजो** एवां रूपोमां **य** लखवामां आव्यो छे.

संपादनमां उ नो सर्वत्र ओ छापवामां आव्यो छे; थोडा ज अपवादे-**रोष** के **शेष** के **विशेष** वगेरे सिवायनां बधां स्थानोमां 'ष'नो स्वाभाविक तत्कालीन उच्चार 'ख' करी लेवामां आव्यो छे. **करये-करयो** जेवां बधां आज्ञार्थ रूपोमां **करज्ये-करज्यो** एवी तत्कालीन उच्चरित जोडणी करवामां आवी छे; ज्यारे **जे-जेह्**नां सार्वनामिक अने अव्ययात्मक रूपोमां—एटले के **याहारि-याह्रि** जेवामांये ज्यां क्यांय **य** मळे छे त्यां **य** साचवी राखवामां आव्यो छे; ज्यां एवां रूपोमां **ज** मळे छे त्यां 'ज' ज आव्यो छे. ह नुं स्वरित उच्चारण सामान्य रीते स्वर सहित जुदुं मळे छे त्यां सर्वत्र जुदुं ज राखवामां आव्युं छे: **एहवूं**, **तेहनि**, **याहारि** वगेरे. आम छता प्रतमा ज्या क्यांय पण जोडायेला स्वरूपमां छे, जेम के **अह्मो**, **तह्मो**, **मूह्नि**, **तेह्नि**, **याह्रि** वगेरे, त्या जे प्रमाणे

मळ्युं छे ते प्रमाणे ज साचवी राखवामां आव्युं छे. 'ख्य'.ने स्थाने सर्वत्र 'क्ष' लखायेलो मळे छे; पण उच्चारण 'ख्य' होई सर्वत्र 'ख्य' करी लेखामां आव्यो छे. क्षण वगेरे शब्दोमां स्वाभाविक क्ष छे त्यां 'क्ष' ज राख्यो छे. दुःख शब्दनी जोडणीमां क्यांक दुःख, क्यांक दुःप, तो क्यांक दुप अने दुख पण; एनुं सर्वत्र दुःख करी लेखामां आव्युं छे. एटली सावधानी राखवामां ज आवी छे के उपर वाचनामां आवो आवश्यक फेरफार करवामां आव्यो होय तेवां बधां स्थान पादटीपोमां नीचे अक्षरशः आपवामां आव्यां छे. थाई, जाई, कांई, अने करीजि आ रीते दीर्घ अने ह्रस्व इकार; के जूजुमां ह्रस्व उकार जो क्यांय पण मळ्या छे तो ए पण पादटीपमां ए रीते नोंधवामां आव्या छे. भूतकृदंतनां रूपोमां पामीयु, पामीउ जेवी दीर्घ ईकारवाळी जोडणी अनेक स्थळे मळे छे, पण ए ह्रस्व होई ह्रस्व इ थी बतावी छे.

सामान्य रीते आपणा देवनागरी तेमज गुजराती मरोडना लेखनमां अनुनासिक वर्गीय व्यंजन ण न म नी पूर्वेना स्वर उपर बिंदु करवानो चाल खूब ज व्यापक हतो. व्याकरण-महाभाष्यकार पतंजलिए आजथी बे हजार वर्ष उपर जे चर्चा करी छे के अनुनासिक व्यंजनोना उच्चारणमां अनुनासिकना प्रासादवासी न्याये पूर्वेना स्वरनी ज होय छे, ए स्वाभाविकताने लई आपणी हाथप्रतोमां पण ए अनुनासिक व्यंजनोनी पूर्वेना वर्ण उपर बिंदु लखवामां आवतुं. आपणी मुद्रित वाचनाओमां आ संस्कृत पद्धतिना लखाण प्रमाणे हवे करातुं नथी; तेथी कादंबरी अने नळाख्यानना संपादनमां में बिंदुनो उपरनी वाचनामां अस्वीकार कर्यो छे; बेशक, एवां बधां स्थान शब्दशः त्यां त्यां नीचे पादटीपोमां नोंधवामा आव्या छे.

आजे मध्यकालीन गुजराती भाषानुं स्वरूप गुजराती हाथप्रतोमां हवे विपुल प्रमाणमां मळतुं होई अने एनी विभिन्न भूमिकाओ पण

तारववानुं एनाथी सरळ बन्युं होई एनी जोडणी वगेरे आपणे शुद्ध प्रकारनी प्रतोनी मददथी सिद्ध स्वरूपमां मेळवी शकिये छिये. मारां संपादनोमां में स्वीकारेलो मार्ग ज बरोबर छे एम हुं कही शकुं नहि, पण एटलुं नोंधी शकुं के सेंकडो प्रतो जोया पछी अमुक चोकस निर्णय उपर आववानुं प्रमाणमां वधु सरळ बन्युं छे; एने यथाशक्य मूर्त करवानो प्रयत्न कर्यो छे.

आम 'कादंबरी' अने 'नळाख्यान'ना संपादनथी मध्यकालीन गुजरातीनी मिश्र चोथी भूमिकानुं स्वरूप एना स्वाभाविक स्वरूपमां मूर्त थवानो योग मळ्यो छे, जे आ विषयना अभ्यासीओने उपकारक थशे.

२. मिश्र चोथी भूमिकानुं स्वरूप

'नळाख्यान' अने 'कादंबरी'नी मारां संपादनोनी वाचनामां मूळ हाथप्रतोनी भाषाभूमिकाने वळगी रहेवाना प्रयत्नने कारणे मध्यकालीन गुजरातीनी मिश्र चोथी भूमिकानुं स्वरूप मेळवी शकवाने आपणे समर्थ थइये छिये; अहीं रूपरचनानी दृष्टिए तेथी थोडोक परिचय आपवानुं सरळ बन्युं छे. ए हवे जोइये.

मूळ उच्चारणो

आ भूमिकामां नीचेनां स्वरो अने व्यंजनोनां उच्चारण प्रचलित होवानुं जणाय छे :

स्वरो — अ आ इ ई उ ऊ (ऋ) ए (ऐ) ओ (औ)

अनुस्वार, अनुनासिक, विसर्ग

व्यंजनो —	क	ख	ग	घ	
	च	छ	ज	झ	
	ट	ठ	ड	ढ	ण
	त	थ	द	ध	न

प फ ब भ म
य र ल व
श (ष) स ह

नळास्याननी हाथप्रतमां नैषध-भैमी जेवा तत्सम शब्दोमां ऐ नोंधायेलो मळे छे; औ कौरव जेवा तत्सम शब्दोमां मळे छे.

प्राकृतकाळथी बे स्वर एकबीजानी बाजुमां आवी शकता हता अने एमांथी ज अर्वाचीन भूमिका सुधी आवतां संधिस्वरोनो विकास थयो. आ हाथप्रतनी भूमिकामां अइ अउ जेवी संनिधि दूर थई छे अने एने स्थाने अनुक्रमे इ उ अने आगळ वधी ए अने ओ पण लेखनमां प्रचारमां आवी गया छे. कर्मणि रूपोमां, आम छतां, इइ, ईइ अने भू. कृ.मां इउ (लेखनमां साथोसाथ ईउ–ईऊं पण) जोवा मळे छे. परंतु मोटा— भागे आवां प्रायः वधा स्थळोमां वच्चे लघुप्रयत्न य् उमेरी लेवामां आव्यो छे: पामिउ–पामियु (लेखनमां ई तरफना आदरे पामीउ– पामीयु पण). वर्त. कर्मणिरूपोमां करीइ, जईइ, जोईइ साथोसाथ 'य्' उमेरेलां रूप करीयि वगेरे पण जोवा मळे छे. विभक्तिरूपोमां पण राइ साथेसाथ राय अने 'य्' ना उमरणे रायि जेवां रूप पण त्री. वि.मां मळे छे. एटले आम बे स्वरो वच्चे य् नुं उमेरण—यश्रुति—लघुप्रयत्न य् नुं उमेरण आवश्यक मनातुं जणाय छे. अर्वाचीन उच्चारणमां आवा बधां स्थळोए यश्रुति आवी चूकी छे. छतां त्री. पु. ए. व. कर्तरिनां कचित् करिइ (= करि, करे), ल्याविइ (= ल्यावि, ल्यावे) जेम पण लखायेलां रूप जोवा मळे छे.

ऋ मात्र तत्सम पूरतो मर्यादित छे: ऋषि; पण रखि; साथे हृदि अने रिदि पण. पूर्ण अनुस्वारनुं उच्चारण सं. तत्सम शब्दोमां ज मर्यादित छे, ज्यारे तद्भव शब्दो अने बधा ज प्रत्ययोमां ज्यां ए उच्चारण छे ते अनुनासिक (पोचुं) उच्चारण ज छे; सरखावो:

"ભેમી જે પ્રહિવા ગઈ તે હંસ વાણી વિસ્તરિ.
ઓઢવાનૂં અંબર નાંખી ઝાલવાની વિરિ કરિ." [૭૦, ૧૦]

મૂત્રમાંના અનુસ્વાર ઉચ્ચારણનો જ આ વિકાર છે. આમ છતાં અહીં કહીં તહીં વગેરેમાંનું ઉચ્ચારણ પ્રાકૃતકાલીન ઉદ્ભવ છે—જેમાં અનુસ્વારની શક્યતા નથી.

વિસર્ગ તો દુઃખ કે અન્તઃકરણ જેવામાં જ છે. ગુજરાતી શબ્દોમાં એની કોઈ શક્યતા નથી રહી.

વ્યંજનોના વિષયમાં તો મુખ્યત્વે બધા જ સં. વ્યંજનોનાં ઉચ્ચારણ આ ભૂમિકામાં જળવાયેલાં છે. બેશક, ઙ ઞ આ બે અનુનાસિક વ્યંજનો તત્સમ શબ્દોમાં જ જોવા મળે છે. ણ ન મ તો વ્યાપક છે. લેખનમાં મળતો ષ બહુ જ ઓછા અપવાદે ષ છે, બાકી તો એ ખ જ છે. મોખ (લેખનમાં મોષ) ના પ્રાસમાં દોષ લખાયેલ મળે ત્યારે એ દોષ નહિ, પણ દોખ છે—એ તરત સમજાશે. તેથી જ રષિ, વિષિ, દુઃષ જેવાં લેખનસ્વરૂપ રખિ, વિખિ, દુઃખ જ છે. માનુષ જેવામાં 'ષ' કે 'ખ' એ નિશ્ચિત કરવું મુશ્કેલ હોઈ મુદ્રણમાં પણ 'ષ'જ સ્વીકાર્યો છે.

ખૂબ મૂંઝવનારો તો લેખનમાંનો ય છે. યમ-યિમ, યેહવુ, યેટલિ, યમૂં જેવા સંખ્યાબંધ શબ્દોમાં ઉચ્ચારણ જ જ છે. કરયે-કરયો જેવા શબ્દોનું લેખન આપણને કરજે-કરજો જ સ્પષ્ટ કરે છે. ઉચ્ચારણ શુદ્ધ સં. જ જેવું હોઈ મુદ્રણમાં કરજ્યે--કરજ્યો ના સ્વરૂપમાં સ્વીકાર્યું છે; પરંતુ યમ-યિમ વગેરેમાં મુદ્રણમાં પણ 'ય' સાચવ્યો છે. આવા શબ્દોની સંખ્યા વિપુલ હોઈ ફેરફાર ઇષ્ટ માન્યો નથી. છતાં લેખનમાં જો જ મળ્યો જ હોય તો એ જાળવી રાખ્યો છે. લેખનમાં પણ એ મૂલથી નહિ પણ સ્વાભાવિક હોઈ લખાયો છે.

प फ ब भ म
य र ल व
श (ष) स ह

नळाख्याननी हाथप्रतमां नैपध-भैमी जेवा तत्सम शब्दोमां ऐ नोंधायेलो मळे छे; औ कौरव जेवा तत्सम शब्दोमां मळे छे.

प्राकृतकाळथी बे स्वर एकबीजानी बाजुमां आवी शकता हता अने एमांथी ज अर्वाचीन भूमिका सुधी आवतां संधिस्वरोनो विकास थयो. आ हाथप्रतनी भूमिकामां अइ अउ जेवी संनिधि दूर थई छे अने एने स्थाने अनुक्रमे इ उ अने आगळ वधी ए अने ओ पण लेखनमां प्रचारमां आवी गया छे. कर्मणि रूपोमां, आम छतां, इइ, ईइ अने मू. कृ.मां इउ (लेखनमां साथोसाथ ईउ–ईऊं पण) जोवा मळे छे. परंतु मोटा—भागे आवां प्रायः बधां स्थळोमां वच्चे लघुप्रयत्न य् उमेरी लेवामां आव्यो छे: पामिउ–पामियु (लेखनमां ई तरफना आदरे पामीउ–पामीयु पण). वर्त. कर्मणिरूपोमां करीइ, जईइ, जोईइ साथोसाथ 'य्' उमेरेलां रूप करीयि वगेरे पण जोवा मळे छे. विभक्तिरूपोमां पण राइ साथेसाथ राय अने 'य्' ना उमरणे रायि जेवां रूप पण श्री. वि.मां मळे छे. एटले आम बे स्वरो वच्चे य् नुं उमेरण—यश्रुति—लघुप्रयत्न य् नुं उमेरण आवश्यक मनातुं जणाय छे. अर्वाचीन उच्चारणमां आवां बधां स्थळोए यश्रुति आवी चूकी छे. छतां श्री. पु. ए. व. कर्तरिनां कचित् करिइ (= करि, करे), ल्याविइ (= ल्यावि, ल्यावे) जेम पण लखायेला रूप जोवा मळे छे.

ऋ मात्र तत्सम पूरतो मर्यादित छे: ऋषि; पण रखि; साथे हृदि अने रिदि पण. पूर्ण अनुस्वारनुं उच्चारण सं. तत्सम शब्दोमां ज मर्यादित छे, ज्यारे तद्भव शब्दो अने बधा ज प्रत्ययोमां ज्यां ए उच्चारण छे ते अनुनासिक (पोचुं) उच्चारण ज छे; सरखावो:

"भेमी जे मद्दिरा गई ते हंस वाणी विस्तरि.
ओढवानूं अंबर नांखी झालवानी पिरि करि." [७०, १०]

मूळमांना अनुस्वार उच्चारणनो ज आ विचार छे. आम छतां अहीं कहीं तहीं वगेरेमांनुं उच्चारण प्राकृतकालीन उद्भव छे–जेमां अनुस्वारनी शक्यता नथी.

विसर्ग तो दुःख के अन्तःकरण जेवामां ज छे. गुजराती शब्दोमां एनी कोई शक्यता नथी रही.

व्यंजनोना विषयमां तो मुख्यत्वे बधा ज सं. व्यंजनोनां उच्चारण आ भूमिकामां जळवायेलां छे. बेशक, ङ ञ आ बे अनुनासिक व्यंजनो तत्सम शब्दोमां ज जोवा मळे छे. ण न म तो व्यापक छे. लेखनमां मळतो ष बहु ज ओछा अपवादे ष छे, बाकी तो ए ख ज छे. मोख (लेखनमां मोष) ना प्रासमां दोष लगायेल मळे त्यारे ए दोष नहि, पण दोख छे–ए तरत समझाशे. तेथी ज रषि, विषि, दुःष जेवां लेखनस्वरूप रखि, विखि, दुःख ज छे. मानुष जेवामां 'ष' के 'ख' ए निश्चित करवुं मुश्केल होई मुद्रणमा पण 'ष'ज स्वीकार्यो छे.

खूब मूंझवनारो तो लेखनमांनो य छे. यम-यिम, येहवु, येटलि, यमूं जेवा संख्याबंध शब्दोमां उच्चारण ज ज छे. करये-करयो जेवा शब्दोनुं लेखन आपणने करजे-करजो ज स्पष्ट करे छे. उच्चारण शुद्ध सं. ज जेवुं होई मुद्रणमां करज्ये- करज्यो ना स्वरूपमा स्वीकार्युं छे; परंतु यम-यिम वगेरेमां मुद्रणमां पण 'य' साचव्यो छे. आवा शब्दोनी संख्या विपुल होई फेरफार इष्ट मान्यो नथी. छतां लेखनमां जो ज मळ्यो ज होय तो ए जाळवी राख्यो छे. लेखनमां पण ए मूळथी नहि पण स्वाभाविक होई लखायो छे.

तालव्य शकार म. गु. नी भूमिकाओमां तालव्य स्वरोनी पूर्वे स्थान पामतो जतो हतो, तेथी दासी ने बदले दाशी, एवां माशी, अने हसि-हशि वगेरे जोवा मळे छे. एवा ज तद्भव शब्दोमां अतिशि-अतिसि वेउ जोवा मळे छे. एवा ज विकल्प सूं-शूं वगेरे पण छे, तो सुणु-शुणु पण.

अनादि स्थितिमां ड-ढ नुं मूर्धन्यतर उच्चारण आपणे त्यां जे उतरी आव्युं छे ते कोई विशिष्ट रीते नोंधातुं नहोतुं; एवी ज रीते मध्यवर्ती स्थितिमां बेवडो ल्ल होय ए सिवायनी स्थितिना ल ने स्थाने व्यापक थयेला ळ—ए जिह्वामूलीय उच्चारणनो पण कोई ख्याल लेखनमां जोवामां आवतो नथी.

स्वरारोह—स्वरनां गुणवृद्धिनां रूप स्थापित रीते आपणने आ भूमिकामां जोवा मळे छे. करि-करे, घोडु-घोडो, पडि-पाडि, तो ऊलटी प्रक्रियाए जाइ-जवाइ जेवां रूप पण मळे छे. आमांनो पडि-पाडि ए फेरफार तो पतति-पातयति जेटलो जूनो छे. एवां ज मूकि-मोकलि, जुति-जोडि ए रूपो पण ए प्रकारनां जूनां छे. छूटि-छोडि ए प्राकृतकालीन छे. म.गु.नी १ली भूमिकानां करइ-घोडउ रूपोमांथी करि-घोडु आ क्रम संधिस्वरात्मक स्थिति पछीना ह्रस्व ए-ओनां उच्चारणनो द्योतक छे, जेना परिणामे उत्तर गुजरातमां आजे पण भविष्यकाळनां रूपोमां करशि-आवशि-जाशि-खाशि मळे छे.

आ अइ=इ, अउ=उ, अउं=ऊं एने स्वरारोह कहेवो के परसवर्णता कहेवी ए प्रश्न जरा मूंझवनारो छे. आमांना अउं नो ऊं थवानी प्रक्रियाने परसवर्ण दीर्घ थवानी प्रक्रिया कही शकाय; परंतु अइ=इ अने अउ=उ थवानी प्रक्रियाने परसवर्णता ए माटे न कही शकाय के ए शुद्ध इ-उ उच्चारण होवाने बदले ह्रस्व ए-ओ उच्चारणोना प्रतिनिधि छे. आ ज वस्तु आपणने अर्वा. गुज.मां ह्रस्व विवृत ॲ-ऑ आपी जाय छे ए ख्यालमां राखवा जेवुं छे.

स्वरभार—मध्य. गुज. भूमिकाओमां लोकोनां उच्चारण स्वरभारनी दृष्टिए केवां हशे ए आपणे जाणता नथी. सांगीतिक (pitch) स्वरभारनो तो ख्याल सुध्धां आवी शके नहि; परंतु बलात्मक के आघातात्मक (stress) स्वरभारनां चिह्न आपणने जोवा मळे. अइ, अउ, अउंने स्थाने इ-ए, उ-ओ, ऊं थवामां पूर्वना अकारना बलिष्ठ स्वरभारनी ज प्रक्रिया काम करती पकडाय एम छे. बाकी पद्यात्मक भाषास्वरूपमां बीजी रीते स्वरभारनां स्थान नक्की करवां मुश्केल पडे.

शब्दविचार : रूपरचना—शब्दोनो विचार करतां नाम, विशेषण, सर्वनाम, क्रियापद अने अव्यय ए सं. व्याकरणनां पांचे शब्दस्वरूप गुजरातीनी क्रमिक भूमिकाओमां ऊतरी आव्यां छे. आवश्यकता प्रमाणे विभक्तिना विकसित प्रत्ययो अने अनुगो, क्रियापदमां काळनां रूपोमां प्रत्ययोनो विकास थये सधायेलां शब्दस्वरूपो—कृदंत सहित, अने अव्ययोनां पण प्रत्ययोना पसारा साथे थयेलां रूप आ भूमिकाओमां ऊतरी आवेलां मळी आवे छे.

नाम : जाति : वचन : विभक्ति—अंत्य स्वरनी दृष्टिए संस्कृतमां हतो तेवो विचार गुजराती भाषानी क्रमिक भूमिकाओने माटे आवश्यक रह्यो नथी. अपभ्रंश सुधी ए भेद हतो ते पण हवे घसाई चूक्यो हतो.

जाति—जातिनी दृष्टिए विचार करतां गुज. भूमिकाओमां संस्कृत-पालि-प्राकृत-अपभ्रंश जेम त्रण जाति उतरी आवेली छे. अंते स्वरभार साचवतां शब्दस्वरूपो सिवायनां रूपोमां जातिवाचक कोई विशिष्टता आपणने जोवा मळती नथी. अंते स्वरभारवाळां शब्दस्वरूपोमां

नरजातिमां **उ-ओ**
नारीजातिमां **ई**
नान्यतरजातिमां **ऊं**

मध्य. गुज.नी आ चोथी मिश्र भूमिकामां मळे छे. वस्तुस्थितिए आ पहेली विभक्तिनां एकवचननां रूप छे; जेमके घोडु, पण पहेली सिवायनां रूप घोडा-थी; आमां घोडा-अंग अप. घोडअ–(< सं. घोटक; स्वरभार निमित्ते ज करेलुं उमेरण; जेमके सं. हस्तः > प्रा. हत्थो > अप. हत्थु > गु. हाथ, परंतु सं. हस्तकः > प्रा. हत्थओ > अप. हत्थउ > म. गु. हाथु-हाथो. नान्यतर जातिमां पण एवो ज क्रम-)मांथी आवेलुं स्पष्ट छे.

नान्यतरजातिमां सं. पर्णकम् > प्रा. पण्णअं > अप. पण्णउं > म. गु, पानउं > पानूं, पण स्वरभार अंते न होय तो सं. पर्णम् > प्रा. पण्णं > अप. पण्णु > पान. नारीजातिमांना ईनो विकास पण सं. घोटिका > प्रा. घोडिआ > अप. घोडिअ > म. गु. घोडी स्वरभारने कारणे छे. स्वरभार अंते न होय त्यां सं. ग्रन्थिः > प्रा. गंठी > अप. गंठि > म. गु. गांठि > गांठ्य > गांठ आम लघुप्रयत्न यश्रुतिवाळुं रूप आवी रहे.

आम स्वरभारवाळां नर-नारी अंग पहेलीबीजी विभक्ति सिवायनां प्रत्ययो-अनुगो-नामयोगीओ लेनारा अंगमां आ आवी रहे, जे नान्यतर बहुवचनमां आं होय; ज्यारे अंते स्वरभारवाळां पण जेमां उ-ओ उ-ऊं नथी ते सिवायना स्वर दीर्घ ईवाळा, जेवा के सं. धनिकः > प्रा. धणिओ > अप. धणिउ > म. गु. धणी (नरजाति), सं. अश्रूकम् > प्रा. अंसुअं > अप. *अंसुउ द्वारा म. गु. आंसू, अने अंते स्वरभार विनानां यश्रुतिवाळां के यश्रुति विनानां शब्दस्वरूपोनो अंत्य अ प्रत्ययो-अनुगो-नामयोगीओ पूर्वे फरतो नथी; एटले के पहेली एकवचनमां जे रूप धारे ते ज बधे चाले.

तद्भव शब्दोनी जाति मोटे भागे संस्कृत प्रमाणे ज उतरी आवी छे; छतां गांठि (< सं. ग्रन्थिः > प्रा. गंठी > अप. गंठि)–ए

मूळ संस्कृतमां नरजातिनो शब्द नारीजातिमां आवी रह्यो छे. आगि (< सं. अग्निः नर.), वाट (< सं. वर्त्मन् नर.), बांह (< सं. बाहु नर.) ए नारीजातिमां, तो मींडूं (< सं. बिन्दुः नर.) ए नान्यतरजातिमां छे.

वार तत्सम शब्द छतां आपणे त्यां 'वारो' ए अर्थमां नारी जातिमां, तो पिरि सं. प्रकारेण (नर. त्री. ए. व.)मांथी *पयारइ > *पयारि > *पइरि > पिरि ए रीते नारीजातिमां मळ्यो छे.

–नी तीरि (नळा. ५-१४) जेवा प्रयोगमां नइ > नी परसवर्ण दीर्घ थई आवी मळ्यो छे त्यां आपणने तीर जेवा शब्दोने नारीजातिमां खेंचवा दिल थाय छे. आ प्रयोग विहिलइ सवारइमांथी विहिली सवारि > वहेली सवारे जेवो छे.

वचन—भालणना आ काव्यमां वचनभेद नरजातिमां मात्र पहेली विभक्तिमा जोवा मळे छे; ज्यां घोडु ए.व., घोडा ब. व. मळे छे. नारीजातिमां बेउ वचननो भेद नथी. विशेष स्पष्ट भेद मात्र नान्यतरजातिमां मळे छे, ज्यां पहेली विभक्ति ए. व. पानूं, पण ब. व. पानां (< अप. पण्णाइं–पण्णइं); पछी प्रत्यय के अनुगो लागतां ब. व. पानांनूं वगेरे रूपो.

ब. व.मां पछीथी व्यापक थयेलो 'ओ' हजु आ भूमिकामां व्यापक थयो नथी. भाईओ एवो प्रयोग संबोधनमां मात्र नाकरे करेलो जूना साहित्यमां जोवा मळे छे.

विभक्ति—सं.मां ७ विभक्ति अने संबोधन एम ८ विभक्ति हती. प्राकृत सुधीमां आवता चोथी विभक्ति गई; अपभ्रंशमां आवतां पहेली-बीजी एकरूप थई, चोथी तो नहोती ज ने पांचमीमां स्वल्प अपवादे होन्तउ अनुग उमेरायो; त्रीजी-सातमीनां रूप सरखा जेवां रह्यां.

संबोधननी स्वतंत्रता पण गई. मध्यकालीन गुजरातीमां आवतां पहेली–बीजी एकरूप थई, त्रीजी-सातमी एकरूप थई, चोथीमां **नइ** अनुग उपरांत **माटइ** जेवां नामयोगी शरू थयां; पांचमीमां **थ**– **थक**– ए बेउ विकारक अंग (सं. स्थित-मांथी विकसी) आव्यां; छठ्ठीमां अप. **तणेण** अने जरा मोडा विकसेला **केरउ**ना नामयोगी तरीकेना **तणउ-केरउ** शब्दो उपरांत **नु** अनुग शरू थयो. आ **नु** अनुग क्यांथी फूट्यो ए कहेवुं जरा मुश्केल बन्युं छे. अप. **तणेण** साथे आने जोडवानो प्रयत्न छे, पण **तण**-अंगमांना **ण**नो **न** थवो मुश्केल छे. सामे म. गु.मां **कह्नइ-कह्नि** रूप वपरातुं होई. सं. **कर्ण**-('नजीक'नो भाव) > प्रा. **कण्ण**– > अप. **कन्न**- द्वारा स्वतंत्र रीते **नु**नो विकास थयो. आ **नु**-ने त्रीजी-सातमीनो **इ** लाग्या पछी **नइ-नि** > **ने** चोथी विभक्तिमां मळ्यो. सातमी विभक्तिमां **कंठि** (कंठमां), उपरांत नवो अनुग **मांहि**–**मांहां** शरू थयो. एनो विकास सं. **मध्ये** > प्रा. **मज्झे** > अप. **मज्झि** > म. गु. ***माझि** > ***माहि** > **मांहि** अने पछी **मां**-वचतां स्वरित ह जाळवया **मांहां** (जेमां श्रुति एक ज छे: **मां:** के **म्हां**)

एणी पिरि जेवां रूप अव्ययात्मक बनतां लागे छे. आमां **पिरि**-मांनो अंत्य **इ** त्रीजीनो प्रत्यय ज छे; 'ए प्रकारे' एवो अर्थ छे. एवुं सातमीनुं रूप **घिरि** छे. सं. **गृहके** > प्रा. **घरइ** > मध्य. गु. **घरइ** > **घरि** > **घिरि** अने एणे अर्वा. गुज.मां यश्रुतिवाळुं **घेरय** उच्चारण आप्युं छे.

सातमी विभक्तिनो प्रत्यय तो **इ** ज व्यापक छे, छतां संभवतः सं. नारीजातिना **आम्** प्रत्ययनो अवशेष आपणने **पुरी अयोध्यां पिट्ठ** (२७-१२) जेवामां अने **पडी वेलां** (१३-२१) जेवामां मळे छे. **करतां** वगेरेमां ए **आं** ऊतरी आव्यो छे ने अर्वाचीन गुजरातीमां सती-सप्तमीना सं. प्रयोगने जाळवी राखे छे.

छठ्ठीमां क्वचित ज ह् (< सं. स्य > प्रा. स्स > अप. स्सु-सु-, पण बहुवचनमां हँ) मळे छे, पण ए पण आरंभनी भूमिकामां, पछी लुप्त थयो छे. आ नळाख्यानमां ए नथी प्रयोजायो.

नामोना अंत एटले अंग क्रमिक भूमिका द्वारा ऊतरी आवेलां होई दीर्घ ईकारांत रूपो, दीर्घ ऊकारांत रूपो अने ओकारांत रूपो पण मळी आवे छे. रूपरचनानी दृष्टिए कोई विशिष्टता मात्र मळेली नथी.

विशेषण—विशेषणोमां विकारक अंग अने अविकारक अंग नामोनी जेम ज मळे छे. आमांनां अविकारक अंग विशेष्यनी पूर्वे कोई जातना फेरफार विना ज प्रयोजाय छे; विकारक अंग एटले वस्तुस्थितिए उपर नाममां बताव्या प्रमाणेनां अंते स्वरभार साचवी राखतां–प्रकृतिमां क-वाळां शब्दस्वरूप. **रातु घोडु, राती घोडी, रातूं घोडूं**–आ पहेली विभक्तिना एकवचननां रूप थाय. ब. व.मां **राता घोडा, राती घोडी, रातां घोडां.** विशेषण एकलुं के विशेष्यनी पछी प्रयोजाय तो अंग आ-कारांत आवी रहे: जेम के **थोडामांहि** (१-९). परंतु त्रीजी अने सातमीनो इ प्रत्यय लागे छे त्यारे विशेष्यने लागे तेम विशेषणने पण लागे; जेमके **समय एहवे** (९-६), **माहारि वन** (१०-१९).

विशेषणोनां तुलनात्मक रूप आ भूमिकामा कोई कोई मळी आवे छे. **आघेरूं** ए आवुं रूप छे. आमां **एरूं** प्रत्यय सं. °तर- > प्रा. °यर- > म. गु. इर-द्वारा आ विकास छे. **अनेरूं** ए आ ज जातनुं सं. अन्यतर- > प्रा. अप. **अण्णयर** – > म. गु. **अनेर**-कर्मे मळ्युं छे. कादंबरीमां स्वतंत्र शब्द **पांहि** थी तुलनात्मक अर्थ बताववानो आरंभ थयेलो; पण नळाख्यानमां एवो कोई प्रयोग जोवामां आव्यो नथी.

श्रेष्ठतादर्शक गुज. रूप करवा '**एरूं**' जेम प्रत्यय रूप मळ्युं नथी.

संख्यावाचक—एक, बि-बिहू-बेहू, त्रण्य, च्यारि, पांच, खट, सात, आठ, नव, अढार, आ रूपो मळे छे. आवृत्तिवाचक पिहिलूं,

बीजूं, त्रीजूं, चुथूं पण मळे छे.

सर्वनाम—हूं, तूं, आपण, तेह, जेह, एह, किहि, शूं, कोई, कुण, पोति, आप, आपणूं, वगेरे. आ सर्वनामो एनां विविध विभक्तिजन्य अने साधित रूपोमां प्रयोजायेलां मळे छे. क्रमवार अहीं जोइये :

	हूं		तूं	
	ए. व.	ब. व.	ए. व.	ब. व.
१	हूं	अह्मो	तूं	तह्मो
२	मुहि, मूहि, मूंहि	...	तुहि, तूहि, तूंहि	...
३	मि-मिं	अह्मो	ति-तिं	तह्मो
४	—	—	—	—
५	—	—	—	—
६	माहारूं-मारूं	अह्मारूं	ताहारूं-तारूं	तह्मारूं
७	—	—	—	—

व्युत्पत्तिनी दृष्टिए आ क्रमोनो विकास :—

सं. अहकम् > प्रा. हअं > अप. हउं > म. गु. हूं

सं. *अस्मे > प्रा. अह्मइ > अप. अह्मइं, पण म. गु.मां अह्मो

सं त्वम् > प्रा. तुवं > अप. तुहुं > म. गु. तूं

सं. *तुष्मे > प्रा. तुह्मइ > अप. तुह्मइं, पण म. गु.मां तह्मो

आ बंने सर्वनामोनां बीजां बीजां रूपोमां अनुक्रमे मुहु- अने तुहु- विकस्यां छे जेणे म. गु.मां मुहुनइ-तुहुनइ द्वारा मुहि वगेरे ने तुहि वगेरे रूप आप्यां छे. अप.मां महु अंग छे, पण तहु के तुहु अंग नथी, ए महुना आभासमाम्ये विकस्यां छे. मा-ता- अने अह्मा-तह्मा- अंग सं.मांथी प्रा. अप. द्वारा छे.

अनुगो अने नामयोगीओनी पूर्वे माहारा-माह्रा, ताहारा-ताह्रा ए. व.मां अने अह्म, तह्म ब. व.मां वपरायां छे; स्वतंत्र रीते मुझ-तुझ रूप देखातां नथी.

सामान्य रीते स्ववाचक तरीके पोति-ते (जुओ शब्दकोश.) अने आपआपणूं ठीक ठीक प्रमाणमां मळे छे. आ त्रणे शब्दोनो विकास आत्मन्‌मांथी छे; जेमके—

सं. आत्मा > प्रा. अप्पा > अप. अप्प > म. गु. आप

सं. *आत्मनकम् > प्रा. अप्पणअं > अप. अप्पणउं > म. गु. आपणउं > आपणूं

सं. आत्मात्मा > प्रा. *अप्पत्ता > अप. *अप्पत्त- > *अप्पोत्त- > *पोत्त- > म. गु. पोत- अने प्रत्यय इ लाग्ये पोतइ-पोति-पोते. आ शक्य विकास छे; बाकी प्राकृत-अपभ्रंशमां कोई रूप जोवामां आव्युं नथी.

स्ववाचक आपणूं ए एक अति महत्त्वना पहेला-बीजा पुरुषना सर्वनाम तरीके ब. व.मां आपणि आपण रूप आपे छे. आ अर्थ भालणना आ 'नळाख्यान'मां (९-२०, २२-२, वगेरेमां) व्यापक थतो जोवा मळे छे. कादंबरी-पूर्वभागमा आ प्रयोग जाणवामां आव्यो नथी. ए रीते 'नळाख्यान' 'आपणे'ना स्ववाचक अर्थमांथी आगळ वधी पहेला-बीजा पुरुष तरीकेना प्रयोगनो सीमास्तंभ बनी रहे छे.

तेह जेह एह ए दर्शक सर्वनामोना रूपाख्यान एकसरखां थाय छे.

वि.	ए. व.	ब. व.
१	ति-त्ते-तेह, जे-जेह, एह	ते, जे, ए
२	,, ,, ,, ,,	,,
३	तेणि, जेणि, एणि	—

४ — —
५ — —
६ तेहनूं, जेहनूं, एहनूं एं. व. प्रमाणे
७ तेहमांहां, जेहमांहां, एहमांहां (मांहि पण) ,,
तेणि-जेणि-एणि (विशेष्य पूर्वे)

नारीजातिमां विशेषण दशामां तेणी, जेणी, एणी जोवा मळे छे अने नारीजातिना शब्द पूर्वे प्रयोजाय छे. आ उपरांत नारीजातिनो भास करे तेवो तेणी तीरि जेवो प्रयोग पण जोवा मळे छे, ज्यां तेणइ-मांथी तेणि-तेणे थवाने बदले परसवर्ण दीर्घ थये तेणी वगेरे रूप वपरायेलां जोवा मळे छे.

तेह अने जेहमा 'ह' क्यांथी आव्यो ? स्पष्ट छे के सं. एषः > प्रा. एहो > अप. एहु द्वारा जे एह मळे छे तेना आभाससाम्ये आ मळी रहे छे.

किह (किमूनुं परिणाम) रूप एहनी पडछे प्रचारमां आव्या पछी किहि अंग थईने प्रयोगमां आव्युं छे; स्वतंत्र कोऽपि > प्रा. कोवि > अप. कोइ > म. गु, कोई मळ्या पछी को अने कुहु अंग पण वपरायां मळ्यां छे. 'कुहु' नां तेह नी जेम रूप करवामां आवे छे. आ उपरांत सं. कः पुनः उपरथी अप. कवण > कउण द्वारा कुण (=कोण) रूप प. वि.मां वपरायेलुं मळे छे.

साधित रूपोमां तेहवूं, जेहवूं, एहवूं, केहवूं–तेटलूं, जेटलूं, एटलूं, केटलूं आ विशेषणात्मक रूपो पण वपरायां छे.

प्रश्नार्थ शूंनां रूपाख्यान विकारक विशेषण जेम थाय छे. आनो विकास कीदृश-मांथी *किस्स द्वारा छे. कीस-थई कीनो लोप आमां थाय छे. आ वैकल्पिक प्रक्रिया छे अने तेथी अर्वा गुज.मां शुं साथोसाथ कशुं उतरी आव्युं छे, ज्यां छेल्लामां अर्थ अनिश्चिततानो विकास्यो छे.

त्री. वि. ए. व.मां शि—सि ('शूं'मां पण 'सूं' दंत्य उच्चारण लेखनमां पण बतावायुं छे) मळे छे. एहना आभाससाम्ये शाहा अंग नळाख्याननी भूमिकामां पण शाहानिमां वपरायुं छे.

क्रियापद—आ भूमिकामां त्रणे काळनां रूप मळे छे. आमां वर्तमान अने भविष्यकाळनां रूप परंपराथी उतरी आवेलां छे. बाकीना सं. काळ, आज्ञार्थना स्वल्प अपवादे, छेक प्राकृत काळथी लुप्त थया छे. सं.ना त्रणे भूतकाळ नष्ट थये प्राकृत समयथी प्रचारमां वधेलां कर्मणि भूतकृदंत भूतकाळनो अर्थ बतावता प्रयोजाय छे. क्रियातिपत्त्यर्थनो अर्थ पण अविकारी वर्तमानकृदंत बतावे छे. आ अहीं संक्षेपमां जोई लइये.

वर्तमानकाळ–कर्तरि रूप

पु.	ए. व.	ब. व.
१	करूं (< अप. करमि	करूं (< अप. करमु)
२	करि (< अप. करहि)	करु (< अप. करहु)
३	करि-करे (< अप. करइ)	करे (< म. गु. करइं)

नळाख्याननी भूमिकामां सं. अस्ति—आस्ते साथे संबंध धरावता पा. अच्छतिमांथी विकसेला प्रा. अप. द्वारा मळेला अच्छइमांथी म. गु. अछइ > छइ > छि ए प्रकारनां रूप करूं छूं, करि छि, एम वर्तमान-काळना क्रियापद साथे ज वपरायेलां थोकबंध मळे छे; ब. व.मां छूं (१५-४)

कर्मणि रूप

कर्मणि रूप मुख्यत्वे त्री. पु. ए. व.मां मळे छे. करीइ, आणीइ, जईइ वगेरेमां ईइ प्रत्ययांग देखाय छे: सं. क्रियते > प्रा. करिज्जइ > अप. *करीजइ > करीयइ > *करीइइ > करीइ., ने बीजा स्वाभाविक विकास प्रा. करिज्जइ > म. गु. करीजइ > करीजि >

करीजे- आवां बीजां रूप लीजि-दीजि वगेरे पण पूर्ण प्रचारमां हतां. आ ज भूमिकामां दीजि लीजि जेवां रूप प्रयोजायां छे. आ करीजे-ना ईना लाघवथी करयजि-करजे, एकवचने अने जाणे के आनुं बहुवचन होय तेम करज्यो (करयो एवी जोडणी, पण त्यां उच्चारण करजो—क्यांक लघुप्रयत्न यश्रुतिवाळुं) रूप प्रचारमां आव्युं छे. आ भूमिकामां आ काव्यमां ए थोकबंध प्रयोजाय छे, अने करजे-करजो-नो अर्थ पण कर्तरि थई चूक्यो छे.

अर्वा. गु.मां वर्तमान प. पु. ब.मां लखातुं करीए—जे उच्चारणथी करिये छे तेनो कर्तरि अर्थ हजी आ भूमिकामां शरू थयो मळतो नथी. जोडणीनी दृष्टिए करीइ-करीयि पण मळे छे. अंते स्वरभार द्वैतीयिक आवी रीते आजे उच्चारणमां ए करियेमां स्पष्ट छे. कर्मणिनुं नवुं रूप कराय, जवाय, जडाइ (९-१५), अवाइ (११-७) वगेरे मुग्धावबोध औक्तिकमां बोलाय वगेरे छे ए प्रकारना जेवां आ भूमिकामां पण मळे छे. भावे थवाय (११-३२) आनो विकास मारा तरफथी अन्यत्र बताववामां आव्यो छे (गुजराती रूप-रचना, भाषण ५मं) तेम सं. कृष्णायते जेवां नामधातु-रूपो उपरथी उतरी आववानी शक्यता छे. ए खरुं के आकारांत सं. धातुओनां ज्ञायते जेवां सं. रूपो तरफ खेंचाण जाय; पण आकारांत धातुओमां पीयते मीयते जेम ई थवानुं वलण होई एनी संभावना घणी ज ओछी छे. आ जातनो रूपविकास मध्यकालीन युगनो छे. हिंदीमां पण कराता है जेमांमां आ 'आ' उतरी आव्यो छे. गुज. स्वरांत अंगोमां 'वूं' प्रत्ययांग सहित रूप थाय : जवाय वगेरे, ए आ भूमिकामां-ना प्रयोगोथी स्पष्ट छे.

भविष्यकाळ-कर्तरि

पु.	ए. व.	ब. व.
१	पामिसु-(११-२३)करीसु	करिसूं-करसूं(९-४)
२	करसि, करेसु (११-३८)	करसु
३	करसि	करसि

आवां रूप प्रचारमां छे. वच्चे दीर्घ ईकार ह्रस्वत्व पामेलो मळे छे, अने आजे पण जोडणीमां दीर्घ छतां उच्चारण ह्रस्व ज छे. व. व.मां करशूं जेवां रूपोमां यश्रुति स्पष्ट छे. भविष्यकाळनां सं. करिष्यति > प्रा. करिस्सइ > म. गु करीसइ > करीसि अने तालव्य स्वर इना योगे करीशि > करिशि > करशि रूप पूर्ण प्रचारमां छतां तालव्य-वाळां करसि, नरसि वगेरे जेवां रूप पण प्रचारमां हतां. उच्चारणनी तालव्यता आजे पण प्रांतीय लेखे छे ए ध्यानमां राखिये तो दंत्य स्नी शा माटे आजे पण व्यापकता उचारणमां छे ए समझाय.

कर्मणिमां 'भराशि' एम वर्त. जेम नव्य रूप 'आ'वाळां मळे छे.

आज्ञार्थ

आज्ञार्थमां बी. पु. ए. व. अने ब. व.ना रूप सं. *करहिमांथी अप. करि-करे द्वारा ए. व.नुं अने सं. *करतमाथी अप. करउ द्वारा व. व.नुं रूप मळे छे. बी. पु. ए. व.मां अपभ्रंशकालीन करे रूप आ भूमिकामां पण चालु रह्युं छे. करि रूपे तो अर्वा. गु.मां यश्रुतिवाळुं कर(=करय) रूप अवतारी आप्युं छे.

करजे-करजोनो विकास उपर वर्तमान कर्मणि रूपोमां बताव्यो छे. भविष्यदर्थना आज्ञार्थमां आनो प्रयोग 'नळाख्यान'नी भूमिकामां प्रचार-मां आवी चूक्यो छे.

प्रेरकनो प्रयोग

क्रियापदोमां प्रेरकरूप पडावियु (१३-२०), खेडावि (२८-४५) वगेरे सं.मां अति मर्यादित स्वरूपमां आकारांत धातुंगने लागता °आप प्रत्ययनो विकास छे. पालि.मां ज सं. कारितने बदले कारापित जेवो प्रयोग शरू थई चूकेलो अने एणे व्यापक रीते गुज. 'आव' प्रत्यय आप्यो.

कृदंत

वर्तमान, भूत अने विध्यर्थ आ विशेषणात्मक कृदंतो अने संबंधक भूतकृदंत आटलां मुख्यत्वे प्रचारमां हतां. वर्तमान कृदंतना सं. °अत्-मांथी प्रा.मां विकसेला °अंत अंगथी करंतु वगेरे रूप प्रचारमां हतां; साथोसाथ अनुस्वारहीन करतु पण वपरातुं हतुं. आ वर्तमानकृदंतनां सातमीना अर्थनां अव्ययात्मक आं प्रत्ययवाळां करतां जेवां रूप पण व्यापक हतां; तो क्रियातिपत्यर्थे हत (१६-९) जेवुं क्रियापद पण आ ज कृदंतना अविकारक रूप तरीके आ 'नळाख्यान' मां जोवा मळे छे.

भूतकृदंत मूळ तो कर्मणि अर्थनुं जेम विशेषण तरीके विशेष्य पहेलां वपरायेलुं मळे छे तेम भूतकाळे क्रियापद तरीके पण मळे छे. सं. *करितः > प्रा. करिओ > अप. करिउ > मध्य. गु. करीउ > करिउ वगेरे प्रक्रिया जोवा मळे छे. आमांथी करीयु > करियु, हसियु जेवां यश्रुतिवाळां रूप पण प्रचारमां हतां. लेखनमां करीउ-करीयु ए रूपो करीइ > करीयि जेवां रूपोनी भ्रमणाथी मळे छे; पण आ मध्यवर्ती इकारनी दीर्घता समर्थित करे तेवा पुरावा मळी शकता नथी.

आ उपरांत सं. मूळ रूपोमांथी ज कीधूं, लीधूं, दीधूं, नाठूं, विठूं, पिठूं जेवां रूप प्रा. किद्ध-, लिद्ध-, दिद्ध-, नट्ठ- (< सं. नष्ट-), विट्ठ-(< सं. उपविष्ट- > प्रा. वइट्ठ-), पिट्ठ- (< सं. प्रविष्ट- > प्रा. पइट्ठ-) द्वारा मळ्यां छे.

भू धातुनां विकसित हूतूं, हूऊं-हौंऊं वगेरे रूपोमांनुं हूतूं मूळ वर्तमानकृदंत भवत् उपरथी होन्त द्वारा, अने हूऊं-हौंऊं रूप भू.कृ. भूत- > प्रा. हूअ- द्वारा मळे छे.

थयूं-थ्यूं, गयूं-ग्यूं ए रूपो सं. स्थित- > प्रा. थिअ अने सं. गत- > प्रा. गअ द्वारा यश्रुतिथी मळ्यां छे. अकार-लोप उच्चारण-झडपनुं परिणाम छे, जे आजे पण सौराष्ट्रमां व्यापक छे.

'इह्ल'वाळां द्वि. भू.कृ.नां रूप 'नळाख्यान'मां खास जोवा मळतां नथी.

विध्यर्थ–हेत्वर्थ के सामान्य कृदंत करिवूं-करेवूं वगेरेना रूपमां मळे छे. सं. °तव्य-प्रत्ययमांथी अप. एव्व-अंग मळ्युं छे तेणे आ रूप आप्युं छे. अप.मां पण सोएवा जग्गेवा जेवां रूप हतां. एना लाघवे इ आव्या पछी करिवूं थयुं. एणे अर्वा. गु.मां प्रांतीय भेदे करचवुं जेवां रूप पश्चिम सौराष्ट्रमां आप्यां छे.

बीजा कृत्प्रत्यय क्रमिक रीते शब्दोमां मळ्या छे अने स्वतंत्रता धारण करी शक्या नथी.

अव्ययो

अव्ययोमां क्रियाविशेषण, नामयोगी अने उभयान्वयीनो विकास आ भूमिकामां ठीक प्रमाणमां छे.

क्रियाविशेषण

सार्वनामिक रूप स्थळवाचक–जिहां-जांहां, तिहां-तांहां, किहां-कांहां, अहीं आ रूपोमां आं अव्ययात्मक सातमीनो प्रत्यय, तो अहींमांनो हिं अपभ्रंश-अवशेष छे. मूळना सं. यद् तद् किम् अने इदम्नो आ विकास छे.

आ मूळ सर्वनामोए जिहारइ-याहारि-याह्रि, तिहारइ-त्याहारि-त्याह्रि, किहारइ-क्याहारि-क्याह्रि, आ रूप आप्यां छे, जेमां जिह+यारइ वगेरे विकास छे. आ रूपोमां आजे पण तेथी ज महाप्राणतत्त्व टक्युं छे. सं. अथवा उपरथी म. गु. हवइ-हावइ, हवि-हावि (हवे), सं. पश्चात् उपरथी अप. पच्छइ द्वारा म. गु. पाछइ-पछइ-पाछि-पछि, सं. अधुना > प्रा. अप. हुउणा > म. गु. हउणां-हवणां-हवडां (हमणां), सं. अद्य > अप. अज्जु > म. गु. आजि

(सातमीनो प्रत्यय उमेराये), एवो ज सं. कल्यके > अप. कल्लइ > म. गु. कालइ-कालि (गई काल) आ प्रयोगमां छे.

वारि (सं. वारनो नारी.मां प्रयोग), सं. तत्क्षण उपरथी ततक्षणि-ततखणि, सं. तत्क्षिप्र उपरथी तत + खेव, सं. निश्चितम् उपरथी निश्चि, सं. अहर्निशम् द्वारा अहोनिशि, अहिनशे (१५-६०) पण जोवा मळे छे.

सार्वनामिक तिम-जिम-इम-किम अने तेम-जेम-एम-केम अप. काळथी रीतवाचक क्रि. वि. तो चालु ज रह्यां छे.

सं. वारंवारम्‌मांथी वारि वारि थयुं छे ते पण प्रचारमां छे.

विकारक अंगनां सं. संमुखकम् > प्रा. संमुहअं > अप. संमुहउं > म. गु. साहामउं-साहामूं ए ध्यान खेंचे छे. अर्वा. गु.मां 'सामे' थई ए जळवाई रह्युं छे.

सं. अवश्यमेवमांथी अविशमेव.

नामयोगी

जेम जेम विभक्तिप्रत्ययो घसाता गया तेम तेम विभक्तिओना अर्थ बनाववा शब्दो वपरावा लाग्या. आपणे अपभ्रंश युगमां आविये छिये त्यारे पांचमी विभक्तिनो अर्थ पूरवा होन्तउनो प्रयोग, छठ्ठीनो अर्थ पूरो करवा तणेण अने केरउनो वधारानो प्रयोग, ने म. गु.मां एनाथी आगळ वधी चोथी विभक्तिनो अर्थ पूरवा माटइ-माटि, पांचमीमां थी साथोसाथ थकी (थकउ नर., थकी नारी. थकउं-थकूं नान्य.), छठ्ठीमां नउ अनुग उपरांत अप.थी मळेला तणउ (अप. तणेणनो विकास) अने केरउ, सातमीमां मांहि-मांहां अनुग उपरांत मुझारि आ नामयोगीओ प्रचारमां आवी गया हतां. चोथीना अर्थमां माटइ-माटि उपरांत काजि पण शरू थयेलुं. आ बंने नामयोगीओनी पूर्वे छठ्ठीना अनुग नउ

ने सातमी-त्रीजीनो इ लागेलुं रूप आवतां : **देवनि, काजि. ऊपरि** (< सं. **उपरि** > प्रा. **उप्परि** > अप. **उप्परि-उप्पिरि**) 'उपर'ना अर्थमां शरू थई चूक्यो हतो.

त्रीजीना अर्थमां 'साथे'नो आशय आपवा सं. **सहितकम्** > प्रा. **सहिअअं** > अप. **सहियउं** > म. गु. **सिउं-स्यूं-शूं** (सूं पण खरुं) ए व्यापक बनी चूक्युं हतुं. आ उपरांत सं. **सार्थेन** > प्रा. **सत्थइ** > अप. **सत्थइं** > म. गु. **साथइ-साथि** मळे छे.

त्रीजीना अर्थमां-चोथीना अने सातमीना अर्थमां (**प्रति**-तरफना अर्थमां पण) सं. क्रियापद **भणति** उपरथी म. गु. **भणइ-भणी**, सं. **प्रति** उपरथी म. गु. **परति** (प्रति, प्रत्ये).

बीजां नामयोगीओमां सं. **पृष्ठके** > प्रा. अप. **पुट्ठइ** > म. गु. **पूंठइ-पूंठि** (पूंठे), सं. पार्श्वके > प्रा. अप. **पस्सइ** > म. गु. **पासइ-पासि-पाशि-पास-पाश** (पासे), सं. **कर्णके** > प्रा. अप. **कण्णहिं-कन्नहिं** > म. गु. **कह्नइ-कह्नि** (कने, स्वरित 'ह'नो व्यत्यय थये)—**कणि,** सं. **अग्रके** > प्रा. अप. **अग्गइ** > म. गु. **आगइ-आगि,** एनो ज विकास 'ल' ना उमेरणे **अग्गलि** द्वारा **आगलि** (आगळ), सं. **बहिस्** उपरथी म. गु. **बाहिरि** (बहार), सं. **पश्चात्** > अप. **पच्छइ** > म. गु. **पाछइ-पाछि-पछि** (पछी), **पाखि** (सं. **पक्षके** > प्रा. अप. **पक्खइ** द्वारा) ए 'विना'ना अर्थमां तो **टालि** (**टाल** क्रिया०नो विकास) पण ए ज अर्थमां छे. **पाखलि** (फरते) ए पण मळी आवे छे.

नळाख्यानमां आ रूप प्रयोजायेलुं जोवा मळे छे.

उभयान्वयी

शुद्ध उभयान्वयीओमां सं. **अन्यत्** > अप. **अन्नइ इँ** > म. गु. **अनइ-नइ-नि** (ने-अने), सं. **पुनः** > अप. **पुणु** > म. गु.

पणि (पण), सं. किम् द्वारा मळेल कि ('के' अथवा), यद् द्वारा म.गु. जि (जे)

सं. ततः > प्रा. तओ > अप. तउ द्वारा म.गु. तु (तो), सं. तावत् > अप. ताम-तावँ द्वारा म. गु. तां (तो), सं. च > प्रा. अप. य द्वारा अप.मां ज 'इ' थये म. गु. इ (पण), सं. एव > प्रा. येव > अप. *जेउ-ज्जि द्वारा म. गु. जि (ज)—आ उभयान्वयीओ शब्दनी पछी ज प्रयोजाय छे. 'नळाख्यान' मां आमांना 'इ'नुं प्राबल्य जोवा मळे छे. ए 'पण'नो भाव आपे छे. तु अने तां एक ज अर्थमां लगभग सरखी रीते प्रयोजाया छे.

वाक्यरचना

गुजराती भाषा संस्कृतनी परंपरानी होई एनी पासे वाक्यरचना पण ए प्रकारे ऊतरी आवी छे. कारक संबंधमां कोई कोई फेरफार थया छे, अने ए मुख्यत्वे सरलता तरफ लई जाय छे. मुख्यत्वे आमां ध्यान खेंचे छे ते सतिसप्तमीनो प्रयोग छे. नीचेनुं उदाहरण ए प्रयोग केवी स्वाभाविक रीते थतो एनो ख्याल आपशे :

इंद्र केहि : ठाला पडि (=पड्ये) अप्सरा करशि हास. (९-१८)

केटलांक क्रियापदोना प्रयोग अर्वा. गु.नी दृष्टिए जुदा पडता होई ए जरा ध्यानमां लेवा जेवा छे :

राय रमतां सरवि हारयूं (१३-१४) अहीं कर्म प्रमाणे सं.रीते प्रयोग छे; अर्वा. गु.मां 'राय रमतां सर्व हार्यो' थाय.

शाहानि काजि हूं झाल्यु छूं (६-११). अर्वा. गु.मां 'मने झाल्यो छे.' दूत मोकल्यु हूं (११-१५)- मने मोकल्यो. रिद्धि जाति (१३-२२)- रिद्धि जतां.

अव्ययात्मक सातमीनो प्रयोग पण सतिसप्तमीनो ज विकास छे. पडी वेलां (१३-२१) जेम वेलांनो प्रयोग अने करतां वगेरेनो प्रयोग आ छे.

कर्मणिने बदले जाण्यूं नथी जातूं (१५-९), कल्यां न जाय (१५-२९), आवो शक्यतानो अर्थ आ भूमिकानी खासियत जणाय छे.

नळाख्याननो कर्ता भालण

'नळाख्यान'ना आरंभमां ज जाणवा मळे छे के--

'नैषध चंपू माहाभारतमां कवि कीरति अति लाधी,
कालंने प्रीछवा भालणे भाखाए ए कीधी. २'

आ उपरांत 'नळाख्यान'मां आवता संख्याबंध उल्लेखोथी आ सं. १७३३ जेटली जूनी हाथप्रत द्वारा आ काव्यनी प्राचीनता स्पष्ट होई आ काव्यनो कर्ता कादंबरी वगेरे अनेक काव्यग्रंथोनो रचयिता भालण छे एम स्पष्ट समझाय छे. भालणना संख्याबंध ग्रंथो मळता होवा छतां एना नामना उल्लेख सिवाय एना विशे बीजी कोई प्रकारनी माहिती क्यांय पण मळती नथी; एटले एनां ज्ञाति वतन समय आदिना विषयमां एनी पासेथी कांई पण मेळवी शकवानी स्थिति नथी. ज्ञातिए ए मोढ ब्राह्मण हतो अने संभवतः पाटणनो हतो एवुं एना दशमस्कंधनी एक हाथप्रतनी पुष्पिकामांना निर्देशथी जाणी शकाय छे; जेमके

इति श्रीभागवतमहापुराणे दशमस्कंधे बाललीला पदबंध पाटण नगर मो... ब्राह्मण भालणकृत संपूर्ण। (गुज. वि.स. ह. लि. पु.नं. १५६)

आ पुष्पिका मूळ लाल शाहीनी छे ते झांखी पडी जवाथी एना उपर काळी शाही घूंटी लेवामां आवी छे; छतां उपरना शब्द स्पष्ट वांची शकाय छे. आ प्रत सं. १७७५ जेटली जूनी होई कादंबरी अने नळा-

ख्याननी प्रतोनी जेम ज श्रद्धेय प्रकारनी छे, एटले आपणे एटलुं स्वीकारिये के भालण ज्ञातिए पाटणनो मोढ ब्राह्मण हतो तो एनी सामे कशुं कहेवापणुं नथी रहेतुं.

पण आ भालणनो समय कयो?

एने नामे चडेला 'बीजा नळाख्यान'नी प्राचीन काव्यमाळाना ग्रं. ११ (ई. स. १८८९)मां छपायेली वाचनामां ए बीजा नळाख्याननी रच्या-साल मळी आवे छे; जेवी के

'पंदरसें पीसतालीसमांहि गाया नलगुणग्राम जी;
पद्य खटशत ने सात कर्यां छे हरिजनना विश्राम जी. ७'
(कडवुं २८मुं)

आमां मास पक्ष के तिथि विनानुं सं. १५४५नुं वर्ष मळे छे. आ बीजुं नळाख्यान जो भालणनी ज कृति होय तो आ वर्ष एनो समय नक्की करवामां उपयोगी थाय खरुं.

परंतु, आ 'बीजा नळाख्यान'नी रचना केवा संयोगमां थई छे ए जरा जोई जइये:

'*नागर काजे श्रम दुवेळा कविने कर्मे लाग्यो* जी;
ध्रुवाख्यान ने नळाख्यान बे पुनरपि करी अनुराग्यो जी. ७
गांधीने कहेवुं मरी माटे, मूर्ख न जाणे मरीनी खोट जी;
गुरुकृपाए कवितासागरमां आवे भरती ओट जी. ८
कूडा करमीने कूडुं होशे, सुखीआने होए सुख जी;
नळनी कथा गाइ मनोहर; जाए दु:खीआचा दुःख जी. ९'
(कडवुं २८मुं)

कर्नाए एक वार ध्रुवाख्यान ने नळाख्याननी रचना करेली; पण ए नष्ट थयां होय के बीजुं गमे ते कारण ऊभुं थयुं होय, कविने कोई

नागर मित्रने माटे भुवाख्यान अने नळाख्याननी फरी रचना करवी पडी!

मुश्केली ए छे के भुवाख्यान पहेलानी के बीजानी कोई हाथप्रत अद्यापि जाणवामां आवी नथी; बीजुं नळाख्यान प्राचीन काव्यमाळामां छपायुं ने बृहत्काव्यदोहनमां छपायुं–बंनेनी कोई हाथप्रत मळेली जाणवामां नथी. स्व. रामलाल मोदीए नोंध्युं छे तेम 'बीजा नळाख्यान'नी एक हाथप्रत मुंबई-गुजराती प्रेसनी-जेना उपर ए काव्य छपाई गयुं छे एवी नोंधवाळी स्व. मोदीने मळेली, जे 'बीजा नळाख्यान'नी नहि पण जोवाथी 'पहेला नळाख्यान'नी नीकळी पडी, अने स्व. मोदीए एनुं संपादन कर्युं ने एक ज ग्रंथमां बंने नळाख्यान छपाव्यां.*

आ 'बीजा नळाख्यान'ना विषयमां स्व. मोदीनो अभिप्राय जाणवा जेवो छे :

"प्रथम तो आमां भालणनी शैलीनी छाया सरखीए नथी. भालणनां निकृष्टमां निकृष्ट काव्यो सप्तशती, शिवभीलडीसंवाद वगेरेमां पण तेनी कलम छानी रही शकी नथी. बीजुं, एमां एनी नथी जणाती रसिकता के नथी जणाती विद्वत्ता. उलटुं रसिकतानो घणी जगाए लोप थयो छे अने सुरूचिने सखत आघात थाय एवा विचारो दर्शाव्या छे, ते भालणना स्वभावथी विरुद्ध छे. एनी शब्दोनी पसंदगी पण एनी विद्वत्ताने अनुरूप नथी. तेणे केटलाक शब्दो खोटा अर्थमां प्रयोज्या छे, केटलाकना अर्थ मचडीने बेसाड्या छे अने केटलाक तो मात्र प्रास मेळववा खातर निरर्थक ज उमेर्या छे. तेणे महाभारतनुं भाषांतर ज कर्युं छे, जाणे के नैषधकाव्य कदी जोयुं ज न होय....भाषांतर करवामां....जाणे के एने संस्कृतनुं पुरूं ज्ञान ज न होय...कादंबरीना राग साथे प्रथम नळाख्यानना राग मळे छे, ज्यारे आ नळाख्याननो कोईक ज भाग (? राग)

* जुओ 'बे नळाख्यान-प्रस्तावना'–पृ. ३.

मळतो आवे छे. भालणना समयना प्राचीन शब्दो, शब्दसमूहो के रूढिप्रयोगो आमां नजरे पडता नथी. केटलांक प्राचीन जेवां रूपो छे खरां, पण घणांखरां खोटां अने प्राचीन गुजरातीनां व्याकरण-विरुद्ध लागे छे....आथी आ नळाख्यान प्रत्ये हुं शंकानी नजरे जोउं छुं.....'*

मृदु प्रकृतिना स्व. मोदी आम शंकानी नजरे जुए ए ज आ कृतिनुं भालण-कर्तृत्व नथी ए पुरवार करवा पूरतुं छे. वस्तुस्थितिए एनी कोई हाथप्रत मळी ज नथी; अने मझा तो ए छे के सात्वाळी कडी मात्र प्रा. का.माळानी वाचनामां छे, ज्यारे गुज. प्रेसनी बृहत्काव्यदोहननी वाचनामां नथी. एवुं बन्युं छे के केटलांएक काव्योनी नकल प्राचीन काव्यमाळा(वडोदरा)वाळाओनी पासेथी मुंबई गुजराती प्रेसने मळेली अने एने आधारे काव्यो संपादित थई छपायेलां. मार्कंडेय पुराण–हरिश्चंद्राख्यान–देवीचरित्र, लक्ष्मणाहरण, द्रौपदीस्वयंवर वगेरे ए प्रकारे ज छपायांनो स्व. इ. सू. देसाईए एकरार कर्यो छे अने पोते छेतरायानुं पण कबूल कर्युं छे.† आ परिस्थितिमां नरसिंह महेताने नामे चडावेलां सुरतसंग्राम अने गोविंदगमननी भाषामां तो भळतां अने केटलीक वार खोटां मध्यकालीन-गुजराती शब्दस्वरूप दाखल करी ए बेउ काव्योने जुनवाणी होवानुं करवामां आव्युं छे तेवुं ज आ 'बीजा नळाख्यान' ना विषयमां पण बन्युं होवा विशे मने तो शंका हवे रही ज नथी.

आम आ बनावटी 'बीजा नळाख्यान' नी प्रा. का.माळानी वाचनामां मळतुं वर्ष भालणनो समय नक्की करवामां जरा पण उपयोगी नीवडतुं नथी.

त्यारे फरी ए प्रश्न ऊभो थाय छे के भालण थयो क्यारे.

* एजन, प्रस्तावना, पृ. २३

† जुओ 'गुजराती' पत्र–ता. १८-८-१९१२; गुज. सा. सभा-कार्यवही-(१९४२-४३)-विभाग २, पृ. ९९-१००.

(१) श्री. क. मा. मुनशी एनो समय ई. स. १४२६-१५०० (सं. १४८२-१५५६) माने छे, पण एने अचोक्कस कहे छे. (जुओ Guj. Lang., & Lit. पृ. ११९—जूनी आवृत्ति.)

(२) दी. ब. कृ. मो. झवेरी ई. स. १४३९-१५३९ (सं. १४९५-१५९५) कहे छे. (जुओ गुज. सा. मार्गसूचक स्तंभो, पृ. ४१.)

(३) स्व. रामलाल मोदी ई. स. १४०५-१४८९ (सं. १४६१-१५४५) माने छे; जेमां 'बीजा नळाख्यान 'ना वर्षनो एमने सहारो होय. (जुओ भालण : पृ. ५२-५७.)

(४) स्व. ह. गो. कांटावाळा भालणनो जन्म सं. १४६१ (ई. स. १४०५)मां मानवा तरफ रुचि बतावे छे. (जुओ दशमस्कंध : प्रस्तावना, पृ. २.)

आ बधी मान्यताओ पाछळ—मूळमां तो स्व. नारायण भारतीए भालणनी 'सप्तशती 'ना कविचरितमां आपेलां विधानोनो ज भाग महत्त्व धरावे छे. स्व. भारतीनी शोधमां जणायेलुं के—

(१) भालणनुं घर पाटण-मध्ये धीवटा जिल्लामां चोवदारी खडकीमां छे.

(२) ए भालणनुं बीजुं नाम पुरुषोत्तमजी महाराज हतुं.

(३) आ पुरुषोत्तम महाराजनुं रचेलुं 'ब्रह्मतत्त्व' नामनुं एक सं. अष्टक जाणवामां आव्युं छे.

(४) भालण औरंगाबाद गयेलो त्यारे त्यांना कोई रत्नादित्य नामना राजाना दीवाने भालणने चामुंडानी एक मूर्ति पूजन माटे आपेली—जेना उपर 'सवत १५२० वर्षे ठाकुर

रत्नादित्य माउही चामंडा पूजनार्थ ठ रत्नादित्य पूठी दिवान याणीआ' एवा शब्द कोतरायेला छे. आ मूर्ति भालणना ए घरमांथी स्व. भारतीने मळी आवेली.

(५) आ घरमांथी एक जन्माक्षरनुं पानुं पण मळी आवेलुं स्व. भारती बतावे छे—तेमां बे वर्षोनो निर्देश छे तेमांना बीजा वर्ष विशे एवुं विधान छे के 'संवत १४८२ वर्षे आसो सुदी ४ सुधी उमर वर्ष २१ मास २ दिन १२' एटले के सं. १४८२मां भालण २१ वर्षनो होय.

(६) भालणनी मूर्तिवाळुं एक पतरुं पण मळेलुं छे, जेना उपर श्रीपुरुषोत माहाराज ज पाटणना एवुं मथाळे कोतरेलुं छे.

आवी आवी शोधो उपरथी स्व. भारतीए भालणना बाप वगेरेनां नाम अने बीजी केटलीक माहितीओ आपी छे.

आ बधा पुरावाओनांथी एम कहेवुं मुश्केल छे के ए पुरुषोत्तम महाराज ते ज भालण हतो; अने आ बधुं आम व्यवस्थित रीते भालणनो प्रश्न उकेलवाने माटे भालणना ए घरमांथी मळी आव्युं, ए पण प्रतीतिकर थतुं नथी.

अहीं भालण अने हरिलीलाषोडशकलाकार भीम वच्चे कोई संबंध हतो के नहि ए पण विचारणीय छे. आ भीम पोताना 'प्रबोधप्रकाश'-मां 'पुरुषोत्तममानम्य' (१-१) अने 'श्रीपुरुषोत्तम तणा प्रसाद कीधु एह कथा-अनुवाद' (६-८०) एम कोई पुरुषोत्तमनुं ऋण स्वीकारे छे. पेला भालणनुं नाम पुरुषोत्तम महाराज अने भीमनो ए प्रेरणादायी पण पुरुषोत्तम—आम आ एक ज व्यक्ति होवानी शक्यता उपर भीमनो भालण गुरु एम आपणे त्यां मानवा-मनाववानो प्रयत्न थयो छे. भीमनो समय सं. १५४१-१५४६ (हरिलीलाषोडशकला अने प्रबोध-

प्रकाशनी अनुक्रमे रचनानां वर्ष) निश्चित होई एनो ए गुरु एनाथी उंमरे ठीक ठीक मोटो होय अने तेथी एनो समय ए पूर्वेनो आवी रहे.

काव्यबंधनी दृष्टिए तुलना करिये तो प्रबंधप्रकारे रचना करनारा भीमे भालणनी कडवाबद्ध आख्यानपद्धतिनो लेश मात्र पण परिचय कर्यो जणातो नथी, एटलुं ज नहि, भालणे दशमस्कंधमां जे रीते पदप्रकार अपनाव्यो छे तेनो सगड सुध्धां पण भीममां नथी. काव्यबंधना विकासनी दृष्टिए तो भालण नाकरना समय तरफ वधु ढळे छे; एटले के भालणना काव्यबंधमांथी नाकरना काव्यबंधनो विकास थयो होय तो ए वधु युक्तियुक्त थई रहे छे. दा. त. भालणे कडवाबंध स्वीकार्यो छे: आरंभमां सामान्य रीते ए ध्रुवा-पंक्तिओ आपी 'ढाल'थी पछी कडवानो विकास साधे छे. कडवुं पूरुं थवा आवे त्यां भालण हजी कोई विशिष्टता बतावतो नथी. नाकरनां आख्यान जोतां ध्रुवा अने ढाल उपरांत कडवाने अंते 'ऊथलो' जोवा मळे छे. कडवाबंधनो आ स्वाभाविक विकास भालण पहेलो अने नाकर पछी एटलुं स्पष्ट करी आपे छे. नाकरनो कवनकाळ सं. १५७२-१६२४ (ई. स. १५१६-१५५८) निश्चित छे. ए जोतां आ समयनी पूर्वे आवी रहे. पण केटलो पूर्वे?

अहीं आपणने भालणनो दशमस्कंध उपयोगी थई पडे छे. भालणना दशमस्कंधमां नीचेनां ५ पद शुद्ध व्रजभाषानां मळी आवे छे :

		४४१नो क्रम	४९७नो क्रम
(१)	'मैया मोहे भावे दधिभात'	२१२	२५१
(२)	'व्रजको सुख समरत हो श्याम'	२१४	२५३
(३)	'कहो मैया कैसे सुख पाऊं'	२१५	२५४
(४)	'अब पढवेको आयो दिन'	२१६	२५५
(५)	'सुत में सुनी लोकमे बात'	२१९	२६५

४२७नो क्रम ए स्व. कांटावाळाए छपावेली वाचनानो छे, ज्यारे ४४१नो क्रम गुज. विद्यासभानी सं. १७७५नी हाथप्रतनो छे.* आ पांचे पदमां 'भालण'नी छाप छे. व्रजभाषाना अष्टछाप कविओनी कृतिओमां आ पांच पद क्यांय मळतां नथी. आपणा गुजराती कविओमां जूना कोई कोई कविने व्रजभाषामां पदरचना करवानो योग मळ्यो छे. सं. १५९२ (ई. स. १५३६)मां प्रभास पाटणमां वल्मीक कवि केशवदास एना 'कृष्णक्रीडाकाव्य'मां (सर्ग १४, कडी ५२-५५) व्रजभाषानी रचना आपे छे, जेने अंते 'केशवदासचो स्वामी'नी छाप छे. एनो आशय तो ए के गुजराती कविओ व्रजभाषामां पण प्रसंगोपात्त रचना करता; अने अष्टछापमांनो सुप्रसिद्ध 'कृष्णदास' तो चरोतरनो पाटीदार हतो, जेणे श्रीवल्लभाचार्यजीनुं सेवक-पद स्वीकारी मथुराप्रदेशमां गोवर्धन पर्वत उपरना श्रीनाथजीना मंदिरमां अधिकार-पद पण भोगव्युं हतुं. विक्रमनी १६ मी सदीना उत्तरार्धमां सूरदास वगेरे अष्टछापना कविओए 'व्रजभाषा'ने भाषाबल आप्युं ने ए भाषामां सेंकडो पद रच्यां. भालण पण व्रजभाषानी थयेली व्यापकताने गुजरातमां अपनावी 'दशमस्कंध'-मां पांच पद पोते ज रची यथास्थाने मूकी शोभा आपे छे.

उपरनां पांच पदोमां बीजा कविओनुं अनुकरण नथी, ज्यारे 'दशमस्कंध'नां गुजराती पदोमां व्रजभाषानी तत्कालीन कवितानी असर जोवा मळी छे. आ विशे मारा तरफथी अन्यत्र बताववामां आव्युं पण छे.†

भालण शास्त्रीय संगीत उपर काबू धरावतो हतो ए 'दशमस्कंध'-नां पाछलां पदोनी जटिल पदरचनाथी पण समझाय छे. त्यां नटनारायण रागनां (पद ४५, ३७२, ३८६, ४४९, ४६५, ४७१) पदोनो प्रकार भालणनी पूर्वे क्यांय जोवामां आव्यो नथी. भालणे यात्राओ करी छे

* प्रत नं. १५६

† जुओ मारुं 'गुजराती साहित्यनुं रेखादर्शन'—खंड १, पृ. ८९ वगेरे.

अने व्रजमांनी अष्टछापना प्रधान सूरदास कुंभनदास परमानंददास अने कृष्णदासनी कविता पण सांभळी छे–जेनी असर एना 'दशमस्कंध'मां थई छे.

अने आ रीते ए सूरदासादि कविओनो समकालीन थई रहे छे. सूरदासनो जन्म सं. १५३५ (ई. स. १४७९)मां निश्चित होई भालणनो समय—एनो मुख्यत्वे कवन-काळ—सं. १५५० (ई. स. १४९४) आसपासथी शरू थवानी शक्यता वधु छे; अने तेथी ज आ पूर्वेना एना जुदा जुदा संदिग्ध समयो हाथताळी दईने छटकी जाय छे.

आम भालणनी समयमर्यादा सं १५५०-१६०० (ई. स. १४९४-१५४४) वच्चे क्यांय आवी रहेती होई ए नाकरनो पूर्व-समकालीन बनी रहे छे.

भालणना पुत्रो

भालणने उद्धव अने विष्णुदास नामना बे पुत्र होवानुं उद्धवकृत रामायणनी स्व. कांटावाळाए छपावेली वाचना उपरथी जाणवामां आव्युं छे. अने स्व. नारायण भारतीए बताव्या प्रमाणे 'मोढपुराण'नो गुजराती पद्यात्मक अनुवाद रचनारो चत्रभुज एनो त्रीजो पुत्र हतो.* उद्धवने नामे छपायेलुं युद्धकांड सुधीनुं रामायण वाल्मीकीय रामायणने आधारे मुख्यत्वे ५०-५० कडीओनां कडवां पाडी करवामां आवेलो एक सुश्लिष्ट प्रयत्न छे. आरंभमां नीचेनी विगत जाणवा मळे छेः

'प्रथमे प्रणमुं सीतापतिने, जोडीने बे पाण;
श्रीगुरुपदपंकजने सेवुं, आपो अविचळ वाण. १

मधुसूदन आश्रम संन्यासी, समरी तेनुं नाम;
पिताने प्रेमे प्रणाम करीने, गावा हरिगुणग्राम. २'

---

* भालणना दशमस्कंधनी प्रस्तावना, पृ. ६

आ रामायणनां कर्तानां गुरुनुं नाम मधुसूदनाश्रम छे; ए उपरांत ए एना पिताने पण प्रणाम करे छे. आ बे व्यक्ति जुदी होवा विशे शंका नथी रहेती. आ रामायणनो एकसरखो प्रवाह सुंदरकांडना अंत सुधी जळवाई रहे छे. एनुं अनुसंधान युद्धकांडमां पण जणाय छे. परंतु सं. १६८७मां कोई मधुसूदन व्यासे पूर्ति करी युद्धकांडनो अंतभाग सांधी लीधो होय एम लागे छे. आ मधुसूदन आधार भट्ट जेवो कोई माणभट्ट छे अने एणे आ कृतिमां पाछळथी पोतानी ख्यात उमेरी लीधी होवानी संभावना थई शके. परंतु आ रामायणनी कोई हाथप्रत प्राप्त थई नथी अने ५०-५० कडीनां एकसरखां मापनां कडवां जोतां आ कृति पाछळ कोई अर्वाचीन सबळ हाथ कदाच होय तो ए असंभवित नहि होय. आ विषयमां निश्चित कांई अत्यारे कही शकातुं नथी. बाकी भालणसुत उद्धवदासनुं एक बभ्रूवाहन-आख्यान मळे छे जः

"कर जोडीने केहे आनंदे भालणसुत ओद्धवदास."*

बभ्रू.नी आ छेल्ली लीटी छे. ए एक सबळ पुरावाथी उद्धव भालणनो पुत्र होवा विशे शंका नथी. बीजो पुत्र विष्णुदास जाणवामां आव्यो छे. उद्धवना मधुसूदनना उमेरावाळा छपायेला युद्धकांड सुधीना रामायण पछी उत्तरकांड छपायेलो छे. छेल्ले त्यां मळे छे के—

'स्वंत पनर १५७५ पंचोतेर शुक्र पक्ष कार्तिक मास ॥
पंचमी तिथि बुधवासरे पुर्ण ग्रंथ अतीहास ॥ २१ ॥

उतरकाड संपुर्ण शुणतां उपजे मन उहुलास ॥
कर जोडी भालणसुत वीनवे नीज सेवक वीष्णुदास' ॥ २२ ॥+

आ वर्ष वार खोटां छे तेथी स्व. मोदीए आ कृतिनी प्रामाणिकता विशे शंका बतावी छे. बेशक, आ उत्तरकांड खंभातना नागर ब्राह्मण

*गु. वि. ह. लि. पु. नं. २७. +ए ज, नं. ४८५,

रामजनकुंवरनी कृति छे. रामजनकुंवरना उत्तरकांडनां २ कडवां दूर करी विष्णुदासना उत्तरकांडनां बे कडवां स्व. कांटावाळानी वाचनामां आपवामां आव्यां छे.* एटले एटलुं ज आमांथी समजाय के भालणसुत एक विष्णुदास हतो. सं. १५७५मां तिथि वार मळतां नथी, छतां एम मानी शकाय के ए विष्णुदासनो समय होय; तो एमांथी भालणना समयने पण बळ मळे एटलुं ज.

भालणने चत्रभुज करी पुत्र होवानुं स्व. नारायण भारतीए जणाव्युं छे ए सिद्ध करवुं मुश्केल छे.

आम बभ्रुवाहन-आख्यान अने रामायण-उत्तरकांडनी हाथप्रतोनी मददथी भालणने बे पुत्र होवानुं समजाय छे. आ सिवायनी जे विगतो स्व. नारायण भारतीए मेळवी छे या आपी छे ते कोई पण लिखित पुरावाथी सिद्ध थई शकती नथी. सवा चारसें, साडा चारसें वर्ष उपर थएली व्यक्तिना विषयमां दंतकथाओना बळ उपर कोई पण रीते निश्चयात्मक कशुं कही शकाय नहि.

भालणनी रामभक्ति

भालणनी कृतिओ जोतां एनी केटलीक कृतिओमां 'भालण प्रभु रघुनाथ'नी छाप जोवा मळे छे. भालणे सप्तशतीनी रचना करेली होई अने दशमस्कंधना आरंभमां 'आद्य माता' (१-३)नी स्तुति करी होई ए शाक्त हतो, तो एणे मृगी-आख्यानमां शिवमहिमा गायो होई ए शिवभक्त हतो एम एक पक्ष छे.§ वस्तुस्थितिए ए सामान्य रीते गणपति शक्ति आदिनुं मंगलाचरण करे छे, पण आत्यंतिक रीते तो ए रामभक्त छे. दशमस्कंधना ११२मा पदमां

"भालण जन गुणगान करे ते सीतापति आणी'

---

*फा. गु. स. ह. लि. पु. नं. १०२ ख

§आ विषयनी चर्चा माटे जुओ स्व. रा. छु. मोदी: भालण पृ. ५०-५२.

एम कृष्णने पण ए सीतापतिथी अनन्य माने छे. ए रामानंदी संप्रदाय-नो अनुयायी हतो एवुं आनाथी सिद्ध थतुं नथी. कारण तो ए समजाय छे के मोढ ज्ञातिना श्रीरामचंद्रजी इष्टदेव छे अने तेथी ए राम तरफ अनन्यताथी निहाळे छे.

भालणनी सारस्वतोपासना

संख्याबंध आख्यानकाव्योना लेखक भालणनी अत्यारे त्रण प्रकारनी कृतिओ मळे छे: १. सामान्य, २. मध्यम, अने ३. उत्तम. जे एनी १४ कृति प्राप्त थाय छे ते नीचे मुजब जुदा जुदा वर्गमां आवी जाय छे :

(१) सामान्य : १. भीलडीसंवाद, २. सप्तशती, ३. जालंधर आख्यान, ४. दुर्वासा आख्यान(?), ५. मामकी आख्यान;

(२) मध्यम : ६ रामविवाह, ७. ध्रुवाख्यान(?), ८. मृगी आख्यान;

(३) उत्तम : ९. कृष्णविष्टि, १०. (पहेलुं) नळाख्यान, ११. कादंबरी, १२. दशमस्कंध, १३. रामबालचरित, १४. रामायण (थोडां पद)

'बीजा नळाख्यान'नो आमां में समावेश कर्यो नथी. 'दुर्वासा आख्यान' तूटक मळे छे तेमां भालणनी क्यांय छाप नथी. 'ध्रुवाख्यान'नो आमां समावेश कर्यो छे, जोके एनी कोई हाथप्रत मळती नथी. मारी संकलित यादीनां बीजी पण प्रकीर्ण कृतिओ नोंधायेली छे, पण ए सामान्य पदप्रकार ज होई विशिष्टता अर्पनारी कृतिओ नथी.

आ बधी ज कृतिओमां नळाख्यान कादंबरी अने दशमस्कंध भालणनी शक्तिनो सबळ ख्याल आपनारी कृतिओ छे. कादंबरी लौकिक कथा होई पौराणिक आख्यानोनां स्थान न पामी शके, छतां भालणे तो एने पण आख्यान-पद्धतिमां ज गुजरातीमां उतारी छे. संस्कृत

साहित्यनी सर्वसमर्थ गद्यकथानो सामान्य सर्वभोग्य गुजराती भाषामां कडवाबद्ध आख्यानना रूपमां भावानुवाद आपी आपेलो शक्तिनो परिचय असामान्य कोटिनो छे. आवो समर्थ प्रयत्न भारतनी अन्य भगिनीभाषाओमां पण जाणवामां नथी आव्यो. एणे मूळनुं सौंदर्य जाळववानो, श्लेषोने अपनाववानो, नवा श्लेषो पण प्रसंगोपात्त योजवानो, अने एने लोक-परिचित कथावस्तुना रूपमां मूकवानो जे प्रयत्न कर्यो छे ते एनो संस्कृत अने मातृभाषा उपरनो असामान्य काबू बतावे छे. (आ विषयमां हवे पछी प्रसिद्ध थनारा 'भालण: एक अध्ययन' नामना मारा ग्रंथमां में विस्तार कर्यो छे.)

दशमस्कंध कादंबरीथी क्यांय उतरती कोटिनो छतां ए युगनो एक सबळ प्रयत्न छे. सूरदासे सूरसागरमां समग्र भागवतने पदोमां झकडी विस्तारवानो समर्थ प्रयत्न कर्यो छे, गुजरातना भीमे 'हरिलीलाषोडशकला'-मां भागवतने प्रबंधपद्धतिए उतारवा प्रयत्न कर्यो, तो भालणे सूरदासनी पद्धतिए दशमस्कंध गुजराती पदोमां उतारवानो एक प्रयत्न कर्यो. आमां त्रीजा भागनां तो स्वतंत्र पद ज छे; बाकीनां कथाने आपनारां तो सविशेष ध्रुव-वाळवाळां कडवां ज छे. कविए मूळ दशमस्कंधना शब्दोने न वळगी रहेतां पदोमां केटलुंक विशेष पण आप्युं छे. 'राधा'ना प्रसंग ए प्रकारना छे. भालणे दशमस्कंधमां 'रासपंचाध्यायी'नी रचना करी न पण होय, केमके प्रतोमां त्यां लक्ष्मीदासनी कृति मळे छे.

त्रीजी समर्थ कृति ते एनुं नळाख्यान छे. एने नामे बे नळाख्यान चडेलां छे तेमांनुं पहेलुं नळाख्यान, एनी हाथप्रतो मळती होई, एनुं ज छे अने ए एने यश अपावे एवी कृति छे. भालणे आ 'नळाख्यान'मां 'नळनूं आख्यान' एवो प्रयोग कर्यो छे. महाभारतमां आवती बधी आड-कथाओने उपाख्यान कह्यां छे. ए उपाख्यान शब्दने स्थाने भालणे आख्यान शब्दनो प्रयोग कर्यो छे. संस्कृतमां आ + ख्या (वर्णन करी

बतावयुं) ए धातुनुं आ क्रियावाचक रूप "आख्यान' छे अने 'वर्णनात्मक कथा' ना अर्थमां उद्दिष्ट छे. मध्यकालीन गुजराती साहित्यमां रामायण-महाभारत अने अन्य पुराणोनी कथाओमांथी प्रसंगो लई गुज. कविओए प्रबंधस्वरूपे कविता लखवा मांडेली. वीरसिंहनुं उषाहरण वगेरे ए कोटिनां छे. भालण बंधनी दृष्टिए नरसिंह महेतानी चातुरीओमांना ढाळनी जेम एक रूप स्वीकारे छे. जयदेवना गीतगोविंदनी अष्टपदीओमां आनां मूळ छे, केमके त्यां दरेक अष्टपदीमां ध्रुवपंक्ति छे. भालण ए परंपराए ध्रुवपंक्तिवाळां 'कडवां' स्वीकारे छे. आमांथी 'आख्यान एटले कडवाबद्ध काव्य' एवी रूढि पडे छे. बेशक, भालण पछी पण सळंग बंधनी आख्यानकथाओ गुजरात अने सौराष्ट्र बेउ प्रांतोमां वैकुंठ वगेरेए रची छे.

नळनी कथा

नळनी कथानुं अत्यारे तो जूनामां जूनुं स्वरूप सं. महाभारतना वन-पर्वमां नलोपाख्यानमां मळे छे. नळनी आ कथाने आधारे संस्कृतमां पण अनेक ग्रंथोनी रचना थई छे. आमां नैषधीयचरित, नलोदय, सहृदयानन्द अने नलाभ्युदय ए चार काव्य अने सुप्रसिद्ध नलचम्पू ए चंपूकाव्य छे. आ चारे मुद्रित थयेलां मळे छे. जैनोए पण नलनी कथा निरूपी छे. संस्कृत काव्य नलायन कोई माणिक्यचंद्रे सो सर्गनुं रचेलुं छे. एनी पूर्वे आ. हेमचंद्रना शिष्य रामचंद्रनुं नलविलास नाटक पण छे. बंने मुद्रित छे. प्राकृतमां कुमारपालप्रतिबोध गद्यात्मक ग्रंथमां अंदर नलनी कथा निरूपायेली छे.

मध्यकालीन गुजराती भाषामां पण घणा प्रयत्न थया छे. आमां सौथी जूनो प्रयत्न ते आपणा आ भालणनो छे. एना पछी तरतमां ज नाकरे नळाख्यान ए ज आख्यान-पद्धतिए आप्युं छे. नाकरनां अने खंभातना विष्णुदासनां तथा अविचलदासनां वनपर्वोमां पण नलकथा

निरूपाई छे ज; मात्र ए स्वतंत्र प्रयत्न न गणाय. खूब ज ध्यान खेंचे तेवा प्रयत्नोमां जैन कविओ वाचक मेघराजनो नलदमयंतीरास (वि. सं. १६६४), नयसुंदरनी सुंदर कृति नलदमयंतीरास (वि. सं. १६६५), समयसुंदरनो नलदवदंतीरास (वि. सं. १६७३), महीराजनो नल-दवदंती रास (वि. सं. १६१२), अने प्रेमानंदनुं सुप्रसिद्ध नळाख्यान (वि. सं. १७४२) ए मुद्रित कृतिओ छे. अप्रसिद्ध कृतिओमां वडोदरा सेन्ट्रल लाइब्रेरीमांनी 'दमयंती चउपइ,' कुतियाणाना ध्रुवाख्यानकार तुलसीसुत वैकुंठनी 'नलकथा' आ बे कृतिओ जाणवामां आवी छे. वैकुंठनो प्रयत्न पण समृद्ध छे.

स्व. मोहनलाल द. देसाईना जणाव्या प्रमाणे एक ऋषिवर्धननो 'नलदवदंतीरास' (वि. स. १५१२) भालण पहेलांनी रचना छे, पण स्व. देसाईने ए कृति जोवा मळी शकी नथी. ए मळे तो नळनी गुजराती कथाओमां ए सौथी जूनी गणाय. गुजराती भाषामां नळनी कथानो विस्तार ए एक अभ्यासनो विषय छे अने पीएच.डी.नो संपूर्ण विषय बनी रहे एम छे. भारतनी भगिनीभाषाओमां पण नळनी कथाओ निरूपायेली छे ए बधानो तुलनात्मक अभ्यास आ कथाना विकासनो साचो ख्याल आपी शके. गुजराती प्रयत्नोमां तो, उपर कह्युं तेम अत्यारे, प्राप्य जूनामां जूनो प्रयत्न भालणनो छे अने पछीना कविओए भालणना कथानकनो लाभ लीधो होय एम जणाय छे.

भालणे पोताना नळाख्याननी रचनामां ए आरंभमां ज जणावे छे ते प्रमाणे —

'नैषध चंपू महाभारतमां कवि कीरति अति लीधी,
कालंने प्रीछवा भालणे भाखाए ए कीधी. २'

—एम श्रीहर्षनुं नैषधीयचरित महाकाव्य, त्रिविक्रमनुं नलचंपू, अने महाभारत-वनपर्वांतर्गत नलोपाख्यान ए त्रण ग्रंथोमांना कथानकने

आधारे पोते नळाख्याननी रचना करी छे. वेशक, एनी नजरमां तो मुख्यत्वे–ए नळाख्यानने अंते जणावे छे तेम–

'आर्णिक पर्व तणी कथा ये सांभलि नरनारि,
पामि सुख संसारनां; पुनरपि नहीं अवतार. ५१'

—एम आर्णिकपर्व–वनपर्वनी कथा छे. –

आरण्यकपर्व प्रमाणे नलनी कथाना संक्षेपमां मुद्दा नीचे प्रमाणे छे; अ. ४९ थी ७७ मा सुधीनां ए कथा निरूपाई छे:

‘महाभारत’नी नलकथा साथे भालण, नाकर अने प्रेमानन्दनां

‘नलाख्यान’नी तुलना

[पृ. ४२-४३ थी शरू. बेकी पृष्ठांक उपरनी अ० संज्ञा ‘महाभारत’ना अध्याय अने एकी पृष्ठांक उपरनी भा०, ना० अने प्रे० संज्ञा अनुक्रमे भालण, नाकर अने प्रेमानन्दनां ‘ नलाख्यान ’ सूचवे छे.]

अ० ४९—अर्जुनना विरहे शोकग्रस्त पांडवो बेठा छे ने भीम युधिष्ठिर ज दुःखनुं कारण .कहे छे त्यां बृहदश्व ऋषिनुं आगमन अने युधिष्ठिरादिथी वधु दुखिया राजा नळनी कथानो उपक्रम.

अ० ५०—नळ निषधमां राजा हतो. भीम विदर्भमां. भीमे दमन ऋषिना वरदानथी दमयंती पुत्री अने दम, दांत अने दमन नामना त्रण पुत्रोनी प्राप्ति करी. नळ अने दमयंती समक्ष एकेकनां रूपगुणनी वातो आववाथी बंने परस्पर अनुरक्त थयां. एक वार नळ कामने दबावी न शक्यो त्यारे अंतःपुर नजीकना वनमां गयो. त्यां आवेला घणा हंसोमांथी एक हंसने एणे पकड्यो. आकाशवाणी थई के मने न मारीश; दमयंती पासे हुं तारी वात करीश. हंसो ऊडी विदर्भमां आव्या ने दमयंतीनी नजीक आव्या. कन्याओ एकेक ने पकडवा दोडी. दमयंती जे हंसनी पाछळ दोडी ते हंस मानुषवाणीथी कहेवा लाग्यो : "तुं नळने वर. एवो अमे देव-गंधर्वादिमां क्यांय नथी जोयो." त्यारे दमयंतीए पोता विशे नळने कहेवा हंसने विनंति करी. हंसे नळ पासे आवी बधी वात करी.

भालण कडवुं-१. मात्र उपक्रम. २. महाभारत प्रमाणे भीमनो प्रसंग ने युधिष्ठिर तरफथी सांत्वन–प्रभु कृष्णनी पण हाजरी. ३. बृहदश्व दुखियांनी यादी आपे छे ते महाभारतमां नथी.

नाकर-१. भीमनो प्रसंग नथी; बाकी महा० जेवुं.

प्रेमानंद-१: भीमनो प्रसंग नथी; बाकी महा० जेवुं.

भा०-४. नैषधीय चरित ने सं० महा०ने आधारे. महा०मां टूंकुं वर्णन छे. नळना माथा उपर काळा बे मस छे ते महा०मां नथी; 'नैषधीय' ने आधारे. ५. आलंकारिक वर्णन 'नैषधीय'नुं; महा०मां नथी. भालण अग्निशर्मा नामना ब्राह्मणे आवी दमयंतीने वात करवानुं कहे छे. नळ उपवनमां **आनंदभेर** आव्यो. ६. आलंकारिक वर्णन महा०मां नथी. नळ समक्ष हंस जू मनुष्यवाचाए बोल्यो. छूटो कर्या पछी हंस बदलानी वात करे छे. ७. भालण स्वतंत्र पद्धतिए प्रसग रजू करे छे. दमयंतीए हंस उपर ओढणी नाखी. त्यारे हंस बोल्यो.

ना०- कडवुं १. (चालु) 'दमंती' = दबावती एम ना० कहे छे. नैषधना भाटोए भीमने वात करी. विदर्भ देशना भाटोए नळने वात करी. २. नळ-दमयंतीने पण एकबीजाना भाटोए वात करी. उपवनमां जवानुं वगेरे सं० प्रमाणे. इंद्रसदन वगेरेनी विस्तारथी वात करे छे. दमयंतीनुं वर्णन स्वतंत्र ने हंस गयो के नहि ए विना ज स्वयंवरनी सजाई थाय छे.

प्रे०-२. नळ वीरसेननो पुत्र, पुष्कर नाना भाई सुरसेननो पुत्र. पुष्करने नळे सेनापती करेलो. नळनी पुष्करने अदेखाई थई. वनमां एणे मानसी राज्य स्थाप्युं. ३. नारदे आवी नळने दमयंती विशे मोह कराव्यो. ४. वर्णन चालु. प्रेमानंदना अलंकार स्वतंत्र. ५. वर्णन चालु ने नळने विरह-जागृति. ६. नळना विरहनु वर्णन—वनवर्णन ने हंसोनुं *आगमन ने नळे एक हंसने पकड्यो. ७. हंसनो विलाप :* **प्रेमानंदनी आगवी शक्ति.** ८. हसवचनो ने हंसे नळने दमयंतीनी माळ विशे आपेलुं वचन. ९. हंमने लावी पिंजरमां स्थान अने सत्कार. पछी छूटवा माटे विनंति अने हंसे नळनी इच्छा पार पाडवा माटेनुं वचन. नळनी 'दमयंती' विशे मागणी. १०. हंसनुं गमन. ११-१२. दमयंती

અ० ५१—દમયંતીની વિરહદશાની વાત સખીઓએ પિતાને કહી. એણે સ્વયંવર કર્યો. રાજાઓ આવવા લાગ્યા. એ દરમ્યાન નારદ અને પર્વત ઋષિનું ઇંદ્રસદનમાં જવું ને દમયંતીના સ્વરૂપ વિશે આપેલો ખ્યાલ; એવે અગ્નિ વરુણ ને યમનું આવવું. આ વાત સાંભળી સ્વયંવરમાં પોતાના સાજન-મહાજન સાથે એ ચારે દેવનું જવું. નળ પણ સ્વયંવરની વાત સાંભળી ગયો. માર્ગમાં દેવોએ નળને જોયો ને એના રૂપથી ચકિત થયા. વિમાનમાંથી ઊતરી નળ પાસે દૂત થવાની માગણી કરી. (નારદને ખબર નહોતી કે દમયંતી નળને વરવા માગે છે.)

અ० ५२—નળે દેવોને દૂત થઈ જવા વચન આપ્યું ને દેવોનો પરિચય માગ્યો. પરિચય મળ્યા પછી દમયંતીના સુરક્ષિત ભવનમાં પ્રવેશવા માટેની દેવો પાસેથી શક્તિ મેળવી. દમયંતીના ભવનમાં જતાં બધી સ્ત્રીઓ નળને જોઈ આસન ઉપરથી ઊઠી ગઈ. નળે આત્માને પૂરા કાબૂમાં રાખ્યો. દમયંતી હસીને નળને કહેવા લાગી: "સુરક્ષિત સદનમાં ક્યાંથી આવી શક્યા?" નળે દેવોના દૂત તરીકે એઓની કૃપાથી આવ્યાનું કહ્યું. અને એ ચાર દેવોમાંથી એકને વરવા જણાવ્યું.

समक्ष नळनां वखाण ने अनुरागोद्बोध. १३. हंसनुं दमयंतीने वचन. १४. नळनी पासे हंसनुं आगमन. १५. दमयंतीना स्वरूपनुं आलंकारिक वर्णन.–प्रेमानंदनुं स्वतंत्र.

भा०-८. (चालु) निरुपणप्रकार स्वतंत्र. विरहवर्णन प्रमाणमां 'नैषधीय'ने आधारे. ९. महा० ने अनुरुप. नारद-पर्वत इंद्रसदन गया. १० थी १९ सुधीनी कडीओ भालणनी स्वतंत्र. १०. दीनता वर्णवी छे ते भालणनुं उमेरण.

ना०- ३. भीमकनी कंकोतरीथी नळ सोंड्यो. लोकपालोने मात्र जाण थई. अंदर अंदर विचार करी नळने दूत थवा माटे याचना करवा आव्या.

प्रे०-१५. दमयंतीनी विरहवेदना—प्रेमानंदनुं स्वतंत्र; ने भीमने राजमाताओ दमयंतीनी जाण करवां स्वयंवरनी सजाई ने सुदेवने नळ पासे कंकोतरी लई मोकलवानुं. १६. सुदेवे नळने पत्र आप्यो ने नळे जान सोंडाडी. त्यां हंसनां शुकन ने नळने आपेली द्यूत न रमवा वगेरेनी शिखामण ने हंसे पोताना पूर्वभवनी कथानुं करेलुं वर्णन. नळनुं विदर्भमां गमन ने त्यां रहेला नारदनुं स्वर्गना देवोने तोफान कराववा स्वर्गमां जवुं. १८. नारदनी चारे देवोने चडामणी. चारे देवनुं विदर्भ सहगमन. मार्गमां नळ मळ्यो. १९. देवोओ समझावटथी नळने दूत कर्यो.

भा०- १०. (चालु). महा० अनुरूप, पण कडी १२-२१ नैषधीयानुरूप. नळने कोई जोई शक्युं नहि अेम भालण कहे छे. ११. भालण 'नैषधीय' ने अनुसरी टीखळ करे छे. पछी नळ प्रगट थाय छे. कडी ६-१४ स्वतंत्र. नळ पोतानुं नाम नथी कहेतो. पछी ४३-४४ नैषधीय प्रमाणे. त्यां ३८मां पोतानुं नाम कहे छे. दमयंती 'पोते दीकरी छे' एवी देवोने स्तुति करे छे.

ना०- ३. (चालु). नळने देवोओ दिव्यचक्षु आप्यां. नळे पोतानी निंदा दमयंती समक्ष आलंकारिक रीते करी ते स्वतंत्र. दमयंती-वाक्य पण स्वतंत्र. देवना अनुचर परोक्ष रीते हाजर हता.

अ० ५३—दमयंतीए तो नळनी ज प्रीति याची. हंसोना वचनना दाहनो ख्याल. नळने कहे छे, जो तुं मने नहि वर तो हुं जल विष अग्निमां प्रवेश करीश यां गळे फांसो दईश. नळे कह्युं के हुं तो मानुष छुं. देवोनुं विप्रिय करतां मृत्यु मळे. आमांथी मने बचाव. त्यारे रडतां रडतां दमयंतीए उपाय बताव्यो के तमे पांचे जण स्वयंवरमां आवजो, तेओमांथी हुं तने वरीश. नळे आवी दमयंतीना सदननी बधी वात देवो पासे आवी कही.

अ० ५४—स्वयंवरमां राजाओ आव्या. दमयंती रंगमंडपमां आवी. राजाना परिचय बधने सरखी आकृतिना पांच पुरुषोने जोया. पांचेने ए नळ मानी रही. देवोने मारे केम ओळखवा हवा! स्थविरोए कहेलां देव-चिह्न याद कर्यां पण ए पण आमां जोवामां न आव्यां. देवोने शरणे जई नमस्कार करी नळनी ओळख मागी. तरत ज देवोथी नळ, देवचिह्नोना भेदे अलग देखायो. नळने दमयंती वरी. देवोए वरदान आप्यां: इंद्रे-यज्ञमां प्रत्यक्ष दर्शन ने अनुत्तम गति; अग्नि—धारे त्यारे अग्नि प्रगट थवानुं अने आत्मप्रभ लोकनी प्राप्ति; यमे—अन्नरस ने धर्म पर परम

प्रे०-१९. (चालु) देवोए जोगीनो वेश लेवडावी नळने मोकल्यो. पाछळ एक अनुचर पण देवोए मोकल्यो. नळ ए दूतने नथी जोई शकतो. नळे राजभवनमां दमयंतीने जोई. एना सौन्दर्यथी ए मुग्ध थयो. 'चार देवोमांथी कोना भाग्यमां आ रत्न जशे' एनो विचार करे छे. २०. दासी साथे वाळ ओळवा बेठेली दमयंती अरीसामां जुए छे त्यां नळनुं सुंदर रूप जुए छे. ते छतां बहार जोतां नजरे नथी देखातो. दमयंतीनी स्तुतिथी नळ प्रगट थाय छे ने एनो बेरागीनो वेश जोई प्रश्न करे छे. प्रेमानंदनुं अहीं स्वतंत्र निरूपण. २१. पोते देवदूत थईने आव्यानुं नळ कहे छे. नळ केटलीये प्रलोभनात्मक वात करे छे; पोतानी पुष्कळ निंदा करे छे. पोते ज नळ छे ए वात नळ कहेतो ज नथी.

भा० उपर ९२मो अध्याय सामेनी नोंध जुओ :

ना०-३. (चालु) दमयंतीए नळने 'तुं नहि वरतो' नल-अग्नि-विषादिक करवानुं कहयुं छे. दमयंतीए 'स्वयंवरमां तने वरीश' एम सं०मां कहयुं छे ने नाकरे-आखो प्रसंग ज उडावी दीधो छे.

प्रे०-२२. दमयंतीनी नळ विशे ज लगनी ने एने ज वरवानो आग्रह. २३. देवो परण्या विना नहि ज छोडे एवुं नळनुं कथन—ने दमयंतीनुं बेभान थवुं. नळे आवीने देवोने दमयंतीनो ख्याल आप्यो. चारेये नळनुं रूप धरी जवानो नळ साथे संकेत. नैषध आव्यानुं माता दमयंतीने कहे छे. ने स्वयंवरमां सांतरी थई जवानी शिखामण ने तैयारी.

भा०- जुओ उपर ९२मा अध्याय सामे नोंध. आठ वरदाननी प्राप्ति. नळना कंठमां वरमाळ पहेरावीने विदाय. यज्ञयागादि ने संततिप्राप्ति इंद्रसेन ने इंद्रसेना.

ना०-३. (चालु). स्वयंवरमां देव आव्या. नळ पण शणगार सजी आव्यो. वेळा थतां सौ राजवी आव्या. पांचे नळ जोतां भीमने दमयंतीए जाण करी. दमयंती सीधी स्तुति ज करवा लागी. देवोने कठण वाक्य कह्यां त्यारे एक ज नळ दीठो. ४. देवोए वरदान आप्यां.

स्थिति; अने वरुणे—पाणी न होय त्यां पाणी अने उत्तम गंधवाळी माळा;-आ आप्यां. परणी आवी नळे निषधमां यज्ञयागादिक कर्या.

अ० ५५—वरदान आपी लोकपालो जता हता त्यां कलि अने द्वापर मार्गमां मळ्या. शक्रने एणे पोते वरवानुं कह्युं. शक्रे स्वयंवर थई जवानुं कह्युं. कलि कहे: देवोने मूकी ए नळने वरी, माटे मारे एने मोटो दंड देवो जोईए. देवोए नळनां वखाण कर्यां ने कह्युं: आवा नळनो द्वेष करे ते नरकमां पडे. कलिए देवोना गया पछी द्वापरने कह्युं के कोप संकेलातो नथी. हुं नळने राज्यभ्रष्ट अने भैमी-वियोगी करीश. तुं पासामां आवी रहेजे. (क्षेपक भागमां इंद्रसेन—इंद्रसेनानी उत्पत्ति)

अ० ५६—कलि द्वापरने वात करी निषध देशमां आवी नळनुं छिद्र जोवा लाग्यो. एक वार मूत्र करी नळ संध्या करवा बेठो ने पादशौच करवुं रही गयुं-ए तके कलिए नळना देहमां प्रवेश कर्यो. कलिए पुष्करने जुगार रमवा कह्युं ने कह्युं के पासाना द्यूतमां नळने तुं जीतीश. कलि वृष थई पुष्कर पासे गयो. पुष्कर नळ पासे गयो. नळ वचन ठेली न शक्यो. कोई एने वारीये न शक्युं. बधां दमयंतीने मळ्यां; कांइ न थयुं. सौ चाल्यां गयां. नळनो पराजय.

प्रे०-२४. स्वयंवरनुं प्रेमानंदनुं आगवुं वर्णन. नामोनी वाचना. बूढा राजाओनुं वर्णन अने हास्यरसनी जमावट प्रेमानंदनां आगवां. २५. स्वयंवरमां दमयंतीनुं आववुं. २६. नळना आगमननुं कडवुं प्रसंगने खूब दीपावे एवुं. २७. दमयंतीनुं रोचक वर्णन. २८. नळ नजीक दमयंतीनुं जवुं ने पांचेनां सरखां रूप जोतां क्षोभ. देवोमां परस्परनी ईर्षाथी शापदान ने चारेनुं बबापणुं ने पछी शापने फोक करवानुं. नारदना कपटनी जाण ने देवोनी स्तुति—स्वतंत्र रूपमां, ने प्रगट थये नळनी प्राप्ति.

भा०-११. (चालु) सं० महा०ने अनुरूप. कलिने नैषधना पवित्राचारी लोकोमां स्थान नथी ए वर्णन भालणे रोचक रीते जरा विस्तारथी आप्युं छे.

ना०-४. (चालु) कलि-द्वापर अने देवो वच्चे वार्तालाप—ज्यां देवो कहे छे के अमे खूब उपाय कर्या, पण कंई फाव्या नहि.

प्रे०-२८. (चालु) नळनी जान बोलाव्या पछी मार्गमां ज नारदे प्रेरेलो कलियुग मळ्यो—कलिनुं रोचक वर्णन—दमयंतीने वरवानी मनसा नष्ट थतां नळ-दमयंतीने कष्ट आपवानी कलिनी प्रतिज्ञा. नळनुं स्वनगरमां आववुं–संततिप्राप्ति. १००० वर्ष पसार थयां, पण कलिनो ए स्थानमां अप्रवेश.

भा०-११. (चालु) लघुशंकाना शौचनी खामीए कलि प्रवेश. पछी पुष्कर पासे जवानुं अने नळ साथे द्यूत रमवा जवानुं सूचन. जुगार शरू थतां द्वापर पासामां पेठो ने कलि गोधलो थई आव्यो. पुष्कर गोधला पर बेसी आव्यो ते गोधलो हारी आव्यो छे एम नळे मान्युं. १२. द्यूतखेलनुं वर्णन रोचक. ?

ना०-४. कलिद्वापर निषध देशमां आव्या ने बार वर्ष रह्या पछी लघुशंका करी घूंटी धोळी रही जता कलिनो सांधी प्रवेश. पुष्करने चडामणी. अकिंचन पुष्करने कलि गोधलो आपे छे. पुष्कर गोधलो लई नळना दरबारमां जाय छे. रमतमां कलि पासामां ने द्वापर सोगठामां.

अ० ५७—दमयंतीओ नळने हारेलो जोई बृहत्सेनाने कह्युं के अमात्योने बोलावी द्रव्य एकठुं करी टाळवानुं कहे. दमयंतीए समझाव्यो पण समझ्यो नहि. पछी घेर आवी गयेली दमयंतीए बृहत्सेना द्वारा सारथिने बोलाव्यो ने कह्युं के सर्वनाश थवा आव्यो छे. माटे आ बे बाळकोने कुंडिनपुर मुकी आवो. ए गयो ने अयोध्या जई रह्यो; ऋतुपर्णनो सारथि थयो.

अ० ५८—दमयंती सिवाय कांई न रह्युं त्यारे पुष्करे दमयंतीने होडमां मूकवा कह्युं. दुःखी अने शोकयुक्त थई एक वस्त्र सिवाय बधुं उतारी नळ चाली नीकळ्यो. दमयंती पण पाछळ एक वस्त्रे चाली नीकळी. नैषधपुर बहार त्रण दिवस ने रात्रि रह्यो. पुष्करे पडो वजडाव्यो के नळने जे संघरशे तेनो वध थशे. दंपती चाली नीकळ्यां. जळ मात्र पी त्रण रात्रि नगर नजीक रह्यां. घणा दिवसो चाल्या हिरण्यसदृश शकुनि पक्षी जोयां. वस्त्र एओ उपर नाख्युं ने ए लई पंखी ऊडी गयां ने कह्युं के अमे पासा छिये. नळे दमयंतीने दक्षिणापथमां जवा कह्युं. दमयंतीए छोडी जवा ना कही. ने थाक उतारवामां सहायक थवा कह्युं. इच्छा होय तो बंने विदर्भ तरफ जईए एम दमयंतीए कह्युं. विदर्भराज मान आपशे एम पण कह्युं.

प्रे०-२८. (चालु). सायंसंध्या वखते पग धोतां पाहानी कोरी रही गई ने कलिए नळना देहमां प्रवेश कर्यो. २९. कलि वृषभ थई रह्यो ने वृषभवाहन करी पुष्कर नळना दरबारमां आव्यो. द्यूतखेल. ३०. द्यूतखेल चालु.

भा०-१२. (चालु). दमयंतीनी समझावणी, पण निरर्थकता. १३. पूर्ण पराजय ने दमयंतीनुं वार्ष्णेय द्वारा कुंडिनपुर तरफ बे बाळकोने विदाय करवानुं. वार्ष्णेय ऋतुपर्णने त्यां अयोध्यां जई रह्यो.

ना०-४. (चालु). दमयंतीए महाजनने तेडाव्या. नव दिवस जुगार चाल्यो. पछी प्रधानने बोलावी छोकरां कुंडिनपुर मोकली आप्यां, ने बापने संदेशो कही मोकल्यो.

प्रे०-३०. नळनो पराजय. दमयंतीने पीयर जवा भलामण. राणीनो नकार. बेऊ बाळकोने पीयर तरफ विदाय करवानुं. ३१. मोसाळ तरफनी विदाय वेळानुं दमयंतीनुं करुण गान: प्रेमानंदनुं आगवुं. हुदेव साथे बाळकोनी विदाय.

भा०-१३. (चालु) सर्व रीते पराजय ने एक वस्त्रे नळनी विदाय. दमयंती पाछळ गई. त्रण दिवस पुर नजीक वास. वनमां तकलीफ. १४. भालण अहीं दुःखनुं वर्णन रोचक रीते आपे छे. १५. कनकनी पांखवाळां पंखी जोयां. ए पकडवा वस्त्र नाख्युं ने ए उपाडी ऊडी गयां. पीयर जवा शिखामण. ते महा० प्रमाणे.

ना०-४. (चालु) दमयंतीने होडमां मूकवानुं कहेलुं. ५ त्यांथी नीकळी त्रण दिवस पुर नजीक—सं० महा० ने अनुरूप. त्यां हंस कनकनो आव्यो एवुं वर्णन—दमयंती राम वगेरेनां दुःख वर्णवे छे.

प्रे०-३२. पुष्करे पडो वजडाव्यो होई कोई वननें मददगार बनतुं नथी. एक एक वस्त्रे नीकळी पडवुं. कलियुग तरफथी भय अने त्रास उपजाववानी क्रिया: प्रेमानंदनुं पोतानुं. एक मानसरोवर आगळ जवुं ने वांका वळी पाणी पीवुं. मच्छ शोधवानो प्रयत्न. त्रण मच्छने पकडी दमयंतीने सोंपवा. बीजा पकडवा जाय छे. कलि सर्प थई मत्स्योने खवडावे छे. नळने मत्स्य न मळतां पेलां ३ मत्स्य बेउ मळी खाय ए भावनाए

अ० ५९—त्यांथी चालतां एक सभामां आव्यां. थाकेलां बने सूई गयां, पण नळने ऊंघ न आवी. बंने एक वस्त्र लपेटी रहेलां. नळे छूटुं कापवा विचार कर्यो त्यां एक छरी मळी. एनाथी वस्त्र कापी नाठो; फरी आव्यो: नळनी दमयंती विशे आदरयुक्त शोचना. छेवटे आवी आवी एकली त्यजी नासी छूट्यो.

अ० ६०—दमयंती जागीने एकली थतां विलाप करवा लागी. मश्करी करी हशे, एम मानी एम न करी प्रगट थवा विनवणी करे छे. दुःख आपनाराने दमयंती शापे छे. त्यां एने अजगर ग्रसे छे. एवे एक व्याध आवे छे ने दमयंतीने बचावी ले छे. व्याधे कुबुद्धि करी त्यारे पतिप्रेम प्रतिज्ञाथी शाप आप्यो ने व्याध बळी गयो.

दमयंतीनी पासे आवे छे ए पहेलां तो दमयंतीना अमृतस्रविया हाथमांथी मत्स्य जीवतां थई कूदी जाय छे. दमयंतीने पतिनो भय. नळे मानी लीधुं के दमयंती *मत्स्य खाई गई.* हंसनी *शिखामणनी नळने याद.* ३३. पीयर जवानी नळ सलाह आपे छे: पक्षीओनो प्रसंग. नाखेलुं वस्त्र लई वग ऊडी जाय छे. एक ज वस्त्र साथे लपेटी आगळ वधे छे.

भा०-१५. (चालु) एक सभा नजीक आव्यां. त्यां आराम लेवा सूतां. १६. दमयंती निद्रामां हती. नळ जागतो हतो. वस्त्र कापवा विचार आवतां नजीकमा एक खड्ग जोयुं ने वस्त्र वधेरी वगेरे महा०ने अनुरूप.

ना०-६. वचे एक तळाव आव्युं. त्यां मच्छ खावानो दमयंतीने भाव थयो. सुंदर रीते टूंकमां प्रसंग-निरूपण. दमयंतीना हाथमां मच्छ सरकी गयां, पण कहेः क्षुधा लागी ने हुं खाई गई. ने नळनो ठपको. नाकरमां आ वधुं नवुं. पछी चोवटुं (= सभा) जोयुं. त्यां सूतां. वस्त्र वधेरी मेली गयो. त्यां आवजानो प्रसंग मूक्यो छे.

प्रे०-३३. (चालु). महावननी जंग-जाळमां संध्याकाळे आव्यां, ने भूख्या बेहु जणां एक वृक्षनी नीचे बेठां ने पांदडां पाथरी सूतां. दमयंती ऊंघी गई ने नळे वस्त्र कापी नासी छूटवा विचार कर्यो. त्यां कलियुग कातुं थई आव्यो ने नळे वस्त्र वचेथी कापी नाख्युं ने भाग्यो. सात वार अेणे *आवागमन कर्युं अने नासी छूट्यो. सवार पडशुं त्यां सुधी नासतो ज रह्यो.* ३४. नळनो विलाप ए प्रेमानंदनी आगवी कृति छे. अहीं ए खूब ज प्रसंगोचित छे. अहीं कर्कोटक नागनो प्रसंग शरू थई ३५मामां लंबाय छे अने नळ बाहुक स्वरूपे ऋतुपर्णने त्यां अयोध्या जई रह्यो त्यां सुधीनुं कथानक आवी जाय छे.

भा०-१६. (चालु) 'देशांफेर'मां जागेली दमयंतीनो विलाप. भालणनी स्वतंत्रकृति. वाकीनुं महा० प्रमाणे. १७. अजगर-ग्रसन वखतेनो विलाप पण स्वतंत्र. १८. सं० महा०ने अनुरूप.

अ० ६१—नीडर थई घोर वनमां भटकवा लागी ने पछी विलाप करवा लागी. विलापमां शार्दूलने विनंति करे छे—पर्वतने पूछे छे अने पोताना दुःखनी कहाणी कही जाय छे. उत्तर दिशामा त्रण अहोरात्र जतां एक आश्रम जोयो. तापसोए त्यां सत्कारी. पूछतां त्यां स्वदुःखवर्णन कह्युं. थोडा ज रोजमां तुं नळने मळीश कह्युं ने तापसो वगेरे बधुं अदृश्य थई गयुं. त्यांथी आगळ जतां महासार्थ (वणजाराओनो संघ) मळ्यो. ए नदी ऊतरतो हतो. एमां वचे ए मळी गई. एने जोई केटलाक माणसो नासी छूट्या, केटलाक चितामां पड्या, केटलाक हसवा लाग्या. तुं यक्षी राक्षसी वनदेवी— शुं छे एम पूछवा लाग्या. दमयंतीए पोते मानवी छे एम टूंकमां कह्युं. शुचि नामना सार्थवाहे रस्तामां नळने नथी जोयो एम कह्युं. सार्थ चेदिराज सुबाहुना राज्यमां जतो हतो एनी साथे नीकळी.

अ० ६२—आ प्रमाणे वणजार साथे जतां केटलेक दिवसे एक रम्य सरोवर आव्युं. पश्चिम कांठे वणजारे वासो कर्यो. मध्यरात्रे हाथीओनुं टोळुं आव्युं; खूब नासभाग थई; भारे नाश थयो. सवारे बचेलांने जोई शोक करवा लागी. त्यां जे ब्राह्मणो बचेला तेओनी साथे ए सुबाहुना नगरमां गई. [वणजार दमयंतीने छोडी चाली गई एवुं महा०मां नथी.] गांडी जणातां एने पुरवासीओए जोई. राजमाताए जोई त्यारे एने बोलावी मंगावी. दमयंतीए पोते सैरंध्री होवानुं कह्युं ने नाम पाड्या विना टूंकमां पोतानी विनवत्यानी कही. दमयंतीए शरतो करी रहेवा कबूल्युं. राजमाताए दमयंती सुनंदा नामनी पोतानी पुत्रीने सोंपी.

ना०-७. दमयंतीनुं रुदन गीत. पछी अजगरनो प्रसंग. त्यां उदरमांथी कलियुगनुं वचन-ए नाकरनी स्वतंत्र कल्पना, सूर्यनी स्तुति कीधी अने कामासक्त व्याध मरायो. 'बाळीने कीधो भस्म.'

प्रे०-३६. वैदर्भी जाणे छे के नळे मश्करी करी हशे. एना कालावाला. ३७-३८. वैदर्भीना दुःखनुं वर्णन. बंने प्रेमानंदनी आगवी प्रतिभाभर्यां गीत छे. त्यां अजगरे एने ग्रसवा मांडी. व्याधे अजगर मारी छोडावी. ३९. व्याधनी दमयंतीमां थयेली आसक्ति. ए प्रसंग पण प्रेमानंदनो रोचक. शापथी भस्म थयो.

भा०-१८. (चालु) नानुं वनवर्णन. १९. महा०ने अनुरूप. २०. पण महा०ने अनुरूप. तापसना आश्रमनी वात. गीत सुंदर रीते रजू थाय छे. २१. संघने जवाब महा०ने अनुरूप.

ना०-८. दमयंतीनो विरह-विलाप. ऋषिना आश्रमनुं दर्शन. महा० अनुरूप. अने वणजारानी पोठ मळी.

प्रे०-३९. (चालु) दमयंतीनो आपघात करवानो प्रयत्न. त्यां कलिए मायाथी तापसनो आश्रम सरज्यो. त्यां नळनुं क्षेम साभळ्युं. त्यां फल जळ लीधां, आराम कर्यो ने निद्रा लीधी. ४०. जागी जुए छे त्यां तापसनो आश्रम नथी मळतो. मुनिओ दमयंतीने पापे नाठा-एम पोते मान्युं. त्यां वणजार जोई.

भा०-२१. (चालु) महा०ने अनुरूप. २२. आरंभमांनी वणजारनी पीडा महा०मां नथी. त्यां पछी बीजा पण ब्राह्मण मळ्या. एमनी साथे दमयंती सुबाहुना शहेरमां गई. बाकीनुं सं. महा०ने अनुरूप. 'देशीफेर'थी आवतुं भालणनुं रस्तो विषयक वर्णन रोचक छे.

ना०-८. (चालु) वणजारानी पोठ मळी. ९. दमयंतीए पोते नळपत्नी होवानुं कह्युं ए नाकरनुं स्वतंत्र. रात्रि शांतिथी गई. पछी कलियुगे गजरूपे आवी हेरान कर्या ने आपोपे गज चाल्यो गयो. माणसो कहे: आ रंडानां काम ने दमयंती त्यांथी नाठी. त्यां एक श्वासे नासतां अंते

अ० ६३—पेली बाजु नळराजाए वनमां जतां आग जोई एमां 'पुण्यश्लोक नळ, बचाव' एवी राड सांभळी नळे अग्निमां प्रवेशी बळता नागने बचाव्यो. ब्रह्मर्षिना पोताने थयेला शापनी नागे वात करी. दश पगलां गण, हुं तारुं श्रेय करुं, एम कही दसमे पगले कर्कोटके नळने दंश दीधो. नळ बाहुक-रूपे दूबडो थई गयो. दूबडापणाना लाभ बतावी कर्कोटके नळने शांत कर्यो. हवे कळियुग तारा देहमां कष्टथी रही शकशे एम कह्युं. नागे एने ऋतुपर्ण पासे जवा अने अश्वहृदयना बदले अक्षहृदय मेळववा कह्युं. ने एक जोडी कपडां आप्यां छे जे पहेरवाथी नळनुं असल रुप थवानुं कह्युं. नाग अंतर्धान थइ गयो.

अ० ६४—नळ ऋतुपर्णना नगरमां दसमे दिवसे पहोंच्यो ने राजाने मळी पोते शुं शुं जाणे छे ए जणावी सोना पगारे घोडारमां रह्यो. वार्ष्णेय अने जावळ एना हाथ नीचे सोंपाया. हवे त्यां रहेतो नळ दररोज एक श्लोक कवनुं सा० वगेरे भण्या करे. जावळे एने एक राते पूछ्युं के आ कोनो शोक करे छे. बाहुक कहे. एनो एक एवा नरनी वात कहुं छुं के जेने पोतानी पत्नीना विरहनुं दुःख छे.

સુબાહુના રાજ્યમાં આવી. છોકરાંનાં તોફાન. રાજમાતાએ એમાંથી બચાવી. ૧૦. રાજમાતા સમક્ષ દમયંતી વિસ્તારથી વાત કરે છે.

પ્રે૦-૪૧. વણજારા અને દમયંતીનો સંવાદ. ત્યાં ગજયૂથ પાણી પીવા આવ્યું ને 'વેપારી માર્યા મગદળી.' ૪૨. વેપારીઓને કાળિયુગે દમયંતી દેખાડી ને એમણે એને ત્રાસ આપ્યો. અબળા ત્યાંથી નાસી છૂટી. એમ કરતાં સુબાહુના નગરમાં ઉજરડાયેલી દશામાં આવી પહોંચી. છોકરાં હેરાન કરતાં હતાં તેમાંથી રાજમાતાએ બચાવી લેવડાવી. દમયંતી માસીને ઓળખી ગઈ, પણ એ લોકો ન ઓળખી શક્યા. ૪૩. દમયંતી પોતાની વિતક-કહાણી કહે છે—માત્ર પોતાનો પરિચય નથી આપતી. ઇંદુમતી(માસીની છોકરીનું નામ)એ આપેલો હાર ટોડલો (કાળિયુગ એ રૂપે) ગળી ગયો ને આળ ચડયું એ કથાનક પ્રેમાનંદનું આગવું છે. ૪૪. આળનો પ્રસંગ વિગતથી. ૪૫. દમયંતીનું પ્રભુ તરફનું આરજુ-ગીત—કરુણભાવથી ભરેલું હૃદયંગમ, પ્રેમાનંદનું આગવું.

ભા૦-૨૩. ભાલણ કોઈ તાપસનું નામ નથી આપતો. ભાલણ પણ 'વસ્ત્રજુગ' આપ્યાનું કહે છે.

ના૦-૧૦. નાકર એ તાપસનું નામ નારદ આપે છે. વધું મહા૦ને અનુરૂપ. આખું કડવું કર્કોટક-નળ સંવાદરૂપે.

પ્રે૦-પ્રેમાનંદે પૂર્વે ૩૪-૩૬ કડવાંમાં કર્કોટકનો પ્રસંગ સાચવ્યો છે. પ્રેમાનંદ ત્યાં (૩૬મું કડવું) ત્રણ વસ્ત્ર આપ્યાનું કહે છે (૧૧મી કડી), જેની રાજાએ પહેરી પરીક્ષા પણ કરી લીધાનું સૂચવાયું છે.

ભા૦-૨૩. (ચાલુ) મહા૦ને અનુરૂપ. પરંતુ પગાર 'દશ સહસ્ર' પરઠ્યો એમ ભાલણ કહે છે.

ના૦-૧૨. નળ સાત દહાડે અયોધ્યા આવ્યો ને હયશાળાનું સ્થાન પામ્યો. રાતે નળ શ્લોક કરે છે. સમોવડિયા આવીને નળને એ વિશે પૂછે છે. નળ બીજા કોઈ રાજાની એ વાત છે એમ સમાધાન કરે છે.

પ્રે૦-૩૫. (ચાલુ) નળ અયોધ્યામાં આવ્યો ને ઋતુપર્ણને મળ્યો વગેરે ટૂંકમાં. નળ જે શ્લોક ભણે છે તે **આતપે ધૃત્તિયતા૦** છે. મહા૦માં જુદો શ્લોક છે. જીવલે કે કોઈએ આવો આનો ખુલાસો માગ્યો એવું પ્રેમાનંદ કહેતો નથી.

अ०६५.—नळनुं राज्य जतां दमयंती साथे नीकळी जवानी वात सांभळी भीमके ब्राह्मणोने देशावरमां मोकल्या. सुदेव चेदीपुरीमां गयो. पुण्याहवाचनना प्रयोग वखते सुनंदा साथे ऊभेली दमयंतीने जोई नक्की करी पछी सुदेवे खबर अंतर पूछी. एकांतमां सुदेव पासे रडती एने जोई सुनंदाए माताने सैरंध्रीना रडवानी वात कहेवडावी. राजमाताए सुदेवने बोलावी पूछतां सुदेवे फोड पाडी ओळखाण आपी.

अ० ६६—सुदेवे टूंकमां कहयुं ने भ्रूना मध्यमां रहेला 'पिप्लु' (तल)नी वात करी. बहेनर्नी दीकरी जाणी बधां राजी थयां. राजमातानी अनुमति लई मोटी रक्षक-सेना साथे सुदेव दमयंतीने लई विदर्भ जवा नीकळ्यो. विदर्भमां आव्यां; शांति थई. बाळको मळ्यां.

अ० ६७—दमयंती माताने नळनी भाळ मेळवी लाववा प्रेरे छे. माता राजा भीमकने कहे छे ने राजा ब्राह्मणोने देशावरमां नळनी भाळ मेळववा मोकले छे. दमयंती बे श्लोको कहेवडावे छे. आनो जे जवाब

भा०-२४. महा०ने अनुरूप. केटलाक ब्राह्मणो पाछा आव्या अने नळ-दमयंतीनी क्यांय भाळ मळी नहि एम कह्युं—ए भालण उमेरे छे. (महा०प्रक्षेपमां आ विगत छे खरी.) २'५. महा०ने अनुरूप.

ना०-१३. टूंकमां पण महा०ने अनुरूप. सुदेवना आगमननुं माळखुं कविए सुंदर बांध्युं छे. तल होवानुं सुदेव ज मनमां विचारी ले छे. पाणी भरनारी स्त्रीओने जतां आवतां जुए छे. पछी पाछळ जाय छे ने दमयंतीने नाम पाडी बोलावे छे. दमयंती वात सांभळी राजी थाय छे.

प्रे०-४६. सुदेवे नळ-दमयंतीना बाळकोने माधवी-केशवी नामनी दासीओ साथे विदर्भ लावी भीमकने सोंप्यां. अहीं बधांनी सलाहथी राजाए सांभळेली वातोने आधारे एकला सुदेवने रवाना कर्यो. ४७. सुदेवनी रथयात्रानुं वर्णन—सारुं कर्युं छे. सुबाहुना नगरमां ए आव्यो ने त्यां ए टहेल नाखतो फरतो तेवामां एनी नजर दमयंती उपर पडी. बंनेए एकबीजाने जोयां: बंने विचारमां पडी गयां. गुरुए दमयंतीने ओळखी. भामिनीना भाल उपर विधिए 'भानु' (तल) निर्म्यो हतो. एने दमयंती केशनी लटमां गोप्य राखती वेणी खसी ने ए देखायो. नेत्रां पडे एम बंने रडी पड्यां. दमयंतीने मूर्छा थई. ए पछी ४८. बधांना मेळापनो करुणभाव हृदयंगम. ४९. राजमाताए करेलो शोक—ने क्षमायाचना.

भा०-२५. (चालु) भ्रू-मध्ये तल. सुनंदाए धोई जोयो. (प्रेमानंदे पण धोई जोवडाव्यो छे.) २५. दमयंतीनु आपत्तिवर्णन टूंकमां—भालणनुं पोतानुं उमेरण.

ना०-

प्रे०-५०. भीमकनी नगरीमां दमयंती ने सुदेव आवी पहोंच्यां—ए वखतनो हृदयंगम सुदेव-दमयंती संवाद. ५१. बंने बाळको पण मळ्यां. दमयंतीनुं पति-विरहमां व्रतपालन.

भा०-२६. दमयंती सुदेवने बरोबर समझावे छे. २७. राजा भीमक ब्राह्मणोने देशावरमां नळनी भाळ मेळववा रवाना करे छे. मातानुं वचन भालण नथी आपतो. *नळ राजानी भाळ न मळी तेवा विप्रो पाछा* आव्या विशे महा०मां नथी.

आपे तेनी पोताने तरत माहिती पहोंचाडवा ब्राह्मणोने कहे छे. ब्राह्मणो ए श्लोको भणता देशावरोमां फरवा लाग्या.

अ० ६८—घणे लांबे वखते पर्णाद विदर्भमां आवी दमयंतीने अयोध्या नगरीमांना बाहुके श्लोकना जवाब आप्यानुं कहे छे. दमयंतीए माता पासे जई पिताने खबर न पडे तेम दमयंतीनो फरी स्वयंवर आवती काले ज छे एवुं अयोध्या कहेवडाववा सुदेवने मोकले छे. सुदेव ऋतुपर्णने जई कहे छे.

अ० ६९—ऋतुपर्णे वात सांभळी बाहुकने बोलावी तावडतोब विदर्भ लई जवा कह्युं. नळनुं हृदय चिराई गयुं—अथवा मने बोलाववा आ युक्ति होय एम नळे मान्यु. पणे राजाने कह्युं के एक ज दिवसमां पहोंचाडी दईश. पतला घोडा पसंद करी, रथ जोतरी चालवा मांड्युं. वार्ष्णेयने सूत तरीके साथे लीधो. रथनी गति जोई वार्ष्णेयने शंका थई के रखे आ नळ होय! बंनेनां ज्ञान तो सरखां ज छे.

अ० ७०—रस्तामां ऋतुपर्णनुं उत्तरीय पडी गयुं. पणे ए लई लेवा कहेतां बाहुके कह्युं ए तो योजन जेटले दूर पड्युं छे. त्यां रस्तामां बहेडानुं झाड आव्युं. ऋतुपर्णे एनी गणतरी कही एनी खातरी करवा बाहुकने कह्युं. बाहुके रथ रोकी गणतरी करी तो ए साची नीकळी. मोडुं थयानुं ऋतुपर्णे कहेतां बाहुके कह्युं के वार्ष्णेयने लई चालता थाओ; हुं तो गणीश ज. त्यां बंनेए मार्गमां अक्षहृदय अने अश्वहृदयनी आप ले करी. ए ज वखते देहमांथी कलि नीकळी गयो. विषवमन करता कलिने शाप आपवा नळ तैयार थयो त्यारे कलिए कृपा मागी ने नळे एने बहेडाना झाडमां स्थान आप्युं. कलियुगे वचन आप्युं के जे कोई तारी कीर्ति गाशे तेने हुं नहि नडुं. कलिने ऋतुपर्णे के वार्ष्णेये जोयो नहोतो.

ना०-

प्रे०-५१. (चालु) सुदेव टहेल नाखतो अयोध्यामां पहोंचे छे त्यां एने कोई उत्तर नथी आपतुं. ए हयशाळमां जई चडे छे त्यां एणे कूबडा ने काळा बाहुकने जोयो—प्रेमानंद ए वर्णन ठीक चलावे छे. सुदेवने ए बाहुक जवाब वाळी घोडारमां चाल्यो जाय छे. सुदेव ए सांभळी विदर्भमां एनी भाळ आपवा आवे छे.

भा०-२७. (चालु) २८. बंने महा०ने अनुरूप.

ना०-

प्रे०-५२. दमयंती सीधुं ज सुदेवने कहे छे के आवती काले ज स्वयंवरमां दमयंती बीजो वर वरे छे. ए स्वयवरनुं ऋतुपर्णने नोतरुं आपी आव. ५३. सुदेव ऋतुपर्णने स्वयंवरना निमंत्रणनो पत्र आपे छे.

भा०-२८. (चालु) महा०ने अनुरूप.

ना०-

प्रे०-ऋतुपर्णे वात सांभळी बाहुकने बोलाव्यो. बाहुके एक ज दिवसमां पहोंचाडवानुं कबूल कर्युं.

भा०-२८. महा०ने अनुरूप

ना०-

प्रे०-५३. (चालु) प्रायः महा०ने अनुरूप. परंतु ऋतुपर्णने बाहुक वच्चेनो संवाद प्रेमानंदनी कृति. ने विस्तार पण एनो ज.

अ० ७१—ए ज दिवसे सांझे ऋतुपर्ण विदर्भ-कुंडिनपुर पहोंच्यो. भीमना आदेशथी एने उतारो आपवामां आव्यो. सौए नळना घोडाओनो अवाज सांभळ्यो, ने नळ आव्यानुं कल्प्युं. दमयंती संकल्प-विकल्प करवा लागी. भीमके ऋतुपर्णने आववानुं कारण पूछ्युं. ऋतुपर्णे समय समजी जई मळवा आव्यानुं ज जणाव्युं. भीमक समजी न शक्यो. रथ-घोडा साथे बाहुकने हयशाळामां उतारो आप्यो. दमयंतीए एनी पासे दूती मोकली.

अ० ७२—केशिनीने दमयंतीए कह्युं के जई जो. आ टूंकडा हाथवाळो कोण छे. केशिनी—नळ संवाद. केशिनीए पहेला श्लोक कह्या. नळे एना पर्णादने कहेला उत्तर आप्या ने छेवटे रोई पड्यो.

अ० ७३—दमयंतीए फरी केशिनीने मोकली अग्नि, पाणी विना ऋतुपर्णनी रसोई सिद्ध करावडावी. ए हकीकत केशिनीए कही. चोळेलां फूलो पण पाछां सुगंधित थाय छे ए कहयुं. मांस मोकल्युं ते पण नळे रांधी आप्युं. ए जोई नळ विशे खातरी थतां बंने बाळको केशिनी साथे मोकल्यां. नळ बेउने तेडी कहे: आवां ज मारां बे बाळक हतां माटे हुं रोयो छुं. तुं चाली जा; बहु न आव.

अ० ७४—दमयंतीए पिता मातानी संमतिथी नळने महेलमां बोलाव्यो ने एणे नळने पूर्वनी विनानी याद आपी एवा माणसने क्यांय जोयो एम पूछ्युं. नळे स्पष्ट कही दीधुं के ए में कर्युं.

अ० ७५—दमयंती कहे: तमने बोलावी लाववा आ मात्र युक्ति करी छे. वायुए अंतरिक्षथी ए वातनी साक्षी आपी ने पुष्पवृष्टि थई—

भा०-२८. (चालु) महा०ने अनरूप. २९. रथनो नाद सांभळी दमयंती आनंद पामीने गोख उपर चडी जुए छे तो दरवाजे रथ जोयो. भीम अने ऋतुपर्ण सामसामा मळ्या ने रथने हयशाळामां उतारो आप्यो वगेरे महा०ने अनुरूप. दमयंतीए दासी केशिनीने माहिती मेळववा मोकली.

ना०-

प्रे०-५३. (चालु) महा०ने अनुरूप. ५४. दासीने दमयंती सूचना आपे छे, ए प्रेमानंदमां विशेष. ५५. ऋतुपर्ण सुदेवने कहे छे के बनावट तो नथी करीने? सुदेव खानगीमां विवाह करवानो छे एवुं मन मनावडावी जाय छे. वैदर्भी सुदेवनी राह जुए छे ने सुदेव आवी बाहुकना विकृत स्वरूपनी वात रज् करे छे. राजा भीमक ऋतुपर्णनी सामा गया. ५६. ओदरमान देवामां आ वखते ऋतुपर्ण तरफ बाहुके बतावेलो मचकोडाट प्रेमानंद ठीक बतावे छे.

भा०-२९. (चालु) महा०ने अनुरूप. परीक्षानो थोडो विचार कर्यो छे. मांस चोरी केशिनी लावी ए हकीकत महा०मां नथी. ३०. गीत सुंदर छे ने प्रसंगने दीपावे छे.

ना०-

प्रे०-५७. टूंकमां परीक्षा पतावी छे. रसोई भीमकनी आज्ञाथी करवानुं थयुं ने ए नळे उपवनमां साधी आपी. त्यां नळना देहनुं वर्णन जरा हास्य प्रसरावे छे. पछी दमयंती बेउ बाळकोने मोकले छे. ५८. बाहुके एने जोई खूब प्रेम कर्यो. त्यां थोडी मझाक पण प्रेमानंद उमेरे छे. दासीने 'आवां मारां बाळक हतां' एम नळ कहे छे.

भा०-२९. (चालु) महा०ने अनुरूप पण पेला गीतथी प्रसंग सुमधुर बन्यो छे. चोथे वर्षे मळ्यां.

ना०-

प्रे०-५८. (चालु) भीमकनी अनुमतिथी दमयंतीए नळने पोताना महेलमां बोलाव्यो, ए वखतनो दासी अने बाहुकनो संवाद प्रेमानंदे उमेर्यो

देवदुंदुभि वाग्यां. पछी नळे कर्कोटकनां आपेलां बे वस्त्र ओढ्यां ने पूर्वरूप प्राप्त कर्युं. चोथे वर्षे बंने आम मळ्यां.

अ० ७६—बीजे समय भीम ऋतुपर्णने मळ्यो. ऋतुपर्ण अने नळे परस्पर क्षमापण कर्युं. फरी विद्यानी परस्पर आपले करी. नळ थोडा दिवस कुंडिनपुरमां रह्यो.

अ० ७७—एक मास रह्या बाद नळ निषधदेश तरफ जाय छे ने पुष्करने आह्वान करी द्यूत न आपे तो नियुद्ध करवानुं मागे छे. दमयंतीने हुं जीती लईश ए आशाए ए खूब बकेला एनुं शिर छेदवा नळने विचार थयो; पण खामोश पकडी रह्यो. पछी द्यूत रमायुं ने नळ जीत्यो. पुष्करने कहेः ए तारो वांक नथी; ए तो कलिए कराव्युं हतुं; माटे सुखे रहे.

अ० ७८—आ समाचार मळतां भीमके दमयंतीने सासरे वोळावी. सौ सुखी थयां. बृहदश्वे कह्युं के युधिष्ठिर, तमे पण सुखी थशो. ने छेवटे अक्षहृदय बृहदश्वे युधिष्ठिरने आप्युं.

छे. ५९. दमयंती-बाहुकनो आ प्रसंग प्रेमानंदे विशिष्ट रीते साध्यो छे. ६०. आमां पण ए विस्तरे छे ने अंते कर्कोटके आपेलां त्रण वस्त्र पहेरवाथी नळ मूळ स्वरूप पामे छे. ६१. प्रेमानंदे आ कडवुं नगरजनो वगेरेना उत्सवनुं निरूप्युं छे.

भा०-३०. दमयंतीनुं गीत भालणनुं आगवुं. बंनेनी गोष्ठी पण आगवी. भीम-ऋतुपर्ण मेळाप वगेरे महा०ने अनुरूप. नळ एक वर्ष त्यां रहे छे.

ना०-२०. (चालु) प्रसंग अत्यंत संक्षेपमां महा० प्रमाणे.

प्रे०-६२. ऋतुपर्णथी नळनी थयेली आशातनानुं आ कडवुं प्रेमानंद-नुं आगवुं छे. ६३. नळ एनी क्षमापना करे छे. ऋतुपर्ण वैदर्भीने वरवानी करेली भावनानो शोक करे छे. ६४. ऋतुपर्णने दमयंतीनी भत्रीजी परणाववानुं प्रेमानंद विशेष आपे छे.

भा-३०. (चालु) एक संवत्सर रह्या बाद नैषध एकलो निषध गयो ने त्यां पुष्करने बोलावी द्यूत रम्यो ने जीती गयो. ए पत्या पछी नळे दमयंतीने तेडावी लीधी. बाकीनुं महा०ने अनुरूप—बेउ अध्यायनी कथा.

ना०-२०. (चालु) नळ निषधमां एकलो आव्यो ने पितराईने रमवा आह्वान आप्युं. एने जीती लीधो ने वनमां काढ्यो.

प्रे०-६४. (चालु) ए पछी नैषध साज सरंजाम चतुरंग सेना वगेरे साथे निषध देशमां गयो, त्यां पुष्करने बोलावी द्यूत रम्यो ने एने हराव्यो. पछी बंने भाई वहालथी मळ्या. पुष्करे क्षमा याची ने नळे एने सेनापति बनाव्यो. स्त्री-बाळकने विदर्भमां मूकीने नळ स्वदेश गयेलो. पण दमयंती क्यारे निषधमां गई ए जणाव्युं नथी. बाकीनुं महा०ने अनुरूप. प्रेमानंदे नळे पुत्रने राज आप्युं ने पोते तप करवा गयो, ने अनशन व्रत बाद नळ दमयंती अविचळ पद पाम्यां एवुं जणाव्युं छे. बृहदश्वे युधिष्ठिरने अक्ष-हृदय आप्यानुं प्रेमानंद कहेतो नथी.

आनी पाछळ श्रीहर्षे तेमज त्रिविक्रमे काव्यनी दृष्टिए नलनी कथाने आलंकारिक रीते निरूपवामां समर्थ प्रयत्न कर्यो छे. भालणने आनो सहारो मळ्यो छे ज. भालण ४था कडवामां नळनुं वर्णन करतां जणावे छे:

'नल शिरि वि अंबोडा बांध्या, करतां तां मल स्नान,
शाम कलंक रह्या शिरि वि, ए जाणु, राय, निदान. ७
विहिची मेरु माहागिरि नाप्यु पात्र तणि तां पाणि,
तु शूं दान करयूं मि महीमांहां, मनि मोटी ए काणि. ८
ब्राह्मणनि तां वरूण करंतां सिंधु न थ्यु मारुआडि,
तु शूं पुण्य करयूं मि मनशूं, चिंता पामि हाडि. ९
चंद्र सूरय पाखलि कूंडालूं थाइ छि वरसाति,
तिहां कल्पना माहाकविनी मनि एहवी आवी वात: १०
नलना तेज-रूपियु सूरय, यशरूपि शशि देखी
ब्रह्मा साचा जूठा जूइ अंतरगति उवेखी. ११
जिम मामूं जूठूं जाणि ते वणिक लेइनि चालि,
तिम घ्याताए जूठा जाणी रविशशिनि कुंडालि. १२

अहीं महाकवि-श्रीहर्षना जे बे श्लोकोनो सहारो छे ते आ छे:

विभज्य मेरुर्न यदर्थिसात्कृतो न सिन्धुरुत्सर्गजलव्ययैर्मरुः।
अमानि तत्तेन निजायशोयुगं द्विफालबद्धाश्चिकुराः शिरः स्थितम्॥१६॥
तदोजसस्तद्यशसः स्थिताविमौ वृथेति चित्ते कुरुते यदा यदा।
तनोति भानोः परिवेषकैतवात्तदा विधिः कुण्डलनां विधोरपि॥१४॥

भालणे वाणियाना नामाने आमां लीधुं छे एटलुं पोताना तरफथी उमेरण छे अने ए श्रीहर्षनी कल्पनाने पण वधु दीप्तुं बनावे छे.

दमयंतीना वर्णनमां–(कडवुं ५ मुं)

'नारी सरवनि दमि कामिनी सुंदर तां अभिराम,
तेहेवूं जोई तेणि पाडयूं दमयंती ते नाम. ३
वेध्याइ याह्नि वदन ज रचिऊं त्याहारि सार इंदुनूं हरिऊं;
तर लीधी तांहां खाण थई छि, मुख मनोहर करिऊं. ४
मुष्टि उदर भरयूं वेध्याइ अंगुलिनूं एधाण,
त्रिवली प्रगट थई प्रेमदानि प्रत्यक्ष एह प्रमाण. ५
कबरी पिछि मार मयुरनु वन तां ग्या विघि पाश,
अर्द्धचंद्र देई शिखि काढ्यु पूजी पुष्पप्रकाश. ६'

श्रीहर्षनुं वर्णन (२जा सर्गमां अने ७मा सर्गमां)

भुवनत्रयसुभ्रुवामसौ दमयन्ती कमनीयतामदम् ।
उदियाय यतस्तनुश्रिया दमयन्तीति ततोऽभिधां ददौ ॥ १८ ॥
हृतसारमिवेन्दुमण्डलं दमयन्तीवदनाय वेधसा ।
कृतमध्यबिलं विलोक्यते धृतगम्भीरखनीखनीलिम्म् ॥ २५ ॥
उदरे नतमध्यपृष्ठतास्फुटदङ्गुष्ठपदेन मुष्टिना ।
चतुरङ्गुलमध्यनिर्गतत्रिवलिभ्राजिकृतं दमस्वसुः ॥ ३४ ॥
अस्याः कचानां शिखिनश्च किं नु विधिं कलापौ विमतेरगालाम् ।
तेनायमेभिः किमपूजि पुष्पैरभर्त्सि दत्वा स किमर्धचन्द्रम् ॥७-२२॥

हंसना वर्णनमां–(६ठ्ठा कडवामां)–

' एक चरण पांखमांहि लीधो, बीजु अवनी मांडी,
रक्तपाद जाणे चमर धरूं छि, विद्रुम केरी डांडी ७'

नैषधीयचरितमां–(१लो सर्ग)

स नालमात्मानमनर्जितप्रभं
ह्रिया नतं काञ्चनमम्बुजन्म किम् ।
अबुद्ध तं विद्रुमदण्डमण्डितं
स पीतमम्भः प्रभुचामरं नु किम् ॥ १२२ ॥

आमां उत्तरार्धनी उत्प्रेक्षा लक्ष्यमां लेवी.

हंसनुं नळ प्रत्ये वचन: (६ठ्ठुं कडवुं)–

' शाहानि काजि हूं झाल्यु छूं ? तूं छि अति दयाल. ११

पांख तणि हेमि शूं ताहारा भराशि भंडार ?

सागर-जल केटलूं वाधि पडतो शाहि ठार ? १२ '

नैषधीयचरितमां—

> धिगस्तु तृष्णातरलं भवन्मनः
> समीक्ष्य पक्षान्मम हेमजन्मनः ।
> तवार्णवस्येव तुषारसीकरै–
> र्भवेदमीभिः कमलोदयः किम् ॥ १३० ॥

कमळना उदयवाळी कल्पना भालणे छोडी दीधी छे.

हंसनुं चोथुं वचन (त्यां ज):

' साथी सघला इ घरि जाशि, माता पाहाडी जोसि;

विरहि प्राण छांडसि त्याहारि अबला पाशि रोसि. १६

करुणानिधि, ते दया कांहां गई जे गजपति मूकाव्यु ? '

नैषधीय०नुं–

> मदेकपुत्रा जननी जरातुरा
> नवप्रसूतिर्वरटा तपस्विनी ।
> गतिस्तयोरेष जनस्तमर्दय-
> न्नहो विधे त्वां करुणा रुणद्धि न ॥ १३५ ॥

गजेंद्रमोक्षनी कल्पना भालणे उमेरी छे.

७ मा कडवामां–

' सत्पुरुष थोडूं कहिनि करि कारज अति घणूं. .... ३ '

नैषधीय०नुं वाक्य–

ब्रुवते हि फलेन साधवो
न तु कण्ठेन निजोपयोगिताम् ॥ २-४८ ॥

अने–

'वीर विहिलु आवजे; कुशल मारग तुंहनि.
करे कारज मनवांछित, समइ संभारे मूहनि. ४'

तव वर्त्मनि वर्ततां शिवं
पुनरस्तु त्वरितं समागमः ।
अयि साधय साधयेप्सितं
स्मरणीयाः समये वयं च वः ॥ २-६२ ॥

त्यां ज महाभारतनी एक कल्पना भालणे ठीक रीते लीधी छे:
'नारीमांहां यिम एक तूं छि, पुरुषमांहि तेह.
विध्याताइ अमूलक ए रत्न सरज्यां बेहि. १२'

त्वं चापि रत्नं नारीणां नरेषु च नलो वरः ।
विशिष्टाया विशिष्टेषु संगमो गुणवान्भवेत् ॥
(आरण्यकपर्व ५३-६०)

आगळ जतां ८ मा कडवामां–
' राहुनूं शिर हरि छिदूं—पुराणिक मिथ्यां कहि.
विरहिणीनूं छेदिऊं ते मर्म मांहलु नवि लहि. ११

जठर रहि तूं राहुनूं चंद्र पचतु पापियु
विरहिणीनि पीडवा सि विधाताइ आपियु ? १२'

अने

'अगस्ति याहि उदधि पीधु ताहि शशी ए नवि जरयु;
मंदराचल पइयु नव ते चूर्ण कां, भइ, नवि करयु ? १३

पूछि, सखि, तूं इंदुनि : ए विद्या तिं कांहीथी भणी ?
उदधिमांहां वडवानलथी के शिवगलाना विष तणी ? १४'
जुओ नैषधीयचरितनां आ वचन : (४था सर्गमां) :

ऋजुदृशः कथयन्ति पुराविदो
मधुभिधं खलु राहुशिरश्छिदम् ।
विरहिणीमभिधं निगदन्ति न
क्व न शशी यदि तज्जठरानलः ॥ ६६ ॥

वदनगर्भगतं न निजेच्छया
शशिनमुज्झति राहुरसंशयम् ।
अशित एव गलत्ययमत्ययं
सखि विना गलनालबिलाध्वना ॥ ६५ ॥

निपततापि च मन्दरभूभृता
त्वमुदधौ शशलाञ्छनचूर्णितः ।
अपि मुने जठरार्चिषि जीर्णतां
बत गतोऽसि न पीतपयोनिधेः ॥ ५१ ॥

अयि विधुं परिपृच्छ गुरोः कुतः
स्फुटमशिक्ष्यत दाहवदान्यता ।
ग्लपितशम्भुगलाद्गरलात्त्वया
किमुदधौ जड वा वडवानलात् ॥ ४८ ॥

भालणे आ नीचे कल्पना 'अमरुशतक'मांथी लीधी छे; जेवी के
'हार महीनि कहि, कामिनि, गुणवंत छि तूं, नवि घटि.
परनारिना वि पयोधरनि स्पर्श करि छि शा मटि ? १५'
'अमरुशतक'मां—

असद्वृत्तो नायं न च खलु गुणैरेष रहितः
प्रियो मुक्ताहारस्तव चरणमूले निपतितः ॥ ६४ ॥

दसमा कडवानुं एक साम्य अहीं जोवा जेवुं छे :

' सत्यवंत दातार छि नि ननु ति भणियु नथी.
अथवा शूं ते वीशर्युं ? संदेह शूं कहींइ कथी ? ३ '

नैषधीय०नुं–

नाक्षराणि पठता किमपाठि
प्रस्मृतः किमथवा पठितोऽपि ।
इत्थमर्थिचयसंशयदोला-
खेलनं खलु चकार नकारः ॥ ५-१२१ ॥

आ नकार ते भालणनो ननु=नन्नो.

' कल्पतरुनि एणी वाति कामधेनुनि लाज. १२ '

आ साथे नैषधीयचरितनां विधान सरखावो :

अब्रवीत्तमनलः क नलेदं
लब्धमुज्झसि यशः शशिकल्पम् ।
कल्पवृक्षपतिमर्थिनमित्थं
नाप कोऽपि शतमन्युमिहान्यः ॥ ५-१२२ ॥

रोहणः किमपि यः कठिनानां
कामधेनुरपि या पशुरेव ।
नैनयोरपि वृथाभवदर्थी
हा विधत्सुरसि वत्स किमेतत् ॥ ५-१२५ ॥

११ मा कडवामां नलनुं शील वर्णवतां भालण जणावे छे :

' राय रखु जई भवन मुझारि. देखि नल, नवि देखि नारि.
दाशी कारजि आवी जाय, रली जालवि तिहां नल राय. १
एक उघाडूं करीनि अंग चंदनलेप करि छि अंग.
परनारी जाणीनि मनि नल राजा मींच्यां लोचन. २
तव नारी को आवी दडवडी, राइ नवि दीठी, आथडी.'

नैषधीय०मां—

अन्तःपुरान्तः स विलोक्य बालां कांचित्समालब्धुमसंवृतोरुम् ।
निमीलिताक्षः परया भ्रमन्त्या संघट्टमासाद्य चमच्चकार ॥ ६१३ ॥

आगळ जतां :

'ताहारा अधरपान-प्रताप अह्मो जीववा वांछूं आप. १९'

इंद्रवचन तरीके नळना मुखमां नैषधीय०नुं वाक्य :

नास्माकमस्मान्मदनापमृत्योस्त्राणाय पीयूषरसायनानि ।
प्रसीद तस्मादधिकं निजं तु प्रयच्छ पातुं रदनच्छदं नः ॥ ८-१० ॥

देवोने परनारी परणवानुं अज्ञान केम थयुं ए विशे दमयंती प्रश्न करे छे :

'देव सरवेने हुइ ज्ञान; जाणि मननी वात निदान.
तो शूं ज्ञान तेहनूं गयूं? एहवूं अंधारूं शि थयूं? २५'

'नैषधीय०' मां–

अपि स्वमस्वप्नमसूषुपत्तमी परस्य दारानन्वैतु मेव माम् ।
स्वयं दुरध्यार्णवनाविकाः कथं स्पृशन्तु विज्ञाय हृदापि ताद्दशीम् ॥ ९-४४ ॥

भालणे 'अज्ञान' ने माटे 'अंधारूं' शब्द प्रयोजी विचारने वधु सुंदर बनाव्यो छे.

आगळ जतां देवनी प्रशंसामां—

'देह दमी वांछि सर्व लोक, जिहां सरव सुख नि नहीं तां शोक.
ते छांडि को मानव भजि? देखी गुंजा, मणिनि त्यजि? २९'

'नैषधीय०'मां नळनुं ए ज वाक्य:

तपोबले जुह्वति सूरयस्तनूर्दिवे फलायान्यजनुर्भविष्णवे ।
करे पुनः कर्षति सैव विह्वला बलादिव त्वां वलसे न वालिशे ॥ ९-४५ ॥

भालण 'सूरयः' ने स्थाने 'सर्व लोक' लखी वधु स्पष्टता करे छे.

यमनां वखाण करतां नल जणावे छे के

'दुर्मरणि जावूं यम-हाथि; पुन्यि सुरपति थाशि नाथ.
देव छतां नल शी परि वरि, येहनि कोपि ततक्षणि मरि? ३६'

नैषधीयचरितमां 'करिष्यसे यद्यत एव दूषणादुपायमन्यं विदुषि स्वमृत्यवे' (९-४९)मांनो 'स्वमृत्यु' शब्द उपरनी कडीमां 'दुर्मरण-'नो ख्याल आपे छे. 'सुरपति' एटले इंद्र अहीं नहि, पण 'यम' अर्थ संगत थशे.

कलिना वर्णनमां–

'सुत्रामणि देखीनि सुरा हरख्यु जुग अणजाणी पुरा. ९३
वेदविहित दीठु येटलि नाठु तिहां थकी तेटलि.'

नैषधीयचरितना नीचेना श्लोकनो आ स्पष्ट अनुवाद छे:

मुमुदे मदिरादानं विदन्नेष द्विजन्मन. ।
दृष्ट्वा सौत्रामणीमिष्टिं तं कुर्वन्तमदूयत ॥ १७-१८२ ॥

'नाठु' ए भालणनो चमत्कार छे. आवां औचित्य एणे सविशेष नवां पण करी लीधां छे.

आर्यां पण विशेष केटलाक साम्य म्व. मोदीए सूचव्यां छे. भालणे पूर्वेनी संस्कृत कृतिओने पचावी तो हती ज, पण एने पोतानी प्रतिभा पण हती. 'नळाख्यान'मां एणे प्रसंगप्राप्त एवां स्थान वधावी लीधां छे अने त्यां पोतानी शक्तिनो परिचय आप्यो पण छे. प्रसंगचित्रणोमां ए सावध रहे छे अने काव्यचमत्कृति आप्या विना रही शकतो नथी. दमयंतीना विरहवर्णनमां नैषधीयचरितनी उत्प्रेक्षाओ उपरांत ए पोते पण सुंदरता अर्पे छे:

'इंदु आवी अधननि ए अहि छि नीलज थई.
कलंकी शुं करि नहीं जे लाज तु तारी गई? १६

पुष्प-शर ए कामना ते, सखी, शाहानि पाथरि ?
बाण-शेय्या पुढीइ ते शर्म, कुहु, किहांथी करि ? १७

अंगथीआं चंदन धूओ देह माहारानि कसि.
प्रत्यक्ष जूओ पारखूं विषधर जेणि बहु वसि. १८

गानवेणु गमि नहीं जु मनथी मोहो नवि टलि.
सघलीइ ए सुख करि जु नल राजा आवी म्यलि. १९

विरि न रमि, वन न गमि, सूनी चालि लडथडि.
विरहि पाडी वामनयणी पुष्पशेय्यांइ पडि. २०'

(कड ८ मुं)

आमां दमयंतीनो विप्रलंभ खीले छे. त्यां जुदा जुदा संचारी भाव पण स्पष्ट व्यक्त थाय छे.

पात्रालेखननी दृष्टिए रहेली भालणनी सभानता पण ध्यान खेंचनारी छे. नळ दमयंतीने चाहनारो छे, छतां देवोनो दूत बनीने जाय छे त्यारे दूतना धर्ममांथी ए सर्वथा चलित थतो नथी ए निरूपवामां भालणे पूरुं गौरव साचव्युं छे :

' शामा, हूं नल पाली सत्य, अहीं आवियुं, दूतनुं कृत्य.
देव छतां मिइ किम वराय ? तेनु दीसि नहीं उपाय. ३८'

(कडवुं ११मुं)

प्रेमानंदे स्वयंवरमां आवेला देवोनी हांसीपात्रता बतावी छे एवुं भालणे थवा दीधुं नथी अने देवपात्रोनुं गौरव साचवी राख्युं छे.

भालणे आवश्यक स्थळे चालु कडवाबंधमां गीतो पण निरूप्यां छे. नळ अने दमयंती नगर छोडी वनमांथी पसार थाय छे ए प्रसंगनुं गीत—

'माणस को वाटि म्यलि ते जाइ ऊवेखी.
पंखी पणि आक्रंद करि तेहि दुखियां देखी.
शरज्यूं को छूटि नहीं जे भागिमां लखिऊं.
कुणि को थाइ नहीं दुखिऊं ने सुखिऊं. श० १' (कडवुं १४मुं)

पाछली बे लीटीना ध्रुवपदवाळुं आ गीत कर्मयंत्रणानी अनिवार्यता अर्पी करुण भावने पुष्ट करनारुं छे. एवुं बीजुं गीत १६ मा कडवामां देशीफेरथी आवतुं विरहगीत छे, 'नलरा नलरा उचरि :' ए ध्रुवपंक्तिवाळुं. एमां दमयंतीना हृदयनी धालावेली निरूपी भालणे विरहिणीनुं स्वरूप मूर्त कर्युं छे. आदर्शगृहिणी होई नल पोताने छोडी न ज जाय ए भाव भालणे केवो सरस रीते आलेख्यो छे (कडवुं १६ मुं) :

'किहिं कुंजमांहि नाशी रह्या रे, मुहि वाहु छु, माहाराज रे. २०'
१७ मा कडवामांनुं रुदन-गीत 'देशी'थी शरू थतुं 'प्रीउडा, आवु रे; मुहि भक्षि करि छि व्याल; नल मूंकावुं रे.' ए पण विप्रलंभनी उच्च प्रतीति करावनारुं करुणभावनुं गीत छे.

पाछळना गुजराती आख्यानकारो उपर भालणनी असर छे अने प्रेमानंद 'नळाख्यान'मां काव्यत्वनी दृष्टिए उच्च प्रकारनी प्रतीति करावतो होवा छतां केटलाक प्रसंग जेवा के स्वयंवरना वर्णनमां आवेला राजाओनी हांसी, देवोना एकबीजाने शाप, बाहुकना हृदयनी वधु पडती नबळाई ए वगेरे आछकडापणुं बतावी जाय छे. नयसुंदरे तो सं. नलायन काव्यनो ज आधार लई काव्यसंक्षेप कर्यो होई एनी स्वतंत्रता केटली छे ए कहेवुं मुश्केल छे. वैकुंठनी नलकथा विस्तृत छे, परंतु ए पण सादी कथाथी खास विशेष वस्तु आपती नथी.

भालणमां थोडा दोष होवानुं स्व. मोदीए जणाव्युं छे, पण सं. साहित्यना अभ्यासीने आवा दोष दोषरूप नथी; औचित्यने कारणे आवी छूट बरदास्त थई शके छे.

उपसंहार

मारा तरफथी 'कादंबरी'नी प्रस्तावनामां भालणनुं केटलुंक विशेष मूल्यांकन करवानो मनोभाव छे, 'भालण : एक अध्ययन' पण हुं स्वतंत्र रीते विचारी रह्यो छुं, एनो थोडोक अंश 'कविचरित'मां पण अपायो छे, एटले अहीं वधु विस्तार इष्ट मान्यो नथी.

आ काव्यनी एक ज प्रत प्रो. डॉ. भोगीलाल ज. सांडेसरानी होई अने ए काव्य एमणे महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी-वडोदरानी प्राचीन गुर्जर ग्रथमालामा छापवानो निर्णय करी लीधा पछी ए काम मारे करी आपवुं एवी व्यवस्था पण थई जतां एक फरज तरीके एमनी एक मात्र प्रतने आधारे 'कादंबरी' नी पद्धतिए ज आ संपादन प्रस्तावना अने शब्दसूचि साथे करवामां आव्युं छे. आना प्रकाशननो यश उक्त युनिवर्सिटी अने त्यांना गुजरातीना अध्यक्ष भाईश्री डॉ. सांडेसराने छे. 'शब्दसूचि'मां केटलीक झीणवट पण थई छे, पण भाषाना विकासमां ए जरूरी होई लखवी योग्य मानी छे. गुजराती भाषाना शब्दकोशनी सर्वांगसंपूर्ण रचनामां मध्यकालीन गुजरातीना ग्रंथो उपयोगमां आवी शके ए ध्येयथी आ युनिवर्सिटीनां आ जातनां प्रकाशन थाय छे ए माटे अभिनंदनना उद्‌गार काढ्या विना रही शकातुं नथी.

अमदावाद, ता. ४-५-५६ **केशवराम का. शास्त्री**

अनुपूर्ति अने शुद्धिपत्रक

नाकरकृत नलाख्याननी हस्तप्रत हाथवगी नहि होवाथी प्रस्तावनाना केटलाक अंशोमां (पृ. ५९-६३) भालण अने प्रेमानंदनां नलाख्यान तथा महाभारतनी नलकथा साथे नाकरना कृतिनी तुलना थई शकी नहोती. प्रस्तावनानां छेवटनां पृष्ठ छपातां हतां ते अरसामां ए प्रत मळी आवतां नाकरना नलाख्यानमांथी प्रस्तुत तुलनानी विगतो अहीं आपवामां आवे छे :—

पृ. ६९, पंक्ति २१. ना०– १४. संस्कृतने अनुरूप.

पृ. ६१, पं. १. ना०– १५. विप्र अयोध्यामां आव्यो अने अनेक स्थान जोयां. कशो भाळ न मळ्यो. रांधवा जाय छे त्यां बाहुक विप्रने जुए छे ने पूंठे धाय छे. मे महाभारतने अनुरूप.

पृ. ६१, पं. ८. ना०– १६. पितानी संमतिथी दमयंती सुदेवने बोलावे छे. पछी एने ज पोताना विवाहनी वात अयोध्यामां जई कहेवानुं दमयंती सूचवे छे. ने महा०ने अनुरूप. १७. सुदेव ऋतुपर्णने कंकोतरी आपे छे.

पृ. ६१, पं. १३. ना०– १७. (चालु) महा०ने अनुरूप.

पृ. ६१, पं. १७. ना०– १८-१९. महा०ने अनुरूप.

पृ. ६३, पं. ६. ना०– १९. (चालु) प्राय: महा०ने अनुरूप.

पृ. ६३, पं. १७. ना०– २०. महा०ने अनुरूप.

पृ. ६३, पं. २५. ना०– २०. (चालु) टूंकमां पण महा०ने अनुरूप.

नीचे प्रमाणे शोधन करी लेवा विनंति छे :

शुद्धिपत्रक

पृ.	पं.	अशुद्ध	शुद्ध
		प्रस्तावना	
४	१८	अनुनासिकना	अनुनासिकता
७	छेल्ली	चण	पण
८	२२	परंतु	परंतु
,,	२५	ॲ-ऑ	ॲ-ऑ
१९	५	तालव्य-	दंत्य-
२३	९	क्रियापद भणति	अव्य. कृ. *भण्य
,,	,,	भणइ	भणिअ
४२	२	युधिष्ठिर ज...कहे छे	युधिष्ठिरने...गणावे छे.
,,	४	हतो	हतो

४२	११	एकेक ने	एकेकने
४५	४	निरुपणप्रकार	निरूपणप्रकार
,,	५	अनुरुप	अनुरूप
४८	१५	कांइ	कांई
४९	२४	धोळी	धोवी
५०	१२	वीत्या हिरण्य-	वीत्या. हिरण्य-
५३	१५	भूख्या	भूख्यां
५६	३	व्रह्मर्पिना	व्रह्मर्पिना
,,	५	दूबडो	कूबडो
,,	,,	दूबडापणाना	कूबडापणाना
,,	७, १०	ऋतुपण-	ऋतुपर्ण-
,,	९	रुप	रूप
,,	,,	थइ	थई
,,	११	वार्ष्णेय	वार्ष्णेय
,,	१२	जावळ	जीवल
,,	१३	जावळे	जीवले
,,	१५	विरणनु	विरहनुं
५७	६	ऊजरडायेली	उजरडायेली
,,	२२	परटयो	परठयो
,,	२७	धृतियता०	धृतिमता०
५९	१२	फरतो	फरतो हतो
,,	१५	राखती	राखती०
६३	२६	दयथंतीए	दमयंतीए

नलाख्यान

३	६	साहामो]	साहामो
९	४	अनो म	अनोपम
११	१६	विध्यनु	विध्यनु
,,	१८	राई	राइ
२०	७	देज्ये.	देज्ये
२५	१६	[कुण एह !	[कुण एह !]
३५	८	जाकी.	जाकी (?).

४०	३	कां थयूं ग्युजुं [?]	शूं थयूं ग्यूं जु
,,	२०	महरु	माहरु
४३	१०	घाओडी	धाओडी
७७	१७ (पुष्पिका)	मोढज्ञीसमुद्भवः	मोढज्ञातीसमुद्भवः

शब्दकोश

९५	१९	९-११	९-२१
९६	१	> सं.	< सं.
१०८	२	-जन्म	-जन्य
११२	१२	जाने	जाणे
११३	२१	शव्द	शब्द
११४-५	[जुओ 'ज्ये ......]		[अहींना नरसिंहराव प्रमाणेना विकल्प माटे जुओ प्रस्ता. पृ. १८.
११५	७	रूपमांथी	रूपमांथी
१२०	४	अ. व.	अ. कृ.
१२५	५	झाड '	झाड = नानी जात '
,,	६	ध्वाड्क्षा	ध्वाङ्क्षा
१३२	१३	धार + आय	धार + आव
१३७	१	पु-सकारः	पुव्-कारः
,,	७	लागताने	लागतां.
१४०	१२	द्बे	द्वे
१४१	९	द्बितीयकः	द्वितीयकः
,,	२०	द्बे	द्वे
१४२	४	म	
,,	१६	भणद्	भणइ
१४३	११	खसयुं '	खसवुं '
१४४	९	भार्गस्वरि	भागस्वरि
१४६	छेल्ली	उचरण	उच्चारण
१५०	३	म्होःटुं	म्होटुं
,,	१८	जिम	जिम
,,	२९	अवि	अवि
१५१	१४	जेत्तल	जेत्तुल

१५१	१९	यौवन	यौवन
१५३	९	रचिस्पद्	रचिस्पद्
,,	२८	तालाव्यने	तालव्यने
१५५	१३	लवि	लवि
,,	२८	लज्ञा	लज्जा
१६१	७	जुवो	जुओ
१६२	५	यिरहि	विरहि
१६३	१८	अनार्थ	आज्ञार्थ
,,	२७	काम	काम.
१६५	७	एमा	एमां
१६६	२९	स्त्री.	स्त्री.
१६९	२५	'जगत'	'जगत' २३-२५
१७०	४	ते नर	तेतर

शीउ। माधवामहीपतिहुमध्यछुंतेचांवांसमी।पिथ्वी
उी।।२८।।वाडवते।।वाहनक्षा।मानुशालिनदिसहो।
छु।अंगलिकेरा।णपृथ्वीनिसा।।ांनिपक्षीछु।।
३०।।एदवांकहूहदंतकेटलंसांजलिपक्रआं
न।नैषधदेशिवीरसेनएकबली।छुनलनामिराजान
।।३१।।नेदिछुतरमीतलाछुराजकमिमंडा
र।एकेकेशछिवतिबाल्यानेबहुनरनिनारि [illegible]
वस्त्रवध्यारीनारीमेहेलीअनारीछनिनेहो।[illegible]
नूजयाअतिहृषपांमांनाजारांणीहेद।।[illegible]
तांतस्नोआइ्थीराजुनिधीरयक्षांण।कुमेतंलिह
शिसघलाक्षांणीगहहंसनरिजांणु।।[illegible]।राजाक
हितेकणनलराजाकिम्रस्युकिमहासखाकर
।रामहतांतेदसंमंशस्तविरास्यु।।[illegible]।।तेह
कथाकहुनीतक्रिदयारीदिसल्याणी।पांणी
निवतितांपांवेनविस्तंस्ताशांरा।।[illegible]
३ गणीपरिवोलीसु॰निसानलिरेहंराजांन।प

कउवा ३ जानी १२ मी कडीना उत्तरार्धथी आगळनो काव्यांश

(पृ. ४–अ)

वस्त्रापीर्ते हृदस्थआंणीप्रीति॥ राकलिनाथ अधि
कविद्यामंणायोपरात॥ ३२ ॥ भेउधकिवली त्तवर्ड्प्र
वीनिलियोराज्ञा॥ उहितं सरसिसही निश्चितस्वा
रूंकामविन्न॥ ३१॥ पमभागसांभरराक्षिरायतनामश्री
सा॥ त्रावमहीतितेउलाविधेमिउधिप्रईरा॥ ३४॥
युधिष्ठिरआनंदपाम्यासमस्वसाक्षोन॥ वार्हूइ
अर्जुननीसमरंणआपमवोन॥ ३५॥ आणिकपर्वे
तंणीकथायेसांत्तवितरनारि॥ पंमिउवसंसार
नांउनरपिनहाअवतार॥ ३६॥ उवदेहेपांमितही
येसांम्हलिकरीगांन॥ राजपांमिक्षाएहुयेंसुणितारी
जांन॥ ३७॥ सांभलिश्रुभिकरीतेपांमिपदनिरवांण॥
कहिभालंणाखपंमानिलिख्युपदप्रमाण॥ ३८॥ ॥
रतिशीनलआख्यानसमाप्तः॥ संवत् १७३२ वर्षे प्रथम
श्रावणवदि ... दिनेलखितंमोढज्ञातीस
॥ ॥ ॥ श्री
॥ ॥ शुभंभवतु॥ ॥ ॥
श्रीरस्तु॥ ॥

४७

हस्तप्रतनो अंतभाग, पुष्पिका साथे

(पृ. ४७-आ)

भालणकृत

न ळा ख्या न

[कडवूं १ : राग केदारो

गुरुपदपंकजने प्रणमूं, ब्रह्मसुताने ध्याऊं,
गुजर भाखाए नल राजाना गुण मनोहर गाऊं. १
नैषध चंपू माहाभारतमां कवि कीरति अति लीधी,
कालांने प्रीछवा भालणे भाखाए ए कीधी. २
साचा हीरा हेमे जडिया, वैभ[व]नो शणगार;
दुर्बलने तो काच कथीरे भूखण होए अपार. ३
धनवंत भूपतिने भोजन सरव संजोगे थाए;
निरधन तिवारां अति आनंदे जुवार बाजरी खाए. ४
सिद्धिवंतने सप्तभोमनां मंदिर, ऊंचा अवास;
प[र्णकु]टि रेहे सुख पामे अत दुर्बल पामी वास. ५
तालमये सकल अर्थपदबांधे बांधूं **नल-आख्यान**,
मूरखजन मोहो करवाने भालण कवे अभिमाने. ६
पुण्यश्लोककथारस पीतां अमृत खाटूं लागे,
माहाकवि शृंगार वरणवो पूर्वे जे माहाभागे, ७
आर्णिक पर्व सकलरसबोलो, दृष्टांते ए मांडी
धर्मराजाने धीरज देवा देखाडी शमदाडी. ८
संखेपे ते सकल ग्रंथनूं लई केटलूं हेत
कहीश कथा हुं नल राजानी थोडामांहे संकेत. ९

---

2 सं. १७३२वाळी हाथप्रतमां खूटतो भाग स्व. रा. चु. मोदीना 'प्रथम नळाख्यान'नी मददथी एमने मळेली हाथप्रत प्रमाणे अहीं लीधो छे. 3 प्रणमुं धाउ. 4 गाउ 5 नईराध. कवे कीरते. 6 प्रीछववा. 7 साच्या. जडीआ. 8 भुखण. 9 भुपतेने. 10 काए तवारा. 13 तालमए. 14 मुरखजनमांहे. 16 महा आगे 19 सेतबीस. ग्रंथनुं. केटलुं. 20 हुं.

रखे चतुर कोए मूरख माने भाखाबंध ए देखी;
सिंधु लङावतां माहाकवि काले बोले मनि उवेखी, १०
तिम में पामरने प्रीछ्वा सुगम करीने माखी,
कथामात्र ए नैषध राजानी अपभ्रंश ए दाखी. ११

कडवूं २ :

वैशंपा एम ओचरे, जनमेजे श्रवणे धरे.
विस्तरे वाणीइ गुण पांडव तणा रे. १

ढाल

पांडवना गुण विस्तारीने सांभल तूं, भूपाल,
जेने पोताना करी जाणे स्वामी श्रीदीनदयाल. २
द्यूत रमीने राज हारिया, जई रह्या ते वंन.
आउधने काजे तप करवा चा[ल्यो] तां अर्जुन. ३
कार्मीक वने रेहे ते वासे, साथे छे बहु लोक.
अर्जुन म्यानो गए जुधष्टर आणे छे बहु शोक. ४
दु:ख करता जोई राजाने ताप अंतरगते [आ]णी
अग्रज आगले भीमसेन ते कोपे केहे छे वाणी : ५
' बुधे तमारी ए अति बलिया बांधव बहु वगूता,
नहितरे द्यूत रमना तमो तिवारां अमो पासे हूता. ६
में जाणूं मारूं हूं हवडां दुस्यासन माहापापी,
जेणे केश ग्रहीने आणी द्रुपदसुता संतापी. ७
तिहिवारां हूं सघल्यानि मारत गेती देखीने नारी.
शूं कीजे जो, वीर माहारा, तमो ज रम्यो वारी ! ८

21 माला. 22 सयु. कर्मोर्म्या. 24 अपभ्रंस. 31 हारीआ 32 आऊधने. 33 कांमीक. 34 गानो. 36 अगज. 37 बलीआ. 38 रमो. रमना. हुता. 39 जांणु. हुं. 41 हुं. तादावारां. 42 शुं.

हाथे करी शूं शोक करो छो ? निज ईछाए रमिया.
अमने वल करवा नवि दीधूं, तो दुरजोधने दमिया. ९
आज आगन्या आपो जो मुहने हस्तनापोर जाऊं धाई;
गदा तणे प्रहारे मारूं साथे सोए भाई. १०
अखिल राजि ए तमने आपूं; निज भुजबल देखाडूं.
मुझ साहामो] जे जोध आवे तेहेने ततख्यण पाडूं.' ११
वल्ता राए जुधष्टर बो]लिः 'ताहा[रो] छि विश्वास.
तेर वरस पूरण थावा द्यु. परठु ये वनवास १२
त्याहार पछी तूं नि तां अ[र्जुन] साहाय्य श्रीयगदीश,
एक थई दुर्योधन ऊ[पर] उतारज्यो सवि रीस.' १३
एहिवी वारता रायि करि छि, एटलि आव्यु मुंनि,
बृहदश्व तां नाम तेहि[नूं; हरख्यो] भूपति मंनि. १४
उठी रायि आसन आ[प्यूं, प्रेमि] करी प्रणाम;
अर्घपाद्य [पूजा] कीधी [मन करी]नि ठाम. १५
पासि रायि [युधि]ष्ठिर वि[ठा; ब्राह्म]ण आगलि माखि;
नयन [नीर, नी]सासा मे[हेली दुःख] पोतानूं दाखि. १६

कडवूं ३ :

राजा वाणी [इम] वदि, दुःख घणूं आणी रिदि :
'स्वामी, हूं द्यूत रमीनि हारियु रे. १

43 शुं. रमीआ. 44 दीधुं. दमीआ. नवे. 45 जाउ. 47 राजे. आपुं. देखाडुं. 48 पाडुं. 49 ']लि' थी प्रत शरू 51 सळंग आंक होई, आ १२ मी कडीए प्रतमां '२२' नो आंक छे 52 ऊ[......]यो. 54 बृहदश्व. नाम. 55 आसन. प्रणाम. 56 अर्घपोघ. कीधी. ठाम. 57 °ष्टीर. भाखि. 58 नयन. दाखि २६. कडवां २. 60 दूष. आंणी. रीदि. 61 स्वांमी हू दूत. हारीयु.

ढाल

'स्वामी, द्यूत रमी हूं हार्यु, कूड कौरवि कीधूं,
कपट करीनि शकुनि रमाड्यु, राज्य हरीनि लीधूं. २
पंचाली केशि [ग्रहीनि] ताणी, आणी सभा मुझारि,
ते दुःख हईथी [नवि] जाए करतां कोडि प्रकार. ३
अर्जुन तप करवानि चाल्यु तेह्नी जोऊं वाट,
आ अनुज [अ]रण्यमांह्यां दुःख पामि छि, तेह्ना अति ऊचाट. ४
[सेजि] सूतां कठिण लागती, हंसपिछ तलाई;
डाभ पा[थरी]नि सुयि छि एह् लाडिका भाई. ५
अनेकि [सुखडी] अनुदिन ज्यमता, कनक तणां तां पात्र,
ते [आहेडीनी] पिरि जीविइ, वनमांह्यां कष्टि गात्र. ६
[अम सरखु] आगि [को दुखि]ओ दीठु के सांभलियु,
[वनमांह्यां द:]म दुःख पा[म्यु राजा] थईनि चलियु. ७
हुउओ [हुइ तो] संभालु, [मन] मार्नु टारु.
शोकागनिजया[ला व्यापी] छि, शीतल [वचनि] वारु.' ८
वल्ता बृहदश्व [ऋषि]बोलि : 'सांभलि, राजा धर्म;
प्राणि सर्व सदायि दुःखिया [येहि] वल्यां कर्म. ९
रामचंद्र वनवास भोगव्यु [ये तो] अशरणिशरण,
जनकसुतानूं वनमांह्यां आवी रावण कीधूं हरण. १०
अति दुःख वहु वानरदल्ल मेहेली सागर बांधी पाज;
रावण मारी वभीखणनि आप्यूं लंकानूं राज. ११

63 रमी. हर. 64 रमाडयु 65 तारी. आणी. 66 दुख. थाई. 67 जोई. 68 दुख पामि छि 69 सुता चढती. 71 अनुदिन जेमता कनक. 72 जिवइ वनमांहे. 73 सांभलियुं 74 दुख पा. करीयुं 75 [illegible] 77 बृहदश्व. 78. प्राणी दुखीया. 79 अशरणिशरणं. 80 वनमांहे. रावण. हर. 81 दुख. वानरदल. 82 रावण. वभीखणनि.

इंद्र अमर मेहिली नाठु मानसरोव[रि व]शिओ.
मघवा महीपति निघुख थयु ते शची समीपि घशिओ. १२
वाह्‌व तेणि वाहन कीधा, नारीनि नवि अडिउ;
अगस्ति केरा शापथकी ते सर्प [थ]ईनि पडियु. १३
एहेवां कहूं दृष्टांत केटलां? सांभलि एक आख्यान.
नैषध देशि हउओ एक बलियु नल नामि राजान. १४
तेहि द्यूत रमीनि हारयु राजऋधि भंडार;
एकेके वस्त्रि वनि चाल्यां ते बेहू नर नि नारि. १५
वस्त्र वध्यारी नारी मेहेली उतारी अति नेहो.
थायां जूजूयां, अति दुःख पाम्यां राजा राणी बेहु. १६
ते जोतां तह्मो शा दूखिया? जु नि, धीरय आणु.
कर्म तणि वशि सघला प्राणी, एहवूं अंतरि जाणु.' १७
राजा कहि : 'ते कुण नल राजा? किम रम्यु? किम हारयु?
कुणि राज्य हा[रयूं] तां तेहनूं? मंत्रीइ नवि वारयु? १८
तेह कथा कहु जी मूह्नि दया रिदिशूं आणी.
पापीनि घरि तां पावन, विप्र, तह्मारी वाणी.' १९

कडवूं ४ :

एणी परि बोल्या मुनि : साम्भलि रे तूं, राजान,
एकमन प्रसन्न करीनि आपणूं रे. १

83 ईंद्र. मान. शीओं 84 माघवा. घुप थयुं ने शंचासमीपि घशीओ. 85 वाहन. अडीउ. 86 पडीयु 87 द्रष्टात 88 आक्षान. बलीयु. नामि राजांन. 90 वंनि. बहु. 92 जजूगा. दुष पाम्या. 93 दुखीया. आणु. 94 तणि. प्राणी जाणु. 95 रम्यु. 96 मंत्रीई. 97 रीदिशूं आणी. 98 पावंन वाणी. ४५. कडवा ३ 100 राजान. 1 एकमन प्रसन. आपणुं.

ढाल

प्रसन्न करीनि मंन आपणूं शुणो, युधिष्ठिर, साचूं.
सुख दुःख देहि साथि सरज्यां छि, चित न कीजि काचूं. २
नैषध नामि देश मनोहर, वीरसेन वसुधेश.
प्राणीमात्र नहीं को दूखियु, यिहां धर्मिष्ठ नरेश. ३
तेहनि सुत नल नामि सुंदर, जाणे मन्मथ यणियु;
देव पितर नि मनुष्य तणो रे, राय, टल्यु ते रणियु. ४
सकल गुणे पूरण ज ई नल रा, चतुर अनि दातार;
रूपवंत को नहीं तां बीजु जोतां युग मुझारि. ५
जेणि जई नल राजा ज्याच्यु ते बीजी वार नवि मागि.
अनेक्य यज्ञ करी धन खरचूं तोहि रिधि न भागि. ६
नल शिरि त्रि अंबोडा बांध्या, करतां तां मलस्नान.
शाम कलंक रह्या शिरि वि, ए जाणु, राय, निदान, ७
विहिची मेरु माहागिरि नाप्यु पात्र तणि तां पाणि,
तु शूं दान करयूं मि महीमांहां, मनि मोटी ए काणि. ८
ब्राह्म[ण]नि तां वरूण करंतां सिंधु न थ्यु मारुआडि,
तु शूं पुण्य करयूं मि मनशूं, चिंता पामि हाडि. ९
चंद्र सूरय पाखलि कूंडालूं थाइ छि वरसाति;
तिहां कल्पना माहाकविनि मनि एहवी आवि वात: १०
नल्ना तेजरूपियु सूरय, यशरूपि शशि देखी,

2 प्रस्न. आपणुं. युधिश्टिर. 3 सुषदूष. सरज्यां. 4 नामि देस मनोहर. 5 प्राणी. नंही. दूषीउ. धर्मीष्ट. 6 नांमि. जाणे. यणीउ 7 तेंगो. रंणीयु. 8 पूरंण अंनि 9 ज्याच्यु 11 अंनेक्य. यज्ञं. धंन परचूं. 12 मल-स्नान 13 शाम. 14 विहीची. नाप्यू तंणि. पांणि. 15 शु दांन करू. माहां. मंनि. कांणि. 16 ब्राह्मंनि. 17 पूण्य. पामि. 18 पापलि. कूडालुं. थाई. 19 मंनि. 20 रूपीउ. देषी.

ब्रह्मा साचा जूठा जूइ अंतरगति ऊवेखी. ११
जिम नामूं जूठूं जाणि ते वाणिक लेइनि वालि.
तिम ध्याताए जूठा जाणी रविशशिनि कुंडालि. १२
एहवु भूपति अति अनोपम नैषध केरु राय.
जु जिह्वा असंख्य ज हुयि तु तेहना गुण कहिवाय. १३
तिम वैदर्भ देसनु राजा भीम नाम अति बलिओ,
दाता चतुर रूपवंत ते कुणि न जाइ कलिओ. १४
ते संतान तणी अति चिंता करतु राजा यांह,
दमन नाम ऋषि ईछा आवु मंदिर तेणि तांह. १५
आसन आपी राइ पूजु स्त्रीसहित देई मान,
प्रश्न करयूं: 'स्वामी, जां माहि किम हुइ संतान?' १६
ऋषिजीइ वरदान ज आप्यूं: 'पुत्री, त्रण्य कुमार:
दमयंती दम दमन दांत ए संतति हुशि च्यार. १७

कडवूं ५:

बृहदश्व रखि इम भणि: धर्मपुत्र श्रवणे सुणि;
ते तणी संत[ति] हुई अति भली रे. १

ढाल

अति भली संतति थई तेहनि, आनंद पाम्यु भूप.
पुत्रीना शरखूं नहीं कैहीइ चौद लोकमांहां रूप. २
नारी सरवनि दमि कामिनी सुंदर तां अभिराम.

---

21 ऊवेषी 22 नांमूं जुठू जाणि. वांणीक 23 जाणी. 24 एहवुं. अंनोपंम. 25 जीहा. असंख. 26 वलीओ 27 जाई. कलीओ. 28 संतांन. तंणी. 29 दंमन. आवुक. 30 आसन. स्त्रीसहीत. मान. 31 स्वामी. हुई. 32 ऋषिजीइ वरदान. पूत्री. 33 दंमयंती. दमन. ६१. कडवा ४. 35 बृहदश्व रषि अंम भंणि -पूत्र श्रवणें. 36 तंणि. 38 आनंद पांम्यु. 39 पूत्रीना शरषूं नंही कहीई. ६२. 40 दंमि. कांमिनी सुदर. अभिरांम.

तेहवूं जोई तेणि पाड्यूं दमयंती ते नाम. ३
वेध्याइ याहि वदन ज रचिउं त्याहारि स[ा]र इंदुनूं हरिउं;
तर लीधी तांहां खाण थई छि, मुख मनोहर करिउं. ४
मुष्टि उदर भरयूं वेध्य[ा]इ अंगुलिनूं एथाण,
त्रिवली प्रगट थई प्रेमदानि प्रत्यक्ष एह प्रमाण. ५
कबरी-पिछि भार मयुरनु वन तां त्या विधि पाश,
अर्द्धचंद्र देई शिखि काढ्यु पूजी पुष्पप्रकाश. ६
सकल गुणे पूरण ते नारी एक समि उल्हास,
अग्निशर्मा नामि ब्राह्मण आव्यु भीम-अवाश. ७
वाडव बहु करि छि भोजन, तेहवि ते द्विज बोलि:
'नारी कोए नहीं तुझ शरखी, नर नहीं को नल-तोलि. ८
जु नल राजा वर तूं पामि, जन्म सफल तुझ होय.
चौद लोकमांहां नहीं ते-तोलि रूपि बीजु कोय. ९
नैषध नर नि जु तूं नारी शरखि शरखी जोड,
नहींतरि विध्य[ा]तानि लागि रूप रच्यानी खोड'. १०
तेह सांभलीनि वैदर्भी विरह व्यापियु मंन.
दान मान देई संतोख्यु मानिनीइ ते मुंनि. ११
तांहांथी आवी नैषध आगलि भीमीना गुण भाखि;
प्रेम ऊपायु नल राजानि शुणतां दीठा पाखि. १२
परस्परि अनुराग ऊपनु, मांहोमांहि प्रीत.

41 तेहवू जाई नांम. 42 वेध्याई. रची रूप. ईदूनूं हरीउं. 43 पांग. मुप. करीउं. 44 वैध्याई. अंगुलीनूं एधांण. 45 पंमाण. 46 वंन. 47 शिषि. 48 पूरंण. संमि. 49 अमिशर्मानिमि ब्रंह्मण. 50 बहू. भोजंन. 51 नहीं तुंम शरषी. नंहीं 52 पामि. जंन्म सबल. 53 नंहीं. 54 शरषि शरषी. 55 नहींतरि. 'रूपरच्यानी' जेवुं वंचाय छे. षोड. 56 विदर्भी. व्यापीवु. 57 दांन मांन. संतोष्यु. मानिनीई. मुनि. 58 भाषि. 59 शुंणतां. पाषि. 60 अनुराग ऊपनु माहोमाहि.

रसशृंगार तणु थ्यु अंकुर विप्रलंभ ते रीत. १३
एक समि ते वीरसेनसुत उपवन पादप निरखी
[रम]तु सरनी तीरि आव्यु आनंद-भारि अति ह[र]खी. १४
देखी तेह तडाग अनोपम, पंकज नाना-रंग,
चक्रवाक सारस शुभ बोलि, अति गुंजारव भ्रंग. १५
निर्मल साधु तणा मन सरीखूं, शीतल सुतनूं सांई;
जल जोई राजा मनि कल्पि नवी ओपम कांई. १६

कडवूं ६...

महीपति मनमांहि धरि, जोतु जोतु सांचरि;
मनि करि तां नानाविधनी कल्पना रे. १

ढाल

क[रि कल]पना अनेके परि पूरण सर ते जोई :
'शूं भई, अमरि भरूं छि अमृत पूरण शशी निचोई! २
सिंधु थकी सर अधिकूं अतिसि मि मन साथि दीठूं;
येहनूं जल कांई अरथि न आवि, आ तो अमृत-मीठूं. ३
श्रीहरि जे सागरि सूइ छि, सही ए सर नवि जाणूं.
नारायण आगलि नारदजी शूं ए सर नथि विखाणूं! ४
कुंभसुति ते आचमन कीधूं, कोटि वरस रहु टालु.
अनेकि कुंभि उलेचतां ए धरि नहीं सर चालु.' ५
एणी पिरि चींतव[तां] तांहां सरोवरनी तीरि

62 संमि. निरपी. 63 आव्युं आनंद. हर्षी 64 देषी. अनोपम. नांना 65 गंजारव 66 साद्धु तणो मंन शरीषुं सुतनुं. 68 कडवां ५. 69 धरि. 70 मंनि. नांनाविद्ध. 73 भरू. अिमृत. नचोई. ७७. 74 शिधू. अद्धीकूं. 75 अंमृत. 76 जांणूं. 77 नारायंण. शु विषांणु 78 कुंभ आचमंन कीधुं. 79 अंनेकि कुंभचतां. नहीं. 80 ताहां.

वरटापति सुंदर तां दीठु कनक सर्यूं शरीर. ६
एक चरण पांखमांहि [ली]धो, बीजु अवनी मांडी,
रक्तशाद जाणे चमर धरूं छि, विद्रुम केरी डांडी. ७
निद्रावशि ते रायि दीठु, मिहिवानि मन चलिउं.
अपूरव माटि भूपतिनूं मन पंखीमांहां भलिउं. ८
चरण-त्राण उतारी भूपति वामन थईनि चालु;
बलिराजानी परि रही दक्षिण कर पद झालु. ९
जाग्यु खग ते झाल्यु जाणी मांडूं अति आक्रंद.
सर सघलि पंखी बहु बोलि दीन यामणां मंद. १०
मानुप-वाचायि ते बोल्यु वाणी दीन मगल:
'शाहानि काजि हूं [झा]ल्यु छूं ? तूं छि अति दयाल. ११
पांख तणि हेमि शूं ताहारा भराशि भंडार ?
सागरजल केटलूं वाधि पडनो शाहि टार ? १२
अहिंडी अमनि नवि मारि अपूरव अमनि जाणी.'
राजा तुहि मूकि नहीं ते सुणतां अमृत वाणी. १३
हंसि हरिनूं समरण कीधूं: 'तूं छि दीनानाथ.
कठिण थयु ग नथी मूकतु, मही रहु छि हाथ. १४
वृद्ध घणूं, माता माहारी बाल साधवी नारी;
बहूनूं जीवन तां हूं छूं, मूकावो, मोरारी. १५
सार्था सघरा इ घरि जाशि, माता पाहाडी जोसि;
विरहि प्राण छांडसि त्याहारि अबला पाशि रोशि. १६

81 वरहापति. 82 चरण. पांप. अवंनी 83 विद्रुम करे. 84 चत्रीउं. 85 मंन पंखी. भलीउं. 86 चरणत्रांण. 87 दक्षंण 88 पग. जांणी. 89 पंखी. यांमणां. 90 मांनुप. वाणी. 91 शांहांनि. हू झल्यु छु 92 पांप. 93 केटलु. 94 अंमनि. अंमनि जाणी. 95 मूंकि. सुणतां अमृत वांणी. 96 हरिनुं. 97 कठीणी. मुकतु. 98 वृध घणू. 99 बेहूंनु जीवंन. मुकावो. 200 सघलाई. 1 विरहि प्राण.

करुणानिधि, ते दया कांहां गई जे गजपति मूकाव्यु?'
वचन सांभळी राय तणि मन दया-लेश तव आव्यु. १७
कर ढीलो मेहिल्यु तव पंखी ऊडी ग्यु आकाश;
मधुरि शब्द वाणी ते वोल्यु: 'नलराज, सुणु प्रकाश. १८
प्राणदान ति मुझनि दीधूं ते ओशीक[ल] थाऊं.
प्रत्युपकार करेया, राजा, कुंडिनपुरि हूं जाऊं. १९
भीम तणी सुता छि सुंदर दमयंती [अ]भिधान;
चौद लोकमांहि [ए]क रत्न छि, रूपि कहूं शुं मान? २०
एह विख्याता नीलज निशि दमयंतीनि शरजी;
प्रा[कृ]त नारी नीपाईनि सृष्टि जेणि नवि वरजी. २१
मृग शिखि चमरी वन मांहां नाठां; कम[ल] मीन गयां वारि;
[इंदु ऊह्लोलाई थिनु गुण गाई खाधी हारि.] २२
रंभा रंक थईनि छूटी, उर्वशी आगलि नाची;
मान त्यजीनि गई मेनका, दासी थई घृताची. २३
तेहनूं रूप ते तुह ज खरूं जु थाइ तुझ पटराणी.
ब्रह्मा विध्यनु श्रम थाइ साचु, चतुरपणि रहि पाणी. २४
त्यांहां जई तेहनि विरहि लगाडूं प्रीत करि यम नारि.
गुण ओशीकल थायि नहीं, राई, धिक् तेहनु अवतार. २५

कडवूं ७: राग मेवाडु

बृहदश्व रखि ओचरे: सांभलि, कुंतातंन.
पुण्यश्लोक एम वलतु वदि रे गुणीनि वचंन. १

2 मूंकाव्यु 3 वचंन. 4. पंखी. 5 मधूरि सब्द वाणी. 6 प्रांणदांन. थायीं. 7 कुंडंनपुरि हु जाऊ. 8 तंणी भिधान. 9 रूप हु शुं मान. 10 वीख्याता. 12 शिखि. चंमरी वंन 14 ऊर्वशी. 15 मान. मनिका. 16 पहं थाइ. पटरांणी. 17 ब्रह्मा विध्यंनु थाई. चतुरपंणि रहि पांणी 18 त्याहाग. यंम. 19 नही. राई १००. कडवा ६. 21 बृहदश्व रखि. अहीं 'ऊचरे' छेकी 'यम वदे' करेलुं छे. 22 शुंणीनि.

ढाल

वचन शुणीनि रा कहि: ' मि मित्र तूं साचु लह्यु.
जाणूं छूं ति कार्य कीधूं, बोल मुखि याहारि कह्यु. २
सत्पुरुष थोडुं कहि नि करि कारज अति घणूं.
नीच बोली देख[ा]डि नि काम स[ा]धि आपणूं.' ३
'वीर, विहिलु आवजे; कुशल मारग तुंहनि.
करे कारज मनवांछित, समइ संभारे मूहनि.' ४
आज्ञा मागी हंस चाल्यु, गरुड-गति करी जाय;
मंन हरिखि पंथ निरखि प्रेम शरिखि राय. ५
परिवार साथि पलि तेह नि कुंडिनपुरि खग आविआ;
नगरजन ये कोए देखि तेहनि मनि भाविया. ६
दमयंतीनि सदनि आव्या, दीर्घिका दीठी भरी.
विकच-वारिज-वन देखी ऊतरया ते अणिसरी. ७
मृणाल ग्रहवा हस लागां, नयणि निरख्यां कामिनी;
ग्रहिवानी ईछा करी उठी ताहारि भामिनी. ८
एक एक पूंठि सखी ग्रहवा ओयम नारी अति करि.
भैमी जे ग्रहिवा गई ते हंस वाणी विस्तरि. ९
ओढणानूं [अं]चर नांखी झ[ा]ल्वानी पिरि करि.
मनुष्यनी वाणी ताहारि मधुरि वचनि उचरि: १०
'सकल लोकि भ्रम्यो जांऊं, निरखिया नर कोडि;
भुवनमाहि नथी वीजूं नैषधराजनी जोडि. ११

24 वचंन. शुणीनि. 25 कीद्. मुखि. 26 सत्पुरुष थोडुं. 27 देखाडि. काम. आपणुं. 28 विहु. 29 मनवाछित. समइ. 31 हरिखि. निरखि. शरिखि. 32 परवार. कुंडनिपुरि. खग आवीआ 33 नगरजन. देखि. मनि. भावीया. 34 सदनि. 35 वन देखी. 36 निरख्या कामिनी. 37 भामिनी. 39 वाणि. 40 नांखी. 41 वाणी. मधुरि वचनि. अहीं '१०' नथी लख्यो. 42 भ्रम्यो जांउं. निरखीया. 43 भुवंन. अहीं '१०' छे, तेथी १ नो फेर रहेछे.

नारीमांहां यिम एक तुं छि, पुरुषमांहि तेह.
विद्य[ा]ताइ अमूल्क ए रत्न शरज्यां वेहि. १२
रूप ताहारूं सफल तु जु वर वरि नलराय.
योग पाखि अन्य थानि काल केही पिरि जाइ ! १३
रूप हुइ तु [चतु]र नुहि, अथवा नहीं उदार.
ते हुइ तु विभव नुहि के लंपट हुइ अपार. १४
अति चतुर अनुकूल पति, बल्वंत नहीं समान.
वरि जु नलरायनि तु रहि मननूं मान. १५
भावी हुइ ते सही, पण चतुरि करवु यत्न.
भाग्य हुइ तु म्यलि कुंदणनि सग रत्न." १६

कडवुं ८ : ...

वचन विहगनूं शुणी रे विस्मय पामी मंन;
गलित थईनि उच्चरि रे वनिता विनयवचंन. १

[ढाल]

वच[न] विनता उच्चरि रे · 'विहंग, तूं विरी थयु;
गुण कह्या नलरायना नि भाव मननु तांहां गयु. २
हवि ए उपकार करि, तेहनि पामि परवरु;
[जूठा एह मुझ गुण] कहीनि चित्त तां तेहनूं हरु.' ३
[वायक वामाना शु]णी आकाशमारगि अणसरी,
वेगि च[ढी]नि ते गयु रे हंस नल्यानी पुरी. ४

---

44 पुरुषमांहि. 45 विद्यताई शरज्या 46 ताहारू सफल 47. पाखि अन्य थानि. जाई. 48 हुई. नहीं. 49 हुई. लपट हुई. 50 अनुकुल. नहीं समांन. 51 मान. 52 हुई. पंण. करवू यत्न 53 कुंदणनि. १५ कडवा ७. 55 वचंन. शुणी पांमी. 56 गलीत. 58 वचं 59 मननु. अहीं फरी '१'नो आंक छे, तेथी १ नो फेर रहेशे. 61 कहीनि. 62 अंणसरी.

कुसल राय पूछिऊं तव हशी हंस वाणी वदि :
'विरहिवेदन जगावी मि रुवल ग्रामानि रिदि. ५
मनसा वाचा कर्मणा ए नीम तेणीए करयु :
मावभक्ति गामिनी भर्त्ता भूपति तूं वरयु.' ६
वचनि राइ रलियाति कीधु; सीख मार्गी संचरया;
विरह नलनि लगाडी ते मानसरि खग परवरया. ७
हंसवाणी रिदि आणी प्राणी परवसि थ्यु घणूं.
भूखि भागी प्रीति लागी; जागी तु मन सणमणूं. ८
दु:ख धरवूं, सही मरवूं, करवूं काई सूझि नहीं.
इंद वालि, दहे गालि, टालि ते सूझि किही? ९
'ए राहु द्विजपति ग्रगामाहि कोदर्थी काल्यु टल्यु;
मुखचंद्र ग्रहिवा माहरूं उतावलु आवी भल्यु. १०
राहुनूं शिर हरि छिदूं—पुराणिक मिथ्यां कहि:
विरहिणीनूं छेदिऊं ते [मर्म मां]हलु नवि रहि. ११
जठर रहि तूं [राहुनूं, चंद्र पचतु] पापियु.
विरहिणीनि पीडवा सि वि[धाताइ आपियु ?] १२
अगस्ति याहि उदधि पीधु ताहि शशी ए नवि जरयु;
मंदराचल पटयु नव ते चूर्ण कां, भइ, नवि करयु? १३
पूछि, सखि, तूं इंदुनि : ए विया तिं कांहीथी भणी?
उदधिमांहां वडवानलथी के शिव गलाना विष तणी? १४
हार ग्रहीनि कहि, कामिनि, गुणवंत छि तूं, नवि घटि.
परनारिना वि पयोधरनि स्पर्श करि छि शा मटि? १५

64 पूछीउ. वांणी. 65 वेदंन. शांमांनि 66 मंनसा. औ. 67 मांमिनी. भुपत्ति 68 रलीयाति. सीष. 70 हसवाणी. आंणी. प्रांणी. घंणुं. 71 भूपि. संणमंणुं. 72 दृष सुझि नंही 74 माहि 75 मुष. 76 पूंराणिक. 77 छेदीउं. 78 पापीयु. 80 यद्र उदधी. 82 इंदुनि. ति. भंणी. 83 उदधी. तंणी. 84 कांमिनि.

इंदु आवी जघननि ए अडि छि नीलज थई.
कलंकी शूं करि नहीं जे लाज तु तारी गई. १६
पुष्प-शर ए कामना ते, सखी, माह्यनि पाथरि!
बाणशेय्या पुढीइ ते शर्म, कुहु, किहांथी करि! १७
अंगथीआं चंदन धूओ; देह् माहारानि फसि.
प्रत्यक्ष जूओ पारनूं विषधर जेणि बहु वसि. १८
गान-वेणु गमि नहीं जु मनथी मोहो नवि टलि.
सघलीइ ए सुख करि जु नल राजा आवी म्यलि. १९
गिरि न रमि. वन न गमि, सूनी चालि लटथडि.
विरहि पाडी वामनयणी पुष्पशेय्यांइ पडि. २०
मागूं मरण आवि नहीं, तु सुख आवि किहां थकी!'
नि[:]श्वास मेहिली नीर ढालि सखी आगलि एम बकी. २१
दमयंतीनि विरहि येहवु तेह तां नलरायनि.
कहि भालण: दिवस रजनी सुख नहीं ते कायनि. २२

कडवुं ९:...

भीम राइं श्रवणे शुणूं रे: पुत्रीनि पीडा तंन;
विहिवानु समय थयु रे, अचला थई यौवंन. १

ढाल

यौवन पामी पदि्मनी, स्वयंवर सूधूं कीजीइ.
भूपालमांह्या नल आवशि, पछि प्रीति जाणी दीजीइ. २
महीपति सहूनि मोकली तेणि गामि गामि [कं]कोतरी.
शुणी स्वयंवर नीशरि नरपति सेना परवरी. ३

86 हर्दु आपी. 87 नही. 88 कांमना. 89 पुढीइं. 90 धूओं. 91 पारधूं. विषदर. 92 गांनवेणु गंमि नही. मंनथी. 93 सुष. 94 रंमि. वंन. गंमि. सुंनी. 95 वांम. नयंणि. पुष्पशेय्याइं. 96 मागुं मर्ण. नंही. 99 भालंण. दीवस. नही. २१. कडवुं ८. 1 शुंणुं. 2 वीहीवानु संमय. 4 यौवंन पामी. कीजीइ. 5 जांणी दीजीइ. 6 गामि गांमि.

सेना चालि, शेष हालि, माहाले महीपति मलपता,
'नारि वरशूं, प्रीति करसूं, मोद धरशूं' जलपता. ४
अश्व रथ गज चढी भूपति नगरथी सह्रू नीकल्या,
कुंडिनपुर भणी सांचरि; पदाति बहु आवी म्यल्या. ५
समय एहवे देव मुनि वि नारद परवत नाम
इंद्रसदनि आविया, सुरपति करयु प्रणाम. ६
प्रेम[शूं] पूजा करी विसारिया आसंन,
कुसल पूछि इंद्र रखिनि प्रीति आणी मंन: ७
'जे राइ रमवा आवता अहीं, प्रेम मुझ साथि स[दा],
ते कोए भूपति शि न आवि स्वर्गसुख आणी मुदा?' ८
कहि नारद: 'शुणु, मघवा, कुंडिनपतिनी दीकिरी,
दमयंती तां नाम तेहेनूं, शामा सुंदर छि खरी. ९
ताहारि स्त्री छि पुलोमी नि अप्सरा छि अति घणी;
तोलि नावि सोल्मइ कला दमयंती तणी. १०
मेनिका नि घृताची, प्रमद्वरा नि उर्वशी;
रूप जोतां चित्त माहारि कामिनि को नवि वशी. ११
स्वर्ग्य नहीं, पातालि नहीं: अवनीमांहि पणि एक छि.
किहितां कूडूं लागशि, पण मानशु दीठा पछि. १२
स्वयंवर छि तेहनु, तांहां जाय छि भूपाल.
पामवूं वरि देवनि, आशा तणी छि लाल. १३
तेणीइ मनि वस्यु छि नल्राय स[र]खी जोडि.
ए योग एम म्यलि, नहीं तु विधातानि खोडि. १४

---

10 भुपति. सहु 11 भंणी. 12 मुंनी. नाम. 13 आवीया. करयुं. प्रणाम. 14 विसारीया. 15 रषिनि. 16 अंहा. 17 शिर न. आंणी. 18 शुणुं. कुडन-प्रतिनी. 19 परी. 20 नी अति घंणी. 21 सोल्मई तंणी. 23 कांमिनि. 24 नहि. नहीं. पंणी. 25 पंन मांनशु :6 तेहनुं. 27 पांमवुं. तंणी. 28 सखी. 29 खोडि.

यम रत्न कुंदणि जड्याइ तिम दमयंती नल भूप;
विधाताइ घडां छि विहूनां शरखां रूप.' १५
एहवी किहि छि वारता येहवि नारद मुंनि,
तेणि समिइ तांहां आविया जम वरुण हुताशंन. १६
लोकपालि सांभल्यूं सुंदरी तणूं वखाण,
मन करयूं जावा तांहां स्वयंवर जोवाणि. १७
वाहन विशी आपणि सांचरि सव आकास.
इंद्र केहि : 'ठाला पडि अप्सरा करसि हाश'. १८
विरह लाई वल्या वेगि नारद पर्वत वेह.
लोकपाल ते नीसरया अंतरि आणी नेहि. १९
'बुहे वाते सुंदरी नहीं हुइ सुखदायका
नल त्यजी आपण वरसि तु तां मूरखनायका. २०
कदाचि वरसि नैषधने नहीं रहि आपणी ला[ज].
बुहे वाते नहीं सरि जोवा गयाथी काज. २१
आश्चर्य एह जे स्वर्ग छांडी अवनी आव्या स्वाम.
जांहां मनि सुख छे ते स्वर्ग जाणीइ, रूढिनूं नहीं नाम.' २२
एहवूं मनि वितर्क करता सांचरि सव देव,
मारगमांहि नल निरखु अवनीइ ततखेव. २३
मांहोमांहि विचार मांड्यु : 'कीजीइ उपाय;
कामिनीनि कारणि याचीइ जईं नलराय.' २४
आकाशथी ते ऊतरया याचवा जोईं मोख.

30 शूंदणि. 31 विधालाई. बहुना शरपा. 33 समिइ. आवीया. वरूण. 34 तंणूं वपाण. 35 करयुं. जोवाणी. 36 वाहंन. आपंणि. 37 करासि. 39 आंणी. 40 सुषदायका. 41 आपंण. मूरष 42 नंही. राहि आपंणी. 43 नंही. 44 अवंनी आव्या सेवांम. 45 मंनि. नई नांम. 46. मंनि वितर्क. 47. नेल निरषुं. अवनीअि ततपेव. 48 माहोमांहि. 49 कांमिनींनि कारंणि, याचीई. 50 मोप.

कहि भालण : थया याचक. अर्थी न जुइ दोख. २५

कडवूं १०...

नल समीपि आविया रे देता ते आशीस;
स्तुति करि ते रायनी रे, लाजि नमतां शीस. १

ढाल

लाजि शीस नीचां नमे. याचवूं अति हलुआपणूं.
शूं करि जु मन वशि नहीं तेज ढांक्यूं ते तणूं. २
'सत्यवंत दातार छे नि ननु ति भणियु नथी.
अथवा शूं ते वीसरयु ? संदेह-शूं कहीइ कथी ? ३
उदार जाणी याचवा आविया छूं अह्मो तूं भणी.
सत्य वचन दि काम करवा; आश छि ताहारी घणी.' ४
नल कहि : 'मि सही करवूं ये तह्मारूं कृत्य.
वचन मिथ्या नवि कहूं ए सही जाणो सत्य.' ५
देव कहि छि : 'दूत थई जा शामानि संनिधान.
प्रीछवी अह्मनि वरावु, ए तह्मारूं दान.' ६
पुण्यश्लोकि पूछिऊं : 'जी, कुहु तह्मारूं नाम.
केही पिरि ते सिधि पामि ? कठिण छि ए काम.' ७
शचीपति कहि : 'सांभलु, रा; इंद्र मुझनि जाणि.
ए वरुण, ए हुताशन, ए हरि जे जन-प्राण. ८
सुंदरीनि जइ कहु : सुर आव्या छे तुझ हेतु;

51 भालण. अथी. दोष. कडवां १. 53 समीपि आवीय. 54 नमता. 56 हलुआपणु 57 मंन वशी नहीं. तणुं अने अहीं कडी '१'नो आंक छे, तेथी '१' नो तफावत. 58 संणीयु. 59 वीशरयु. 60 जांणी. आवीया. तुं भणी. 61 वचंन. कांम करवा आशाश. घणी. 62 करवू. तह्मारू 64 संनिधांन. 65 प्रीछवी अह्मनि. दांन. 66 पूछीउं. नाम. 67 पांमि. ए कांम. 68 जाणि. 69 वरुण. जनप्रांण.

मनि गमि तेहेनि वरु, आमा, करी संकेतु. ९
नल कहि: 'ते नारनूं मुझ ऊपरि छि मंन.
एक अर्थि दूत थईनि किम कहूं वचंन?' १०
पुलोमीपति कहि: 'राजा, सुखि कहीइ हाकार.
सत्यवादी सबल काहावी किम कहि नाकार? ११
स्वर्गथी सुर आविया अह्मो याचवानि आज.
कल्पतरुनि एणी वाति कामधेनुनि लाज. १२
अस्थि आप्यां दधीचि निज, मांस शिबि राजान,
ते थकी तूं नून नथी; चीतवी जूओ ज्ञान.' १३
तव मनि महीपति [चीत]वि: 'आपतां भैमी नारि,
प्राण आप्या थकी अधिकूं यश नहीं संसारि. १४
प्राणथी ए प्रेमदा शतगुणी अधिकी कोटि.
शिबि समानि कीर्त्ति थातां घणी दीसि खोटि. १५
उदधि गिरि नि वृक्ष ते अवनीनि न करि भार.
शीक्षति ले. ना कहि ते दुष्टनि धिक्कार. १६
ना कहि निरास [थाइ], [क्ले]श पामि तंन.
पापि तां नवि छूटीइ जु कोडि कीजि पुन्य. १७
विधाताइ करयु विहिरु सरसव नि यम मेर:
एक याचक, एक दाता, घणु दीसि फेर. १८
लाज मिहिली देव आव्या थई याचिक दीन;
भाग्य माहारि मन, एहनां करयां एहवां लीन. १९
काल जाशि, किहिण थाशि, गाशि गुणी पुराणि:

71 शाता. 73 मिम. 74 सुषि कहीइ. 76 आवीया. 77 कल्पतरुनि. 78 मास. राजान. 79 तु. ज्ञान. 80 मंनि. भौमी. 81 प्राण. अधिकू. नही. 82 प्रांणथी. 83 शबि कमानि कर्नि षोटि. 86 पामि. 87 पापी. छूटीई. 88 विधाताइ. मरे. 89 घणु. करे. 90 थर. 91 मंन. एहवा.

नैपध रानि आगलि देवताए ओड्या पाणि. २०
धिन दिन ते येणि आवि याचवा को द्वारि.
कांई जु आपी सकि तेणि जीतिउ संसारि.' २१
एहिवूं अंतरि चीनवीनि वदि न[ल] भूपाल:
'मंदिरमांहां मि किम जवाइ? द्वारि बहु रखवाल.' २२
इंद्र कहि: 'वरदानथी देखसि नहीं प्रतिहार.
ईछाइ तूं दर्शन देज्ये. [दे]खी विविधि विहिवार.' २३
वृहदश्व कहि: धर्म रा, ते करी अंगीकार,
देवता ते तिहां रह्या; नल चालु पुर मुझारि. २४
राजमंदिरि गयो वेगि सुंदरीनि ध्यानि,
कुणि ते दीठु नहीं; अति रूप छि अभिराम. २५
नयनि निरखी सुंदरी तव वाधियु अति काम.
विवेकि वश कर्यां इंद्री; मन राख्यूं ठामि. २६

कडवूं ११ : राग गुडी

राय रह्यु जई भवन मुझारि. देखि नल, नवि देखि नारि.
दाशी कारजि आवि जाय, रली जालवि तिहां नलराय. १
एक ऊघाडूं करीनि अंग चंदनलेप करि छि अंग.
परनारी जाणीनि मंनि नल राजा मींच्यां लोचंन. २
तव नारी को आवी दडवडी, राइ नवि दीठी, आथडी.
आवी दमयंतीनि कहि: 'कोएक नर आ मंदिरि रहि. ३
हवडां मुझने स्पर्स ज थयु, झाल्यूं एटलि अलगु गयु.
दष्टिबंध-विद्यानु जाण आव्यु छि को पुरुप प्रमाण.' ४

93 ओड्या पाणि. 94 दिन. योगि. 95 कीई. जीतीउ. 97 रपवाल. 98 वरदानथी देखसि न्हीं. 99 ईछाई. देयेपि. 400 वृहदश्व. 1 मुझरि. 2 ध्यानि. 4 नीरखी. वाधीउ काम. 5 राख्यु. २५. कडवां ४. 7 रयु. देखि—देपि. 10 जाणीनि. मीच्यां. 13 थ. थयु. 14 दृष्टिबंध. जाण. प्रमांण.

तव उठी वेगि सुंदरी, साथे लीधी सवि किंकरी.
हाथाजोडी करिइ आयास, तव रा रूप करयूं प्रकाश. ५
दीठु जाणे प्रत्यक्ष काम. मानी देव, को करि प्रणाम.
विस्मिय पामी गजगामिनी सघली रूप जोई कामिनी. ६
'ए कुण? अहीं किम करयु प्रवेश? दीठु नहीं प्रतिहार-निदेश!
देव यक्ष गंधर्व को सही. अवर पुरुपि अवाइ नहीं. ७
धन देश जिहां ए अवतार, स्वर्ग थकी ते अधिकु ठार.
धन धन तेह नगरना जंन, ये शिहिजि पामि दर्शन. ८
धन मात जेणीइ जणु, धन ते गुरु जे पासि भणु.
कुएक पुन्यि आव्यु आज. शकि तु कांई सरसि काज.' ९
आदरशूं आप्यूं आसंन, पूजा प्रेमि कीधी धंन.
प्रेमदा पूछि प्रीति भरी, जाणे मन लीधूं छिं हरीः १०
'कुहु, स्वामी, कहीं छि तुम वास? कीम कीधु अहीं कणि आयास?
द्वारि कुणि नवि वोलाविया? कुण भेद मंदिरि आविया? ११
सांभळ्या तह्मारूं नाम मन करि छि अमारूं काम.
कारय कुहु जी आव्या तणूं. मन मुझ मोहो पामि छि घणूं.' १२
तव नल राजा वाणी वदि: 'जुओ नीति विचारी रिदि.
जे को धर्म तणी गति लहि, आपि आप नाम किम कहि?' १३
वामा वदि: 'कुहुजी नात, तेथी सरव जणासि वात.
पिता तह्मारानि सांभळी अम मननी तु पुहुचि रळी.' १४
राय वदि: 'आव्या छि देव इंद्र वरुण यम पावक खेव;

15 किंकरी. 16 करीह करयुं 17 जाणे. काम मांनी. 18 पांमी गजगामिनी. कामिनी. 19 अहीं. 20 अवाई 22 धंन. २. पांमि दर्सन. 23 धंन. जेणीइ जाणु. ध्यांन. भणु 25 आप्यूं. प्रेम. 26 जाणे. लीधुं. 27 स्वामी. कहीं. अहींकणि. 28 वोलावीया आवीया. 29 नाम मंन काम. 30 तंणूं. पांमि. घणुं. 31 वांणी. 32 नाम. 33 जणासि. 34 मंन. 35 वारुण. पावक पवे.

स्वयंवर जोवानी खांति दूत मोकल्यु हूं एकांति. १५
[तेह तणे वरदा]नि अहीं आव्यु कुणि दीठु नहीं.
[शु]शु वीनती तेहनी आप, शूं क[र]सु पूछीनि बाप! १६
[देवि का]ह्यूं छि ते करु; च्यारमां[हिं] गमि तेहनि वरु.
दूत थई आव्यु आ] स्थान, क[ही]इ किम तात-अभिधान? १७
नंदन वन] नि अमृतपान, [देव तणां सांभलवां गान;
पुन्य विना] ते किम पामीइ? [जरा नहीं, सुखि दिन वा]मीइ. १८
मन साथि करी विवेक इंद्रवचन केहवूं छि एक:
ताहारा अधरपान-प्रताप अम्हो जीववा वांछूं आप. १९
अमृतलोभ कहुंनां आज त्यम मनमांहां आवि छि लाज.
जु तूं गुणवंती आवि नारि. स्वर्गलोक पामि शणगार. २०
जु तूं छाया विशि पासि, कल्पवृक्ष पामि उह्लास.
दर्शन देइ तिहां प्रकाश; कामधेनुनी पूरु आश. २१
इंद्राणी परिचर्या करी ताहारी थई रिहिशि अनुचरी.
रंभा ओर्वशी करशि वाय, तिलोत्तमा चांपसि पाय. २२
घृताची आगलि नाचशि, मनेका गुण गाई राचशि.
रूडूं सुख पामिश, सुंदरी, सुरपतिनि भर्तार ज वरी.' २३
[दम]ती वामा बोलि वाणी: 'शांभलि, सुंदर पुरुष [सुजाण.
....................] घणी. आश[.................... २४
देव सरवेने] हुइ ज्ञान; जाणि [मननी वात निदान.
तो शूं ज्ञान] तेहनूं गयूं? एहवूं अंधारूं शि थयूं? २५

36 पांखि. 37 अहीं. नेहीं 40 स्थांन. 41 अमृतपांन. 42 पांमीइ. '१७'नो आंक बीजी वार पण छे, तेथी '१'नो फेर. 43 केहवुं. 44 पांन अम्हो. वांछू. 45 अंमृत. त्यम (?) मंनमांहां. 46 पामि शणगार. 47 पांमि. 48 देई. 49 इंद्रांणी. 52 दम. 53 वांना. वांणी. 54 रा. सु. मो.नां वाचनामां आ लीटी:—"बोलानी चतुराई करी मन माहारूं लीधुं छे हरी." 55 हुई ज्ञांन. जाणे.

मि जव] वाणी खगनी शुणी, देह तणु नल कीधु धणी.
ते देवे शूं नव जाणिऊं जे अहीं वरवा मन ताणिऊं ? २६
नल राजा त्रिणि रुविं विख्यात मा[हारि] पिता अनि तां भ्रात.'
मंद हास्य करी रा उचरि : 'नारी, मूरखता आदरि. २७
किहां नल मानुष अल्पप्रता [प]? किहां सुरपति आव्यु छि आप ?
व्रत तप याग करि पामीइ तेहनि घरि आव्यां [पा]मीइ. २८
देह दमी वांछि मर्त्र लोक, जिहां सरव सु[ख] नि नहीं तां शोक.
ते छांडी को मानव भजि ? देखी गुंजा मणिनि त्यजि ? २९
येहनि मरण जरा नि व्याधि, एके सुख नहीं तां साधि.
कर्म तणे वशिथी जे भमि ते मानव मूरख निगमि.' ३०
वलती वामा बोलि मर्म : 'वांकु छि अति मननु धर्म.
मनि मानु ते मानुष देव, जे पणि लखियु कर्म[नि खेव. ३१
हंसि] गुण कह्या तां जेह. तममाहि दीसि छि [तेह.
इंद्र उल]ख्यु अहल्या नार, पावक ऋषिपत्नीत्र्य[भिचार. ३२
यम व्यंठू यमुनाशूं मंन, शूं कहीइ गुण [तेहना] थंन ?
परनारी-सहोदर राय रूपतुल्य [कु]णि न थवाय. ३३
देव तणि मनि वशु निशु हंसवच[नि] नल मुझ मनि वशु.
देवदूतनूं कह्यूं नवि करूं; वरि हूं विष ख्याईनि मरूं; ३४
के हूं कंठि घालूं पाश; जल झंपावी देहनु नाश.'
नैषध कहि : ' भली ए परि; चिंटा जाशु देवनि घिरि. ३५
दुर्मरणि जावूं यम-हाथिः पुन्यि सुरपति थाशि नाथ.

57 खगनी शुणी तणु धणी. 58 जाणीऊं अही मंन ताणीओ. 59 विख्यात. जनि. भ्रांत. 60 मूरखना 61 मानुष. 62 व्रत. 63 नंही. 64 मानव. देषी. 65 सुष. नंही 66 वशी'गी. भमि. मानव मूरख' निगमि. 67 वामा. 68 मानुष. पणि लषीयु. 69 तेम. 70 '३०'नो अंक जोईए ते नथी. 71 यमुनांशूं. कहीई. 72 आ लीटीने अने '३१'छे तेथी ३३ कडीनो हवे फेर 73 तणि. 74 देवदूतनुं हुं. षाईनि. 77 दुर्मरणि जावुं. पुण.

देव छतां नल शी परि वरि, येहनि कोपि ततक्षणि मरि?' ३६
एहवूं वचन कह्यूं येटलि रामा रुदन करि तेटलि.
द[या]वंत ते थ्युं गजंन, तव साचूं रा वदि वचंन : ३७
'शामा, हूं नल पाली सन्य, अहीं आ[वियु], दूतनूं कृत्य.
देव छतां मिट किम वगय? तेनु दीसि नहीं उपाय.' ३८
वल्ती भैमी कहि : 'प्राणेश, हूं एहवु प्रपंच करेश.
[पासि देव छतां], भूपाल, तव कंठि आरोपिश माल. ३९
[माहारि] नहीं कु बीजु स्वामी. निश्चल मन करयूं मि टामि.'
एहवु समय शुणी नल वलि, मागी शीख नि वे[गि प]लि. ४०
विरहाकुली कामिनी रही, सेवा प्रीति करि छि [सही].
अमर पासि नल आव्यु यदा, आदर[शूं] सुर पूछि तदा : ४१
'कहु, रा, दीठी ति पद्मिनी? वात कि[शी] तेहेना सद्मनी!
कीधु वरवा तणो [प्र]संग, केहेवु तेहना मननु रंग?' ४२
कहि नल : 'देव सहू सांभलु. सकल वात तस्यो मननी कलु.
हूं स्युं तेह तणे सदंनि; दीठु नहीं रखवाला जंन. ४३
हूं ते पास रयु तिहां जई; जोई कामिनी विस्मय थई.
पूछूं नाम पण मि नवि कह्यूं. अबलाइ अनुमाने लह्यूं.' ४४
मि घणी इ करी तिह्यां युक्ति. शामाइ वल्ती कही उक्ति.
मि शिख्वी ते अति घणूं. द्रढ मन मुझ ऊपरि ते तणूं. ४५
नारि कह्यूं : मंडपि आवज्यो; [स्वयंवर] सांनाधि भावज्यो.
देव देखतां तुझनि वरूं, एहवु [कांइ प्रपंच] ज करूं.' ४६
एहवूं कही रयु नल[भूप : सुरमन मान्यूं] तेह अनूप.

78 रुदन. 81 शामा. पाळी. अंहीं. दूतनू 82 नंही. 83 प्राणेश. हुं. 85 स्वांमी. मन. करयुं. टामि. 86 शीष. 87 कामिनी. 88 अंमर. 89 तहेना. 90 कीधुं. संघ. कहेवु. मननु. 91 तहीं मननी. 92 नंही रखवाला. 93 रयु. कामिनी. 94 पूछ्व नाम. कह्युं. अबलाई अनुमाने लहयुं. 95 घणीइ. 96 घणुं. ऊंपरि तणूं. 97 आवयो. भावयो. 98 देखता. 99 अनूप.

भूप उत्तरु स्कंधा[वार. चढी विमानि] रह्या सुर च्यार. ४७
बृहदश्व ऋषि क[हि : कुंता]तन, आव्यु लगन तणु शुभ दंन.
रचि[या मं]डप तोरणद्वार, ध्वजापताका उत्तम सार. ४८
रत्न[जडि]त चामीकर स्थंभ; मांहि पूतली जाणे रंभ.
[मां]चा बहु नृपना आसंन, रचना गय करावी [धं]न. ४९
तेड्या पृथ्वीपति ते घणा. आव्या साज करी आपणा.
राजि राजानी मंडली; मुख जाणे उडुमाला-म्यली. ५०
पीन बाहु पिहिरयां आभर्ण. मस्तकि मुगट नि कुंडल कर्णि.
आवी नल बिठु ते मधि. अमरे ऊपाई एक बुधि. ५१
कीधूं नलना शरखूं रूप. विस्मय पाम्या सघला भूप.
दमयंती त्रिठी पालखी; मंडपि आवीं साथि सखी. ५२
जुइ राजा केरी [हा]रि; पूछि नाम गोत्रविस्तार.
जे आगलि ज[ई कन्]या रहि, पिहिलूं तेहना मननि [ग्रहि. ५३
तेह]नि याहि मूकी जाय, तेजहीन ते झांखु थ[ा य.
देखी नलनूं] रूप प्रकास कोण तेहनी न [करि आस. ५४
भूप]ति मनमाहां थ्यु संदेह : पांचि नल शरखा [कुण एह ?
जुती जुती गजगामिनी नल आगलि आवी कामिनी. ५५
पंच नल देखी ते तांहां संदेह अति पा[मी म]नमांहां.
लक्षण सुरनां ये सांभल्यां, बृहद्श्व[की ये] हूंनि म्यल्यां, ५६
ठाम ठाम चमर जे ढलि, परशेवु कुहुनि नवि वलि.
सुंदर जोतां बहु चित्राम, निमिष न थाइ लोचन ठाम. ५७

1 बृहदश्व. तंन. व्यां लगु शुभ नंदन 2 रची.. तोरणद्वार उत्तंम. 3 चांमीकर. जांणे. 5 धंणा. आपंणा. 6 मुख जाणे. 9 शरखूं. पाम्या. 10 पालखी. सखी. 11 नांम. 12 मननि. 13 याय. झांखु. 15 मंनमांहा. शरखा. 16 जुती २. गजगामिनी. कामिनी. 17 देखी पां...18 हूंनि. 19 ठांम ठांम. 20 बहू चित्राम लोचंन ठांम.

आतप-वारण छाया [था]इ माला तेणि नवि करमाय.
ऊंचां आसन मांड्यां लाग, भूमि छवि नहीं कुहुना पाग. ५८
संदेह-कादवमांहि कली चिंताइ अति थई आकुली :
' अण-प्रीछि आरोपूं माल तु देव वराइ, रहि भूपाल. ५९
तु तां ततक्षण मरवूं सही. नल विना को वरवु नहीं.'
मनथी ऊपाई तां मति : ' सही आवशि आडूं सत्य. ६०
स्तवूं अमरनि कही तात. स्तवतां वससि मनमांहां वात.'
एहवु मनि विचार ज करी सुर आगलि वदि वैखरी; ६१
नम्र थकी नयणे जल भरि, आकारि अति आतुर करि :
' एहवु पापी छि अनंग जे पुत्रीशूं ऊपाइ रंग. ६२
मि वर्‌यु वीरसेन-सुत आदि हंस तणे वचने उह्लादि.
देव, तह्मो पितानि ठारि; पुत्री साथि शु [व्य]भचार ! ६३
तह्मनि सहूना मननूं ज्ञान. जाणु जे वरियु राजान.
लोकपाल जु करि अन्याय, प्रजा धर्ममारग किम जाय ! ६४
वाणी एह कहूं छूं खरी : मुझनि जाणुनि दीकरी.
पुत्री जाणी दया मनि धरो; आपापणां रूप सवि करो.' ६५
स्तवन करंती दीन सरीर; नयन थकी चालयां अति नीर.
दीठी भीमसुता भामणी; दया ऊपनी सुर-मनि घणी. ६६
निज निज रूप थया दिशपति. मनमांहां आनंद पामी सती.
नव ओलखियु नल भूपाल, वेगि कंठि आरोपी माल. ६७
पंच शब्द वागां नीशाण. ' जय जय ' वंदीजन कहि वाण.

21 वारण. 22 भूमि. नहीं. 23 चिताइ. 24 अणप्रीछि. वराइ. 25 ततक्षण 26 आडूं. 27 वसिसि. मनमांहां. 28 एहवु मनि. वैखरी. 30 ऊपाई. 31 वर्‌यु. तणे 33 तह्मनि. मननूं ज्ञान. जाणु. वर्‌यु राजान. 34 अन्याय. 35 वाणी. खरी. जाणुनि. 36 पुत्री जाणी. मनि. आपापणां 38 भामणी. घणी 39 दिशपती आनंद. 40 ओलखीयु. 41 नीशाण. वंदीजन. वाण.

वरियु नल देखी ते नारि भूपति कीधु हाहाकार. ६८
लोकपाल आनंदि[त] हौआ, वर आप्या जुहि जूजूआ :
'मख करतां परतक्ष दर्शन; गति अनुत्तम देवसदन.' ६९
ए बि वर इंद्रि आपिया, प्रीति करी निश्चल स्थापिया.
पावक तेड्यु आवि पाश : 'दाझि नही तेणि तनु [हु]ताश.' ७०
यम आपि अन्नि रसस्वाद, धर्म विखिइ मति, मनप्रसाद.
जलपति समरि रे आवि नीर, उत्तम गंधमाला शरीर. ७१
ए आठि वर नल पामियु, देव तणु भय मनि वामियु.
शीख करी नलशूं सुर वल्या, स्वर्ग भणी ते वेगि पल्या. ७२
भूपति अति संतोख्या भीम, शीख करी चाल्या पुर शीम.
विहिवाविधि मांडीनि कीध, मान घणां नल रानि दीध. ७३
शाकपाक नाना पकवान, भोजनविधि संतोखी जान.
आप्या दास नि दाशी घणी, गज रथ कीधी पिहिरामणी. ७४
अंबर उत्तम, मणिमय हार, आप्या वेगवंत तुखार.
नल विहिवा करी नीशर्‌यु, नैषध देशि वेगि परवर्‌यु. ७५
आव्यु पुरि, आनंद्या लोक, टलियु प्रजा मात्रनु शोक.
विघ्नरहित पाली मेदनी, जन वसि धर्म धर्मिष्ठ नि धनी. ७६
आनंदि दमयंतीशूं रमि, शत्रु सविनि तेजि दमि.
अश्वमेधादिक यज्ञ अनेक कीधा बहु धन करी विवेक. ७७
हौआं पुत्र पुत्री संतान, इंद्रसेन सेना अभिधान.
बृहदश्व कहि : शुणि, रा, खेव; विहिवा जोई बलिया देव. ७८

---

42 वरीउ. देखी. 43 आनंदि 44 दर्शन 45 आपीया. स्थापीय.
46 नहीं. 47 अंने. विषिह. मनप्रसाद. 49 पामीयु मंनि वामीयु.
50 शीष. 51 संतोष्या...शीष. 52 वीहीवावीधि. मान घणा. 53 पकवांन.
संतोषी जांन. 54 घणी. पिहिरांमणी 55 तुषार. 56 वीहीवा. नशरयु.
57 आनंद्या. टल्यु 58 जंत. धर्मिष्ठ नि धनी 59 आनंदि रमि. 60 अनेक
धंन. 61 संतांन. अभिधांन. 62 बृहदश्व. षेव. वीहीवा. बलीया.

साधु ससरानि दि मान, तिहां तेहनि रिहिवा किम स्थान ?
अति मानीइ विहिन भाणेज, तिहां तेह्नूं तपि किम करी तेज ?९०
गाय बहु, भूख्यां नवि रहि, तांहां तेहनी वात को कहि ?
काम क्रोध नहीं जिहां लोभ, तांहां किम पामि ते युग शोभ ? ९१
देव अतिथिनी पूजा सदा, तिहां ते किम वसि करी मुदा ?
देखी पशु तणा ते घात मनमांहि अति थ्यु रलियाति. ९२
वेद भणि गाई द्विजराय, जाणी यज्ञ ते नाशी जाय.
सुत्रामणि देखीनि सुरा हरख्यु जुग अणजाणी पुरा. ९३
वेदविहित दीठु येटलि नाठु तिहां थकी तेटलि.
एणी पिरि भमियु वरस ते बार, रिहिवा किहीं न पा[म्यु] ठार.९४
नलनी वाडीमांहां विशाल बिहिडु वृक्ष दीठो ततकालि.
अतिशि जोतां पाम्यु श्रम, तिहां रिहिवा कीधु आश्रम. ९५
द्वादश वरखे तिहां उलाण, नलनि एक थयूं विनाण.
लघुशंका कीधी भूपाल, पाग न धोया संध्याकाल. ९६
करी आचमन विधि ते करु, कलियुगि देहेमाहि संचरयु.
कायामाहि करी प्रवेश पुहुचु पुष्कर तणि निवेश. ९७
रमवा द्यूत कह्यु उपदेश : ' निश्चय जाणे, तूं जितेश. '
प्रेरयु पुष्कर कलियुगइ, आपि रह्यु गोधलु थई. ९८
अतिशि उज्ज्वल सुंदर अंग, रत्नजडित हेमम[य] शृंग.
द्वापर पिठु पाशामांह. पित्राइ चलाव्यु त्याह. ९९
आव्यु नलनी सभा मुझारि उक्षा अतिशि लेई सार.
राजा नलि आप्यूं आसन, पूछी कुशल नि कह्यूं वचन. १००

85 मांन स्थांन. 86 मानीइ. भांणेज. 87 वहु भूष्या. 88 कांम. पांमि 90 देषी पशू तणा. मंन रलीयाति. 91 भणि जांणी. 92 सुत्रामिणि. देषीनि. हरष्यु. अणजांणी पुर. 94 भमीउ. किही. पां. 95 पांम्यु. कीधु. 97 वरषे. थुलाण. विनांण. 99 आंचमंन. 1 द्यूत. जाणे. 2 पुहुर. कलियुगई. 3 रत्नजडीत.

'कुहु जी, किम आव्या छु आज? वृषभ किशु? कुहु, कांई काज?'
पुष्कर कहि: 'वृष पान्यु पाश, मनमांहां रमवा थ्यु उल्हास.१०१
क्रीडा कीजि बेहू भ्रात; माहारा मनमांहि ए वात.'
नले जाण्यूं: 'हूं जीतीश सही: ए वृषभ हारवा आव्यु अहीं.'
कहि मालण: 'अभिमान ज वहि, पणि काल तणी गति
को नवि लहि.' १०२

[कडवूं १२]: राग रामग्री

नल न जाणि युगनूं विनाण जी;
प्रेमि पासा लीधा पाणि जी. १

ढाल

प्रेमि पासा पाणि लीधा, मनीपि छि सुंदरी.
द्यूतनु आरंभ मांड्यु. वृषभ पुष्करि पण करी. २
पिहिले पासि राय हार्यु. मंन्य विसमय थाय.
सुंदरी साहामूं जूइ नहीं. कलियुग पिठु काय. ३
हेम घणूं रा हारियु, पण करी वारोवार.
निशाद पुष्कर गयु आश्रम जीती धनभंडार. ४
बीजि दिन ते आवियु. नल पिठु लेईनि ग्राम.
व्यसनि यामा वीसरी नि हदि नावि काम. ५
तेणि दिन बहु धन हार्यूं. गई रानी सान.
वारी न सकि कामिनी तु अवरि किम परधान! ६

7 पासाई. 8 मनमन्नो रमवा 9 ए हूं मनमांहि. 10 नलन जाण्यूं. अंहीं. 11 भाखंन. अभिमान पणि. नहीं. 12 रामग्री. 13 जाणि. विनाण रे. 14 प्रेमि पासा. पाणि रे. '१'नो अंक नथी, बीजीनी 'ढाल'नी कडीथी '१' शरू थाय छे 16 पामार. पणि 17 पुष्कर. 18 हार्यु. 19 साहामूं जूइ नहीं. 20 घणूं. हारियु. 21 पुष्कर. आश्रम. धनभंडार. 22 आवीयु. ग्राम. 23 पांसा. काम. 24 बहु धन. मान. 25 कामिनी परधान.

नित्य मेहेल्यूं, धर्म छांड्यु, त्यज्यु पंडितसंग.
राजकारज वीशरयां नि दुरोदरशूं रंग. ७
हारया हि गज रथ वाहन दिवस दिवसि नित्य.
नारी कहि: 'करु, रायजी, कांइ धर्म केरां कृत्य.' ८
साहामूं ते जूइ नहीं. आव्या नगरना लोक
दर्शन करवा कारणि, मंनि पामता अति शोक. ९
नारि जई कह्यूं नाथनि: 'आविया छि बहु जंन.
पीडाइ छि प्रकृति, जननि दीजिइ दर्शन. १०
तुहि कह्यूं शुणि नही, तव रुदन करती नारि
प्रजानि आवी कह्यूं: 'ए नुहि ते भरतार. ११
कांइ रोग थ्यु के भूतसंक्रम के ग्रहकृत कांइ भ्रांति।
मुझ साहामूं जूइ नही नि रहि नहीं एकाति.' १२
प्रजा शोक सहित थाइ. पुष्कर गयु आश्रम.
प्रीउ कहि जई प्रेमदा टाल्वा वांछि भ्रम: १३
'प्रेम, प्रीउ, ते किहिं गयु जे कह्यु मुझनि हंस'
जाणीइ छि ते नहीं; तम पलटाणु शूं कंस? १४
वेदविद्या वीशरी शूं? साधुना प्रतिबोध?
ज्ञानगति ते कांहां गई? किम वुधिनु थ्यु रोध? १५
अलखामणु किम धर्म थ्यु ये हूतु आदर आप?
वचन ते कां वीशरयूं ये दुरोदरमाहि पाप? १६
कुंअर वाहालु कां टाल्यु प्राणथी अधिकु येह?
इंद्रसेना ऊपरिथी इम ऊनरयु कां नेह?' १७

---

26 छांड्युं 28 वाहंन. 30 साहामुं जूई. 31 मंनि पांमता. 32 आवीआ. बहू. 33 दर्शन. 34 शुणि नही रुदंन. 37 साहांमूं. 38 सहीत थाई. पुहुर. 40 किहि. 41 जाणीइ. पल्टाणु 43 ज्ञानगति 44 अलखांमणु. 45 वीशरयुं. 47 ऊपरिथी. ऊनरयु.

एहवां वचन कहीनी थामणी नयणे ते ढालि नीर,
तुहि चित वालि नहीं, कलियुगि बांध्यु वीर. १८

कडवूं १३ :...

मानिनी मनशुं करि विचार जी:
'विकल थयु छि ए भरथार जी. १

ढाल

भरथार एइ विकल थयु, रही नथी कांइ] सान.
द्रव्य थकी मन ऊनरूं; आणीइ को अज्ञान. २
भंडार सर्वि हारी रह्यु. ऊडशि माहारां बाल.
वार्यूं कुहुनूं नहीं करि; परवश थ्यु भूपाल. ३
परपंच करीनि मोकलूं पीहरि पुत्री तंन.
प्रीउनि पासि हूं रहूं एकांत राखी मंन. ४
पाशा परवश थया प्रीउनि; पुष्करना सवला पडि.
विपरीत छि कांइ वारता; माहा दिहनि अतिशि नडि.' ५
बृहत्सेना मली तेडी; सुंदरी कहि काज:
'ऊतावलु वार्ष्णेयनि जई तेडी आवु आज.' ६
सहीली तेडीनि आवी. सुति करूं प्रणाम.
कर जोडी करि वीनती: 'आज्ञा द्यु, शुं काम!' ७
भैमी कहि: रथ गयनु जोतरु वेगि, आन.
कुंडिनपुरि जई मूकी आवु मुज पिता नि मान. ८
रथ तांहां ते मूकज्योः तूं जाजे स्वनि हुइ यांह.

48 यांमणी. 49 नेहा. ॰॰॰ '१७' ने ॰॰॰ ॰॰॰ '२७' ॰॰ ॰॰ 'कडवुं १' आम अंते ॰॰॰ छे. 51 मानिनी. 54 मान. 55 ॰॰. ॰॰इ. अज्ञान. 56 माहारी 59 रानी. 60 पुष्करना. 62 बृहत्सेना. 63 वार्ष्णेयनि. 64 प्रणाम. 65 आज्ञा. काम. 67 कुंडिनपुरि. 68 मूकज्यो. हुई.

मन मानि जु ताहरूं तु आवजे वली आंह.' ९
शीख लेईनि सारथि विसारी कूंअरि कुमार,
रुदन करतां लेई ग्यु जोतरी हयवर च्यार. १०
कुंडिनपुरि ते आवियु, सुंपियां बालक बेह.
रथ ते तिहां मूकियु नि कथा न कही तेह. ११
चितमांहि चींतवि जे: 'नल तणी वेला फिरी;
हवि जईनि शूं करूं?' अयोध्या आव्यु पुरी. १२
ऋतुपर्ण रानि घिरि जई रह्यु तांहां सारथि;
मनि जाण्यूं: 'नल तणी हवि दिशा तां वलवी नथी.' १३
राय रमतां सरवि हार्यूं राज रिधि पशु मात्र;
वीजूं कांई रह्यूं [नहीं]; भूषण पिहिर्यां गात्र. १४
पुष्कर कहि: 'हवि रमु, रा[य]जी, पण करीनि नार.
दमयंती विण छि नहीं उडवा भुवन मुझार.' १५
वचन शुणीनि हृदय नलनूं काहवानूं थाय.
भूषण सवि लेई ओडियां ऊतारी ततक्षण राय. १६
सरव हारीनि रह्यु. पुष्करि लीधूं राज.
पित्राई कहि: '[प]धारु मुझ देशथी तां आज.' १७
एक वस्त्रि नीशर्यु; पूठिथी चालि कामिनी,
शोक धरती अति घणु, ते [श]शि विना यम यामिनी. १८
नगरमांहि थई रह्यु तेणि समि हाहाकार.
शोक पामि मनमांहि त्यांहि वर्ण अढार. १९

69 मंनमानि. तांहरुं. 70 शीष. सारथी. कुंगार. 71 रुदंन. 72 आवीयुं. सुंपीयां. पेह. 73 मुकीयु. 74 चितमाहि. तंणी. फिरी. 75 शुं. 76 ताहां सारथी. 77 मंनि जांण्यूं तंणी. 78 रंमता 'हार्युं. 79 काई. भूषंण. 80 पुहूर. रंमु राजी पंण. 81 नंही तुडवा भुवंन. 82 वचंन. नलनूं. 83 भूषंण. ततक्षंण. 84 पुहुरि. 85 पीत्राई. 86 थांमिनी. 87 घंणु. यंम. अहीं '१७'नो आंक फरीथी; तेथी '१'नो फेर 88 शमि. 89 पामि मंन.

पुष्करि साद पडाविउ: 'ये नलशूं करशि वात,
आश्रम देशि रिहिवानि, हूं करीश तेहनु घात.' २०
मित्र मान्या मनना ते साहामूं न ज्युइ कोय.
पडी वेलां पासूं दे ते मित्र साचु सोयि. २१
नगर बाहरि नीशरयां ते भूख्यां तरशां बेह.
रिद्धि जाति कामिनीनु टल्यु नहीं तिल नेह. २२
त्रण्य दिन ते नीर-भरि रही नगर केरि पाश
वनमांहि नीशरयां ते थई मनि निराश. २३
पालां पलतां पदमिनीनि कांटा भागे चरण.
हईअडूं फाटि रायनूं, मनि जाणी[इ] आवि मरण. २४
भूखी तरशी भामिनी भरतार साहामूं जोय;
देखी प्रीउनि थामणु ते रगत-लोचन रोय. २५
एणी पिरि वनि सांचरि; सेवक नहीं को [सा]थि.
द्रव्य कांई पासि नहीं, धनुष पणि नहीं हाथि. २६

कडवूं १४ : जित

गाणस को वाटि म्यलि ते जाइ ऊवेखी.
पंखी पणि आक्रंद करि तेह्वि दुखियां देखी.
शरज्यूं को छूटि नहीं जे भागिमां लखिऊं.
कुणि को थाइ नहीं दुखिऊं नि सुखिऊं. श० [१]
ये याचकनि संतोखतो वांछित फल आपी,
तेह वृक्ष कां टालियु भूंटा कलियुग पापी! श० २

90 पुष्करि. पडावीउ. 92 मान्या मनना. साहामूं. ज्युइ. 94 भूख्यां. बह. 95 कामिनीनु. टल्यु नहीं. 96 त्रण्य. 97 वन. नीशरयां. 98 कांटा. चर्ण. 99 मर्ण. 100 भूखी. भामिनी. साहामु. 1 देखी प्रीउनि थामणु. 2 नहीं. 3 ग्रिह नेहीं. २५ कडवो २. 5 माणस. ऊवेखी. 6 पंखी दुखीआं. देखी. १. 7 शरखूं लखीउं. 8 थाइ. दुखीउ नि सखीउं. 9 संतोखतो. फल. 10 टालीयु.

कोमल-अंग जे कामिनी किम'हींडि पाली?
भूपति पडखि नार नि मुख पाछूं वाली. श० ३
तरशां मुख सूकि घणूं. किहीं न म्यलि पाणी.
राजानि उद्यम नहीं जे आपि आणी. श० ४
दुःखि दाझि देहडी अवलानि निरखी.
सती पीडाइ सां भणी दमयंती शरखी? श० ५
'किहि तु त्रिसीइ, कामिनी; तूं थई छि थाकी.
मुझ मन दाझि अति घणूं, राखूं छूं ढाकी. श० ६
वनफळ आपूं वृक्षथी, जु तूंहिं भावि.
दामणी देखी तुझनि मूहिं रूंगूं आवि. [श०] ७
दूखियां देखी देवनि अति दूखडूं लागि.
पणि भोगव्या विण क्यम छूटीयि ये कीधां आगि? श० ८
नर नारी बि नीसरि आख[ड]तां पडतां;
वाटपंथ जाणि नहीं वनि रखवडतां. श० ९
सहूइ भोगववूं सही आपापणूं कीधूं.
पर ऊत(?) को पामि नहि ये लीधूं दीधूं. श० १०

कडवूं १५ : ...

पंखी दीठां कनकनी पाख रे,
ग्रहिवा रानि मनि थइ धाख रे. १
दाल-पांख रानि मनि थई; जाणूं शवला थाइ हेम.

11 कांमिनी. हींडि. 12 पडखि मुख. 13 मुष. घंगू किही. पांणी. 14 आंणी. 15 दुःषि. निरषी. 16 भणी. शरषी. 17 कामिनी 18 घणूं. राषूं. 19 वनफल आपूं. 20 दामणी देषी तुझनि. रूंगु. 21 दुःषीयां देषी. दूषडूं. 23 आषतां. 24 जाणि नहीं. 25 कीधु 26 पामि नही. आ कडवाने अंते "कडवां ३" आम लखेल छे, अने हवे आज प्रमे आक मळे छे 28 पंषी. पांष. 29 मनि. धांष. 30 धाष. जाणूं.

आहार करवा हुइ आमिप, ऊपनु ए प्रेम. २
वस्त्र ऊपरि नांखियूं ते ऊडी गऊ[ा] आकाश.
अंबर लेई रह्या अंबरि, वचन कहि प्रकाश: ३
'जे पासा थईनि हरावु ते अह्मो छूं, माहाराज.
नागु देखी तूंहनि अह्मो मोद पाम्या आज.' ४
वचन पंखीनूं शुणी विस्मय थयु राजान.
जाण्यूं: ए को शत्रु माहारु. हृदि आण्यूं ज्ञान. ५
ऊंफराटी अबला रही प्रीउनि ते जाणी नग्न.
आंसू ऊगाड़ नहीं नि मन थयूं अति मग्न. ६
आश्वासना दि कंथनि: 'रा, मन राखु धीर.
कष्टि कायर थावूं नहि, बलवंत छु तु, वीर.' ७
महीपति मनमांहां चींतवि: 'अपदशा आवी अंगि.
अबला अति दु:खिणी थशि, विपम वनमांहां संगि. ८
आगलि जाण्यूं नथी जातूं: केहवु आवशि काल.
शीतादि ए सुंदरी कोमल चरण-प्रवाल. ९
पिरि कहूं जु पीहरि जाइ, आज छि ए लाग.
सुख पामि सुंदरी, मुझ मोकलु थाइ पाग.' १०
एहवूं विमासी कहि नैपध: 'साधवी, छि सत्य.
वचन माहारूं चिति आणु; भली छि तुझ मत्य. ११
आ पंथ छि अति पाधरु, कुंडिनपुरनी वाट;
साथ जाइ छि घणु; आ विंध्याचलनु घाट; १२
पयोह्ली नदी वहि छि, अवंती ए देश;

31 आमिर. आंक १ ने मंमे ज. 32 नांपीयूं 33 वचंन. 34 अंह्मो छूं: 35 देखी. अंह्मे. पांम्यो. 36 पंखीनूं. राजांन. 37 जाण्यूं. आंण्यूं ग्यान. 38 जांणी. 39 आंसूं. नही. मंन थुंयुं. 40 आश्वाशना. रां मंन राखु. 41 कायरथा थाऊं नहीं. 42 अपदिशा. 43 मंनमाहां 44 जाण्यूं. जात्. 46 जाई 47 सुख पांमि थाई 48 वीमांसी. 49 आणु. 50 पाधरु. 51 वंध्यमचलनु.

ऋक्षवंत पर्वत भलु, मारगु रुचिर-निवेश.' १३
रिदि लागां रामानि ते वचन तीक्षण बाण.
नयन आंसू, कंठ चिठि कंथनि कहि वाणि : १४
'मन छि जी मेहिलावानूं, मि तु नवि त्यजाय.
रंग विट्ठु चोलनु ते किमहि तां नवि जाय. १५
तह्मो वनमांहां विगूंचु, हूं करूं पीहरि राज;
कंथ, ते किम नीपजि कुलवतीथी ए काज ? १६
चरण चांपूं, नीर पाऊं, करूं अहिनशे शेव.
नारिनि भरथारथी को अवरि शूं देव ? १७
मन हुइ तु म्यल्यांइ जईइ; तह्मो आवु साथि.
एकला मेहेलूं नहीं जाणज्यो किमहि, नाथ. १८
विश्वास मुझनि तह्मारु नथी आवतु जी एह.
गन गि तां ओलखूं : गृहनि देसु छेह.' १९
रा कहि : 'ना, सुंदरी, किम त्यजूं तुझनि वंनि ?
ताहरा हितनि कारणि कांई कहूं छूं वचंन '. २०
'पिता माहारु पूजिशि; सुख पामशु, भरतार.'
वीर वलतु उच्चरि : 'सांभलि साचूं, नारि. २१
पडी वेलां किम आवूं स्वसुरनि घरि वास ?
सगानि विरि समि जईइ. तेहनी न कीजि आस.' २२
'तु वारि वारि पंथ शाहानि कहु छो, राजंन ?
चरण त्यजवा तह्मारा किम चालि माहारूं मंन ?' २३
एहवूं कहीनि नीशरयां एकि वस्त्रि लग्न.

---

54 रामानि. वांण. 55 वांणी. 56 मंन. 59 किम. 60 पांउ. 62 मंन. म्यल्यांई जईइ तह्मा. 63 नही जाणयो. 64 तेह्मारु. 65 मंन. ओलपूं. 66 त्यजुं तुझ विनि वनि. 67 कहु छूं वचन. 67 सुष पामशु. 71 जईअि. तेहन न. 72 शांहांनि.

सभा सुंदर आगलि आवी, उतरयां थई मग्न. २४
थाक्यां भूख्यां रज-भरयां एकि वस्त्रि वेद,
सभा आवी, धरातलि तव सूतां दुर्बल देह. २५
निद्रा आवी नारिनि दुःख श्रमथी खेव.
नयन न म्यलि रायनां, चिंता ते करतां केव. २६

कडवुं १६ : पद राग वेराडी

भूपति मांड्यु मने विचार : 'नथी मेहलती मुंढि नारि.
दोहुली वेलां दुःख पामसि; विषम वाट ए किम वामसि? १
निद्रा-वशि छि, सूती त्यजूं, आ वनथी बीजूं वन भजूं.
जागी नहि देखि येटलि कुंडनपुरि जशि तेटलि.' २
एहनूं एक वस्त्र, किम करूं? नागुईपणि किम नीशरूं?
जागि नहि तम छेदन करूं. हलुदशूं मेहेली सांचरूं. ३
उठी राजा जोवा गयु, दीठूं खडग रलियाअति थयु.
वेगि लेई वधारूं चीर, पिहिरी खंड नीशरयु वीर. ४
गयु येटलि पगलां सात, हईअडाशूं विमासी वात :
'ह्वडां ए नारी जागशि, अणदीठि आशा भागशि. ५
अबलानूं अति कोमल मंन, विरहि प्राण छांडशि तंन :
जोऊं : जागी रोती हशि, जोवानि पगलि आवशि.' ६
एम चींतवि पाछु वलु, मुख निहालि ऊपरि ढलु.
निद्रा-वश दीठी वल्लभा, वली नीसरयु मेहेली सभा. ७
आघेरु जईनि चींतवि : 'लोचन माहारूं ढावूं लवि.
जोऊं : रही हशि टलवली.' पुनरपि आव्यु पाछु वली. ८

75 आंमलि. 76 भूष्यां. 77 दूर्बल. 78 दुष. पेव. 79 चिंता अहीं 'कडवां ४.' 81 मंने 82 दुःप पामस्ति. वामसि. 83 वंनथी बीजु वंन. 84 नहीं देषि. 86 नहीं तंम. 87 दीठुं पडग रलीयाअति 88 षंड. 90 अणदीठि. 91 प्रांण. 92 जोउं. 93 मुष 95 ढावूं. 96 जोउं.

नारी दीठी सूती भोमि; चढ्यु ऊकांटो रोमि रोम.
येहनि देखतां नहि रवि थाय, ते पडी छि उघाडी काय'. ९.
एहवूं कही रा करि रुदंन, न्यहालि नारी तणूं वदंन.
वली नीसरि, पाछु वलि, आणी दुःख राजा टलवलि. १०
'किम रिहिसि ए निराधार? वाघ शंव करशि तां आहार.'
एणीं पिरि करतां वारोवारि कलियुगि मन प्रेरयूं अपार. ११
तव राजा कठिण अति थयु, सुती नारी त्यजीनि गयु.
तिहां थकी तां दीधी दोट. वलतां [कांइ नवि घाली] कोट. १२
माया मेहेली गयु भूपाल. निशा गई, थयूं प्रातःकाल.
जागी नारि, न देखि स्वामि, सोधु सघली सभानु ठाम. १३
चीर वधारूं दीठूं यदा, मनि संदेह पडियु तदा.
दीन वामणी थई ते मंद, देखि नहीं, करि आक्रंद : १४
'प्रीऊजी, हास्य करु छु तह्मो, हवडां प्राण छाडशूं अह्मो.
प्रीति कांहां गई पाछली? जल विण किम जीवि माछली!' १५

देशी फेर

'हा माहा नाथजी, कांहा गया जी. मूंहि एकली मेहेली वंन रे!
वज्रमि कठिण ते किम थयूं रे, वाहाला, तह्मारूं मंन रे!'
'नलरा नलरा' ऊचरि: 'प्रीऊ माहारु प्राणाधार रे.' १६
'देवजी दर्शन दीजीइ मुह्नि सुख करवा एक वार रे. ध्रूपद
वांक किशु, प्रभु, माहरु रे? आवी कहु, माहारा नाथ रे!
दुःखसागरमांहि बूडतां रे, कंथजी, दीजि हाथ रे. न० १७
धर्मराजा तह्मो काहावियां रे, ते मिथ्या करशु नाम रे?

98 देपता नहीं. 99 रुदंन. तणु वंदनं. 800 आणी दुःप. 2 किरतां. गिन. 4 डोट. 6 देपि स्वामि. ठाम. 7 पडीयु. 8 वामंणी. देपि नंही. 9 प्राण. अंम्हो. 13 वजमि. थयु. 14 प्राणाधार. प्रतमां अहीं फरी १थी आंक छे. 15 दीजीइ. 16 प्रभुं माहरु. 17 दुःपसागर मांहि बुडतां. 18 काहावीया. करशुं नांम.

आवी आलिंगन दीजीइ रे, माहारा मनडाना विश्राम रे. न० १८
चुंरीमांहि जे कह्यूं रे: एक आपणां चित्त रे,
ते जूठूं नवि कीजीइ रे; कां थयूं ग्युजूं [?] वित्त रे. न० १९
मीटि आगलि देखूं रही रे, उत्तर नापु आज रे.
किहिं कुंजमांहि नाशी रह्या रे, मुहि वाहु छु, माहाराज रे. न० २०
प्राण नहि जाइ पापिया रे; वांछूं नावि मरण रे.
कंथ, त्यजीनि जु गयु रे; जईइ कुहि शरण रे? न० २१
आ वन गहन बीहामणूं रे, एकली अबला-देह रे.
कीधां पूरव भव तणां रे, कर्मनु नावि छेह रे. न० २२
मुग्ध मुकाइ माहरूं, जल पाओ, राजान रे.
मि तु एहवा कठिण जाणा नहि रे वीरसेनना तंन रे. न० २३
माहारूं दु:ख मुहि छि नहि रि; दु:ख तह्मारूं थाइ रे.
थाका थई याहारि विमशु रे, कुण चांपसि पाय रे? न० २४
हूं वनफल आणी [आ]पति रे, पाऊं निर्मल नीर रे;
सेवा स्वामीनी करूं रे मन राखीनि धीर रे. न० २५
वाघ शंघ नि वानरा रे बीहावि बलवंत रे;
कोए पण करतु नथी रे आहावी वेलां अंत रे. न० २६
इंद्र त्यजी मि तूं वरयु रे, तेहनि चढियु क्रोध रे.
विरीनां हईआं [नवि] ठारीइ रे, तह्मो छु बलिया योध रे. न० २७
महरु पिनाइ पासि नहि रे; एकली आणि ठारि रे.

19 आलिंगन. मनडाना विश्राम. 20 चुरीमांहि. कह्यु. 21 जूठुं. कं थर्यु ग्युंजु. 22 देषूं. 23 कुजमांहि. रह्यो. 24 प्राण नइ. पापीया. मर्ण. 25 जईइं. शिर्ण. 26 वंन गहंन बीहांमणू. 27 तंणां 28 मुग्ध. पाओ राजांन. 29 जांणा नही. 30 दुष. नही. दुष. 31 थाका. 32 वनफल आणी. पांउ नीरमल. 33 स्वांमीनी. मंन राखीनि धिर. 34 वानरा. 36 तहनि चढीयु. 37 हईआं बलीया. 38 नही. आणि.

तह्मो विना को परहरि रे कठिण थई भरथार रे! न० २८
आगन्या मि लोपी नथी रे, कीधु नथी अन्याय रे.
पाप ए पूरव भव तणां रे, ते तु कन्यां न जाय रे.' नल रा० २९

कडवुं १७ : देशी चाली

एम आक्रंद करंत पलि. गारगि माणिस को नवि म्यलि.
पर्वत-शृंगि चडि आकलि, प्रीऊ न देखि, पाछि वलि. १
'जेणि दुखायु कीधु राय तेहनि शाप देऊं छूं काय :
तो ए कष्ट पामज्यो अति घणूं, जु साचूं मन हुइ अम तणूं.' २
एहवि आव्यु अजगर व्याल; मुख मोकलूं अति विकराल.
घणी भूख मांहि ते मली, पग थकी अबला तां गली. ३
पाडि बुंब नि आक्रंद करि; 'राखु नल' वाणी उचरि.
अतिसि कोमल तेहनूं काय, कोय नहीं जे वाहारि धाय. ४

देशी

भीमरायनि उदरि ते आवी परण्यु पृथिवीपति;
जन्म थकी नथी मि कीधी पाप तणी तां मति. ५
प्रीउडा, आवु रे; मुहि भक्षि करि छि व्याल; नल मूंकावु रे. द्रूपद
ब्रह्महत्या गोहत्या कीधी ते फल मुझनि लागूं.

39 कठीण. 40 अंन्याय. 41 'नल रा नल रा उचरे.' आंक १५ पूरा. "कडवां ५" अंते. श्री. रा. चु. मोदी एक कडी वधारे आपे छे—एमनी प्रतमां १३/२९मी तरीके, पण संपादनमा छेकी मूकी छे :

"एणी पेरे ते टलवले रे, ढली ढली पडे महीमाहे रे.
वनवने शोधे कथने : देखे नहि दे काहे रे. नल रा० १६"

43 मांगिस. 44 देपि. 45 दुखायु देउं. 46 ऐ. पामयो. घण. मंन. हुई. अंम. 47 मुष. 48 घंणी भूष. '२' नो आंक फरी. 49 राषु. वांणी. 50 नही. 52 उंदरि. परण्यू 53 नत्थी. त. आंक फरी नथी 54 प्रीउंडा. 55 ब्रंह्महत्या. न. ६

भवि भवि नल भरतार ज हुज्यो; बीजूं कांई न मागूं. प्रीउडा० ६
आहवी वेलां कुहुनि न पडि मानुषपनि भवि आवी.
हे रे विधाता, इम कां पीडि उत्तम देहडी लावी? प्री० ७
जाणा जोशी तातनि किहिता माहां लक्षण वारू,
ते सघलांइ किहां गयां रे? दुःख पड्यूं ते सारू. प्री० ८
मूआनूं सुहि दुःख नथी रे. प्रीउजी, तह्मो कांहां जाशु?
हूं हत तु करूं तां सेवा. वाहाला, दुहला थाशु. प्री० ९
सुंदर मुख सोहामणूं रे तेह हवि किहां देखूं?
एकि वारि दुःख पड्यूं ए किमहि नावि लेखूं.' प्री० १०
साद शुणी आहिडी आव्यु; गलती अबला निरखी.
खडग लेईनि व्याल चीरियु, हरिनयणी तव हरखी. प्री० ११
ईंदुमुखी नि कमललोचनी दीठी अबला बाली;
व्याधि तिहांथी मूंकावी नि जल लेईनि पखाली. प्री० १२
कही कथा नारीइ सघली यम वनमांहां परवरियां:
नल राजा मेहेलीनि चाल्यु, एकलडां अनुसरियां. प्री० १३

कडवूं १८ : राग शुद्ध जित

आहेडीइ मन फेरव्यूं; मिहेवा लागु हाथ रे.
'रेहि रे पापी, तूंह वेगलु. नल छि माहारु नाथ रे.' १
नारी नासि पडि आग्वडि, वली वली दि गालि रे,
तुहि पापी केडि न मेहेलि, जाणे प्रेरयु कालि रे. २

56 भवि २. हुयो 57 मांनुषपनि. 58 इंम. उत्तंम. 59 जांणा. लंछण वारूं. 60 दुख पड्युं 61 मुंआनुं सुंहि दुख. 63 मुख सोहांमणुं २ तह. किहां देखुं; 64 दुःख. पण. लेखुं 65 सुंणी. निरखी. 66 खडग. चीरीयु. हरखी. 68 मुंकावि. लेईन पखाली. 69 नारीजि. यंम. परवरीयां. 70 अनुसरीयां. १० अंक. 'कडवां ६.' 72 आहेडीअ मंन फेरव्युं. 73 नाथ जी. 74 आघडि. 75 मेहेली. जांणि.

कामिनीनि त्याहि् क्रोध ते चडियु; एहवूं कवि वचन रे:
'नल थकी जु बीजि स्थानकि चल्यूं नुहि [? हुइ] माहारूं मंन रे, ३
तु तां पापीनु देह् पडज्यो; जाज्यु एहना प्राण रे.'
एहवूं किहितां मरण तो पाम्यु अधम व्याधि निरवाणि रे. ४
बाला अति बीहीवानि लागी, न लहि वाट विवेक रे.
पूछी पीहर भणी जु चालि, न म्यलि माणस एक रे. ५
सिंह व्याघ्र मृग रींछ वानरा सुहरा सामरा घोर रे;
आहेडी को अंत्यज आवि म्लेच्छ भयंकर चोर रे. ६
खिर खाखरा धव घाओडी वाओलिया बहु बोर रे;
इंगोरियां कंथेर किरडा, गोरडिया अति घोर रे; ७
काकचि कोअचि अनि करमदी, भुइरींगणीनां जाल रे.
कोतरमांहिथी बीहावि काला फणधर व्याल रे. ८
दर्भ-सलाका घणी खूंचि, विहि रुधिरनी धार रे.
शिर ऊघाडि अतिशि रोती सोधि वन मुझारि रे. ९
बृहदश्व रवि कहि: कुंतासुत, सुख दु:ख नहीं कुहि हाथ रे;
येणी पिरि राखि तेणी पिरि रहीइ भालण-प्रभु रघुनाथ रे. १०

कडवूं १९ : एकताली

वैदर्भी विरहि विगूती वनमांहां बोलि बाली:
'आम एकली मूकी न जाइ, नैषध रा, तम टाली. १

76 कामिनीनि चढीयु. 77 स्थानकि चलं मार्ग. 78 पडयो. जाशु. प्राण. 79 निनिरवांणि. 80 वाट विवेक जी. 81 भणी. मांणस एक जी. 82 सिह. वानरा. सांमरा. 83 चोरो 84 पर पापरा. वाओलीया बहू. 85 इंगोरीयां. गोरडीया. 86 भुइरागणीना 87 फंणधर. 88 घंणि. पुंचि. रुधिरनी धारा. 89 वंन. 90 बृहदश्व रवि सुखदुख नही. येणि. राखि. रहीइ. 91 भालण. "कडवां ६." 93 विगूती. वाली जी 94 आम. मूंकी. जाई.

अनि रूपि सुंदर सोभागी किहां गया नल राय!
रमनां किह्तां : तूं अति वाहाली; ते कां मिथ्या थाय! २
हंसि हूं वाही, हो वाहाला, कही तह्मारी प्रीति.
वैश्वानर सांनिधि जे बोल्यूं कां वीसार्यूं, [स्वा]मी, ति! ३
च्यार वेद भणवा आचरवूं मांडी जोतां तोल्हि
सत्य तणि पासि ते नावि, मोटा मुनि एम बोलि. ४
तेह् सत्य तह्मो कां वीशार्यूं वचन कहीनि वाही!
एक शरीर आपणूं पग्टी ति हूं पाणि साही. ५
वीरसेनना पुत्र पनुहुता, वचन आपणूं थापु.
अटवीइ हूं साद करूं छूं, ऊतर शि नवि आपु!' ६
सिंहनि देखी शामा कहि छि : 'ति दीठु किहि नल भूप,
सुंदर नि सोहामणु ये मन्मथ येहवूं रूप! ७
अथवा भक्ष करु जी मूंह्नि, दुःखनु थाइ नाश.'
एहवूं कही आगलि रही ऊभी मृगपति केरि पाश. ८
टोला-विछोही यम मृगली तिम करि आक्रंद,
वन वन जोतां कंथ न देखि दीन वामणी मंद. ९
पर्वत अति ऊंचु देखीनि जई करी प्रणाम :
'गिरि राजा, किहीं जातु दीठु ति माहारु नल स्वामि!' १०
अशोकनी छाय[ा]इ ऊभी करि वीनती वामा :
'शोक टालि, रे नगपति, माहारु; तूं था अवितथ-नामा.' ११
वली आघेरी रोती चाली करती अति विलाप :
'किहांथी दर्शन प्रीऊजी आपि! मांहारि पोति पाप. १२
क्याहारि देखूं वाहालु माहारु, थाइ मनि उह्लाद.

96 रमना किह्नां. 98 वैश्वानर. वीसार्यूं. 99 भणवा. 900 तणि.
1 वीशार्यूं वचंन. 2 पाणि. 3 वर्चन. 4 अटवींअि. 5 सिंहीनें देषी शांमा.
6 सोहांमणु. 7 दुषनु 9 वंन. 10 वन वंन. देषि. वांमणी. 11 देर्षीनि. प्रणांम.
12 स्वामि 13 वांमा. 15 करति. 17 देखूं. मंनि.

भीमसुता कहीनि ते मुंढि बयाहारि करशि सार ! ' १३
त्रण्य दिवस नि रजनी वीतां रडवडतां वन वंन.
एम करतां एक आश्रम आव्यु; विठा छि बहु मुंनि १४
वसिष्ठ वामदेव शरखा माहानुभाव तपपुंज;
वृक्ष फलयां फूलां मनोहर लता तणी तां कुंज. १५

कडवूं २० : देशीफेर

[अ]पूर्व दर्शनसुख ध्यूं कामिनी रे, जईनि करयूं प्रणाम.
अंतरशूं एम चींतवि रे : ए आव्यूं शुभ ठाम.
गुनिजनि शाहारि दीठी नारी, सुंदर वपु नि दुःख अति भारी,
अर्ध वस्त्र ते पिहरणि. अ० १
सुंदर नख मुख, सुललित वेणी, जाणे भूली मृगर्थी एणी;
चंचल नयने जल झरि. अ० २
ऋखि रामानि देइ मान, पृछि पिता प्रीऊनूं अभिधान :
' कां रे एकली, कामिनी ! ' अ० ३
भीमसुता कहि : ' सांभलु, तात, माह्रा कर्म तणी तां वात;
दैवि दुहुल्या दिन करया. अ० ४
नैषध देशि नल शि न जाणु ! प्रीऊ्तु माहारु ते सपराणु,
भीमरायनी दीकयरी. अ० ५
द्यूत रमी हारयु मुझ नाथ, वंन निशरया वेहूइ साथ.
सुती मेहेलीनि गयु. अ० ६
कुहु, स्वामी ते कहीइ देखूं ! माहारा दुःखनूं तां नहीं लेखूं.
पाप ए पूरवनां करयां.' अ० ७

---

19 त्रंण्य. वंन वंन. 20 आंश्रम. 21 वसिष्ठ. शरषा. माहांनुभाव. 22 फूल्य मंनोहर. तंणी तां पुंज. "कडवा ७." 24 सुप. कामिनी. प्रणांम. 25 ठांम. 26 मुनीजनि. दुःष. 28 नष सुंललित. जाणे. 29 नयने. 30 ऋषि रांमानी. मांन अभिधांन. 31 कांमिनी. 32 तणी. 34 जाणु. 36 वंन. 38 स्वांमी. देषुं. दुषनुं तां नहीं लेषूं.

मुनिजन कहि: 'सांभलि तूं, बाई; फालि पामशु वली वडाई;
थोडा दिनमांह्यां जाणज्यो. अ० ८

प्रेमदा, प्रिऊ तो ताहारु म्यलशि, दुखडां सघलां निशि टलशि;
राज्य नैषधनूं पामशु.' अ० ९

एहवूं कही था अंतरधान. अबला आश्रज पामी स्थान.
चिंता करती नीशरी. अ० १०

देखि पर्वत-शृंग ते मूढ, गह्वर गफा जोइ दिगमूढ.
रुदन करंती ते पलि. अ० ११

एम करतां नदी एक आवी, निर्मल जल हंसि ते भावी.
साथ घणु ताहां उत्तरि. अ० १२

माणस मेली थई मृगनयणी. विणजारे दीठी शुभवयणी.
त्रास सवि मनि पामिया. अ० १३

को नासि, को बीहि जंन, कुहुनां स्थिर न रहि तां मंन:
'आ कुण एकली कामिनी?' अ० १४

वृद्ध आवी पूछि तेणी वार: 'तूं छि कुण आ वन मुझारि?
देवी कि तूं राक्षसी?' अ० १५

रक्षा साथ सहूनि करज्यो, सम चित सरवि ऊपरि धरज्यो.
भय अह्मनि छि अति घणु.' अ० १६

कडवूं २१ : प्रथम[नी] देशी

भैमी भ[य] त्यजावा बोले: 'निश्चय करीनि जाणु.
नहीं देवी हूं, नहीं राक्षसी; का भय मनमांहां आणु? १

40 मुनिजंन. पांमशु. 41 जाणज्यो. 42 दुखडा. 43 पांमशु. 44 थां अंतरधान. आश्रम ज पांमी स्थांन. 46 देखि. कूट. दिगमुढ. 47 रुदंन. 49 घंणु. 50 माणस. मृगनयंणी. शुभवयंणी. 51 मंनि पांमीया. 53 कांमिनी. 54 वंन. 56 सहुनि करयो. धरयो. 57 अंह्मनि. घंणु. "कडवूं ८." 59 जाणु. 60 नही. नही. मंन. आंणु.

मी[म] रायनी हूं तां पुत्री. नल रा मुझ भरथार.
दैवयोगथी मेहेली ग्यु छि सुंहि आणि टारि. २
तेह्नि हूं जोती हींडूं छूं वन वन पर्वत टाम.
मन स्थिर राखु; हूं छूं दूखिणी, साथ तणा तह्मो स्वामि. ३
कुण देश ए साथ ज जासि, मुझनि कुहुनि तेह.
साथिथी हूं चाली आवूं; दूखिणी छूं अति देह.' ४
शुचि नामि विणजारो बोलिः ' चेदि रायनि देश
साथ सहू ए विणजि जासि, सुबाहु यांहां नरेश.' ५
बृहदश्व रखि कहिः हो राजा, अतिसि कोमल अंग;
म्यली म्यली ते जावा लागी विणजारानि संग. ६
एम करतां ते काल केटिलि जातां मारगमांह
सुंदर एक सरोवर आव्यूं, निर्मल जल छि त्यांह. ७
नाना रंगि कमल फूलियां, चक्रवाक बहु हंस;
नाना पादप फलभर नमिया, जाणे वन-अवतंस. ८
विणजारा आवी ऊतरिया देखी बहु त्रण नीर,
वृद्ध तणी ईछाइ सहूइ सरनी पश्चिम तीर. ९
अर्धरात्र-समय सहू सुतां, अति थाका वाहंन.
मारग रूंधीनि ऊतरिया. निद्रावसि सवि जंन. १०
तेणि समिय आव्या बहु हस्ती, जाणे पर्वत-शृंग;
मद झरि झरणां ते जाणे मेघ शरीखा अंग. ११
ऊजाणां आवी विणजारा कीधा ते चकचूर;
दंत सूंढि पग केरि प्राहारि बूंब पाडता क्रूर. १२
मांहोमांहि साद करि नि त्रासि पोठी ऊंट.

62 आंणि. 63 हांडूं. वन वंन. टांम. 64 स्थार रापुं. दृपिणी. तंणा. स्वांमि. 66 दूपिणी. 67. नामि विणजारो. 68 याहां. 69 बृदश्व रषि, 73 फूलीयां. बहू 74 नंमीया. 75 ऊतरीया. देषी बहू 76 तंणी. 78 ऊतरीया. स्व जंन. 79 जांणे. 80 जाणे. शरीपा. 81 जाणां. 83 माहोमाहि. ऊट.

हाहाकार थईअ रह्यु रे, बांधा मारया खूंट. १३

कडवूं २२ : राग धन्यासी

एणी पिरि ते रजनी वीती, थयूं प्रातःकाल जी.
नाठां भागां सोधी काढि; रखां रूड़ छि बाल जी.
मांहोमांहि विणजारा बोलि : 'दुःख पड्यूं विशाल जी.
आज पाछूं कहींइ नहीं आहावूं दीठूं भय विकराल जी.
आपणनि अहीं जातांआवतां थयु घणोइ काल जी.
कहींइ आहावी वेला न पडी दारुण ए जंजाल जी. १
आ रांड को साथि आवी सिधि शीकोतरी नारी जी;
ते माटि आपणिनि आव्यूं आणु ए दुःख भारी जी.
बीजूं कांई नथी तां कारण जोतां मनि विचारी जी;
एणीइ उतपात ज कीधु: गजनी घटा उतारी जी.
अधमुआ आपण तां कीधा हस्तीइ सवि मारी जी.
त्राहि त्राहि, स्वामी जगजीवन; दुःख सहूं नवि जायि जी.
वांकी वेलां यत्न करयानु कांई नहीं उपाय जी.' २

ढूपद*

को पाषाण काष्ठ करी लेइ करवा धाइ प्राहार जी.
तेणी वेलां कोए नहीं जे करि तेहनी वाहार जी.

---

84 धूंइ. "करवा ६." 85 धन्याशी. 88 माहोमाहि, दुःष पड्यु. 90 आपणनि अंहीं. घणोइ. 91 कहींअ. दारूण. 93 आपणिनि. आणु. दुष भारी जी. 96 आपण. हस्तिअ. 97 त्राहि २ स्वामी जगजीवन दुःष. 98 करया- नुं कांई नहीं. *ढूपदथी नीचेनी ५ लीटीओमां जोडा आंक छे: २ लीटी पूरी थतां १, पाईनी १ लीटी पछी २, 'ओम-धार जी' पाछे ३, पण ए पछी दर पांच लीटीए आंक ४ वगेरे होई मध्यनी पांच लीटीनी पछी १ली पाय छे. तेथी घणेना १२ आंक जता रह्यां छे. 1.00 पाषाण काष्ट. 1 तेणि. नहीं.

रुदन करंती रामा बोलिः 'धाओ नल भरतार जी.'
'झालु बांधु मारु' नाशि, एणी पिरि करि पुकार जी.
जाला हेठलि विठी कामिनी, नयणे आंसू-धार जी. त्राहि० ३
गाली दि नि धूलि छांटि, दया मनि न आवि जी.
तेमांहि साधु नहीं जे तेहनि आवी तांहां मूकावि जी.
दैवनि मनि जु दया नहीं तु अवरनि शि? नवि भावि जी.
कुहेनूं हइडुं नवि भीजि, नारीनि अवरावि जी.
विणजारु वृद्ध तव वारि, अबला कही शमावि जी. त्राहि० ४
ऊठीनि ऊजाणी नारी, अतिशि कोमल अंग जी.
आगलि जातां ब्राह्मण केरु म्यलियु संग जी.
दिवस केटलि नगर आवी सुबाहुनि सुचंग जी.
संध्यासमि नगर ते पामी, मनमांहि नहीं रंग जी. त्राहि० ५
बालक बहु आवीनि म्यलिया तेहनि गिहिली जाणी जी.
धूलि छांटि पूठि हींडि हा हा करता प्राणी जी.
वेणी छूटी, एक वस्त्रि, राजपंथमांहि आणी जी.
कोए पण तो जाणि नहीं रे तेहना करमनी काहाणी जी.
मालीइ त्याहारि विठी हूती राजमाता ते राणी जी. त्राहि० ६
दाशी मोकलीनि तेडावी, बाल राख्या वारी जी.
राजमाताइ पासि तेडी आसनि त्यांहां बिसारी जी.
मनशूं जाणूं: राजकूंअरी कोएक छि ए भारी जी.
दैवयोगथी दुःख पडयूं छि; दीसि को अवतारी जी.
आश्वासना देईनि पूछि वात सवि विस्तारी जीः त्राहि० ७

2 हदन रामा 4 कामिनी. नयण. 5 धूलि. मनि. 6 नही. 7 मनि. नेही.
8 हइकं 10 ऊजाणी. 11 मांश्रंग. म्यलीयु. 12 सुबाहुनी. 13 पांमी.
मंन. 14 बहु. म्यलीया. जाणी. 15 हीडि प्राणी. 16 माहि आण. 17 पंण.
जाणि नेही. काहाणी. 18 मालीई. राणी. 19 राख्यां. 21 जांणूं. माई.
22 दुःष.

'किहि, बाई, तूं किहांथी आवी? कुण तम्हारु तात जी?
मानुष शरखी तूंश नथी, को देवरूप विख्यात जी.
एकाकी कुण दीसि छि? साची कुहुनि वात जी.
कुहुनि करमि किम दुःख पडियूं? शा थकी उतपात जी!
अहीं कणि मन सुख आणी रहिज्यो मुझनि जाणी मात जी.
त्राहि० ८

मानिनी कहि: 'मूह्निं मानुषी जाणु. सुंदर माहि्र स्वामि जी.
दैवयोगथी द्यूत रम्यु ने हारी रिधि सवि ग्राम जी.
सैरंध्री हूं छूं साधवी, मन पतिशूं विश्राम जी.
फलमूल कांई आहार करूं नि युगतां करशूं काम जी;
पर पुरुषशूं वात न करवी, मन राखवूं ठाम जी.	त्राहि० ९

देशीफेर

पाग न चांपूं पुरुष कोएना, न यमूं कुहुनूं छांडयूं अन्न;
बाट जोऊं माह्ना प्रीउडा केरी राखी तेहनि चरणि मंन.	१०
एणि परठि जु अहीं राखु, सोधावु किहीं माहारु नाथ.
पुत्रीनी पिरि छूं हूं तह्मारि; जीवन मरण तह्मारि हाथ.	११
पुरुष कोए करि जु हासूं तेहनि दंड देषु निरधार,
तु हूं रहूं तह्मारि पासि, जिहां आवि माहारु भरथार.'	१२
राजमाता कहि: 'सुखि रहु. अही को नहीं लि रे तह्मारूं नाम.
येह गमि ते भक्ष ज करजे; रुचि आवि ते करज्यो काम.	१३
ताह्ना प्रीउनि माह्नारा दूत सोधशि; तूं पति पामिश, साधवी नारि.'

---

24 किंहाथी 25 मानुष शरपी. विक्षात. 26 कुकुंण दिश. 27 दुप पडीयूं. 28 अंही. मंन सुष आंणी जाणी. 29 मांनिनी जाणु. स्वामी. 30 द्रांम. 31 सैरंध्री हु. विश्राम. 32 काम. 33 पूरुष. मन रापवू ठांम. अहीं भूलथी आंक '१०' छे. 35 नं. छाड्यू. 36 जोउ रापी. आंक अहीं १ थी. 37 अंही रापु. 38 पुत्रीनि. तह्मोरि. जीवंन. 41 सुपि. अंही नही. नांम. 42 रुचि. करयो कांम. 43 पांमिश.

आश्वासना देईनि राखी: 'बाईजी, चित्त करुनि ठारि.' . १४
राजमातायि पुत्री तेडी सुनंदा नामि शुभ-देह:
'सैरंध्री साथि, बाई, करजो देहरूप जाणीनि नेह. १५
ये मागि ते आपज्यो एहनि; क्रीडा करज्यो दिन नि राति.
एह माधवी छि रे दुखिणी; कोए हसि एहनां मात नि तात.' १६
बृहदश्व रथि कहि छि: राजा, नारी तिहां थई स्वस्थान.
राजमाता अति प्रेम ज आणि; पुत्री दि तेहनि बहु मान. १७

कडवूं २१ : राग सामेरी

दमयंतीनि परहरी चालियु नल भूपाल.
मारगि जातां दावानल देखि ते पावक-ज्वाल. १
साद गाढि करि छि: 'को कहीं नल राजान,
पुण्यश्लोक, मुझ दुःख टालु.' ते सांभलूं रा कान. २
साद ऊपरि रांचरि रा पिठु पावकमाहि.
जूइ तु एक सर्प सूतु कुंडलूं वलीनि त्यांह. ३
साहामूं जोई सर्प बोल्यु धूजतु वचंन:
'कर्कोटक मूंहिं जाणजे तूं; कृपानिधि छि मंन. ४
मि एक तापस मुनि पीड्यु विना ते अपराध;
शाप तेणि मूंहिं दीधु कीधा माटि बाध. ५
पगलूं चाली नवि सकूं; हूं नथी करतु रादि.
उपकार करशूं, राइ, तूंहिं; आ दुःखथी तां काढि. ६
मित्र ताहारु हूंअ थाईश कार्य करवा, भूप.

44 रापी. 45 पूत्री. 46 सैरंध्री. जाणीनि. 47 आपयो. करयो. 48 दुखिणी. 49 बृहदश्व. रथि. स्थान स्थान. 50 आणि. पूत्री. बहू मांन. वडी c. "कडवां १." 51 सामेरी. 52 चालीयु 53 दीप. 54 राजांन. 55 दूप. कांन. 57 कंडलूं 58 सांहामूं. 59 कर्केटिक. जाणजे. कृपिनिधि. 60 तालय 62 पगलुं. 63 राई. दुपथी.

भार तुझ लागि नहि तिम धरूं सूक्ष्म रूप.' ७
एहवूं कहीनि थयु तत्क्षण देह अंगुष्ठमात्र.
राइ दवथी बाहरि ल्याव्यु, लघु थयु ज गात्र. ८
निरालु एक ठाम जोई महिलि बाहारि राय
सर्प एणी पिरि बोलियु: 'जु दया मनमांहां थाय, ९
ताहारां डगलां गिणतु मूंहि मेहेलि बाजि देश.'
पगलां लागु गिणवानि ते मानी बोल नरेश. १०
गिणतां राइ 'दश' कह्यूं तव दंशु भूपति नाग:
करूप अति राजा थयु, विस्मि ते जोई लाग. ११
पन्नग-रूपि पोतानि थ्यु निरखियु भूपति.
करूप देखी आपणूं चिंता करि स्थिरमति. १२
कर्कोटक एम बोलियु: 'कां करि चिंता, भ्रात?
रूप ताहारूं हरयूं छि मि विमासीनि बात. १३
काल केटलु रिहिवूं छि ए विषम ताहरि दिंन;
रूप एहवूं कर्यूं छि जे ओलखि नहीं जंन. १४
शत्रु ताहारो देहमांहि वशु छि जे दुष्ट,
विष माह्या तणि योगि तेह लिहिसि कष्ट. १५
तूहनि दुःख कांई नहि करि, रा, विष माहारूं देह;
पापीनि कष्ट थासि, तुझमांहि वसे तां तेह. १६
हवि सर्पथी तूहि भय नहीं नि जय हशि संग्राम.
चालि, भूपति, अहीं थकु हवि नगर अयोध्या ठाम; १७
बाहुक तूं तां थई रिहिजे ऋतुपर्ण रानि घिरि.

65 नहि. 66 अंगुष्ट. 68 ठाम. 69 बोल्यु. मंन. 71 मांनी. 74 पंन्नग. निरषीयु. 75 देखी आपणुं चिंता 76 कर्केटिक. बोलीयु. 77 हरर्यु. 78 रिहिवुं. दिन. 79 ओलखि नही. 81 तणि. 82 दुष नही. 83 वसेतां. 84 नही. जयं सम्रांम. 85 अंही. ठाम.

इक्ष्वाकु-वंशी मित्र थाशि तेह करिशि पिरि. १८
अश्वमंत्र तेह्नि आपजे रे, पडि याहारि काज;
अक्ष-हृदय तूंह्नि आपशि ते मित्र थै, माहाराज. १९
पछि नारी पामशु नि म्यलशि तां बि बाल.
राजऋधि सुख पामसु रे प्रथम जेह विशाल. २०
रूपनी ईछा हुइ त्याहिं संभारे मूह्नि खेव;
कोटि काम-स्वरूप थासि जाणे अवश्यमेव. २१
आ वस्त्र याहारि ओढसु ताहिं थाशु रूप प्रकाश.'
वस्त्र युग ते आपियां नि शीख दीधी आस. २२
एहवूं नल रा[नि] कही नि थयु अंतरध्यान.
अयोध्या भणी नीशरु रा हृदि आणी ज्ञान. २३
दिवस दसमि नगरि आव्यु, गयो राजद्वारि;
ऋतुपर्ण राइ तेडियु, पूछियु समाचार. २४
नल कहिः 'हूं बाहुक जाणूं अश्वविद्या-सार.
माह्ना जेहवी जाणे नहीं को बीजु तां संसारि. २५
अन्न उत्तम रांधी जाणूं, खट रसना जे स्वाद;
गुह्य कारय कहूं पूछूं ऊपजि उह्लाद.' २६
रा कहिः 'तह्नो रहु, बाहुक; मूह्नि छि अति प्रीत;
अश्व ये ऊतावला करी चलावि ए रीति.' २७
मान देई राखियु, सुंपिया अश्व अनेकि;
दश सहस्र वेतन परठियूं. नि मुख्य कीधु एक; २८

87 इश्वाकु 88 माहाराजा. 90 पामशु. 91 सख पामसु. 92 रूपनी. येव. 93 कोम. जाणे. 95 थापीयां शीप 96 अंतरध्यान. 97 भणी नीशरू. आंणी ग्नांन. 99 तेडीयु पूछीयु (आम '२३' 'समाचार २३' व वार छे तेथी हवे '१' नो फेर) 1100 जाणूं. 1 जाणे नही. 2 अन्न. रांधी. षट. 6 मांन. राषीयु. सुपीया. अनेकि. 7 सहस्र. परठीयूं. कीधु.

एणी पिरि ते नल रहु नि रायनूं बहु मान.
वार्ष्णेय जे जीवल नामि तेह छि तेणि स्थान. २९
नल तेहनि ओलखि; ते न जाणि निज नाथ.
रमि त्रिसि एकठा ते मांहोमांहि साथ. ३०
सांझि साझि चिंतातुर ते भणि नैपध श्लोक
सारथि जिम सांभलि अंतरि आणी शोक: ३१
'भूखी तरशी थाकी नारी सूती तेणि ठामि,
सती किहां रिहिसि? हवि मूरखि कीधूं काम.' ३२
श्लोक सुणीनि सारथि पूछि ते प्रीति-भेद:
'कुण स्त्रीनि संभारी तूं धरि छि मनि खेद?' ३३
नल कहि: 'को मंदमतिनि वाहा[ली] हूती नारि;
कुणेक अर्थि सुती मेहेली घोर वन मुझारि. ३४
त्यजीनि दुःख पामियु ते आणी मनि वियोग;
दुःखि पीड्यु भमतु हींडि, संभारि संयोग. ३५
ते रडवडतु किहीइ गयु ने दुःख पाम्यु मूढ;
व्यसन-पीड्यु जई रह्यु मूरख किहीं थई गूढ. ३६
निशाइ ते संभारि: किहां गइ हुसि बाल?
मंदभागि परहरी जीवशि किश्यु काल? ३७
एकली मारग न जाणि, ते वन अतिशि घोर.
रोती किम रही हशि? ताहां वाघ शंघ कठोर. ३८

8 मान. 9 वाष्णय. नामि स्थान. 10 चुर्नपि. जाणि. 11 एपत्र माहो-मांहि. 13 सारथी. आंणी. 14 मूषी. ठामि. 15 मूरपि. कांम. 16 सारथी. 17 पेद. 19 वन. 20 दुप पांमीयु. आणी मंनि. 21 दु.पि. हींडि. आ ३५ ने बदले रा. सु. मां नीमा–

'तजीने दुःग्न पामीओ ने करे छे पश्चात्ताप.
वांक कोनो काढीए, पूरवनुं वांइ पाप? ३५'

22 दुप पांम्यु. 23 मूरप. 25 किप्यु. (?) 26 जाणि. वंन.

अल्पमति ते त्यजी नारी; करि पश्चात्ताप.
वांक कुहुनु काढीइ? पूरवनूं कांई पाप. ३९
मूहि ते मनि सांभरि छि, शोक तेहनु थाइ.'
सारथिनि एणी पिरि ऊत्तर आपि राइ. ४०
रवि कहि: एम नल वशियु अयोध्याइ अणुसरी.
कहि भालण: सुबाहु रानि पिरि रही ते सुंदरी. ४१

कडवूं २४ : राग असाउरी

भीमरायि ते जाणिऊं, दुःख घणूं मनि आणिऊं;
वाडव हो नगर-निवाशी तेडिया रे. १

[ढाल]

विप्र सघला तेडिया नि कहि राजा भीम:
'दमयंती नलरायनि सोधवा जाओनि शीम. २
सिधि ल्याविइ तेहनि आपूं सहस्र सुंदर गाय:
मुख्य आसन देऊं तेहनि करि येह उपाय.' ३
वचन रानां रिदि आणी चाल्या विप्र अनेकि;
देशि देशि सोधवानि करि घणु विवेक. ४
अवरि पाछा आविया घणीइ करी तां बुधि.
राइनि आवी कहूं: किहि न लाधी सिधि. ५
सुदेव ब्राह्मण चैदि देशि गयु जौवा काम,

28 पश्चाताप. आ ३९ ने बदले रा. सु. मोदीमां–

अल्पमतिआं तजी नारी, करे दुःखवियोग !
दुःखे पीडयो भमतो हींडे. सभारे संजोग ३९

30 मंनि. 31 सारथीनि 32 रवि वशीयु. अणसुरी. 33 सुबाहू 35 आंणीउं. दुःष घंणूं. आणीउं. 36 तेडीया. 38 तेडीया. 39 जाओ नि.शीम १. 41 देउं. 42 आणी. 43 घंणु. 44 आवीया घंणीजि. 46 ब्रांह्मण. काम.

घणूं जेणि रमाडी छि शिशु थकां निज धाम. ६
चिह्न सघलां ओलखि ते, गयु राज-भवंन;
निरखतां तव नयणे निरखी दु:खि दाधूं तंन. ७
सुनंदा साथि रमि छि; देहनी [नहि] कांति.
धूमि ढांक्यु वह्नि जाणे. बेहू छि एकांति. ८
सकललक्षण सुंदरी, जांणे रंभानु अवतार.
नयणे निरखी हरिख पाम्यु विप्र तेणि ठार. ९
चित्तमांहि चींतवि दु:खि वली छि देह.
एधाण सघलांइ मिल्यां मानिनी[नां एह. १०
शशी ग्रह्यो ज्यम राहु आवी पूर्णिमानी राति
तेहेवूं मुख ए मानिनी]नूं भासि भूंडी भाति. ११
भूषण पाखि भाग्यिनी भासि नहीं शरीरि;
ओपमा एहवी ऊपजि जिम नदी सूकि नीर. १२
'निश्चि ए हुइ सही; बोलावूं बाला आज.
नरति लाधि नारीनी तु सरि माहारूं काज.' १३
विभागीनि गयु पासि आणी अति उल्हाद;
'दमयंती' एम नाम लेईं करु हलुइ साद. १४
'भैमी, हूं सुदेव छूं. कुशली तह्मारु तात.
पुत्र पुत्री कुशल छि, कुटुंब भ्रात नि मात. १५
सोधवा राइ मोकल्यु; मि जोया तां बहु देश.
गयां जाणी तह्मनि दु:ख पामि छि नरेश.' १६
विस्मय पामी वचन शुणतां ओलख्यु सुदेव.

47 घंणूं. धांम. 48 चिह्नं 49 निरषता. निरषी दु:षि. 51 जांणे. बेहूं. 52 लक्षण. जांणे. 53 निरषी हरिष पाम्यु. तेणी 54 चिंत. दुषि 55 अेधांण. 58 पाषि भाग्यिनी भाषि नही. 59 ओपमा सुकि 62 आंणी. 63 अेम नांम. '१३' नथी; 65 '१४' फरी वार. 66 राइ मोकल्युं. बहू. 67 जांणी. दुष पामि. 68 पांमी. ओलष्यु.

रुदन करती मानिनी पूछवा लागी खेव. १७
स्वजन सहूनि कुशल पूछि: 'भला छि मुझ भ्रात ?
दुःख माह्या देहनूं ते शी कहूं [हूं] वात !' १८
रुदन करती रामा जोई सुनंदा ततकालि
मातानि जइ ते कहि: 'एक विप्र आव्यु विशाल. १९
सेदंद्रीनि कह्यूं कांईइ; करि छि रुदंन.
वात करि छि विप्र साथि; दुःख छि अति घंन.' २०
वचन शुणीनि वेगि उठी राजमाता जाय;
दमयंती नि विप्र छि तिहां वेगि आ[वी] धाय. २१

कडवूं २५: ... ...

वाडवनि पूछि वात रे: 'कुण छि एहनु तात रे?
प्रीउडु ति कुण, कहुजी एहनु रे. [१]

ढाल

कुण प्रीउ छि एहनु ? तह्मो किहांथी आव्या, मुंनि ?
रुदन करि छि शा मणी ते सत्य कहु वचंन.' २
विप्र वल्तु बोलियु: 'वैदर्भ देश विशाल,
धर्मात्मा एक भीम नामि विदित तां भूपाल. ३
दमयंती ए सुता तेहनी वरी नल भरतार.
राज्य हारी वनि गयां ते नहि समाचार. ४
ते भीमराय मोकल्या अह्मो सोधवानि काम.
इधाणि मि ओलखी सुंदरी आणि ठामि. ५
जन्मथी वि भ्रूअ-मध्यि तिल छि सुविशाल;

69 रूदंन. मानिनी पेच 70 स्वजंन. 71 दुःप. देहदुं. 72 रुदंन. रामा. 74 सेईंद्रीनि करयूं कांईंअ 75 दुःप. 76 शुणीनि. 77 "कडवा १०." 82 मुनि. 83 रुदंन. मंणी. १ 84 बोलीयु. 85 नामि. 86 अे. 87 वंनि, नहि. 88 काम. 89 शिधांणि. ओलषी आणि ठांमि.

मि ते रमतां दीठु हतु याह्रि नाहानी बाळ. ६
विधाताइ निरमियु ते मिलि टांक्यूं गूढ;
जोतां [जोतां] जाणियु; हूं थई रह्यु दिगमूढ.' ७
सुनंदा ते सांभलीनि मिल्ल धोयु खेव.
राजमाताइ निरखियु ते प्रगट अवशमिव. ८
रोवा लागी राजमाता आणी अंतरि नेह.
रुदन करवा अति घणूं वेहूइ लागां तेह. ९
'बाई, तूं भाणेज माहारी ओलखी नहि आप.
मान काई दीधूं नहीं. माहारि पोति पाप. १०
देश दशारण ते[हतु] सुदामा राजान.
पुत्री वि अम्हो तेह तणी, एक भीम दीधी दान, ११
सुबाहुनि तां हूंअ दीधी भलि आवी घिरि.
नानाविधिनां वस्त्र पिहिरु. भोग पिरि पिरि.' १२
रोती रही कहि दमयंती: 'हूं पामी सुख अपार.
तह्मो माहारी करी रक्षा, रह्मां आणि ठारि. १३
हवि मूह्रि बुलावु; पीहरि जावा मंन.
मुझ विना दुहल्यां थातां हुशि पुत्री ने तंन. १४
बालक वि मि मोकल्यां, रमतु ते देखी राय.
पिता पाखि, मार्शाजी, ते प्रेमि दुखियां थाय. १५
शोक मूह्रि प्रीउ तणु मेहेली गयु जे गति.'
मार्शी आगलि मांडीनि सघली कही ते वात. १६
सुबाहु शोक करि घणु, घणूंइ कहूं देई मान.

---

91 नाहानी. 92 विधाताअि निरमीयु. 93 जाणीयु. 94 मिले धायु पेव. 95 निरषीयु. 96 आंणी. 97 रदंन. घंणूं. 98 भांणेज. ओलषी नही. 99 मान काई. नही. पापत्री. 1200 दशरण. सुदामा राजान. 1 दाधी दांन. 2 सुबाहूनि. हूअ. 3 नानाविधिनां. 4 पामी सुष. 5 आणि. 6 पुल्यावु. 8 देषी. 9 पाषि. दुषीया. 10 तंणु. 12 घणूं; मांन.

गाढि दुहलि दिवस ते राखीअ तेणि स्थानि. १७
सजाई कीधी घणी, शबिका करि वाहंन.
सेन्य साथि अति घणी ते चलावी, राजंन. १८
अन्नपान अनेकि विधिनां आपिआं ते संगि.
शीख मागी सांचरि ते दुःख धरती अंग. १९
मारगमांहां थ्या दिवस केटला, पीहरि जावा प्रेम.
कहि भालण : 'कुंडनपुरि पुहुतां ते कुशली खेम. २०

कडवूं २६ : राग मेवाडु एकताली

आगलिथी आवी सुदेवि वधामणी तां खाधी :
'स्वामीजी, मि घणूं सोधी दमयंती ते लाधी.
कूंअरि आवी हो नगर तणि ए द्वारि.'
राजा उचित अनेकि ते आपि; हईअडि हरिख अपार. कूं० १ ध्रुपद
माताइ ते श्रवणि सांभलूं. ऊलट अंगि न माय.
मिलवानि सहू साहामूं चालि बालिक लेईनि राय. कूं० २
जननी आवी दि आलींगन, देहडी साहामूं जोय.
दीन यामणी दुखणी देखि माता मिलती रोय. कूं० ३
बालक वेह करि ते आक्रंद, रूइ सजन सवि भाई.
हाहाकार थईअ रह्यु अति देखी तेह सजाई. कूं० ४
रोती राखी माता पूछि : 'किहि रे, पति किहां, बाई !
राजाइ सा माटि मेहेली ? एहेवु नहीं अन्याई.' कूं० ५
गद्गद कंठि कहि कामिनी : 'द्यूत रमीनि हार्‍यु.

13 राषीअ. स्थानि. 15 धंणी. चालावी. 16 अंनपांन अंनेकि. आपीआं. 17 शीष. 19 पेम. "कडवा ११ पद ४०" 21 वधामंणी धाधी. 22 स्वामीजी. घंणूं. १. 23 तंणि. अ 24 उचीत. हरीष 25 मानाई. श्रवंणि. ऊंलट. 26 साहांमू. 27 आलींघन. साहामू. 28 यामनी दुषणी देषि. 29 सजि. 30 रहु. देषी. 31. राषी. 32 अेहेवु नही. अंन्याई. 33 कांमिनी.

सरज्यूं ते कोए नवि छूटि; मि ते घणूंइ वारयु.' कूं० ६
[कूंअरि बोलि रे :] 'सांमलि, माहारी मात;
माहारा दुःखनी कही न जाइ सुए वरसे वात. कूं० ७
नगर थकी बेहू नीशरियां; साथि को नवि लीधु.
हंस झालवानी मति कीधी, तेणि नागु कीधु. कूं० ८
छिद्र मि पिहिरवा आप्युं; एक वस्त्रि परवरियां.
एम करतां सभा एक आवी; थाकां जई ऊतरियां. कूं० ९
अर्ध निशा मूंहूंनि ग्यु मेहली निद्रा-मिरि तांहां सूती.
जागी हूं आक्रंद करती घणूंइ वनि विगूती. कूं० १०
सोधतां मिली अगिअरि, आहेडीइ कार्डी.
विरि राखवा मन तेणि कीधूं; वेदन वेठी गाढी. कूं० ११
तांहांथी विणजारामांहां चाली; तेणि पणि दुःख दीधूं.
कुहु आगलि कहूं दुःख माहारूं जु अघ पोति कीधूं! कूं० १२
पछि चेद देस तां आवी; मि नवि जाणी माशी.
वा वाइ तेह्वा ओलवा लीजि; थई रही तिहां दासी. कूं० १३
एम करतां आ ब्राम्हण आवु; माशीइ बुलावी.
दुःख कहूं हूं, माता, केटलां? आज हवि अहीं आवी' कूं० १४
स्वजन सहू करि अति आरति; आव्या ते निज धाम.
सुदेव राजाइ संतोखो आपी गाँ बहु ग्राम. कूं० १५
थई सांसतां माता परति दमयंती कहि वाणी :
'जु जाणु जे पुत्री जीवि, प्रीछ सोधावु जाणी; कूं० १६
नहीं तु प्राण त्यजूं हूं हवडां; मि रहूं नवि जाय.

34 सरयूं. घणूंइ. 36 दुखनी. 37 नीशरीयां. लीधुं. 38 कीधुं. 39 परवरीयां. 40 ऊतरीयं. 41 तादा मुती. 42 वनि. 43 अगीअरि आहेडीअि. 44 राषवा मंन. वेदन वेठी. 45 दुष. 46 दुष. 47 जांणी. 49 ब्राम्हण. 50 दुष अंहां. 51 सहु. धांम. 52 संतोषो. बहू ग्रांम. 53 वाणी. 54 जीवि. जांणी. 55 नहीं तु प्राण. ए.

घणा दिवस थया मि दीठु सुंदर ते नलराय.' कूं० १७

कडवूं २७ : ......

रायिजीइ बहु ब्राह्मण तेड्या; आदर करी बोलावि :
' तेहनि मनवांछित हूं आपूं ये नलनी सिधि ल्यावि. ' १
भैमी ब्राह्मणनि एम कहि छि : 'देशि देशि जई रहिज्यो.
राजसभा[मां]हि तां वाणी एणि पिरि तह्मो किहिज्यो : २
" धूरत वस्त्र वधारी वनमांहां सूती मेहेली नारी,
परम साधवी पुत्रनी माता; केही बुधि विचारी ? ३
ते दुःख पामी रोती हींडि; क्रिपा तां हवि कीजि;
दुर्बल पण नारीनि पालि, तेह विमाशी लीजि. ४
पत्नीनी तु रक्षा करवी, भरणपोषण देवूं;
धर्म जाणता ति कां मेहेली ? स्वर्ग तणूं फल लेवूं. ५
चतुर कुलिन नि दयावंत तूं; धर्म घणूं मनि हूतु;
अवलूं भाग्यि थयूं ए माहारूं; तूं मोहोजालि गूतु." ६
स्वामी, एहवी गाथा भणज्यो; प्रत्यूत्तर दि कोय,
इधाणि एणि ओलखवु; ते नल राजा होय. ७
ते वचन ग्रही अहीं मूह्हि किहिज्यो यम कोए नवि जाणि.
दुहुलूं सुहुलूं छि ते केहेवुं; प्रेम ते केहेवु आणि.' ८
एहवूं कही ते विप्र चलाव्या, देशि देशि ग्या मुंन.
शेरी शेरी कहिता हींडि वनिता तणूं वचंन. ९

56 घणा सुदर. ' कडवां १२." 58 रायिजीइ बहु ब्राह्मण. 60 ब्राह्मणनि. देशि २. रहियो. 61 वाणी. किहियो. ३. 62 मुती नारि. 64 दुख पामी. हींडि. कीया 65 सीद 66 पोषण. 67 जाणता. तणूं. 68 कुलीन नि दयावंत ते भैमी थयूं. 69 अवलुं थू. 70 स्वामी. भणयो. 71 अधाणि. ओलखयु. 72 वचन. अही. किहियो. जाणि. 73 दुहुलुं सुहुलुं आणि. 74 चलाव्या. मुन. 75 हींडि. तणूं.

तुहि नलराज नवि लाध्यु; पाछा आव्या विप्र.
वात कही ते दमयंतीनि जोई] जोई क्षिप्र. १०
काल केटलि विप्र ते आव्यु, पर्णाद जेहनूं नाम.
समाचार त्यारींनि कहि छि दमयंतीनि धामि: ११
' देश बहु निरख्या मि, बाई; पुरी अयोध्यां पिठु;
वाट घाट भमतु हूं हींड्यु: एक घडी नवि बिठु. १२
ऋतुपर्ण रा तणी सभाइ गाथा भणी शुणावी;
वल्तु काई राजा नवि बोल्यु; कुहुनि मनि न आ[वी.] १३
बाहुक एक उठीनि आव्यु मुज पासि एकांति
काल्ठ कचित्र अनि कूवडु, कायामांहां नहीं कांति. १४
घोडा शीघ्र चलावी जाणि; अति स्वादु भोजन;
नीसामा मूंकीनि तेणि कीधूं घणूं रुदंन. १५
कुशल-कथा पूछीनि मुझनि बीनतडी ए दाखी:
" दुखियु प्रीति कहि कुहु आगलि, अवरि नहि जु साखी ! १६
वस्त्र हरीनि हंस गयु ते विठी याहारि वाहार.
तेह रांकनु वांक किशु, जु दिधा पडी अपार ? १७
दुहुली वेलां सती स हुइ ते पोति राखि आप;
क्रोध करि नहीं दुखिआ उपरि; मनि न जाणि पाप. १८
भ्रष्ट-राज्य धनहीन थयु जे ते ऊपरि शी रीस ?
दीन बापडु शूं करि येहनि कोप्यु जगदीस." १९
एह्वूं कही रहु ते बाहुक. हूं अ शुणीनि आव्यु:
नलराजा मि दीठु नहीं; पणि सिधि एटली ल्याव्यु: २०

---

76 वीप्र. 78 नांम. 79 समाचार. धांम. 80 बहु निरख्या. 81 भमतुं. हींड्यु. 82 भणी शुणावी 83 मनि. 84 एक. 85 अनि. नहीं. 86 जाणि. 87 कीधुं. 88 दाखी. 89 दुखीयु. नहीं. साखी. 92 राखि 93 दुखीआ. मनि. जाणि 96 शुणीनि. 97 नहीं पणि.

आपी दक्षणा नि द्विज चाल्यु; जई मातानि पाश
रुदन करंती कूंअरी किहि छि: 'सुणि वीनती आस. २१
कांईएक मति ऊपनी छि मूंहि, कीजि ते परपंच.
सुदेव ब्राह्मणनि मोकलीइ प्रीऊ आणवा संच. २२
तात न जाणि तिम तेडावूं पिरि प्रीऊनि वाही.
तूं हि मनमांहां वात राखज्ये; माता, छे अति डाही.' २३
संतोषी पर्णाद ते चाल्यु, तेडाव्यु सुदेव;
दुःख आणती किहि छि वाणी दमयंती ततखेव: २४

कडवूं २८ : राग मारूणी

'अहींथी, विप्र, अयोध्यां जाउ; राजसभामाहि रिहिज्यो.
एकांति ऋतुपर्ण रायनि वचन एहवूं कहिज्यो: १
"दमयंती स्वयंवर करशि, वरशि ईछइ वाली.
प्रीउ विण केही पिरि काल नीगमूं? रूप मनोहर वाली. २
ईछा हुइ तु जाइउ, रायजी; म्यलशि वहु भूपाल.
सूर्योदय ते वरनि वरशि आज ज प्रातःकाल. ३
नलनी नरति नथी जणाती: जीवि छि कें मूओ.
वलतु समाचार नथी रे; यहि निशा थ्यु जूओ." ४
एहवूं कही ते विप्र चलाव्यु, वेगि वही ग्यु मुंनि.
ऋतुपर्ण राजानि जई ते वेगि कह्यूं वचंन. ५
वचन सुणी रा हरखि तेड्यु बाहुक देइ मान.
मधुरी वाणि किहि विवेकि प्रेम सहित राजान: ६

99 रुदंन. कूंअरी सुणी वीनती. 1 ब्राह्मणनि. आंणवा. 2 जाणि. 3 मंन. राखये. 5 दुःख आंणती. ततपेव. "कडवा १३. पद ४१." 7 अंहींथी. वीप्र जाउ. रिहिशो. 8 वचंन एहवुं कहियो. 10 केहि. 11 जाईउ. वहु. 13 जेणाती. 14 जूओ. 16 कहु 17 वचंन. हरखि. मान. 18 वाणि, वीवेकि. सहीत राजान.

'दमयंती स्वयंवर मांड्यु; महुरत छि तेःकालि;
जु जवाइ तु तिहां जईइ; अश्व अनोपम चालि.' ७
वचन शुणी नल चिंता पाम्यु हईडाशूं विमासि:
'शूं, भै, साचूं के ए जूठूं?' राजा पडियु सांसि: ८
'मि मूरखि मेहेली एकली; अबला ओछां मंन;'
वली विचारि: 'किमहि न करि येहनि पुत्री तंन.' ९
वली विचारि: 'नारिनूं तन येहवूं राधूं भात.
क्षणुमांहि विणसि सीरतेथी(?), न जाणीइ उतपात. १०
राजा आदर अति करि छि, तेहनि साथि जाओं.
जूठूं साचूं नयणि जोई सुखियु दुखियु थाओं.' ११
एम विमाशी कहि राजानि: 'जाशूं एके दिंन.
अश्वहृद[य] हूं पूरण जाणूं, जु मन छि, राजंन.' १२
अश्वशाला जई नलराजा दुर्बल हय कर धरिआ;
लक्षण सघलां पूरण जोई रथ लेई जोतरिया. १३
ऋतुपर्ण किहि: 'हो बाहु[क], कुणि किम जवाशि?
पंथ घणु नि अश्व दूबला, ततक्षणि थाका थाशि.' १४
किहि बाहुक: 'चिंता मनि म करु. शुभ लक्षण हूं जाणूं.
वेगि वाटि जाशूं, राजा; पिहिलूं शूं वखाणूं?' १५
एहवूं कहीनि रथ जोतरियु; राजा बिठु रंग.
वार्ष्णेय विसारयु प्रीति बाहुक पासि संग. १६
अश्व चलाव्या मंत्र भणी, ते गरुड तणी गति चालि.
बाहुक सज्ज थईनि बिठु; राशि भेदशूं झालि. १७

---

20 जईशि. अनोरंम. 21 वचनं. पांम्यु. 22 जट पडीयु. 23 मूरखि. 25 विचारी. तंन. 26 मांहि. जाणीइ. 28 नयणि. 29 विमाशी. 30 जांणू. राजान. 31 धरीआ. 32 लक्षण जोतरीया. 36 वखांणूं. 37 जोतरीयु. 39 भणी. तणी.

अश्व ऊडि आकाशिइ ऊंचा; रम्य घोष रथ वाजि.
विस्मय रा रितुपर्ण ते पामि : जाणे घन शूं गाजि ! १८
मूल संदेह करिइ मनमांहि : 'शूं, भै, मातलि येह ?
अथवा शालिहोत्र शूं आव्यु कुछित्र धारी देह ? १९
अथवा शूं, भई, नलराजा ए? विद्या तेहना शरखी.'
वार्ष्णेय तव रहु विमाशी श्रेहिवानी गति निरखी. २०
पर्वत नदी पंथ बहु गेहिल्यु; पवन-वेगि ते जाय.
भागस्वरि राजा मोहो पाम्यु, क्षणुइ वार न थाय. २१
जातां पडी पछेडी रानी; 'रथ राखु' एम माखि.
'वार्ष्णेय, वस्त्र ए ल्यावि,' रा कहि त्याहि बाहुक दाखि : २२
'योजन मेहिली आपण आव्या; वस्त्र रह्युं ते दूर.
पाछां वलीनि लेईं आवतां थायि अति असूर.' २३
एहेवूं कही रथ आघु खेड्यु पलनां पंथ मुझारि.
विहांनु वृक्ष एक आव्यु फूल्यु फाल्यु अपार. २४
ऋतुपर्ण कहि छि बाहुकनि : 'विद्या छि मुझ पाश.
फलपत्रनी संख्या ततक्षण दीठिइ कहूं प्रकाश. २५
साघली विद्या को नवि जाणि; सहूयमाहां एकेकी.
कोयल मधुरी वाणी बोलि; नृत्य करि तां केकी २६
फलपत्र ये भूमि पड्यां छि शत एक पंचवीस.
शाखा वुहे अयुत जाणज्यो.' एहवूं बोल्यु ईश. २७
'गणी जूउ, बाहुक, बि शाखा.' एहवूं बोल्यु राय.
नल ऊतरी गणवा कारण सज्ज थयु ते काय. २८

---

41 ऊंचां. रंम्य. 42 पामि. जांणे. 45 शरखी. 46 विमाशी. गेहिवानी. निरखी 47 नदा. पर्वत 48 भागिस्वरि. पाम्यु क्षणुइ. 49 राखुं. भापि. 50 वार्ष्णेय. दाखि. 51 योजंन. दुर. 53 एहेवुं. खेड्यु. 54 आव्यूं. 56 ततक्षंण. कहुं. 57 जांणि. सहुयमांहा. 58 वाणी. केका. 60 जांणयो. 61 जूअ. कारंण.

एहवूं कहीनि ते युग चुथु बिठामांहि पिठु.
नल मनमांहां अति आनंद पामी रथ ऊपरि जइ बिठु. ४०
कलियुग राजाइ नवि दीठु नलशूं थयु प्रसंग.
नगर भणी वेगि रथ खेडयु बाहुक आणी रंग. ४१
क्षण एकमाहि वहीनि वेगि कुंडिनपुरि ते आव्या.
सायंकाल-समिइ पुर देखी मनमांहां : जाणि फाव्या. ४२
नगरमांहि एकि नवि देखि स्वयंवरनी सजाई.
शत योजन अधिकेरूं आव्या रथ वेगि तां धाई. ४३
ध्विज पताका नि नहीं मंडप; राजपुत्र नवि दीसि.
चिंता मनि करि ते राजा : विप्रि वाह्या रीसि. ४४
भीमरायनि जाण कराव्यूं आव्यानूं ततकाल.
नगर-मध्यि ते रथ खेडावि विसमरशूं भूपाल. ४५

कडवूं २९ : राग देशाख

दमयंती सुणी रथनु नाद पामी मनमांहा अति उह्लाद.
चाली ओलखीनि दडवडी, वेगि वही मालीइ चडी. १
'सकि तु आव्यु नल भूप, नहीं तेहना शरखूं किहीं भूप.
रथ खेव्यानी एहवी गति, बीजु को नवि जाणी मति.' २
चडी गोखि नि जूई यांहां पोलि रथ दीठु ते तिहा.
ऋतुपर्ण बाहुक सारथि. मनि जाणी नल राजा नथी. ३
छोडयु रथ, राजा उतरयु; भीमराय साहामूं परवरयु.
मांहोमांहि म्यलिया बेह, कुशल खेम पूछि अति नेह. ४

86 बिठा. 88 संगी. खेडयु. आंगी. 90 सायंकाल. देखी जांणि. 91 देखि. 92 योजन. 93 नही. नृषि. 95 जाण. 96 खेडावि. "क० १३." 97 देशाष. 98 पीमी. 99 ओलखी. 1400 नही. शरषूं. 1 खेव्यानी. जांणी. 2 गोषि. 3 सारथी. जांणी. 4 मांहांनू. 5 माहोमाहि म्यलीआया. प्रेम.

वलती केशिनी वाणि कहि: 'वार्ष्णेय नलनि नवि लहि?' १५
कहि बाहुक: 'मेहेले वि बाल गयु अयोध्या ते ततकालि.
राइ हारी जाणी ऋद्धि; नथी जाणतु नलनी सिद्धि. १६
तेहिनि तां नवि जाणि कोय. नष्टरूप गूढ रहि सोय.
तेहेनि जाणि तेहनूं मंन; बीजा कुहुनि नहीं दर्शन.' १७
कहि केशिनी: 'द्विज पर्णाद तेहि शूं कह्यूं संवाद?
बाहुक, वाणी कुहु ते खरी, सांभलवा ईछि सुंदरी.' १८
बाहुक वल्तु वाणी वदि; गदगद कंठ दुःख अति रदि.
सती साचवि शील सुजात, कष्ट पडि करि शी वात? १९
पूरवनूं वालीनि कह्यूं, स्मरूं तां न जाइ सह्यूं.
तेह सांभली दूती कथा भैमीनि कहि सर्वथा. २०
मृगनयणी मनि शंका करि, नयने अति घन आंसू झरि.
जाणि नल हुइ शूं एह! अंतर्गत आव्यु संदेह. २१
शामा कहि: 'केशिनी, सुणु; रूप तणु संदे ज घणु.
पासि रही परीक्षा करु. भोजननी सजाई धरु. २२
शाक सजाई मेहेले अन्न, विना जल नि हुताशंन.
नल हशि तु ते आवशि. तूं जोजे: अंतरि भावशि. २३
कांइ बोलि ते सांभले, जोई चिह्न नि भूपति कले.
पासि रही परीक्षा करी मूंहि वाणी किहिज्ये खरी.' २४
वाणी शामानी ते सुणी गई केशिनी नल रा भणी.
पुनरपि आवी पाछी वली, कही कथा अति मननी रली: २५
'सुणी, मैं, गति जोउ तेव, देवरूप हुई ए देव.

27 केशनी वालि. 29 जाणी. जाणतु. 30 जाणि. 31 जाणि. तेहनू. नही. 33 वाणी. परी 34 वाणी सुण 35 गाद 38 घंन आंसू. 39 जाणि. अतर्गत. 40 केशनी. संधु घणु 41 परिक्षा भरु. 42 अंन. 44 जोदी. 45 वाणी. किहिजे परी. 46 वाणी शामाणी. केशनी. भणी. 47 मंननी. 48 भेद.

मनि विमासी मृगलोचनी मात भणी पठवी केशिनी : ३७
'जा, सखी, किहि मानि मर्म : रूप तणु एक छि तां भर्म;
बीजां सघलां म्यल्यां इधाण; बाहुक नल हुइ निरवाणि. ३८
मुखामुखि म्यलि जु एह, रूप तणु भांगि संदेह.
तेहनि तेडु अहीं आवाशि कि हूं जाऊं एहनि पाशि. ३९
पूछी पितानि करो वात. अथवा यम न जाणि तात,
आपु आज्ञा, जावों तिहां; कुहु तु ते तेडावूं आंहां.' ४०
राणीइ पूछु राजान; दीधी आज्ञा जोई ज्ञान;
जाण्यूं, सुख गयूं वालीइ; वेगि नल तेड्यु मालीइ. ४१
दीठी नारी; दुःख न माय. गदगद कंठि थयु तव राय.
नलनि जोई ते बामणी रुदन करि, चिंता अति घणी. ४२
वस्त्र कषायां, जटा मल-भरी, दुर्बल देह, प्रभा ऊतरी.
लुई आसू वाणी वकि; शोकप्रवाह सही नवि सकि : ४३
'बाहुक, साचूं किहिज्यो आज, कहीइ तखो दीठु महाराज,
येणि हूं सूती परहरी विण-अपराधि स्त्री सुंदरी? ४४
प्रेम करी ये निशदिन भजि, नल विना वनमाहा के त्यजि?
मि मोटु अपराध करयु, देव त्यजी मंडपमांहां वरयु. ४५
जाणि धर्म चतुर येह, पुत्रवती त्यजि किम तेह?
हंस-वचनि धरी अति प्रीति तेहनि त्यजवूं केही रीति?' ४६
वचन शुणीनि नल उचरि, नयणे शोकाश्रुनि भरि :
'माहू वांक किशु मनि माणि; सर्व कलिनूं कीधूं जाणि. ४७

71 मनि विमाशी. भेणी. 72 सखी. मंणु ता. 73 म्यल्या अिधाण. नीरवांणि. 74 मुखामुखि. तंणु. 75 अंहीं आवशि. जाउ. एहनि. 76 पीतानि. जाणि. 77 आपना जाउं. 78 रांणीइ. पुछ. आपना. ग्नान. 79 जाण्यु सुष गयुं. 80 दुष. 81 जोटी. बांमणी रुदंन. घंणी. 82 देइ. 83 लुटी आसु वांणी. 84 किहिज्यो. तेंणी. 88 जांणि. 90 वनंन. शोकाश्रुनि. 91 माणि. कलीनुं. जांणि.

गयूं राज्य, नीसरियु वंनि, तेणि मुझ ऊतार्यूं मंन.
कलि ताह्रि शापि अति दल्यु, माह्रारि देहि वशु परजल्यु. ४८
कर्कोटकनूं विष ते चड्यूं, तेंणि तनु तेहनूं अति नड्यूं.
तेणि हूं त्यजु तां आज; अहीं आव्यु छूं ताह्रारि काजि. ४९
दूत भमि छि देशि देशि: स्वयंवर मांड्यु नरेश;
दमयंती वरशि पति नवु, तह्मो भलि ए वार्ता स्तवु. ५०
कुहुनि, रूडा कुलनी नारि वशवर्ती मेहेली भरतार
जीवंतां बीजानि वरि; तुम विना को एहवूं करि? ५१
ऋतुपर्ण जाणी आवियु, मुह्नि पण साथि ल्यावियु.
माह्रारूं मन मानूं अति घणूं; धीठूं सगपण नारी तणूं.' ५२

कडवूं ३०: जित ✓

वचन प्रभुनां सांभली, मन वालीइ जी;
चरणे करि प्रणाम, बोल्यूं पालीइ जी.
एक अह्मारी वीनती मन वालीइ जी,
साची शुणीइ, स्वामि बो० १
मुझमांहि दोष म जाणशु. म० मि कीधु ये परपंच. बो०
तह्मोनि तेडवा कारण, मन वालीइ जी.
स्वयंवर केरु संच. बो० २
पर्णादि आवी कह्या म० मुझ मनि ए ट्टधाण. बो०
पंखी वस्त्र हरी गयु म० तेणि रह्या माह्रा प्राण. बो० ३
एक बाहि किम आवशि म० नल विण बीजु जंन? बो०
एह्र विमाशी मोकल्यु म० क्षिहिवा कारणि मुंनि. बो० ४

---

92 गयूं राय नीमरीयु. उनारयूं. 95 अंहीं. 96 भमि. 67 तंह्मो. वार्ता. 1500 जाणी आवीयु. पंण. स्यावीयु. I मंन मांनूं. घंणूं. सगपंण. तंणू. 3 वचंन. प्रभूनो. मंन. 4 प्रणाम. 5 अंह्मारी. मंन. 6. शुणीइ. 7 जाणशु. 9 केरू 10 अंधाण. II. पंनी 13 कारंणि मुनि.

मेहिली च्यारि देवनि म० मि तु वरियु, नाथ. बो०
वैश्वानर सांनधि ग्रहु म० ति, प्रभु, माहारु हाथ; बो० ५
ते किम बीजानि वरूं, म० पश्चम ऊगि सूर ? बो०
पावक जु शीतल थाइ म० सूकि सागर पूर, बो० ६
मनथी तह्मो न वीशरया म० सत्य करी ते जाणि. बो०
चिंत जु कांई चल्यूं हुइ म० चरण तह्मारानी आणि. बो० ७
रवि शशी पवन ते साखिआ म० जु कांई असत्य. बो०
कूडूं जु कांई करूं म० तु मुझ देज्यो मृत्य. बो० ८
त्रण्य वरस रही एकली म० जु कीधु अन्याय, बो०
तेणि पापि प्राण ए म० माह्रा ततक्षण [जा]य. बो० ९
सत्य करीनि जाणज्यो म० आणवा करघु उपाय. बो०
गि जाण्यूं : असंभवि सांभलि म० तु ततक्षण आवि राय. बो० १०
एहवूं कहीनि कामिनी म० गाढि करि रुदंन. बो०
लज्जा मेहेली कांमिनी म० त्याहि बोल्यु देव वचंन : बो० ११
'अह्मो त्रणि छूं साखिआ म० दूषण नथी लगार. बो०
शील साचूं छि एहनि म० कीजि अंगीकार.' बो० १२
वचन शुणी देवनां म० दया ऊपनी भूप. बो०
वस्त्र ओढी अहि चीतव्यु म० ततक्षण थयु स्वरूप. बो० १३
कंठि वलगी काम्यिनी म० ततक्षण मेहिली लाज, बो०
कूंअर खुलि तेडिया म० प्रेमि करी माहाराज. बो० १४
एम करतां दिन आथम्यु, मन मानियां जी.
रंगि रमियां रात्रि. [बो०]

14 वरीयु. 15 वैश्वानर करग्रु. 16 वारू. 18 जाणि. 19 कांई. चर्ण-आंणि. 20 शशि पवंन. साषिया. काइी. 21 देयो. 22 त्रंण्य. अंन्याय. 23 प्रांण. 24 जांणयो. आंणवा. 25 जांण्यूं. 26 कामिनी. 27 कांम्निनी. 28 अह्मो त्रंणि. साषीआ. दूषंण. 29 साचू. 30 शुंणी. उपनी. 31 अही. ततक्षंणे. 32 कांम्यिनी. ततक्षंण. 33 पुलि - डीया. 34 मंन मांनीया जी. 35 रमीयां.

सुख पामी ते सुंदरी म०
चुथि वरशि गात्र. वो० १५

वलमेद

रायजी पूछि ते वननी वात रे;
काम्यिनीयि कही सवि कथा रे. १६

ढाल

काम्यिनीइ कथा कही दु:ख वेठ्युं येह विशाल.
निशा एम ते वही गई नि थयु प्रातःकाल. १७
भीमनि वधामणी केशिनी जईनि स्वामि.
दमयंती आनंद पामी; प्रगट थ्या नल राय. १८
भीम रा आवी म्यल्यु; वरतियु जयजयकार.
आनंद सहूइ पामियूं ते नगरि नर नि नारि. १९
भीमि नल अति पूजियु नि दीधां तां बहु मान.
सांमलीनि आवियु ऋतुपर्ण तां राजान. २०
मांहोमांहि ते मल्या; ऋतुपर्ण कहि कर जोडिः
'अपराध कांई मि कर्यु, मनि माणयु ते छोडि. २१
तुंम्हरे बोलावियु नि दीधां कांई काम,
ओलख्या विण अपराध कीधा, क्षमा करज्यो, स्वामि.' २२
नल कहि: 'नहीं रीस मुझनि. तह्मो माहरो भ्रात.
प्रीत आगलि बाधसि ते सत्य जाणु वात. २३
मांहोमांहि विदा आपी; उल्टि अंग न माय.'

36 सुख पामी. 39 वननी. 40 ढाल १ ली. 42 काम्यिनीइ. दुख वेठ्युं.
43 १. ने एकम. 44 वधामणी. केशनी. स्वामि. 45 आनंद पामी. 46 वरत्युं.
47 आनंद सहुइ पामीयुं. 48 पूज्युं. बहु मान. 49 आव्युं. राजान.
50 माहोमांहि. 51 कहि. मनि माणजु. छोडि. 52 बोलाव्युं. काम.
53 बोलव्या. अहीं कडी '७' ढाल. 56 माहोमांहि. उलटि. न मै.

वीजु तेडी सारथि ऋतुवर्ण रा घिरि जाय. २४
नल सुखि ते तिहां वशु नि नगरि अति उछाह.
ध्वजा पताका घर घरिं नि पुष्प तणा प्रवाह. २५
संवत्सर ते तांहां रही शीख मागि राय.
भीमनी आज्ञाथी ते निज नगर तां जाय. २६
सोल हाथी संगि लीधा, अश्व तां पंचास,
छसि पालो परवरयु, ते विहु रथि उल्लास. २७

नगरि नरपति आवियु, पुष्कर म्यलियु वीर.
नैषध राजा उचरिः 'सांभलु साचूं, वीर. २८
धन घणूं हूं पामियु छूं. द्यून रमीइ आज.
थापणि माहारी जाणज्ये तूं कहि छि तां राज. २९
रमि नहीं तु युद्ध कीजि; क्षत्रीनु ते धर्म.
ईछा ताहा मनमांहि ते करजनि कर्म.' ३०
पुष्कर वलतु बोलियुः 'जी रमु आणी वार.
राज्य तूं मि जीतियूं छि, हवि जीतूं नारि. ३१
दमयंतीनि हूंअ जीती भोगवूं सुखभोग.
भलि तूं अहीं आवियु; मेलवानि योग.' ३२
पुष्कर मनमांहां चीतवि पिहिलांनी तां पिरि;
जाणिः तिम ज जीतशूं कलियुगे कीधूं घिरि. ३३
क्रोध नल रानि चड्यु ते जाणि छेदूं शीस.
चतुर थईनि शमावी ते मनमांहि रीस. ३४

---

57 शारथी. ऋतुर्पण. 58 रुपि. 59 पुष्प तणा. 60 सवंत्सर. शीष. 61 आगन्यथी. 62 लीधा. 64 आवियु. पुष्कर. म्हलीयु. 65 धंन घणूं. पामीयु. दूत. 67 थापणि. जाणये. 68 नहीं. 69 मंन. 70 पुष्कर. बोलीयु. आणी. 71 जीतीयूं. 72 सुख. 73 अहीं आवीयुं. 74 पुष्कर. मने. 75 जांणि. 76 जाणि छेदूं शीश. 77 मंन.

द्यूत पुनरपि मांडियूं; जीतियु नल तेणी वार.
पुष्कर झांखु थई रह्यु. नल वचन बोल्यु सार : ३५
'कांईड़ ति कीधूं नथी. कलियुग केरूं कृत्य.
रीस नहीं कांई मूंहनि तु[झ] ऊपरि तो सत्य. ३६
भाई छि तूं माहरि. मुझ प्रीति पिरि पिरि.
कारय पोतानां करु; हवि, वीर, जाओ घिरि. ३७
मंदिरि जा तूं ताहरि. हूं धरीश तुझसूं प्रीति.
वैराग्य माहारि छि नहीं. कालि करयूं विपरीत.' ३८
मान देई चलाव्यु पुष्कर तां निज गाम.
नगर-जन संतोखिआ. नलराय पुहुता धाम. ३९
सेना तां बहु मोकली, वेगि तेडावी सुंदरी.
परम आनंद पामियु ते राज्य तां पोति करी. ४०
नर नारि नगरि पधारियां. नि हरखियुं सवि लोक.
राय दीठि तां गयु सवि जन केरु शोक. ४१
यज्ञ कीधा अति घणा, सुख भोगव्यूं संसारि;
तिम तह्मो, रा, पामशु सुख, कालि निज परवार. ४२
वीर अर्जन आवशि, पामशु निज पद स्थान.
शीशि ताहारि प्रभु समरथ येह श्रीभगवान. ४३
भाई सवरा एखटा छु, द्रौपदी छि पाशि.
विप्र पासि रहि छि माहापात्र ते वनवासि. ४४
दैव जिहां विसमु थयु तव नहीं कांई कल्याण.

78 माडीयूं. जीतीयु 79 पुहुर. झांपु. वचन. 80 का.ीजि. केरू कृत्य. 81 कांई. 82 माई. 83 आ कडी पछी तरत ३९मी छे 84 आ कडी हस्तमां ४५मी पछी छे. 85 नहीं. 86 मान देई. पुहुर. गाम. 87 संतोषीआ. धांम 89 आनद पामीयु. 90 पधारीयां. हरषे्यु. 91 जंन. 92 घंणा सुख. 93 पांमशु सुख. 94 पांमशु. स्थांन 95 प्रभू. श्रीभगवान. 96 भाई. एषटा. 98 नही कांई प्राण.

वली वेलां सरव सार्चू जाणजे निरवाणि. ४५
कथा एहवी सांभली रलियाति कुंतातंन.
अक्षविद्या जाणवा वीनव्यु त्याहारि मुंनि. ४६
अक्षहृदय तव आपिऊं वृहदश्व आणि प्रीति:
शकुनिनाथी अधिक विद्या जाणज्यो ए रीत. ४७
युद्ध कि वली जूवटूं परठीनि लेज्यो राज.
बुहि तां सरसि सही निश्चि तह्मारूं काज. ४८
शीख मागी सांचरया; ऋषिराय नामूं शीस.
भ्रातृ सहित ते बुलावि प्रेमि युधिष्ठिर ईश. ४९
युधिष्ठिर आनंद पाम्या सांभली आख्यान:
वाट जूइ अर्जुननी, समरण श्रीभगवान. ५०
आर्णिक पर्व तणी कथा ये सांभलि नरनारि,
पामि सुख संसारनां; पुनरपि नहीं अवतार. ५१
दुःख देहे पामि नहीं, ये सांभलि करि गान;
राज पामि आपणूं ये शुणि तां राजान. ५२
सांभलि प्रेमि करी ते पामि पद निरवाणि.
कहि भालण: बुधिमानि लख्यूं एह प्रमाण. ५३

इति श्रीनलआख्यांन समाप्तः ॥ सं० १७२३ वर्षे प्रथम श्रावण वदि १२ वार भृगुदिने लषितं मोढज्ञातिमुकुंद ॥ :॥ :॥ शुभं भवतु: ॥ :॥ :॥ श्री

---

99 जाणजे निरवाणि. 1600 रलीयाति. 1 जाणवा. 2 आपीओं वृहदश्व आंणी. 3 जाणयो 4 युध. होयो 5 तह्मारहं. 6 शीष नांमू. 7 सहीत. 8 आंनंद. संभली. आख्यान. 9 समरण श्रीभगवान. 10 आर्णीक. तंणी. 11 पामि सुष. नहीं 12 दुष. पामि. नंही. गान. 13 पामि शुणि. राजान. 14 पांमि. निरवांणि. 15 बुधिमांनि लष्यूं. प्रमांण आदी ३८नो आक.

शब्दकोश

शब्दना अर्थनी पछी आपेला आंक अनुक्रमे आ काव्यनां कडवांनो अने पछी कडीनो आंक सूचवे छे. एकनो एक शब्द काव्यमां एकथी वधु वार पण आवतो होय; एनो एवो सामान्य रीते एक ज निर्देश नोंधवामां आव्यो छे. क्वचित् बीजो नोंधवामां आव्यो होय तो ए थोडा अर्थभेदे या प्रयोगभेदे पण होय.

आ कोशना शब्दविवेचनमां आ दिशानां जेमणे काम कर्युं छे तेवा नीचेना विद्वानोना ग्रंथोनो उपयोग करवामां आव्यो छे त्यां त्यां ते ते ग्रंथकारनो निर्देश मात्र कर्यो छे; बेएक प्रसंगे ग्रंथ ज निर्देश्यो छे:

टर्नर : प्रो. आर. एल. टर्नरनो नेपाळी शब्दकोश (अंग्रेजी)

टेस्सिटोरी : एल. पी. टेस्सिटोरीनी जूनी पश्चिमी राजस्थानीना व्याकरणनी नोंधो (अंग्रेजी)

दवे, डॉ. दवे : डॉ. त्र्यंबकलाल न. दवेना '१६मा शतकनी गुजराती भाषानो अभ्यास' (अंग्रेजी)नो शब्दकोश

नरसिंहराव : न. भो. दिवेटियानो 'गुजराती भाषा अने साहित्य ग्र. १'

फागु : डॉ. भोगीलाल सांडेसराए संपादित 'प्राचीन फागु-संग्रह'नो शब्दकोश

ब्लोक : प्रो. जुल्स ब्लोक : 'मराठी भाषेचा उद्गम' (मराठी भाषांतर)

मोदी : प्रो. मधुसूदन चि. मोदीनो 'गुर्जर रासावलि'मांनो शब्दकोश

षष्टि : डॉ. भोगीलाल सांडेसराए संपादित 'षष्टिशतक प्रकरण : त्रण बालावबोध'नो शब्दकोश

सांडेसरा : डॉ. भोगीलाल सांडेसरा; उपरना एमना 'फागु'ने 'षष्टि०'ना हवाला वगरते

पाइअ-सद्द-महण्णवो (पा. स. म.)थी चलावेल छे.

संक्षेपसूचि:—

अ.	अव्यय
अ. कृ.	अव्ययरूप कृदंत (संबंधक भूतकृदंत)
अ. क्रि.	अकर्मक क्रियापद

अप.	अपभ्रंश भाषा (सामान्य)
अरबी.	अरबी भाषा
अर्वा.	अर्वाचीन-मध्यकालीन अने अर्वाचीन गुजराती
अर्वा. गुज.	तद्दन अर्वाचीन गुजराती
आज्ञार्थ.	आज्ञार्थ रूप
उभया.	उभयान्वयी अव्यय
ए. व.	एकवचन
कर्तरि	कर्तरि प्रयोग
कर्मक	अकर्मकर्तृ कर्मरूप
कर्मणि	कर्मणि प्रयोग
क्रि वि.	क्रियाविशेषण
गुज.	गुजराती भाषा
चो. वि.	चोथी विभक्ति
छ. वि.	छठ्ठी विभक्ति
त्री. पु.	त्रीजो पुरुष (क्रियारूप)
त्री. वि.	त्रीजी विभक्ति
देश्य.	प्राकृत देश्य शब्दरूप
नपुं.	नपुंसकलिंग–नान्यतर जाति
प. पु.	पहेलो पुरुष (क्रियारूप)
प. वि.	पहेली विभक्ति
पालि.	पालि भाषा
पां वि.	पांचमी विभक्ति
पुं.	पुंलिंग–नरजाति
प्रा.	प्राकृत भाषा—मुख्यत्वे ' महाराष्ट्री '
फारसी.	फारसी भाषा
ब. व.	बहुवचन
बी. पु.	बीजो पुरुष (क्रियारूप)
बी. वि.	बीजी विभक्ति
भविष्य.	भविष्यकाळ (क्रियारूप)
भू. कृ.	भूतकृदंत (पहेलुं)
भूत.	भूतकाळ (क्रियारूप)

मध्य. गु.	मध्यकालीन गुजराती
मराठी.	महाराष्ट्रनी मराठी भाषा
वर्त.	वर्तमानकाळ (क्रियारूप)
वर्त. कृ.	वर्तमान कृदंत
वि.	विशेषण
वै.	वैदिक संस्कृत भाषा
शौर.	शौरसेनी प्राकृत भाषा
स. क्रि.	सकर्मक क्रियापद
सं.	संस्कृत भाषा
संबो.	संबोधन विभक्ति
सा. वि.	सातमी विभक्ति
स्त्री.	स्त्रीलिंग–नारीजाति
हिंदी.	हिंदी भाषा

अ पादपूरक [जुओ हूअ (२२-७), तूंअ (२२-८) –सं. च उपरथी (मोदी). ज्यारे 'पण' ना अर्थमां आवे त्यारे मध्य. गु. इ < अप. वि < सं अपि द्वारा 'अ' थवानी शक्यता.

अगिअर पुं. 'अजगर' २६-११ [सं. अजगर उपरथी *अयगर >*अइगर >*अइगर अने ग् ना व्यत्ययथी अगिअर. बाकी सं. अजगर उपरथी प्रा. अयअर- > अइअर- उपरथी 'एरु' शब्द गुज मां मळ्यो छे.]

अजगर (सं.) पुं. मोटां प्राणीओने गळी जनारो (शब्दना मूळमां 'अज' बकराने गळी जनारो) मोटो सर्प

अडि अ. क्रि., त्री. पु., ए व. 'स्पर्श करे' ८-१६ [प्रा देश्य अड्ड 'आडुं' अर्थमां छे. (पा. स. म.)– एनी साथे आ क्रियाधातुनो संबंध छे. मूळमां बेवडा ड्डने कारणे सौराष्ट्रमां आनुं उच्चारण शुद्ध मूर्धन्य 'ड' थाय छे, तळ गुजरातमां थाय छे तेवु मूर्धन्यतर नहि. आनुं प्रेरक रूप 'अडाडवुं' थाय छे तेमां पण धातुनो 'ड' मूर्धन्य छे, प्रेरक प्रत्ययनो मूर्धन्यतर छे. 'अडकवुं' तळ गुजरातीमां प्रयोजाय छे जेमां 'ड' मूर्धन्यतर छे.]

अढार त्रि '१८'नी संख्या १३.१९ [सं. अष्टादश > प्रा. अट्ठारह उपरथी *अढारह द्वारा. गुज. मां व्यत्ययथी 'अराड' पण विकल्पे तळ गुजरातमां छे]

अण- 'शब्दारंभे नकारार्थे आगम' १६.५ [अहीं शब्द अणदीठि छे– आमां सं. अन् जे मात्र स्वरादि शब्दोने लागतो त्यां गुज. मां 'अण' थई स्वरादि

–વ્યંજનાદિ બધા શબ્દોમાં વ્યાપક થયો છે. સર. અણઊગિઇ (દવે), અણકરતઉ (દવે), અણલાધઉ (પદ્ધિ.) વગેરે.]

અણમરી, અણિસરી અ. કૃ. 'અનુસરીને' ૮-૪, ૭-૭ [સં. *અનુસર્ય > પ્રા. અણુસરિઅ દ્વારા અ. કૃ. 'ઈ' પ્રત્યય સં. ય પ્રત્યયથી વિકસ્યો—શબ્દમાં 'ઉ'નો લોપ અને પછી 'ઇ'નો ત્યાં પ્રક્ષેપ.—જુઓ 'ઈ.']

અતિશિ, અતિસિ વિ. 'ઘણું, ખૂબ' ૬-૩ [સં. અતિશયમાંના 'ય'નું સંપ્રસારણ થઈ 'ઇ' થઈ અને શ્નો વિકલ્પે સ્ થયો—આ અર્વાચીન તદ્ભવ છે, કેમકે 'તિ'માંના ત્નો લોપ થયો નથી.]

અધમુઆ વિ. પું. બ. વ. 'અડધા મરેલા જેવા' ૨૨-૨ [સં અર્ધ-મૃતકાઃ > પ્રા. અદ્ધમુઅઆ > અપ. અદ્ધમુઆ. એ. વ.માં અધમુઅઉ; ભાલણમાં અધમુઉ]

અધિકૂં વિ. 'અધિક, વિશેષ, અદકું' ૬-૩ [સં તત્સમ અધિકને અપ. નો સ્વરિત ઉં લાગે અધિકઉં દ્વારા મળેલું. સરખાવો અધિકઉં (દવે).

અનિ ઉભ. 'અને, ને, તથા' ૪-૫ [સં. બ. વ. અન્યાનિ > પ્રા. અન્નાઇં > અપ. અન્નઇં > મધ્ય. ગુજ. અનઇં, અનઇનુ ટૂંકવાયેલું. ડૉ. દવે 'ઇ'ને સાતમીના પ્રત્યય તરીકે (?)થી સૂચવે છે; જ્યારે મોદી અન્યદ્ + અપિ > *અણ્ણ-વિ > *અણ્ણ-ઇ પણ સૂચવે છે. મરાઠીમા આણિ. આ અનઇનું આદિ અસ્વરિત શ્રુતિના લોપે 'ને' વગેરે આવે છે.]

અનૂપ વિ 'અનુપમ' ૧૧-૪૬ [સં. તત્સમ અનુપમનું ટૂંકવાયેલું રૂપ]

અનેકિ, અનેક્ય વિ. 'અનેક, ઘણા-ણી' ૩-૬ અને ૪-૬ [સં. તત્સમ પ્ર., બ. વ. અનેકેનું ટૂંકવાયેલું રૂપ – અને પછી 'ઇ'નો લઘુપ્રયત્ન 'ય્'] અનેકે પરિ સ્ત્રી., એ. વ. 'અનેક રીતે' [અહીં પરિમાંના સ્ત્રી. એ. વ. પ્રત્યય ઇને કારણે અનેકેમાં પણ એ જ પ્રત્યય વિશેષણને લાગ્યો છે. સરખાવો અનેકિ પરિ (મોદી ૫-૩૧, ૧૭૭).]

અનોપમ વિ. 'અનુપમ, અજોડ' ૪-૧૨ [સં. તત્સમ અનુપમ (અન્ + ઉપમાનું બ. વ્રી.)માં ગુજ લાક્ષણિકતાએ ઉ નો ઓ]

અન્યાઇ વિ. 'અન્યાયી, અન્યાય કરનારું' ૨૬-૫ [સં અન્યાય + ઇન્ = અન્યાયિનનું પ. એ. વ. ઉપરથી અર્વા. તદ્ભવ-રૂપ]

अपभ्रंश (सं.) पुं. 'भ्रष्ट भाषा, प्राकृत भाषा' १-११ [पतंजलिए मूळ जे अर्थमां आ शब्द योजेलो—'भाषानुं भ्रष्ट स्वरूप' ते अर्थमां पोतानी भाषाने भालण 'अपभ्रंश' कहे छे. ए 'नलाख्यान'—'दशमस्कंध' आदिमां एने 'गुजर भाषा' कहे छे. 'दशमस्कंधः सत्यभामाविवाह'मां आरंभे 'प्राकृत' पण कही छे.]

अपार (सं.) वि. 'पार विनानुं, घणुं' १६-११ [अ + पार ब. व्री.]

अपूरव वि. 'अपूर्व, अजोड' ६-१३ [सं. तत्सम अपूर्व (अ + पूर्व ब. व्री.)नुं अर्वाचीन तद्भव रूप]

अभिराम (सं.) वि. 'सुंदर' १०-२५

अम सर्व. वि. 'अमारुं' ११-१४ [सं. अस्मत्‌नुं प्रा. अम्ह–द्वारा मध्य. गुज.मां अह्म–अने पछी महाप्राण-उच्चारणनो लोप. अहीं छठ्ठीनो अर्थ आपतो प्रयोग. जुओ आ पछी अह्म.] अमनि-अमने ६-१३मां नि-ने अनुग लाग्यो छे. चोथीनो अर्थ आपवा. जुओ नैं.

अमूलक *वि.* *'अमूल्य'* ७-१२ [*स तत्सम अमूल्य–* > प्रा. अमुल्ल– > मध्य. गुज. अमूल–ने स्वार्थे क प्रत्यय]

अमृत-मीठूं वि. 'अमृतना जेवुं मीठुं' ६-३ [सं. अमृत + गुज. मीठूं < अप. मिट्ठउं < प्रा. मिट्ठअं < सं मिष्टकम्‌ कर्मधारय समास]

अरथि सा. ए व., पुं 'अर्थे, माटे, काजे' ६-३ [नामयोगी तरीकेनो सं. अर्थ + सा. ए. व.नो इ; अर्वाचीन तद्भव.]

अलखामणु वि. पुं. 'अळखामणो; आंखे चडेलो' १२-१६ [सं. अ-लक्ष्य-माण-कः (लक्षनुं कर्मणि वर्त. कृ.) > प्रा. अलक्खमाणओ > अप. अलक्खमाणउ > मध्य. गुज. *अलाखमाणउ > *अलखामणउ = 'जेने जोवामां न आवे तेवो' अने पछी 'जोयो न गमे एवो'– वि. 'अळखामणुं]

अलगु वि. पुं 'अळगो' ११-४ [सं. अ-लग्नकः > प्रा. अलग्गओ > अप. अलगउ > मध्य. गुज. अलगउनुं टूंकुं रूप; जुओ अलगउ (परि.)]

अवटावि वर्त. त्री. पु. 'रखडावे, हेरान करे' २२-४ [स. अपवर्तयति (अप + वृत्‌नुं प्रेरक रूप– 'भमावे छे') ना *अपवर्त्तापयति > प्रा. *अउ-ट्टाविइ > अवट्टावइ > मध्य. गुज. अवटावइनुं टूंकुं रूप]

अवरि वि. 'अवर, बीजा-जा' १२-६ [सं. प. ब. व., पुं. अवरेनुं ज टूंकावायेलुं रूप. अवरय पण जूनी भाषामां मळे छे, अनेक्य नी जेम—जुओ उपर अनेकि-अनेक्य.]

अवलूं वि. 'अवळु, ऊलटुं, ऊंधुं' २७-६ [सं. वल् धातुनो प्राकृतमां 'दोरडाने वळ चडाववो' एवो पण एक अर्थ छे (पा. स. म.)– नाम वल छे. मध्य. गुज.मां वल तरीके ए आवे छे-ज्यां 'ऊलटा'ना अर्थमा अ (< सं. आ उपसर्ग) लागी *अ-वल अंग बनी शके छे. एने स्वरित उं लागतां अवलउं–ने पछी टूंकवातां अवलूं–' ऊलटा वळनुं '–उपरथी लक्ष्यार्थ 'ऊंधुं,' 'ऊलटुं' ने पछी 'आडा स्वभावनुं']

अवशमिव, अवशमेव क्रि. वि. 'अवश्यमेव, जरूर' २५-८, २३-२१ [सं. तत्सम अवश्यम् + एव नुं अर्वाचीन तद्भव-रूप]

ʻअवा ७-९ जुओ ʻएवा.

अवाश पुं. सा. ए. व. 'आवासमां' ५-७ [सं आवासनुं टूंकवायेलुं अवास + सा. ए. व नो इ = अवासि > अवास्य > अवाश; तालव्य स्वरना योगे तालव्य श् थयो.]

अवितथ-नामा (सं.) पुं. ए. व., व. त्री. 'जेनुं नाम साचुं छे तेवो, यथार्थनामा' १९-११ [अ + वितथ (असत्य, मिथ्या)]

असंभवि वि. 'असंभाव्य, असभवित' २०-१० [सं. असंभाव्यनुं गुज. टूंकवायेलुं रूप—य्ना संप्रसारणे इ थये.]

असूर नपुं. 'रात पडी गई होय तेवुं मोडुं' २८ २९ [सं. अ-सूर्य (सूर्यनो अभाव) पु. उपरथी गुज.मां नपुं. प्रयोग–'मोडुं'ना अर्थमा; पछी वि. असूरुं. प्रा.मां, असूरिय 'अंधकारमय स्थान, नरक' ए अर्थमां वपरायेल छे (पा स. म); हिंदीमां असूरा पुं , असूरी स्त्री.नो विशेषणे प्रयोग प्रचलित छे.]

अहि (सं.) पुं. 'सर्प,' अहीं 'कर्कोटक नाग' ३०-१३.

अहेडी पुं. 'शिकारी' ६-१३ [स. आखेटक + इन् = आखेटकिन् + स्वार्थे क = आखेटकिकः > प्रा आʼडइओ > अप आडिडि > मध्य गुज. आहेडी अने पछी अहेडी – अहेडी]

अहिनशे क्रि. वि 'अहर्निश, रातदहाडो' १५ १७ [सं अहर्निशम्नुं अर्वा. तद्भव-रूप + सा. ए. व नो ए = अहिनशे]

अहीं क्रि. वि. 'अहींया, आ स्थळे' ११-११ [अप.मां 'भविसअत्त कहा'मां अहिं रूप वपरायुं छे. डा. गुणे एने माटे (?) कदी अधः अने अधि नोंधे छे. सं. मां इह (< *इध) रूप छे, पालिमां इध मळे छे. अप. मां इहिं पण मळे छे (पा. स. म.). बाकी इहां, जहां, तहां वगेरे तो व्यापक छे ज. आमां हिं ए सातमीना सार्वनामिक प्रत्यय स्मिन्नो म्हि द्वारा विकास छे. अप.मां जहिं, तहिं, कहिं ने इहिं–अहिं पण. आमां सातमीनो स्थळवाचक अर्थ छे उच्चारणथी आ बधांमां ह् नुं स्वरित उच्चारण छे ने मात्रा बे ज छे.]

अम्ह, अम्ह-नि, अह्मो सर्व–१०-६ अने ७-११ [सं. अस्मत् सर्वनामनो प्राकृतमां अम्ह- थाय छे. आ अंगने प्रत्ययो अने अनुगो लागे छे त्री. ब. व.मां अम्हहिं > अम्हइं द्वारा 'अम्हें-अह्में' रूप मळे छे जे गुज.मां प. ब. व.मां आव्युं छे. *मध्य गुज.मां अह्मो-अम्ह्यो-अम्यो पण प्रचारमां आव्यां छे, आजे जे अमो-अम्हो* तरीके प्रयोजाय पण छे. °नि अनुग माटे जुओ °नुं.]

अंतरगति क्रि.वि. 'मनमां' ४-११ [सं. अंतर् + गत- नुं अर्वा. तद्भव-रूप + सा. ए. व.नो इ.]

अंतरधान, अंतरध्यान वि. 'अंतर्धान, अंतर्हित, अदृश्य' २०-१० अने २३-२३ [सं. तत्सम अंतर्धाननुं अर्वा. तद्भव-रूप—पछी नामने बदले विशेषणात्मक प्रयोग]

अंतरि नपुं. सा. ए. व. 'अंतरमां, मनमां' ९-१९ [सं. अंतर् अव्यय उपरथी 'अंतर' नाम. गुज मां + सा ए. व.नो इ प्रत्यय]

अंबोडा पुं., प. ब. व 'वेणी' ४-७ [सं. *आम्रचूडकः > प्रा. *अंबऊडओ > अप. *अंबऊडउ मध्य. गुज. अंबोडउ— केरीना आकारनी वेणीनी गूंथणी; ब व.मां अंबोडा; अंते स्वरभार छे.]

आउध नपुं. 'आयुध, हथियार' ३-३ [सं. आयुधनो अर्वा. तद्भव]

आकळि वर्त. त्री. पु. ए. व. 'पकडे छे, पकडे छे' १७-१ [सं. आ + कल् धातुनो तत्सम प्रयोग.] अहीं 'हृदयथी घूम पाडे छे' एवा अर्थनी शक्यता छे.

आखडतां वर्त कृ. नपुं., प. ब व 'लथडिया खाता' १४-९ [अही आखडतां पडतां एवो जोडियो रूढ प्रयोग. सं. आ + स्कन्द्नुं प्रा मां अक्खड (पा. स. म.) रूप मळे छे. एनुं वर्त. कृ अक्खडंत- मध्य. गुज.मां आखतां

आवडतउं–एनुं प. ब. व. आं (< अप. अइं < प्रा. आइं < सं. आनि) लागतां]

आगन्या स्त्री. 'आज्ञा, हुकम' २-१० [सं. तत्सम आज्ञानुं सरल उच्चारण-छेडे लघुप्रयत्न य् साथेनुं]

आगलि क्रि. वि. 'आगळ, आगल्या भागमां, सामा भागमां'. २-१६ [सं. अग्र – > प्रा. अग्ग – > मध्य. गुज. आग + स्वार्थे प्रा. इल्ल – > मध्य. गुज. इल– + सा. ए व.नो 'इ' प्रत्यय = आगिलि – आगलि]

आगि क्रि वि. 'अगाउ, पूर्वे' ३-७, १४-८ [सं. अग्र – > प्रा. अग्ग– > मध्य. गुज. आग – + सा. ए. व.नो 'इ' प्रत्यय; आ रूप अर्वा. गुज.मां आव्युं नथी.]

आघु वि. पुं., प. ए. व. 'आघो, दूर' २८-२४ [सं. *अग्र-स्मिन् > प्रा. *अग्गहिं > मध्य. गुज. आघइं–आ सा. ए. व. उपरथी पछी विशेषणात्मक रूप आवउं. एनुं पुं. आघउ – टूंकवायेलुं आघु मूळ अर्थ 'सामे आगला भागमा'मांथी अर्थविकासे 'आगळ दूर' एवो अर्थ प्रचारमां आव्यो. मोदी अग्रात् > अप. अग्गाहु जुए छे; मने ए रुचतुं नथी.]

आघेरु वि. पुं. 'वधु आघो' १६-८ [उपरना आघ–अगने तुलनात्मक सं. °तर – > प्रा. °अर – > °यर – पछीथी °इर–थये – अंते स्वरभारवाळुं रूप.]

आज क्रि. वि 'आजे, आ दिवसे' २-१० [सं. अद्य > प्रा. अज्ज > अप अज्जु > मध्य. गुज. आजि (सा. ए. व ना 'इ' साथे)]

आणि स्त्री. 'आण, शपथ' ३०-७ [सं. आज्ञा > प्रा. अण्णा उपरथी मध्य. गुज मां आण मळे छे–जो के वेवडा ण नुं उच्चारण गुज. मां. 'न्' तरीके आवे छे तेनो 'राणी' जेवो आ अपवाद छे. बेशक, प्रा.मां आणा पण छे. मध्य. गुज मां पछी नारीजातिनो ह्रस्व इ आगंतुक उमेरायो छे जेणे आजे 'आण्य' एवुं लघुप्रयत्न य्वाळुं रूप आप्युं छे. आ शब्द 'आज्ञा'ना अर्थमां गुज.मां जाणीतो छे; 'शपथ' अर्थ पछीथी विकसेलो छे.]

आणु आज्ञार्थ बी. पु., ब. व 'लावो' ३-१५ [सं. आ-नयत > पण प्रा. आणह (> ध) > अप. आणहु > मध्य. गुज. आणउ–एनुं टूंकुं रूप. अत्यारे सौराष्ट्रमां आ 'आणवुं' आपशब्दार्थे योजाय छे; तळ गुजरातमां हवी

'लागवुं' अर्थ नचवायो छे. सौराष्ट्रमां आम ग्रर्ता वहु-वीडगिने तेडवानां 'आनुं' वपराय छे.]

आयडी भू. कृ. स्त्री. 'अवडाई' ११-३ [एक देश्य शब्द थड (पा स. म.) 'ठठ, यूथ, समूह'ना अर्थमां मळे छे, जेनो संबंध सं. भू. कृ. स्तृत > प्रा. *थड 'पथरायेलुं, विस्तृत' साथे होय. आनुं आ उपसर्ग साथे *आथड–रूप मळे, जेनो अर्थ 'समूहमां भेगा थवुं' एवो विस्मृत 'अटडावुं-अथडावुं'मां परिणमे. अर्वा. गुज.मां 'आथडवु' 'अथडावुं' एम बेउ रूप वपराय छे. अने भू. कृ.मां कर्ता प्रमाणे फरे छेः हुं एने आथडयों–अथडायो.]

आदरि वर्त. त्री. पु. ए. व. 'शब्द करे छे, मान आपे छे' ११-२७ [सं. आ + दृ (गण ६ ठ्ठो) उपरथी थयेला सं. आदर नामनो नामधातु तरीकेनो प्रयोग. मोडी आदरति रूप पण सूचवे छे, पण एनुं तो *आयरइ थाय; 'द्' जीवतो रहेवा तत्सम शब्द ज अपेक्षित छे.

आप, आपि नपुं., अने बीजुं स्त्री. ए. व. 'पोते' ११-१३ [सं. आत्मा> प्रा. अप्पा > अप. अप्प > मध्य. गुज. आप. अहीं आप– नामनां प. न. समास छे, आपिमां आप + स्त्री. ए. व. इ प्रत्यय छेः 'पोते, पोतानी मेळे.'

आपणूं वि. 'पोतानुं' ४-१,२, १९-५,६ वगेरे [सं. आत्मनः (छ वि.) > प्रा. अप्पणो > अप. अप्पणु ने अंगे स्वरभार वधता क प्रत्ययवाळुं अप्पणउ ने ए विशेषणात्मक बननां त्रणे जातिमां, तेथी नपुं. अप्पणउं > मध्य. गुज. आपणउं; एनुं ब. व. आपणां १६-१९; आपणनि २२-२. 'पोताने'; आपणि ९-१८ –आपणि वाहनि एम आपण– मां सा. ए. व.नो 'इ' छेः 'पोताना वाहनमां'; आपणी वि. स्त्री. 'पोतानी' ९-२१] 'पोते' ए अर्थनाथी पहेला-बीजा पुरुषना जोडिया अर्थमां आपण– शब्द व्यापक थयेलो पण आत्मभमां मळे छेः ९-२०, २२-२ वगेरे

आपापणूं वि. 'पोतपोतानुं' १९-१० [सं. आत्मात्मनः (छ. वि.) > प्रा. अप्पप्पणो > अप. अप्पप्पणु ने अंते स्वरभार आवता अप्पप्पणउ ने पछी विशेषणात्मक थता त्रणे जातिएः नपुं. अप्पप्पणउं > मध्य. गुज. आपापणउं. ब. व. आपापणां ११-६४; गुज. मां आपोपुं वगेरे आम सं. आत्मात्म–नो विकास छे, 'पोते' पण आवो विकास ज छेः जुओ 'पोते.']

आभर्ण नपुं. 'आभरण, घरेणुं' ११-४० [सं. तत्सम आभरणनो गुज. संकोच]

आम क्रि. वि. 'आ प्रमाणे' १९-१ [सं. एवमूने अप. एवँ-एम थाय छे. तेना आभाससाम्ये अप.मां केवँ-केम, जेवँ-जेम, तेवँ-तेम थाय छे; आवा ज आभाससाम्ये मध्य. गुज.मां सं. 'इ' अंगना विकसित 'आ-' अंगने 'म' थयो छे. अर्वा. गुज.मां 'रीत'नो अने 'स्थळ'नो एम बेउ अर्थ थाय छे.]

आरति स्त्री. 'आर्ति, दुःख के सहानुभूतिनी लागणी' २६-१५ [सं. तत्सम आर्तिनो अर्वा. तद्भव]

आलींगन नपुं. 'आलिंगन' २६-३ [सं. तत्सम आ-लिङ्गननुं तत्कालीन भ्रष्ट रूप; सानुनासिकताने कारणे ली दीर्घ थयो.]

आवि वर्त. त्री. पु ए. व. 'आवे छे' ४-१० [सं. आ-याति > प्रा. आयाइ अने आवइ पण; आविइ पण मळे छे (जुओ बेउ माटे पा. स. म.): मोदीना जणाव्या प्रमाणे शहिदुल्ला सं. *आ-गमति > *आअमइ > अप. *आमइ > आवइ विकास माने छे; डॉ. दवेने मते टर्नरने अनुसरी सं. आपयति 'पहोंचाडे छे–आप्नुं प्रेरक रूप.' नरसिंहरावे चूनो प्रक्षेप मान्यो छे जे वाजबी लागे छे, तो पिशले आ + अव् धातु स्वीकारवा अनुरोध कर्यो छे. एक वस्तु ध्यानमां राखवा जेवी छे के 'आववुं'नुं पछी कोई प्रेरक रूप गुज.मा प्रचारमां नथी.]

आश्रज नपुं. 'आश्चर्य, नवाई' २०-१० [सं आश्चर्यनुं प्रा.मां अच्च-रिज्ज–थाय छे; आमानो 'ज' जाळवी संस्कृताभासी 'आश्रज' रूप प्रचारमां आव्युं छे.]

आस जूनुं छ. वि. ए. व. 'आनुं-नो-नी' २३ २२ [सं. यस्य-तस्यनुं प्रा. जस्स-तस्स द्वारा अप.मा जस्सु-जासु.–तस्सु-तासु रूप प्रयोजाय छे ने मध्य. गु मां जास-तास मळे छे; एना आभाससाम्ये अस्यनुं अस्सु–आसु द्वारा आ रूप मळे.]

आहिडी, आहेडी १७-११ अने १८-१. जुओ आ पूर्वे अहेडी.

आंसू नपुं. 'आसु, हंसु, आंखमांथी नीकळतुं रुदननुं पाणी' २९-११ [सं. अश्रुकम् > प्रा. अंसुअं > अप अंसुउ मध्य. गुज.मां दीर्घांत. अनुस्वारनो प्रक्षेप प्राकृतमांथी ज थाय छे– वक्र वगेरेनी जेम, जे अर्वा. गुज.मां आवतां सानु-नासिक उच्चारण आवी रहे छे.]

इ अव्यय. 'य, पण' ६-१६ [जेम के सघला–इ; सं. अपि > प्रा. वि. > अप. वि, इ वेड. मं. पनो य थई संप्रमारणे इ थवानी शक्यता छे ज. आ. हेमचंद्र तो पादपूरणे नोंध्यो छेः सि. हे. ८-४-३८३ (२), ३८४ (१) वगेरे.]

°इ, °इं स्त्री. वि. ए. व.नो प्रत्यय २-१, ९-१ वगेरे [सं. °एन > प्रा. °एण > अप °एं–इं द्वारा निरनुनासिक पण विकल्पे उपयोगमां आवे छे; पछी अकारांत उपरांत बधां स्वरांत नामोने लागे छे : वाणीइ वगेरे. मध्य. गुज.मां सानुनासिकता पण चालु छे.]

इधाण नपुं. 'एधाण-एंधाण, निशान, चिह्न' २५-५ [सं. अभिज्ञान- > प्रा. अहिन्नाण, अहिनाण–पछी *इन्हाण–द्वारा *इंधाण–इधाण अने *अइंधाण-ने लई गुज.मां एंधाण–एधाण]

इम क्रि. वि. 'ए प्रमाणे' ३-१. जुओ उपर आम.

इंद पुं. 'इन्दु, चंद्र' ८-९ [सं. तत्सम इन्दुनुं उ विनानुं गुज. रूप]

इंद्री स्त्री. ब. व. 'इन्द्रियो' १०-२६ [अहीं बहुवचननो भाव छे. सं. इन्द्रिय- नुं टूंकावायेलुं गुज. रूप – अर्वा. तद्भव-रूप. सं.मां आ शब्द नपुं.मां छे, पण गुज.मां स्त्री.मां आवी रह्यो छे.]

°इवा ७-९ जुओ °एवा.

ई सर्व. 'ए' ४-५ [मध्य. गुज. 'एह–ए' नुं टूंकावायेलुं रूप]

°ईइ, °इइ २ ९ ['जीवीइ– जीविये' वर्त. कर्तरि प. पु. ब. व.नो अर्थ अहीं जोवा मळे छे. आनो विकास वर्त. कर्मणि त्री. पु. ए. व. माथी छे; जेम के कर्मणिनो 'य' लागतां जीव्यते > प्रा. जीविज्जइ > *जीवीजइ > *जीवीयइ > जीवियइ > जीवीइ अने *जीविइ. अप. °ईयइ रूप प्रयोजायेलुं मळे छे. मध्य. गुज.मां हजी कर्मणि त्री. पु. ए. व. मुख्यत्वे व्यापक छे; क्वचित् उपर जेवा अपवाद रूप थयेला मळे छे.]

इछइ वर्त. त्री. पु. ए. व. 'इच्छे छे' २८-२ [सं. इच्छति > प्रा. अप. इच्छइ द्वारा]

ईछा स्त्री. 'इच्छा, मरजी' २-९ [सं. इच्छानुं मध्य. गुज. विकसित रूप] ४-१९मां त्री. ए व.नो 'इ' प्रत्यय लुप्त थयो छे.

उखा पुं. 'बळद' ११-९९ [सं. उक्षन् नी प. ए. व.नुं रूप–तत्सम]

उछाह पुं. 'उत्साह, उमंग' ३०-२५ [सं. उत्साह > प्रा. अप. उच्छाह– मध्य. गुज.मां आदिश्रुतिमां उच्चारलाघव]

उडशि भविष्य. त्री. पु. ए. व. 'ओडशे, होडमां मूकशे' १३-३ [प्रा. देश्य हुड्ड पुं. स्त्री. 'होड, बाजी, दाव' उपरथी नामधातु थये अने मध्य. गुज.मां महाप्राणतत्त्व नष्ट थये. आम छतां अर्वा. गुज मां 'होड' नाम स्त्री.मां आव्युं छे; मध्य. गुज.मां क्वचित् उढ-अंग मळे छे, तेमां महाप्राणतत्त्व रह्युं छे. भविष्य. नो °स्यइ > प्रा. °स्सइ द्वारा मध्य. गुज.मां °सइ अने पछी तालव्य स्वरना योगे °शि, °शे आवे छे.]

उतपात पुं. 'उत्पात, उपाडो' २१-२ [सं. तत्सम उत्पातनुं अर्वा. तद्भव रूप]

उद्यम पुं. 'ऊजम' १४-४. [सं उद्यम एटले महेनत; परंतु अहीं 'ऊजम, उत्साह'ना अर्थमां, सं. उद्यापन– > प्रा उज्जावण– = उजवणीना अर्थसाम्ये आ अर्थ विकस्यो जणाय छे.]

उलख्यु भू.कृ. -पुं. 'ओळख्यो' ११-३१ [सं. उपलक्षितः > प्रा. उवलक्खिअो, ओलक्खिअो > अप. ओलक्खिअउनुं मध्य. गुज.मां टूंकावेलुं रूप.

उलाण नपुं. 'ओलाण, शांति' [प्रा. देश्य ओल्हव सकर्मक धातु छे — 'होलववुं' अर्थमां. एना उपरथी क्रियावाचक नाम *ओल्हाणनुं मध्य. गुज.मां महाप्राणवर्जित *ओलाण अने उलाण. आजे प्रांतभेदे 'होलववुं' अने 'ओलववुं' 'होलाण,' 'ओलाण' व्यापक छे. भालणे 'उलाण' शब्दनो लक्षणार्थ 'शांति' 'लाग न फाववानी क्रिया' एवो अहीं लीधो छे.]

उह्लाद पुं. 'आह्लाद, आनंद' ११-६२, १९-११ [सं. आह्लादनुं मध्य. गुज. रूप आ छे अने सं. उल्लासना आभाससाम्ये मळ्युं छे नीचे मध्य. गुज. उह्लास एवुं रूप मळे छे ते आह्लाद > उह्लादना चळता आभाससाम्यनुं परिणाम छे.]

उह्लास पुं. 'उल्लास, उमंग' ५-७ [सं. उल्लास उपरथी—जुओ उपरनो उह्लाद शब्द.]

ऊकांटो पुं. 'उकांटो, उत्साहनो उद्रेक' १६-१ [सं. उत्कण्टकः > प्रा. उक्कंटओ > अप. उकंटउ > मध्य. गुज. ऊकांटउ– पछी तद्दन अर्वा. रूप. उच्चारणलाघवे अस्वरित श्रुतिने लई आदि उ ह्रस्व आजे अर्वा गुज.मां. आ

[illegible]]

[illegible] [[illegible]]

[illegible] [[illegible] > [illegible] > [illegible]]

[illegible] [[illegible]]

[illegible] [[illegible]]

[illegible] (!) [illegible] [[illegible] > [illegible]]

– [illegible] [[illegible] ([illegible]) > [illegible] < [illegible] < [illegible]]

[illegible] [[illegible] ([illegible]) [illegible]]

ऊतावलु वि. पुं. 'उतावळो' ८.१० [प्राकृत देश्य उत्तावल नपुं. 'उतावळ' शब्द मळे छे. एणे विशेषणात्मक प्रयोग पण पछीथी साध्यो छे. आना मूळमां, मोदी सं. उद्+ताप+द्रविडी प्रा. इल्ल विशेषण बनावनारो अंत्यय–एने लाग्यो माने छे; मने 'इल्ल' नथी लागतो, केमके आजे गु.मां 'ळ' आव्यो छे–एटले मूळमां एकवडो 'ल' ज हशे. तो उद् + ताप + ल (स्वार्थे)—प्रा. ऊत्ताबल नाम तरीके आवी रहे. पछी स्वार्थे कना विकासे अने स्वरभारवाळुं ऊतावलउं रूप मळे.]

ऊपनु भू. कृ पुं. 'ऊपज्यो' ५-१२ [सं. उत्पन्नकः > प्रा उप्पन्नओ > अप. उप्पन्नउ > मध्य. गुज. ऊपनउ हुंकुं रूप; सरखावो एवो ज 'नीपनउ.' अर्वा. गुज.मां आजे सं. उत्पद्य-अंग उपरथी प्रा. उप्पज्ज-द्वारा 'ऊपजे' मळी-पछी भू. कृ. 'ऊपज्युं' थयुं छे. आ पण मध्य. गुज.मां मळे ज छे. जुओ मोदी.]

ऊपर, ऊपरि क्रि. वि. 'उपर' ३-१३ [सं. उपरिउं अप मां उप्परि-रिं (सि. हे. ८-४-३३४) मळे छे तेणे मध्य. गुज मां ऊपरि, ऊपरय, ऊपर रूप आप्यां छे]

ऊपाई भू. कृ. स्त्री. 'उत्पन्न करी, साधी' ११-५० [सं. उत्पादिता > प्रा. उप्पाइआ > अप. उप्पाइअ; सं. उद् + पद्ना प्रेरकनुं भू कृ.]

ऊपायु भू. कृ. पुं. 'उत्पन्न कर्यो, साध्यो' ५-१२ [उपर मुजब सं उत्पादितः > प्रा. उप्पाइओ > अप. उप्पाइउ]

ऊफराटी वि. स्त्री. 'ऊफरी, ऊंचे जीवे थयेली, चिंतातुर' १५-६ [सं. उत्स्फुर – > प्रा. उप्फुर–साथे आ शब्दनो संबंध समजाय छे, जेमां 'स्फुरणा, सावधानी ऊंची गई छे–चाली गई छे' एवो अर्थ थाय. एमां गुज. ऊफरुं शब्द आव्यो छे. आमांना ऊफर अंगने *आट– अनुग विशेषण बनावनारो लाग्यो छे. आ *आट– अनुग स. आवर्त – > प्रा. आवट्ट–, आउट्ट – द्वारा मळ्यो छे. पंडि. बाला. ६-१८मां ऊपहरउं शब्द नोंधायेलो छे. जेनो विकास "जू. गुज. उपर + हरउं?" ए शंकाथी धारी "आ 'हरउं' ने चतुर्थी अने षष्ठीना अनुग 'रहइं' नुं रूपांतर गणवुं जोईए" एम सांडेसरा कहे छे. आवी कोई शंका मने जरूरी नथी लागती. गपाटो सपाटो सूमाटो वगेरेमां 'आट–' अनुग छे ते नाम बनावे छे – ए उपरथी गपाटियुं जेवुं उत्तराटियुं > ऊफराटुं छे सौराष्ट्रनुं ऊफराटुं पन छे.]

ऊल्ट स्त्री. 'उमंग, उत्साह' २६-२ [अप. उल्लट (मोदी) मळे छे. मोदीए रोक अने टर्नरना मत नोंधतां उद् + लुट् अने उद् + लट् नोंध्या छे. अहीं नाडि-

जातिनो शब्द मळ्यो छे प्रा. शंक्य रूप *उलटी होई शके. 'ऊलटुं' शब्द 'होय ए बाजु जेनी पलटायेली छे तेवुं, ऊंधुं, ऊथलुं' एवा अर्थमां आव्यो छे ते अने आ शब्दनुं मूळ एक ज छे. 'ऊलटी'—'ओकारी, वकारी'मां पण आ ज शब्द छे, ज्यां अनाज सीधा मार्गे जवाने बदले पाछुं वळी मोटामांथी बहार नीकळे छे. प्रा. देश्य एक उल्लट्ट शब्द (दे. ना. ७-८१) अने उल्लुट (दे. ना. ८-८९) 'उल्लुठित, खाली करेलुं' अने 'मिथ्या, खोटुं' ए अर्थमां अनुक्रमे मळे छे. आ विशेषण छे: मने आ शब्दो साथे ऊलटनो संबंध लागे छे, जे सं. उद् + लुट् धातुनी साथे बंध बेसी रहे एम छे.]

ऊलेचतां अव्ययात्मक सा. ए. व. 'उलेचतां, (पाणी) खाली करतां' ६-५ [सं. उद्-रिच्यत् > उल्लिंचंत- > मध्य. गुज. ऊलेचत- + सा ए. व. आं (< अप. हां < सं. पांचमीनो सार्वनामिक स्मात्)—प्राकृतमां पेठेलो अनुस्वार मध्य. गुज.मां पाछो नीकळी जाय छे.]

ऊवेखी अ. कृ. 'उवेखीने, उपेक्षा करीने, धिक्कारीने' ४-११ [सं. उपेक्ष्य > प्रा. उवेक्खिअ > मध्य. गुज. उवेखी; आदिश्रुतिमांनो दीर्घ ऊ मात्र लेखनमा स्थान पाम्यो छे.]

ऊहोलाई अ. कृ. 'ओलवाईने—होलवाईने, बुझाईने' ६-२२ [प्रा. देश्य धातु ओ-ल्हव छे, तेमाथी मध्य. गुज.मां उहुल-अंग आवे नेमा लेखननी दीर्घता थतां ऊहोलावुं क्रियारूप आवी रहे छे. आमांनी महाप्राणितताए 'होलावुं' आप्युं छे; सौराष्ट्रमां 'ओलावुं.' जुओ उल्हाण.

ऊंचु वि. पु. 'ऊंचे आवेलो, ऊंचाईनो' १९-१० [सं. उच्चैस् अव्ययरूपमां त्री. ब. व.ना ऐस् (< भिस्)ने दूर करता उच्च-अंग रहे छे. पछी सं. उच्चकः > प्रा. उच्चओ > अप. उच्चउ > मध्य. गुज. ऊंचउ अने टूंकवायेलुं ऊंचु = ऊंचो, आ विशेषणरूपमा मध्य. गुज.मां सानुनासिकता आवी रही छे. आणे पछी नामधातु ऊंचकवुं-ऊचकवुं पण आपेल छे]

ऊंट पुं., नपुं. 'सांढियो' २१-१३ [सं. उष्ट्रः > प्रा. उट्टो > अप. उट्टु > मध्य. गुज. ऊंट. आमा मध्य. गुज मा सानुनासिकता उमेराई छे आना उपरथी ऊंटियुं-यो अने ऊंटडी-ऊंटणी शब्द. गाडानो धरी आगळनो टेको—'ऊंटडो' पण आनो विकास छे.]

एकलडां वि. ब. व. 'एकलां' १७-१३-अहीं मानार्थे ब. व. छे. [सं. एक - > प्रा. एक्क-मांथी मध्य. गुज.मां एक;-अने स्वार्थे ल अने ड अने

छेल्ले स्वरभारने कारणे एकलिडउं. गुजरातीमां स्वार्थे आवतो ल पण अप. उल्ल मांथी आव्यो छे. मूळमां बेवडा ल्लने कारणे अर्वा. सुधी 'ल' सचवाई रह्यो छे; एकवडो न होय तो 'ळ'-थई जाय.]

एकली वि. स्त्री. 'एक ज मात्र, बीजाना साथ विनानी' १६-२२ [जुओ ऊपरनो 'एकलडां' शब्द. शब्द मळ्यो एकलडं.]

एखडा - वि. पुं. ब. व. 'एकठा' २३-३० [सं. एकस्थकाः > प्रा. एक्कट्ठआ > मध्य. गुज. एकठा > एखटा (महाप्राणतत्त्वना व्यत्ययथी)-मध्य. गुज. एकठउं, एखटउं वेऊ.]

एणी (सं.) स्त्री. 'हरणी' २०-२

एणी सर्व. स्त्री. 'ए' ४-१ वगेरे [सं. एतेन, येन, तेन, केन ए त्री. वि. ए. व.नां रूप उपरथी एण-जेण-तेण-केण रूपो पण प्राकृत तत्सम लेखे अप.मां वपरातां- एना विकासमां फरी त्री. ए. व. नो अप. प्रत्यय पण लागतां एणइं-जेणइं-तेणइं-केणइं रूप मळे छे. एतेन प्रकारेण > मध्य. गुज. *एणइं *पयारइं > *एणइं *पयरइं > *एणइं *पइरइं अने पछी पर-सवर्णताथी एणी पइरि > एणी पिरि के परि आमां एणी मळ्यो छे; पेरव नारीजातिमां व्यापक थवाथी एना आभाससाम्ये एणी नारीजाति पहेली एकवचननुं रूप प्रचारमां आव्युं छे. सुरत जिल्ला तरफ एणी जेणी तेणी सार्वनामिक नारीजातिना रूप जाणीतां छे.]

एधाण ५-५ जुओ आ पूर्वे इधाण.

एम ७-१ जुओ आ पूर्वे इम.

°एवा, °एवउं सामान्य कृदंतनो प्रत्यय. ६-१९ [करेवा रूपमा °एव-प्रत्ययांश छे; 'करवा माटे' ए अर्थ छे अने मध्य. गुज. मह अनुग अहीं लुप्त थयो छे. आ प्रत्ययनो °इव- अने पछी अव- एवो विकास छे. अर्वा. गुज. करवुं एम °अव- व्यापक छे; छतां पश्चिम सौराष्ट्रमां करववुं एम वचे 'इ' नो अवशेष लघु-प्रयत्न 'य्' उच्चरित थाय छे. आ प्रत्यय आपणने सं. विध्यर्थकृदंतना एक °तव्य- > प्रा. °अव्व > °यव्व > अप °एव्व- द्वारा मळ्यो छे, छेल्ले स्वरभार रहेवाने कारणे °एवउं.]

एहु सर्व. 'ए' ५-५ [सं. एषः > प्रा. एहो > अप. एहु. आमांना महा-प्राणतत्त्वने लई 'ण' प्रत्ययांश सिवायनां बधां ज रूपोमां छेक अर्वाचीन गुजराती

सुधी महाप्राणता उच्चारणमां सचवाई रही छे; एना आभाससाम्ये जे ते अने के तथा आमां पण.]

एहवूं, एहिवूं वि. 'एवुं' ३-१७ अने १०-२२ [जुओ उपरनो एह सं. °वन् प्रत्ययनो विकास °वडंमां छे: यावन् > अप. जेवडं वगेरे. पछी ए बधे ज मूळ सर्वनाममां महाप्राणता 'एह'ना आभाससाम्ये साधे छे. एहिवूं उच्चारणमां एःवूंना लखाता एहेवूं नुं लघुरूप लेखनमां बतावबाना प्रयासे छे.]

ओचरे वर्त. त्री. पु. ए. व. 'ऊचरे, बोले छे' २-१, ७-१ [सं. उच्चरति > प्रा. अप. उच्चरइ > मध्य. गुज. ऊचरइ, उचरइनुं अर्वाचीन वलण]

ओछां वि. ब. व. 'ऊणां, थोडां, अधूरां' २८-९ [प्राकृतमां ओच्छम (पा. स. म.) 'आच्छादित; निरुद्ध' एवा अर्थोमां मळे छे. आनो 'मर्यादित स्वरूपमां' एवो अर्थ विकसतां मध्य. गुजमां *ओछडंनी शक्यता छे. आमां "छद्–ढांकवुं' के 'सद्–नाश पामवुं' आ बेमांथी एक धातुनी शक्यता छे.]

ओडियां भू. कृ. नपुं ब. व. 'शरतमां–होडमां मूक्यां' १३-१६: जुओ आ पूर्वे उडशि शब्द.

ओड्या भू. कृ. पुं. ब. व. 'लांबा कर्या' १०-२०. जुओ आ पूर्वे उडशि शब्द. 'होडमां मूकवा'मांथी पछी 'हाथ लांबा करवा—काई मागवा,' ए अर्थ विकस्यो छे.]

ओढणूं नपुं. 'ओढवानु वस्त्र' ७-१० [प्रा. देश्य शब्द ओड्डण (दे. ना. १-१५५) छे. सं. अव-गुण्टन शब्द साथे आनो संबंध होवानी शक्यता छे (मोदी). आ पछी 'ओढवूं' एम क्रियावाचक रूप पण बन्युं छे. जुओ नीचे.]

ओटशु भविष्यं. बी. पु. ब. व. 'ओटशो, उपर आच्छादन करी लेशो' २३-२२ [जुओ उपर ओढणूं–. आमां सं °स्यत > अप. °स्सहु > मध्य. गुज. °सउ, अने 'मि > शिना आभाससाम्ये तालव्य 'श'.]

ओद्यम पुं. 'उद्यम' ७-९] 'उ'ने अर्वाचीनता आपवा 'ओ' सीधो तत्सम शब्दने थयो छे.]

ओपमा स्त्री. 'उपमा' ५-१६ [उद्यमना ओद्यम जेम सं. तत्सम उपमाने अर्वाचीनता आपवा गुज. लाक्षणिकता]

ओर्वशी स्त्री. 'उर्वशी' ११-२२ [सं. उर्वशीने उपर मुजब फेरफार.]

ओलखियुं भू. कृ. पुं. ए. व. 'ओळख्यो' ११-६६ [जुओ आ पूर्वे उलख्युं.]

ओलवा पुं ब. व. 'ओलववानी क्रिया' २६-१३ ['ओलवउ' शब्द पुं.नो छे; अने एनो संबंध प्रा. ओ-ल्हव साथे छे. 'जे बाजु पवन वातो होय ते बाजु ओलववानी क्रिया करवी' ए आ कहेवतनो अर्थ छे.]

ओशीकल वि 'ओवारणां लीधेलुं, वारी जवायेलुं, उपकृत' ६-१९, ६-२५ [गुज.मां 'ओशींगण' नाम पण वपराय छे जू. गुज.मां ओशींगळ मळे छे. आना मूळमां सं. *अप-शृङ्खल—(जेनी सांकळ दूर थई छे तेवुं) > प्रा. ओसिंखल-शब्दनी शक्यता छे. बंधन दूर थवाथी थयेलो उपकार' एवो अर्थविकास शक्य छे. प्रा.मां उच्छृङ्खल-नो उस्सिंखल विकास छे, ए सरखावो.]

कचित्र वि. 'कुचित्र, कद्रूपुं' २७-१४ [सं. कुचित्रनो अर्वा. तद्भव. सं मां कुनो क थाय छे; पण व्यापक नथी.]

कणि नामयोगी 'कने, कणे, पासे' ११-११ [सं. *कर्णस्मिन् > प्रा. *कण्णम्हि > अप. *कण्णहिं > मध्य. गुज. कन्हइं, कन्हइ (टेसिटोरी)-नुं टूंकवायेलुं रूप कह्नि > कनि ने वैकल्पिक कणि : अर्वा. गुज.मां स्थलवाचक क्रिया. वि. साथे 'या कणे' वगेरे झालावाडी प्रयोग जाणीतो छे.]

कथी अ. कृ. 'कहीने' १०-२ [सं. कथ् धातुनो तत्सम प्रयोग + अ. कृ. प्रत्यय °ई < प्रा. °इअ > स. °य]

कदाचि क्रि. वि. 'कदाच' ९-११ [सं. कदाचित्‌ना अंत्य 'त्'ना लोपे. पछीथी गुज.मां 'कदाच' तरीके व्यापक थयुं छे.]

करमाय वर्त. त्री. पु. ए. 'चिमोळाय, संकोच पामी सुकाय' ११-५७ [सरखावो मोदी : करमाय. सं. क्लाम्यति > प्रा. *किलम्मइ—थाकी जाय छे, फिक्कुं पडे छे—अने पछी ल् नो र् थये *किरम्मइ द्वारा भावेरूप करमाइ]

करूप वि. 'कुरूप, कद्रूपुं' २३-११ [सं. कुरूपनुं अर्वा. रूप]

कर स. क्रि. 'करवुं' ११-२८ वगेरे [सं. कृ धातुनो गुण थये *करति > प्रा. करइ. आम छेक प्रा.थी कर धातु चाल्यो आवे छे. मध्य. गुज.मां क्वचित् करिइ ११-५ रूप पण कर्तरि त्रीजा पुरुषमां प्रयोजाय छे—पण आनी व्यापकता नथी. आनुं भू. कृ. करिउं—एनुं सा. ए. व.नुं करि रूप सतिसप्तमीना प्रयोगे

११-२८. एनुं अ. कृ. करी < प्रा. करिअ > सं. *कर्यं द्वारा; आ पछी 'थी' अनुगना अर्थमां साधनार्थे प्रयोजाय छे, ७-५.]

करे आज्ञार्थ बी. पु. ए. व. 'कर' ११-८४ [जुओ उपर कर धातु आज्ञार्थमां अपभ्रंशमां एवाळुं रूप प्रयोजातुं : करे < सं. *करहि. ए उपरांत करि अने करु पण. मध्य. गुज.मां अपभ्रंश तत्सम तरीके करे अने एवां एकारवाळां रूप प्रयोजाय छे.]

करेश भविष्य प. पु. ए. व. 'करीश' ११ ३८ [धातु कर उपर प्रमाणे. सं. करिष्यामि > प्रा. करिस्सामि > अप. करिस्सउं > मध्य. गुज. करिसि अने तालव्य इने कारणे करिशि-एमाना इना विवृत प्रकारना उच्चारणे करेशि > करेश. आ उपरांत 'योस-'योशवाळां करशेम श जेवां रूप पण मध्य. गुज.मां जाणीतां छे.]

कली भू. कृ. स्त्री. 'कळी, गूली, सूंपी' ११-५८ [सं. कलति (पकडे छे, कबजो ले छे) > प्रा. अप., मध्य. गुज. कलइ. मूळ तत्सम धातु ज आव्यो-ने 'गूलतुं'नो अर्थ विकस्यो. कलित-भू. कृ. उपरथी प्रा. कलिअ द्वारा मध्य. गुज. कलिउं ने पछी स्त्री. कली.]

कल्पि वर्त. त्री. पु. ए. 'कल्पना करे छे' ५-१६ [सं. कल्पना कल्प-अंग द्वारा तत्सम धातुनो मध्य. गुज. प्रयोग कल्पइ-एनुं लघु रूप.]

कल्यो भू. कृ. न. ब. व. 'ओळख्या' १६-२९ [सं. कल् धातु-जुओ उपर कली. अहीं 'जाणवुं' अर्थ-सं.नो व्यापक. एवुं भू. कृ. कलिउं-एवुं ब. व. रूप; कल्यो न जाय. शब्दार्थ गुज. प्रयोग (अप. द्वारा मळेलो)]

कवे वर्त. त्री. पु. ए. व. 'कहे छे-कविता करी गाय छे' १-६ [सं. कवयति > प्रा. कवेइ, कवइनुं अप. मध्य. गुज. कवइ द्वारा गाताजीन उच्चरित रूप]

कषायो वि. नपुं. ब. व. 'गराव, गंदां' २९-४१ [सं. कषाय (कडवुं, तोरं, वासी)नो गुज. विकसित अर्थ- गगमनुं ज गुज. विशे. कषायउं थयुं छे.]

कष्टि वर्त. त्री. पु. ए. व. 'कष्ट आपे छे, तप करे छे' १-६ [सं. तत्सम भू. कृ. कष्टनो नामधातु तरीके सीधो प्रयोग. कष्टइनुं हूस्वावेलुं रूप]

कसि वर्त. त्री. पु. ए. व 'कसे, कसोटी करे' ८-१८ [सं. कषति > प्रा. अप. मध्य. गुज. कसइनुं हूस्वावेलुं रूप.]

कहि वर्त. त्री. पु. ए. व. 'कहे' ३-१८ [सं. कथयति > प्रा. कहेइ, कहइ > अप. अने मध्य. गुज. कहइनुं टूंकुं रूप. आ कह-धातुनुं कर्मणि. त्री. पु. ए. व. कहीइ (जुओ 'इज्ज प्रत्यय आ पूर्वे.) थाय छे; १०-३मां एनो विकसेलो कर्तरि प. पु. ब. व.नो प्रयोग समजाय छे आ कह-नुं आज्ञार्थ बी. पु. ब. कहु (३-१९) < कहउ < अप. कहहु < सं कथयत द्वारा मळे छे- जेनो कुहु एवो विकल्पे प्रयोग पण थाय छे.]

कहि नामयोगी. 'कने, पासे' १२-१३. जुओ उपर कणि.

कंकोतरी स्त्री. 'कुंकुमपत्रिका' ९-३ [मांगलिक कार्यने माटे कुंकुम छांटेली पत्रिका: सं. कुङ्कुमपत्रिका > प्रा. *कुंकुमवत्तरिआ > *कुंकुउत्तरिआ > *कुंकउत्तरिआ > *कंकउत्तरिआ > अप. *कंकउत्तरिअ > मध्य. गुज. कंकोतरी]

कंस (सं.) 'पात्र, वासण' लक्षणार्थे 'विचार' 'आत्मा' १२-१४

काचूं वि. 'अपक्व, हीणुं, नबळुं' ४-२ [आ शब्दनो संबंध सं. कृत्- 'कापवुं'ना विध्यर्थ कृदंत कृत्य- > प्रा. कच्च- 'कापवाने पात्र'—'हजु कापवुं नथी तेवुं' एवा अर्थथी प्रचलित अर्थमां आवी रहे.]

काजि नपुं, सा. ए. व. 'काजे, माटे' ६-११ [सं. कार्ये > प्रा. कज्जे > अप कज्जि > मध्य. गुज. काजि- आ शब्दनो नामयोगी तरीके उपयोग मध्य. गुज.मांथी शरू थई चूक्यो हतो.]

काढ्यु भू. कृ. पुं. 'काढ्यो, निकाळ्यो' ५-६ [सं. कृष्ट-(भू. कृ.) > प्रा. कड्ढ- उपरथी भू. कृ.नो विशेष प्रत्यय *कड्ढिओ > अप. कड्ढिउ > मध्य. गुज. काढिउ; अने गुज.मां पछी धातु पण काढ- व्यापक थाय छे.]

काणि स्त्री. 'खरखरानी कथनी, मरेला पाछळनी रोककळ' ४-८ [सं. कद् 'आंसु पाडवां' उपरथी *कदनी > प्रा. *कअणी > अप. कआणि > मध्य. गुज. काणि. मोटी स. कथनिका > प्रा. कहाणिआ आपे छे ए मने योग्य नथी लागतुं.]

कादव पुं. 'कीचड' ११-१८ [सं कर्दमः > प्रा. कद्दमो > अप. कद्दमु, कद्दँवुमांथी अनुनासिक नष्ट थतां]

कामीक नपुं. 'काम्यक वन' २-४ [सं. काम्यकना यनुं संप्रसारण थये दीर्घ ई थई; अर्वा. विकार]

काय (सं.) पुं. 'काया, शरीर, देह' ८-२

काल्हि क्रि. वि. 'आवती काले' २०-४२ [आ शब्द एकलो 'गई काल' तेम ज 'आवती काल' बेउ माटे वपराय छे. सं. कल्ये > प्रा. कल्हे > अप. कल्हि- आमां सातमी ए. व.नो प्रत्यय छे; अने अर्वा. गुज.मां एनो अवशेष उच्चारण 'काल्य'-मां पड्यो छे. आ शब्द नाम तरीके वपराय छे.]

कालु वि. पुं. 'काळा रंगनो' २७-१४ [सं. कालकः > प्रा. कालओ > अप. कालउ > मध्य. गुज कालउ; आणे 'काळुं' शब्दनो अर्वा. गुज.ने विकास आप्यो छे.]

कालूं वि. 'जीभ विनानुं; (ला.) अणसमझु' १-१०; ब. व. कालां १-२ [सं. कल 'अस्पष्ट मधुर ध्वनि' माटे छे सं.मां 'दहेरामूंगा' माटे कल्य शब्द वपराय छे, तो कल्ल 'बहेरा' माटे. एना विकासना *कल्यकम् > प्रा. *कल्लअं > अप. *कल्लउं > मध्य. गुज. कालउं एवी शक्यता छे. नानुं बालक बोबडुं बोलतुं होय छतां मधुर लागे– त्यांथी आ शब्दनो विकास संभवे. 'अणसमझु' अर्थ एमांथी विकस्यो छे.]

काल्यु (?) वि. 'काळो'- ८-१०. जुओ उपर कालु.

काहवानूं (?) 'कहेवानुं' १३-१६

काहाणी स्त्री. 'कथनी, दंतकथा' २२-६ [सं. *कथानिका > प्रा. *कहाणिआ > अप. *कहाणिअ > मध्य. गुज. कहाणी, काहाणी.]

काहावी अ. कृ. 'कहेवडावीने' १०-११ [सं. कथ् धातुना प्रेरक अंग कथयने बदले *कथापयने अ. कृ.नो य लागे प्रा. कहाविअ > मध्य. गुज. कहावी, काहावी (आ पाछलामां मात्र महाप्राणित स्वरः का'वी जेम)]

को क्रि. वि 'केम' १२-१७ [सं कस्मात् > अप. *कहां, किहांमांथी महाप्राणता चाली जतां]

काई अनि. सर्व. 'कंई कें' ५-१६ [सं कानिचिद् > अप. काइं-इनो मध्य. गुज. विकास. अप.मां काइं = 'कोण'- एमां चिद्नो अवशेष 'इ' भळ्ये अनिश्चित अर्थ मळी शके. आ पछी अचेतन पदार्थोने माटे ज प्रयोजाय छे. अप.मां काइं- 'केम' ना अर्थमां प्रयोजाय छे त्यारे एमां चिद्नो 'इ' टकेलो ज छे.]

कांहां क्रि. वि. 'क्यां, कये स्थळे' ६-१७ [सं. कस्मात् > अप. *कहां, किहां. कांहांमां मात्र महाप्राणित उच्चारण 'कां:' एम छे; हिंदीमां 'कहां' स्पष्ट जुदुं छे.]

कि उभ. श. 'के, अथवा' २९-३९, ३०-४८ [सं. किम् > अप. किं नारा विकास; मध्य. गुज मां कि उपरांत ऊलटी प्रक्रियाए कइ पण मळी आवे छे. भालणमां के पण मळे छे; जुओ के.]

किम कि. वि 'केम, शा माटे' ३-१८ सं एवम्ना अप. एवँ, एमना आभाससाम्ये अप.मां केवँ, केम-एवुं टूंकावायेलुं रूप]

किरडा पुं. ब. व. 'केरडाना छोड' १८-७ [सं. करीरने बदले प्रा मां केरी स्त्री. 'केरडा'ना छोड माटे मळे छे. एनुं स्वार्थे ड लागतां पुं.मां केरडड अप.मां अने मध्य. गुज मां आदिश्रुतिना उच्चारणलाघवे ह्रस्व इ.]

किशी प्रश्न. सर्व. स्त्री. 'शी' ११-११ [सं. कीदृशिका > अप. कइसिअ > मध्य. गुज. कइसी, किसी, किशी. 'केवुं 'ने बदले 'शुं' मध्य. गुज.मां आव्यो छे.]पुं.मा किश्यु २३-३७; पण अहीं 'केटलो' एम जूना अर्थमा प्रयोजायो छे]

किहारि कि. वि. 'क्यारे' २९-११ [सं. किम्ना केह अप. रूपना विकासमा किहि + वारइमां किहारइ > किहारि. आ ज कारणे 'क्यारे 'मां महाप्राणता उच्चरित छे.]

किहिण नपुं. 'कहेण' १९-२० [सं. कथन, पण कथ् उपरथी कहना विकासमां वर्त. त्री. पु. ए. व.मां कहइ थयु तेना वळ उपर कहि-किहि थये एना आभाससाम्ये किहिण. जू. गु.मा केहेण-(केःण)]

किहां-थी कि. वि. 'क्याथी' ८-१७ [जुओ उपर कांहां. एने 'थी < अप. थिउ < प्रा. थिओ < सं. स्थितः' अनुग उमेरायो]

किही कि. वि. 'क्यांय, कोई स्थळे' ८-९ [अप केह-माथी मध्य. गुज. अंग किह् + ई < सं. चिद् उपरथी]

किहीं कि. वि. 'क्या, कये स्थळे' १२-१४ [सं. कस्मिन् > अप. कहिंनो मध्य. गुज. विकास]

कीजीइ, कीजि वर्त. कर्मणि त्री. पु. ए. व. 'कीजिये' ९-२ अने २-७ [सं. कृना कर्मणि क्रियते > प्रा किजइ > मध्य. गुज. कीजइ-अने अर्वा. गुज.नुं रूप कीजे 'नळाख्यान'नी आ प्रत जेटलुं जुनु लोकोना उच्चारणमां व्यापक. कीजीइ रूपमा बेवडो प्रत्यय कीज + ईइ (जे' य उपरथी विकस्यो छे; जुओ आ पूर्वे ईइ) एम उमेरायो छे आ उपरनां बे रूपोमा कीजीइ = 'करवामां आवे = आपणे सौ करिये' आवो भाव छे, ज्यारे कीजे = करवामा आवे, 'अमे सौ करिये' आवो भाव छे; परंतु बनेमां हवी कर्मणि अर्थ पड्यो छे.]

कीध, कीधूं भू. कृ. 'कर्युं' ११-१२ अने ६-७ [सं. कृत- > शौ. प्रा. किद्-, पण सं. लब्ध- > प्रा. लद्ध-ना आभाससाम्ये* किद्ध- अने सं. दत्त-नुं *दिद्ध, सं. पीत-नुं *पिद्ध- अने लद्धनुं वैकल्पिक *लिद्ध- आ कृदतो मळ्यां छे. जेमांथी मध्य. गुज.ने कीध-, दीध-, पीध-, लीध- अंग मळ्यां छेः अंते स्वरभारने कारणे कीधूं, दीधूं, पीधूं, लीधूं,—वगेरे रूपोमां पछी अर्वा. गुज.मां कीधेल-, दीधेल-, पीधेल-, लीधेल-अंग मळे छे, जे द्रविडी इल- प्रत्ययना थळे छे. टॅस्सि. आ 'ध' अंगागमने सं. चिह्न- > प्रा. चिन्ध साथे सरखावी सं. दत्त-नुं दिद्ध- थाय छे तेमां महाप्राणना मळतां अने अनुनासिकता जतां दिद्ध-नी संभावना माने छे. हिंदीमां तो किया, दिया, पिया, लिया ए सं. कृत- > प्रा. किय- प्रकारनो विकास छे; छतां वैकल्पिक कीनी-दीनी एवां स्त्री. रूप त्र.भाषामां मळे ज छे.]

कीम क्रि. वि. 'केम' ११-११. जुओ किम.

कीरति स्त्री. 'कीर्ति, यश' ९-२ [स. कीर्तिनो अर्वा तद्भव- मात्र 'विश्लेष' थी]

कुएक अनि. सर्व 'कोईएक, कोक' ११-९ [सं. कोऽपि-एकः > प्रा. कोवि-एक्को > अप. कोवि-एक्कु, कोइ-एक्कु > मध्य. गुज. कोई-एक, कोएकने पछी टूंकावायेलुं]

कुछित्र वि. 'कुत्सित, निंद्य' २८-१९ [स. कुत्सित ना पहेला बे अक्षरोनो प्राकृतनी रीते कुच्छि° द्वारा कुछि° अने छेडा तनुं कृत्रिम संस्कृतीकरण: अर्थ 'निंद्य' 'गंदुं' 'कद्रूप']

कुण प्रश्ना. सर्व. 'कोण' ३-१८ [सं. कः पुनः > प्रा. को-उणो > अप. कवण, कउण > मध्य गुज. कउण, कोण ने लाघवथी कुण] कुणि 'कोणे' ३-१८ [मध्य. गुज. कुण + त्री. वि. ए व.नो इ. आ बेउ सचेतन प्राणीओ माटे – अने एमां पण मानवोने माटे ज प्रयोजाय छे. आ ज कुणनुं त्री वि. ए. व. १०-२५मा कुणि छे ते प्रश्नार्थे नहि पण अनिश्चित अर्थे प्रयोजायुं छे—त्यां आपणे स. कः-चन > अप. *कउणनो संबंध विचारमा लेवो पडे; अथवा आ प्रश्नार्थनो अनिश्चित सर्वनाम तरीके प्रयोग गणवो.]

कुणेक अनि. सर्व. त्री वि. ए. व. 'कोईए' २३-३५ [जुओ उपर कुण. त्री. ए. व.ना कुणि + एक एवा विकासनुं आ फळ छे.]

कुलवती (सं.) वि. स्त्री. 'कुलीन स्त्री' १५-१६

कुह आज्ञार्थ बी. पु. ब. व. 'कहो' ८-१७ [सं. कथयत > प्रा. कहह (< थ) अप. कहहु > मध्य. गुज. कहउनुं टूंकावायेलुं रूप कहु ने पछी उनुं पूर्वश्रुतिमां जवुं—ए दृष्टिए के उच्चारण 'कोः' थाय. विशेष माटे जुओ कहि.]

कुहे अनि. सर्व. 'कोई' २२-४ [सं. कः-अपि > प्रा. को-वि > अप. कोवि, कोइना विकासमां एपना एह जेम वेहना विकासमां केहे थया बाद 'को'-ना आभाससाम्ये *कोहे अने पछी कुहे = 'कोई']

कुहि प्रश्नार्थ सर्व., सा. वि. ए. व. 'कोने' १६-२१ [उपर मुजब ज प्रश्नार्थे कुह अंग मळया पछी नउ अनुग + सा. ए. व. इ = कुहनइ, कुहइ ने टूंकावायेलुं कुहि; कुहि शरणि = 'कोने शरणे.']

कुंडलं नपुं. 'कूंडाळुं' २३-३ [सं. कुण्डलकम् > प्रा. कुंडलअं > अप. कुंडलउं > मध्य. गुज. कूंडलउंनुं टूंकावायेलुं रूप]

कुंदण नपुं. 'कुंदन, सोनुं' ७-१६ [सं. कुन्दन- > प्रा. कुंदण- तत्सम प्राकृत शब्द]

कूड नपुं. 'कपट' ३-२ [सं. कपटम् > प्रा. कवडं > अप. कउडु > मध्य. गुज. कउड, कूड] कूडूं वि 'कपटी' ९-१२ [मध्य. गुज. कूडने ज अंते स्वरभार साचवतुं उं लागी विशेषण बन्युं छे. [मने सं 'कूट' साथे संबंध नथी लागतो]

कूवड वि. पुं. 'कूबडो' २७-१४ [सं. कुब्जककः > कुब्बडओ > अप. कुब्बडउ > मध्य. गुज कूबडउ ने टूंकावायेलुं रूप]

कुंअर पुं. 'कुंवर, राजपुत्र' १२-१७ [सं कुमारः > प्रा. कुमरो > अप. कुमरु, कुवेरु > मध्य. गुज. कुंअर, कुंअर] कुंअरी स्त्री. 'कुंवरी, राजपुत्री' १३-१० [अंते सं.° इका > प्रा. °इआ > अप.° इअ > मध्य गुज. °ई लागवे]

कूंडालुं नपुं. 'कूंडाळुं' ४-१० जुओ उपर कुंडलं [वचेनी श्रुतिमां 'आ' थाय छे; अने आ कूंडाळुं थई गुज मां. रह्यो छे पेलो कुंडलं नथी सचवायो.]

के उभ. अ 'के, अथवा' २-७; जुओ आ पूर्वे कि ['के' रूप अर्वा. गुज.नुं 'नळाख्यान' नी आ प्रत लेखनु उच्चारणमां व्यापक थई चूक्युं हतुं.]

केतिलि वि सा. ए. व. 'केटलेक' २१ ७ [अनिश्चित सर्वनाम तरीके प्रयोग; मोदीना बताव्या मुजब सं. कियत्-तुल्यकम् > अप. *केत्तुलउं > मध्य.

गुज. केटलडं, केटलडं. सा. ए. व. केतलि, केटलि अने छेला 'इ' ने कारणे मध्यश्रुतिमां 'इ' नो प्रक्षेप]

केडि स्त्री. 'केड, पूंठ' १८-२ [सं. कटि. > प्रा. कडी > अप. कडि > मध्य. गुज. कडि, केडि. अहीं 'पाछळ पडवुं' ए आशये 'पूंठ' अर्थ. आना उपरथी पछी केडी स्त्री. केडो पुं. मार्गवाचक शब्द आवी मळ्या छे.]

केरु अनुग. पुं. 'केरो,–नो, तणो' ४-१३ [सं. कार्यकः > प्रा. केरओ > अप. मध्य. गुज. केरडनुं टूंकवायेलुं रूप. आ अनुग मात्र पद्यमां प्रयोजाय छे.]

केव प्रश्नार्थ सर्व स्त्री. 'केवी' १५-२६ [जुओ आ पूर्वे एहवूं.]

केहि वर्त त्री. पु. ए. व. 'कहे' ९-१८ [सं. कथयति > प्रा. करेइ, कहइ, > अप. कहइ- मध्य. गुज. कहइ, कहि, किहि, केहि अर्वा. गुज. केः (उच्चारणमां; पण लेखनमां कहे)नु पूर्वरूप] केहे २-५ [आ अर्वा. गुज.नुं एकमात्रात्मक रूप केः] केहवूं सामान्य कृ. 'कहेवुं' ११-१९ [वूं माटे जुओ आ पूर्वे 'एवा. मध्य. गुज.मां कहिवडं, किहिवडं उपरांत विकसता केहिवूं, केहेवूं वगेरे]

केही सर्व. स्त्री. 'कई' ५-१७ [अप. एहु < सं. एषः ना आभाससाम्ये मळेला केहनुं नारीजातिनुं रूप]

केंहीए क्रि. वि. 'क्याय पण' ५-२ [जुओ किही. आमां भारदर्शक इ वधु उमेरायो छे अनिश्चित अर्थ वधु दृढ कर्यो छे. मेढ प्रबळ करता पूर्वश्रुतिमां वे मात्रा घूसी छे]

को अनिश्चित सर्व. 'कोई' ३-७ [सं. कोऽपि > प्रा. कोवि > अप. कोवि, कोइ; आना विकासमां कः-चिद् > प्रा. अप. को-इनी पण दवे प्रमाणे शक्यता रहेली छे 'इ' जतां मध्य. गुज.मां वैकल्पिक 'को' रूप.] कोए ५-८ [छेला 'इ'नो अर्वा. गुज नी दृष्टिए 'ए' थतां.]

कोट स्त्री. 'गरदन, खांध' १६-१२ [प्राकृत देश्य कोट्टा (पा. स. म.) 'गरदन'ना अर्थमां मळे छे. अने मोदीए सं कोर्डी जणाव्यो छे तेम मानवानी जरूर नथी. उच्चारणमा लघुप्रयत्न 'य' अते नथी ए कोट्टानी शक्यता माटे पूरतुं छे.]

कोडि स्त्री. 'करोड(नी संख्या), अनेक' ७-११ [सं. कोटिः > प्रा. कोडी > अप; मध्य. गु. कोडि; पाछळथी रूना प्रक्षेपथी क्रोडि अने अर्वा गुज. करोड]

कोढ पुं. 'कोढ (नो रोग)' ८-१० [सं. कुष्ठः > प्रा. कुट्ठो, कोट्ठो, कोढो > अप. कोढु]

कोतर नपुं. 'गपोल, दर' १८-८ [सं. कोटर शब्दनी साथे आ शब्दने जोडवामां आवे छे. गुज.मां कोतरवुं शब्दनो विकास अने कोतर शब्दनो विकास परस्पर एकात्मक छे.]

कोय अनि. सर्व. 'कोई,' ५-९; जुओ को.

क्यम क्रि. वि. 'केम, केवी रीते' १४-८ [जुओ किम; आमां 'इ' नो य् थयो छे: एवां बीजां ज्यम त्यम ए बे रूप.]

खट वि. 'छ (नी संख्या)' २२-२६ [सं. षट्नो सीधो विकास. मध्य. गुज.मां 'ष्' नो निश्चयात्मक रीते 'ख्' उच्चार जाणीतो छे.]

खडग नपुं. 'खांडुं, तलवार' १६-४ [सं. खड्गनो विश्लेषथी अर्वा तद्भव. सं.मां ए पुं छे, गुज परंपरामां नपुं. छे.]

खरचूं भू. कृ. 'खरच्युं, खर्च कर्यो' ४-६ [अरबी खर्च शब्द उपरथी नामधातु तरीकेनो प्रयोग: खरच्यूं.]

खरुं वि. 'साचुं' ६-२४ [स. खर 'प्रखर, आकरुं' ए अर्थमा व्यापक छे. आ शब्द तरफ दवेने आदर छे. मोदी सं. अक्षर- > प्रा. अक्खर- अने पछी आदि-श्रुति अस्वरित थता 'अ'ना लोपे आ शब्द साधे छे 'खरुं लोडुं' एमा खर शब्द खरो, पण 'साचुं' अर्थमां तो अक्षर 'अविचलित' अने तेथी 'सत्य'-नी वधु शक्यता छे.]

खाटूं वि 'खाटा स्वादनुं, आंबली जेवा स्वादनुं,' 'ला. अणगमतुं' १-७ [प्रा. देश्य खट्ट- शब्द द्वारा आनो विकास छे: खट्टअं > खट्टउं > मध्य. गुज. खाटउं- अने पछी टूंकावेलुं रूप.]

खाण स्त्री. 'मोटो खाडो' ५-४ [सं. खनिः > प्रा. खणी, खाणी > अप. खाणि > मध्य. गुज. खाणि, खाण्य, खाण; आजे पण अंते लघुप्रयत्न य् उच्चरित थाय छे.]

खाधी भू. कृ. स्त्री. 'खावानी क्रिया करी' २६-१. [आ क्रियापदनो 'वधामणां खावी, राव खावी, मार खावो' आवो 'कहेवुं' 'अनुभववुं' वगेरे लाक्षणिक अर्थ मध्य गुज. मांथी विकस्यो छे. सं. खादित-प्रा. खाइअ-खाय, पण सं. खच-ना प्रा. खद्-अंग प्रा. *खद्ध-जेनुं अंग विकसे छे, जे मध्य. गुज.मां खाधउं रूप

लावी आपे छे.]

खायि वर्त. त्री. पु. ए. व. 'खाय' ३०-१८ [उपर जेम ज 'वधामणी खाय'. [सं. खादति > प्रा. खाअइ, खाइ > अप. अने मध्य. गुज. खाइ; अने यश्रुति उमेरातां खायि. लेखनमां खाइनुं खाए अने खायिनुं खाये पछीथी विकसे छे.]

खांति स्त्री. 'खंत, होंश' ११-१५ [सं. क्षान्तिः > प्रा. खंती > अप. खंति > मध्य. गुज. खांति; 'क्षमा' नो अर्थ विकसीने 'होंश'मां परिणम्यो छे. गुज मां खांत्यने बदले वर्गीय अनुनासिक व्यंजननो उच्चार साचवतो खंत प्रचारमां छे.

खिर पुं. 'खेर(नुं झाड)' १८ ७ [सं. खदिरः > प्रा. खइरो > अप. खइरु > मध्य. गुज. खइरने पछी टूंकायेलूं रूप. अर्वा गुज.मां खेर-जेमांथी 'काथो' बने छे ते लाकडुं.]

खुलि पुं. सा ए. व. 'खोळामां' ३०-१४ [प्रा. देश्य खोल शब्दनो एक अर्थ 'वस्त्रनो एक भाग' थाय छे तेना विकासमां खोलड + सा. ए. व.नो प्रत्यय इ मळतां खोलइ, खोलि ने वधु संक्षेपे खुलि.]

खूंट पुं. 'आखलो' २१-१३ [प्रा. देश्य एक खुंट शब्दनो अर्थ खीलो थाय छे–तेना उपरथी 'खूंटाने उखेडी तोडी खूंदी जनार' ए अर्थ विकस्ये 'आखला'ने माटे ए प्रयोजाय (पा. स. म.). अर्वा. गुज.मां खूंटियो पण प्रयोजाय छे, पण अर्थमां एटलो फेर के जेनीना कामसां न लावी शकाय तेवो आखलो सांढ ते खूंट अने एवा साडने नाथी खेती वगेरेना उपयोगमां लेवामां आवे ते खूंटियो.]

खेडावि वर्त. प्रेरक- त्री. पु. ए व 'खेडावे; हंकावे' २८-४५ [प्रा. दे. खेड धातु कृषिना अर्थमां छे; आनो संबंध सं क्षेत्र- > प्रा. खेत्त साथे शक्य छे सं मां खेट शब्द नाना शहेर माटे छे तेनो संबंध पण आ शब्द साथे शक्य छे: सं. क्षेत्र > प्रा. खेत्त अने *खेट्ट > खेड. ए खेडने प्रेरकनो प्रा. आव < सं. आप लाग्ये खेडावइ प्रा. अप. अने मध्य. गुज.मां, ने टूंकावेलु रूप. हाल 'खेडवुं' एम सादुं क्रियापद ज प्रयोजाय छे, प्रेरकवाळुं नहि. अहीं 'रथ खेडे छे-हंकारे-चलावे छे' एम लाक्षणिक अर्थ लीधो छे.]

खेडवु भू. कृ. पुं. 'खेड्यो' २८-२४ [जुओ उपरना खेडावि शब्दनो खेड नाम-धात्वंग; एने मध्य. गुज. 'इउ लागी. भू. कृ. बन्युं खेडिउ, पछी टूंकावेलुं रूप.] अहीं 'रथ खेड्यो'– 'रथ हांक्यो'.]

खेव क्रि. वि. 'क्षिप्र, जलदी' ११-१५ [सं. क्षिप्रम् > प्रा. खिप्पं > अप. खिप्पु > मध्य. गुज. *खिप > *खिव > खेव. 'ततखेव' जू. गु.मां जाणीतो प्रयोग छे.]

खोटि स्त्री. 'खोट, ऊणप, खामी' १०-१५ [अर्वा. गुज.मां खोट, खोटी, खोडुं अने खोड, खोडांगवु, खोडुं आ शब्दो अर्थमूळनी दृष्टिए एकात्मक छे. प्रा.मां खोडी (दे.) मोटुं लाकडुं, एवो अर्थ छे अने गुज.मां लोकभाषामां मोटा सूका लाकडा माटे खोड नपुं. वपराय छे; पण अंगनी खामीने माटेनो खोड शब्द प्रा.मां जणातो नथी. आ शब्दोनो संबंध सं. क्षुद् धातु साथे छे जेना अर्थ 'खोदवुं' 'अथडाववुं' 'ठोकवुं' आवा थाय छे.

खोडि स्त्री. 'खोड, अंग के लक्षणनी खामी' ५-१०; जुओ उपर खोटि.

गई भू. कृ. स्त्री. '(स्त्रीए) जवातुं कर्युं' ६-१७; गओ भू. कृ. '(पुरुषे) जवातुं कर्युं' १५-३ [सं. गतक- प्रा. गयअ-ए परंपरामां मध्य. गुज.मां गयउ, गियउ अने टूंकवाईने ग्यु पण पुं.मां मळ्यो. स्त्री.मा गई. गुज.मा आ मात्र भू. कृ.नुं रूप ज सं. गम् धातुनुं मळे छे; बाकीना काळनां स या धातुनां प्रा. जा द्वारा मळ्यां छे. बेशक, ग्रामीण भाषामां उत्तर गुज.मा जयुं पण 'ग' नो 'ज' करी प्रयोजाय छे; तो 'जा'नुं ज रूप 'जया करे छे'मां भू. कृ. तरीके मळे छे]

गमि वर्त. त्री. पु. ए. व. 'गमे, रुचे, भावे' ८-२० [सं. गम्यते ('जवाय छे'—भावे रूप > प्रा. गम्मइ उपरथी मध्य. गुज.मां गम भावकर्तृक क्रियापद— अने पछी गमवानो पदार्थ क्रियानाय तरीके अने जेने गमे-रुचे-भावे-फावे तेने नोथीना 'ने' अनुगवाळुं रूप प्रयोजाय. म. गुज मां गमो, अणगमो ए आ गमनो विकास छे, अने गमत-गम्मत पण.]

गह्वर (सं.) नपुं. 'पर्वत-पहाडनी गुफा, बोड, कोतर' २०-११

गाऊं वर्त. प. पु. ए. व 'गान करुं' १-१ [सं. *गायामि > प्रा. गाअमि > अप. गाउं अने पछी अंते स्वरभारने कारणे दीर्घता; परंतु आजे स्वरभार उपांत्य श्रुतिमां ज रह्यो छे अने उच्चारण संधिस्वरात्मक छे.]

गाम नपुं. 'गामडुं, नानुं नगर' ९-३ [सं. ग्राम पु. > प्रा. अप., मध्य.गुज. गाम, गामि गामिमा सा. ए. व.नो इ. अर्वा. गु.मां उच्चारण गाम्म गाम्य, गामे गाम्य पण.]

गालि पुं. सा. ए. व. 'गाल उपर' ८-९ [सं.मां गल्ल ज स्वीकारायो छे जेना विकासमां मध्य.गुज.मां गाल + सा. ए. व. प्रत्यय इ]

गिण स. क्रि. 'गणवुं, गणना करवी' २३-१०, ११ [सं. गणयति > प्रा. गणेइ > गणइ ए विकासमां राजस्थानी लाक्षणिकताथी आदिश्रुतिमां पण इ : गिणइ. गिणतु वर्त. कृ., गिणिवउं सामान्य कृ. आजे राजस्थानी अने हिंदीमां गिन अंग.]

गिली भू. कृ. स्त्री. 'गळी, गळे उतारी' २६-११ [सं. गलित-(भू. कृ.) > प्रा. गलिअना विकासमां गलिउ ने नारी गली; गिण जेवी राजस्थानी लाक्षणिकताए गिलिउ-उं, गिली वगेरे रूपो].

गिहिली वि. स्त्री. 'घेली' २२-६ [सं. गृभ् (पकडवुं) + इल=*गृभिल (आमां इल द्रविडी अनुग) अने *गृहिल. आ. हेमचंद्रे प्रा. दे. गहिलिय शब्द नोंध्यो छे, जेनो सं.मां ग्रहिल मळे छे. ए *गृभिल-, *गृहिल-नो विकास छे. प्रा. गहिलिओ > अप. गहिलिउ > मध्य.गुज. गहिलिउ, गिहिलउ ने स्त्री. गहिली, गिहिली]

गुजर वि. 'गुजरोने लगतुं, गुजराती' १-१ [अहीं गुजर भाषा एनो 'जूनी गुजराती भाषा' एवो अर्थ छे. आ शब्दनुं सं. रूप गुर्जर बाणना हर्षचरित जेटलुं जूनुं छे; पण मूळ शब्द आपणने मळेलो गुज्र छे; अरबीए पण ए जडीनो लीधो छे, जेनो संबंध ए नामनां कुर्द गुर्द एवां जूनां प्रजावाचक नामो साथे छे. कजळी चामडीनी आ प्रजा कुर्दिस्तान (मध्य एशियानो नीचेनो प्रदेश)थी भारतमां आवी पंजाब वाटे कनोजना प्रदेशमां थईने टोरटोंवर साथे मारवाड अने गुजरातमां वधी. आ प्रजाए पश्चिम मारवाडने अने पछी 'गुजरात'ने नाम आप्युं गुज्रात्र स्त्री. 'गुजरोनी टोळीओ' उपरथी अन्वीक्नीए ई. स.नी ११मी सदीना आरंभ जेटला जूना समयमां पश्चिम मारवाड माटे देशवाचक शब्द नारीजातिए प्रयोज्यो; तेथी ज आजे पण एनो नारीजातिए प्रयोग सामान्य छे. उत्तर गुजरातना रबारीओ, मध्य गुजरातना लेउआ पाटीदारो, ने दक्षिण गुजरातमां ए नामनी ब्राह्मण वणिक सुतार वगेरे जातिओ- सौराष्ट्रना पण गुजर सुतारो आ जातिना सीधा अवशेष छे. भिन्नमालना गुजर प्रतीहारो, भरूचना गुर्जर राजाओ पण वनी चूक्या हता.]

गृढ (सं.) भू. कृ. वि. 'छुपायेलुं, ढंकायेलुं, (ला.) अगोप्य' २३-३६

गूतु भू. कृ. पुं. 'छुपायो, ढूक्यो' २७-६ [सं. गुप्तकः > प्रा. गुत्तओ > अप. गुत्तउ > मध्य. गुज. गूतउ, ने ढूंकवायेलुं रूप. आजे गुज.मां आ रूप प्रचारमां नथी.]

गोखि पुं. सा. ए. व. 'गोख उपर, गोखमां' २९-३ [सं. गवाक्षे > प्रा. गवक्खे > अप. गवक्खि > मध्य. गउखि, गुखि, गोखि. अर्वा. गुज.मां दिवान

उच्चारण मळ्युं छे 'गड' 'ने कारणे]

गोधल्लु पुं. 'गोधलो, आखलो' ११-१७ [सं. *गोवर्ध- > प्रा. *गोउद्द-, *गोद्द + अप. उल्लउ= *गोद्दुल्लउ > मध्य. गुज. गोधल्लउ, ने टूंकवायेलुं रूप. 'हृष्टपुष्ट जुवान बळद' माटे आ शब्द प्रचारमां छे.]

ग्या, ग्यो गयूं २-४; जुओ आ पूर्वे गई. [उच्चिलाघवथी आजे पण सौराष्ट्रमां आ रूप जाणीतां छे. एनो विकास गिय < गयमांथी छे]

ग्रशा मोहि 'ग्रस्यो तेऽलामां' ८-१० [सं ग्रसित-> प्रा. गसिअ- > मध्य. गसिअ-, गशिअ-अने फरी संस्कृत मूळनो संबंध समजी ग्रशिअ-; अहीं ग्रश्या मोहि.]

ग्रिहिवा-नि सा.कृ. चोथीना अनुग 'नि' साथे 'ग्रहवाने, पकडवाने' ६-८ [सं. ग्रह् धातुने ज मध्य. गुज.मां प्रयोजी एने + 'इवउं < 'एवउं < अप. 'एव्वउं < सं. 'तव्यकम्‌थी, पछी चोथीना 'नइ' अनुगनुं टूंकुं रूप लागतां आदि श्रुतिमां 'इ' नो प्रवेश 'हि' ना साहचर्ये.]

घणूं वि. अने क्रि. वि. २-१, ७-२ [सं. घनकम् (भरपूर, निबिड) > प्रा. घणअं > अप. घणउं. मध्य. गुज.मा पण घणउं ने पछी टूंकवातां.]

घरि नपुं. सा. ए. व. 'घरमां, घेर' ३-१९ [सं. गृहे > प्रा. *गहरे > घरे > अप. घरि. मध्य.गुज.मां आ अप. तत्सम रूप अने पहेली श्रुतिमां इ प्रवेशतां घइरि अने पछी घिरि, जेगे अर्वा. गुज.मां घेरव उच्चारण आप्युं छे- लखाय छे घेर. 'घेर' सातमी ए. व.नुं रूप छे. अत्यारे नपुं घरे पण लोको वापरता थया छे.]

घाट पुं. 'नदीनो बांधेलो ओवारो-पगथीयाळो, बे पहाड वच्चेनो रस्तो, घाटी' १५-१२ [सं.मां घट्ट स्वीकारायो छे, धातु पण घट्ट स्वीकारायो छे. आना मूळमां सं. घृ धातु छे, जेणे घृत-'घी' शब्द आप्यो छे. स *घर्त- > घट्ट- 'साफ करेलुं.' एक प्रकारनी साडीने माटे पण ए आजे वपराय छे. गुज. घाटुं पण आमांथी अने घाटना वासी=घाटी पण आमांथी. संभव छे के सं. घट्-'बनवुं' धातु पण आ मूळ *घृ धातुनो विकास छे]

घाल्हूं वर्त. प पु ए. व. 'नाखुं, पहेरुं, दाखल करुं' ११-३४ [प्रा दे. घल्ल् धातु 'फेंकवुं' अर्थमा छे. संभव छे के द्रविडी इल्लनी मददथी गृभ् > गृह् धातुना गहिल्ल जेवा विकासनी जेम *गहल्ल-द्वारा घल्लनी साधना छे.]

घिरि ८-२०, जुओ घरि.

चढ अ.क्रि. ९-५, १६-२७ [सं.मां चट् धातु एक 'ढांकवुं' अर्थनां पण छे. प्रा. मां चड 'चडवुं'ना अर्थमां छे. आ बे धातु वच्चे संभव छे के जनक-जन्य संबंध होय. प्रा. अने अप. मां चड अंग छे; मध्य गुज.मां एमां विकल्पे महाप्राणता प्रवेशी चढ पण थाय छे. चढी स्त्री. (९-५) ए भ. कृ. अने चढ्यु पुं. (१६-२७) ए भू. कृ. छे, °इड द्वारा. आजे गुज मां चड- अने चढ- बंने लखाय छे.]

चरण-त्राण (सं.) नपुं. 'पगरखुं, कांटारखुं, जोडो'

चलिऊं भू.कृ. 'चलित थयुं, चळ्युं' ६-८ [सं. चलितकम् > प्रा. चलिअअं > अप. चलिअउं > मध्य. गुज. चलिउं द्वारा अंते स्वरभार साथे दीर्घता]

चामीकर (सं) वि. 'सुंदर.'

चालि अ क्रि, वर्त. त्री. पु. ए. व. 'चाले छे.' ८-२० [सं.*चल्यति > प्रा. चलइ > मध्य. गुज. चालइ. बेवडा ल ने लई अर्वा गुज.मां 'ल्' उच्चारण सचवाई रह्युं छे.]

चांपूं वर्त. प. पु. ए. व. 'चांपुं, दबावुं' १५-१७ [सं. चम्प् 'जवुं, खसवुं' मळे छे. आना प्रेरक रूप चम्पयामि > प्रा. चंपेमि चंपमि > अप. चंपउं > मध्य. गुज. चांपउं; पछी टूंकावायेलुं रूप]

चित नपुं. 'चित्त, मन' ४-२ [सं. चित्त]

चींतवी भू. कृ. स्त्री. 'चिंतवी, विचारी' १०-१३ [सं. *चिन्तापयति > प्रा. *चिंतावेइ, *चिंतावइ, चिन्तवइ > मध्य. गुज. चींतवइ, चींतवइ. भू. कृ.नो प्रत्यय इउ-उं पछी स्त्री.नो 'ई' लागतां. चींतवतां वर्त. कृ.ने सा ए. व.नो अव्ययात्मक आं प्रत्यय लागतां]

चुथु वि. पुं. 'चोथो' २८-४० [सं. चतुर्थकः > प्रा. चउत्थओ > अप. चउत्थउ > मध्य. गुज. चउथउ, ने संकोचातां चउथु, चुथु]

चुरी स्त्री. 'लग्नमंडपनी चारे खूणे माटलांओनी मांडणीवाळी रचना, चोरी' १६-१९ [प्रा. दे. चउरिया, चउरी (पा. स. म.) मळे छे. संभव छे के आनो संबंध 'चार'वाचक सं. चतुर् साथे *चतुरिका के एवा कोई शब्दथी होय : प्रा. चउरिआ > अप. चउरिअ > मध्य. गुज. चउरी, पछी टूंकावायेलुं रूप]

चुहि वि. 'चारे, चारेय' ११-६८ [सं. चतुर् उपरथी प्रा. चउ- ने सं. खलु > *हु > हु द्वारा मध्य. गुज.मां चुहु रूप मळे छे. एमां °इ < अप. वि > प्रा. अवि < सं. अपि लागतां. चिहु, विहु अथवा बीजां बे रूप पण प्रचारमां छे.]

चैद वि. 'चेदी देशने लगतुं' २६-१३ [सं. चैद्यनुं अर्वा. तद्भव रूप]

चोल नपुं. 'मजीठ नामनुं द्रव्य (लाल रंगनुं)' १५-१५ [प्रा. दे. चोल. आपणे 'रातुं चोळ'मां आ शब्द साचवी राख्यो छे, पदार्थ तरीके ए स्वतंत्र नथी वपरातो, ने 'मजीठ' ज वपराय छे.]

चोळी अ. कृ. 'चोळीने, मसळीने' २९-२८ [सं. चोलयति '-मां प्रवेश करवो, ऊभुं करवुं' प्रा. चोलेइ, चोलइ द्वारा; अने पछी अ. कृ.नो 'ई' प्रत्यय 'मसळवुं' ए अर्थ गुज.ने मळ्यो छे.]

चौद वि. '१४नी संख्यानुं' ५-२ [सं. चतुर्दश > प्रा. चउद्दह > मध्य. गुज. चऊद, चउद]

च्यारि वि. 'चार' ४-१७ [सं. चत्वारि > प्रा. चत्तारि > *चतारि > *चयारि द्वारा टूंकवाईने. आजे पण सौराष्ट्रमां च्यार उच्चारण जाणीतुं छे.]

छतां अव्ययरूप सा. ए. व. 'छतां' ११-३७ [सं. अस् धातुना पालि. वर्त. कृ. अच्छंत- ना मध्य. गुज. अछत-छतने सा.ना अर्थमां आवेलो अव्ययात्मक °आं (< अप. °हां < सं स्मात् सर्वनामोने पांचमी ए. व.नो प्रत्यय) लागतां-आमां अनादरे षष्ठीनो पण भाव छे.]

छवि वर्त. त्री. पु. ए. व. 'छवे, स्पर्श करे' ११-५७ [प्रा. दे. छिव, छव (स. क्रि.) 'स्पर्श करवो' उपरथी आ धातु मळ्यो छे. हिंदीमां छूना ए आ ज धातुनो विकास छे. 'घरमां पग छवतो नथी' एवो मर्यादित प्रयोग आज गुज.मां छे.] गुज.मां छोवावुं (वैष्णव-परिभाषामां 'अभडावुं' माटे)

छसि वि. '६००' ३०-२७ [सं. षट् शतानि > अप. छ-स्सइं > मध्य. गुज. छस्सइं, छसइं अने पछी टूंकायेलुं निरनुनासिक रूप]

छांड स. क्रि. 'छोडी देवुं, पडतर मूकवुं, त्याग करवो' ६-१६, १६-१५ [सं. छर्दयति > प्रा. छड्डेइ-छंडेइ, छड्डइ-छंडइ > मध्य. गुज. छांडइ. एतुं भविष्य- त्री. पु. छांडसि < छांडसइ < अप. छंडिस्सइ < प्रा. छंडिस्सइ < सं. छर्दिष्यति; छांडसूं < छांडिसउं < अप. छंडिस्सहुं < प्रा. छंडिस्समु < सं. छर्दिष्यामः]

छि वर्त. त्री. पु. 'छे' २-१४ [सं. अस् ग. २ जो-'थवुं' अने एना ज विकास आस् ग. २ जो-'बेसवुं' ने वेदकालीन च्छ < प्राग्- भा. यु. स्को प्रत्यय- (जेना विकासमा गम्-गच्छति, यम्-यच्छति, ऋ-ऋच्छति, इष्-इच्छति, *पृष्-

ऋच्छति, *उंप्-उम्छति वगेरे ज रह्यां छे) थी पालिमां अच्छति > प्रा. अ
> मध्य. गुज. अछइ, छइ, पछी टूंकावायेलुं रूप]

छिहु पुं. 'छेडो' ३६-९ [प्रा. देश्य छेअ 'छेडो' शब्द मळे
आनो संबंध सं. छेद 'विनाश' शब्द साथे छे. मध्य. गुज.मां छेहमां 'ह्' ए '
ने कारणे प्रविष्ट थयो समजाय छे अने स्वार्थे 'ड्' = छेहडउ; एनुं संकुचित रू

छिंडुं भू. कृ 'छेद्युं' ८-११ [सं. छिद् धातुना छेद धात्वंगनो सी
क्रियापद तरीके उपयोग : भू. कृ. छेदिउंनुं टूंकुं रूप छिडुं, ने 'य्'ना लोपे]

छूटी भू. कृ. स्त्री. 'मुक्त थई' ६-२३ [सं. छुट् धातुनुं भू. कृ. छुटित
> प्रा. छुट्टिअ- द्वारा मध्य. गुज. छूटिअ- अंग. नारी.नो प्रत्यय *ई (< अप
*इम > प्रा. *इआ > सं. इका) उमेरातां. आ सं. धातुनुं स्वरूप प्राकृतोन्य छे
अने एना मूळमां सं. धातु क्षुद् 'खसवुं' धातुनी शक्यता छे. छूटीयि रूप (१४-८)
वर्त. कर्मणि त्री पु. ए व. छूटीइनुं यश्रुतिवाळुं रूप. अहीं एनो कर्तरि प. पु.व.व.ना
पलटानो भ्रष्ठो ख्याल आवी शके एम छे.]

छूं वर्त. प पु. व.व. 'छिये' १५-४ [जुओ छतां, टि. अप.मां अच्छहुं
(< प्रा. अच्छमु < पालि. अच्छामो < सं. *अच्छामः) छे तेमांथी मध्य. गुज.
अछउं, छउं द्वारा मळेलुं रूप. मोडे सुधी आ रूप व.व.मां पण वपराया कर्युं छे अने
कर्मणि रूपनो व व.मां प्रयोग दृढ थतां वपरातुं बंध थयुं छे. एकवचननुं रूप पण
छूं ज छे जे अप. अच्छउं (< प्रा. अच्छामि < पा. अच्छामि < सं. *अच्छामि)-
मांथी मछउं, छउं द्वारा मळ्युं छे.]

छेह पुं. 'दगो' १५-१९ [जुओ उपर छिहु. ए बंने शब्दोनुं मूळ सं. छेद
'विनाश'मां छे. अर्वा. गुज.मा 'छे' क्यांक प्रयोजाय छे.]

ज अव्यय 'नक्की'नो अर्थ के 'भाव' बतावनार ४-५ [सं. एव > शौ.
येव > अप. जि]

जई अ. कृ 'जईने, गमन करीने' ४-६ [सं. याति > प्रा. अप. मध्य.
गुज. जाइ एम जे 'जा' अंग मळ्युं तेने अ. कृ.नो प्रत्यय 'ई' मळतां जाई
अने जई बे रूप मळे छे.]

जगावी भू. कृ. स्त्री. 'जगाडी, उत्पन्न करी' ८-५ [सं. जागृ धातु उपरथी
प्रा. प्रे. जागाव अंग (सं. *जाग्राप- द्वारा)नी परंपरामां मध्य. गुज. जगाव-
अंगने भू. कृ. इउं ने नारीजातिनो ई लागतां]

जणु भू. कृ. पुं. 'जण्यो' ११-५ [सं. जनितः > प्रा. जणिओ > अप. जणिउ > मध्य गुज. जणिउ, ने टूंकुं रूप जण्यु– एमांथी य् गये]

जनमेजे पुं. 'जनमेजय राजा– अर्जुनना पुत्र अभिमन्युना पुत्र परीक्षितनो पुत्र, जेने वैशंपायने महाभारतनी कथा संभळावी. २-१ [सं. जनमेजयमांना छेल्ला यनुं संप्रसारण थये]

जरयु भू. कृ. पुं. 'जर्यो, पच्यो' ८-१२ [सं. जॄ धातुना भू. कृ. *जरितः < प्रा. जरिउ ए ज मध्य. गुज.मां पण; पछी टूंकवातां]

जलपता वर्त. कृ. ब. व. 'बोलता' ९-४ [सं. जल्प् उपरथी सीधो अवतार जलप अने + वर्त. कृ. °त प्रत्यय]

जवाइ वर्त. कर्मणि त्री. पु. ए. व. 'जवाय' २८-७ [जुओ उपर जई. ए प्रमाणे मध्य. गुज.मां मळेला जा अंगने भावे अर्थमां 'आ' लागतां स्वरांत धातुमां 'व्' उमेराय छे ने स्वरभारने कारणे पूर्वश्रुति अस्वरित बनता ह्रस्व थाय छे; जवा + इ (त्री. पु. ए. व. < सं. ते). आमा भावे अने कर्मणि माटे मध्य. गुज.मां शरू थयेला 'आ'नुं पूर्वरूप सं. नामधातुओ कृष्णायते वगेरेमांना 'आय'नो आ संकोच छे. स्वरात धातुओने वच्चे 'व्' उमेराय छे ते आगंतुक छे; एने सं. प्रेरकना आप साथे संबंध नथी. डॉ टेस्सिटोरी आ 'आ'ना विकासमां प्रेरकने जुए छे, पण ए तर्कशुद्ध नथी]

जंजाळ स्त्री. 'जंजाळ, आधि उपाधि' २२-१ [सं. ज्वाला > प्रा. जाला > अप. जाल—आ शब्दनो मध्य. गुज. द्विर्भावित प्रयोग समजाय छे.]

जाइ वर्त. त्री. पु. ए. व. 'जाय' ३-३ [जुओ उपर जई अने जवाइ. आ रूप छेक प्रा.थी मध्य. गुज. सुधी 'जाइ' रूप साचवी रह्यु छे.] जाउं वर्त. प. पु. ए. व. 'जाउं' २-१० [सं. यामि > पालि. प्रा. जामि > अप. जाउं; ने पछी स्वरभार अंते थता जाऊं; परंतु आवां रूपोमा शक्यता उपांत्य उपर भारनी होई- जाउं रूप वधु शुद्ध छे जेमा उच्चारण संधिस्वरात्मक छे के जेवुं जई वगेरेमां पण छे.]

जाओं वर्त., प. पु. ए. व. 'जाउं, गमन करुं' २८-११ [सं. यामि > अप. जाहुं > मध्य. गुज. जाउं नुं विकसेलुं रूप. आ मुख्यत्वे लेखनमां ज.] जासि भविष्य त्री. पु. ए. व. 'जशे' ६-१६ [सं. यास्यति < प्रा. जासइ > अप. जस्सइ > मध्य. गुज. जासइ, जासि, जासि अने टूंकाईने जशि. सौराष्ट्रमां हजी पण 'जासे' एम 'आ' सचवायेलो छे.]

जाकी (?) झांखी वि. स्त्री. 'झांखा रंग के भावनी, खिन्न १४-६

जाग्यु भू. कृ. पुं. 'जाग्यो' ६-१० [जुओ आ पूर्वे जगाव्री. प्रा. जग्गिओ > अप. जग्गिउ > मध्य. गुज. जागिउनुं टूंकावेलुं]

जाण नपुं. 'जाणवुं ए, ज्ञान, खबर' २८-४५ [सं. ज्ञान > प्रा. जाण; प्रा. तत्सम शब्द. सं. जानातिनुं जाणइ द्वारा मळता जाण अंगनो क्रियारूप तरीके उपयोग मध्य. गुज. सुधी ऊतरी आवेलो आजे गुज. वगेरे भाषाओने मळ्यो छे.] जाणि आज्ञार्थ बी पु. ए. व. 'जाण' १०-८ [सं. *जानहि > प्रा. जाणहि > अप. जाणि अने मध्य. गुज.मां पण ए ज-जेणे अर्वा. गुज.मां उच्चरित 'जाण्य' लघुप्रयत्न यश्रुतिथी आप्युं छे.] जाणीइ कर्मणि वर्त. त्री. पु. ए. व. 'जाणवामां आवे, जणाय' १२-१४ [सं. *जान्यते > प्रा. जाणिज्जइ > अप. जाणियइ > मध्य गुज. जाणीइ]

जाने अव्ययात्मक रूप. 'जाणे के' १२-१४ [सं. जाने वर्तमान. आत्मने. कर्तरि प. पु. ए. व.नो उत्प्रेक्षा अलंकारमां प्रयोग जाणीतो हतो. प्रा. जाणे अने ए ज छेक आज सुधी सचवाई रह्यो छे. एने त्री. पु. ए. व. जाणे साथे एकरूपता सर्वथा नथी. उत्प्रेक्षाना अर्थमां क्वचित् जाणीइ पण प्रयोजाय छे जे उपर जाणनां आपेलुं जाणीइ कर्मणि रूप छे.]

जान स्त्री. 'वरराजाने परणवा जती सवारी के वरणागीनो समूह' ११-१२ आ शब्दना मूळमां कोई सं. शब्द पकडातो नथी, पण दे. जण्णा शब्द छे तेना उपरथी जान अकारांत (यश्रुति विनानो) ऊतरी आव्यो छे. अप.मां जाण (अप. पाठा.) नपुं. आ 'जान' अर्थमां छे. आ शब्दनो 'सामान्य वाहन' तेमज 'समृद्धवद्ध सरघस'ना अर्थमां नपुं. प्रयोग माटे जुओ फागु. भालणे स्त्री. आप्यो छे. जानीयामां ए आ जानने आपवामां आवता उतारा माटे गुज.मां छे. जानैयो, जानरागी- जानरणी, जांदरणी –जांदरडी– जानडी- एमां पण आ जान शब्द छे.]

जाय वर्त. त्री. पु. ए. व. 'जाय, गमन करे' ७-५ [जुओ उपरनो जाओ शब्द. एना जेवुं ज प्रा. जाइना ज तत्सम मध्य. गुज. जाइनुं आ अर्वा. रूप]

जाल्वि वर्त. त्री. पु. ए. व. 'जाळवे, राखे, बचावे' ११-१ [संभव छे के सं. जालक नपुं. 'जाळुं जाळियुं' ए शब्द साथे संबंध होय. पछी नामधातु बनी प्रेरकना 'आव'थी आ विकस्यो होय.]

जाल्डुं नपुं. 'जाळुं' २२-३ [सं. जालकम् > प्रा. जालअं > अप. अने मध्य. गुज. जाल्उं. अहीं विभक्तिअंग आव्या.]

જાં ક્રિ. વિ. 'જ્યાંસુધી' ૪-૧૬ [સં. યાવત્ > અપ. જાવઁ, જામ– એનું ટૂંકાવાયેલું રૂપ. એવું જ 'તાં' પણ એ જ રીતે સં. તાવત્ ઉપરથી.]

જિમ ક્રિ. વિ. 'જેમ' ૪-૧૨ [જુઓ આ પૂર્વે इम.]

જી માનવાચક અવ્યય, એવો ઉદ્ગાર. ૩-૧૯ [કહોજીમાં માનવાચકતા છે. સં.માં જય જય અને જયતુ જયતુના પ્રયોગનું *જઇ દ્વારા વિકસેલું વ્યાપક રૂપ. અત્યારે તો વડીલો અને માનપાત્રોનાં નામની પાછળ આ ગુજ. હિંદી. વગેરેમાં પ્રયોજાય છે. વળી જુઓ 'નળાખ્યાન' ૧૬-૧૫ પ્રીઢજી.]

જુ આજ્ઞાર્થ બી. પુ. એ. વ. 'જુઓ' ૩-૧૭ [સં. દ્યોતયત > પ્રા. જોઅઉ > અપ. જોઉ > મધ્ય. ગુજ. જોઉ, જૂઉ; પછી ટૂંકાવાયેલું રૂપ.] જુતી જુતી ભૂ. કૃ. સ્ત્રી. 'જોતી જોતી' (દ્વિર્ભાવ ઉક્તિનો). મધ્ય. ગુજ. 'જોતઉં'નું સ્ત્રી જોતી અને પછી ટૂંકાવાયેલું રૂપ]

જુધષ્ટર પું. 'યુધિષ્ઠિર રાજા' ૨-૪ [સં. યુધિષ્ઠિરનું અર્વા. ભ્રષ્ટ રૂપ. ક્યાંક જુધષ્ટલ પણ મળે છે]

જૂઈ અ. કૃ. 'જોઈને' ૪-૧૧ [જુઓ ઉપર જુ. અ.કૃ. જોઈનું ટૂંકાવાયેલું રૂપ.] જૂઓ ૮-૧૮ [મધ્ય. ગુજ. જોઉનું વિકસિત રૂપ.]

જૂજૂઆ વિ. પું. બ. વ. 'જૂજવા, જુદા જુદા' ૧૧-૬૮ [સં. યુત+અયુત= યુતાયુત < પ્રા. જુઆજુઅ - > મધ્ય. ગુજ. જૂ-જૂઅ-અંગનું બ. વ.] જૂજૂયાં નપું. બ. વ. ૩-૧૬ [આમાં યશ્રુતિ ઉમેરાઈ છે. આજે તો 'જૂજવું' જ રૂપ જાણીતું છે.]

જૂઠા વિ. પું. બ. વ. 'જુઠ્ઠા, ખોટા' ૪-૧૧ [સં. દ્યૂતસ્થ- > પ્રા. *જૂઅટ્ઠ- અપ. *જુટ્ટ- દ્વારા આ રૂપની શક્યતા છે. પછી 'ખોટું બોલવું' એ અર્થમાં એ શબ્દ વ્યાપક બન્યો છે. 'એઠું' અર્થનો જૂઠું (વૈષ્ણવી પરિભાષામાં વપરાતો– વ્રજ. હિંદીમાંથી મળેલો) એ શબ્દ સં. ઉચ્છિષ્ટ– એમાંથી આવ્યો શક્ય છે. એને અને આને કશો સંબંધ નથી.]

જૂવટું નપું. 'જૂવટું, જુગાર' ૩૦-૪૮ [સં. દ્યૂત-વૃત્તકમ્ > પ્રા. *જૂઅ-ઉટ્ટઅં > અપ. *જૂઅઉટ્ટઉં > મધ્ય. ગુજ. જૂવટઉં; ને ટૂંકાવાયેલું રૂપ.]

જે ઉભ. અ. 'કે' ૧૩-૧૨ [સં. યત્‌ના જેઇ દ્વારા મળેલું રૂપ. આજે પણ જુનવાણી પ્રજામાં એ જાણીતું છે; અને દયારામ સુધીની સાહિત્યકૃતિઓમાં એ જ મળે છે. અર્વાચીન ગુજરાતીએ ફારસીને અનુસરી कि દ્વારા નવો કે મેળવ્યો છે. સરખાવો હિંદી ક્રિ. के = 'અથવા'ને આની સાથે સંબંધ નથી.]

°जे (प्रत्यय) ७-४. आ पछी जुओ °ज्ये, °ज्यो.

जेणि सर्व. त्री. वि. ए. व. 'जेणे' ४-६ [जुओ एणी. सं. येन > प्रा. जेण > अप. जेणने वधारानो इ लाग्यो.]

जो उभ. अ. 'यदि' २-१० [सं. यतः > प्रा. जओ > अप. जउ > मध्य. गुज. जउ, जु, जो पण]

जोड स्त्री. 'जोडी, युगल' ५-१० [सं. युज् धातुना प्रेरक योजय- अंगनुं प्रा.मां जोड मळे छे, जेणे जोडवुं क्रियापदने एना विकासनां रूप आप्यां छे. मध्य. गुज. जोडी अंते स्वरभारथी अने जोडि स्वरभार विना, जेणे जोड्य पण आप्युं.]

जोतरु आज्ञार्थ बी. पु. ब. व. 'जोतरो, जोतर बांधो, रथमां घोडा जोडो' १३-८ [सं. योक्त्र–नो प्रा. *जोत्तर विकास. घोडा अथवा बळदना गळा नीचे बदाम आकारनी गूंथणीनो चंदो बे बाजु दोरीथी उपर धोंसरी साथे बंधाय छे ते जोतर, अने एवी रीते घोडा के रथने बांधवा ते जोतरवुं; एने आज्ञार्थ. बी. पु. ब. व.नो उ लाग्यो.]

जोऊं वर्त. प. पु. ए. व. 'जोउं' ३-४ [सं. द्योतयामि > प्रा. जोएमि > अप. जोअउं > मध्य. गुज.मां जोउं, जोऊं. जुओ आ पहेलां आऊंनी नोंध पण.] जोओं २९-३१ [जोऊंनो लेखनभेद मात्र] जोय वर्त. त्री. पु. ए. व.; उपर प्रमाणेनो जोइ छेक प्रा.थी आवे छे; एनुं अर्वा. रूप. आजे पण सौराष्ट्रमां व्यापक छे; अव्यय जुइ द्वारा जुए (= जुवे) विकस्युं छे.] जोवानि = जोवानि ९-१७. मध्य- जो अंगने वि. कृ.नो एव लागतां जोएवउं (अप.मां जोएवा रूप वपरायेलुं छे), जोवउंने एने नइ > नि लागतां; अने पछी लेखनभेद 'ण' थतां– 'जोवाने'] जोशि भविष्य. त्री. पु. ए. व. 'जोशे' ६-१६ [जोने 'सइ' द्वारा मळेलुं रूप] जौवा = जोवा मात्र लेखनभेद. २४-६

ज्याच्यु भू. कृ. पुं. 'जाच्यो, माग्यो' ४-६ [सं. याच् धातुनुं सीधुं अर्वा. रूप जाच. आनुं भू. कृ. जाचिउं; टूंकातां जाच्यु. अने 'ज्'नुं सं. उच्चारण व्यक्त करवा 'य्'नो प्रक्षेप.]

ज्युइ वर्त. त्री. पु. ए. व. 'जुए' ३-२१ [उपर आवी गयेलां जुइ, जोऊं वगेरे रूप जुओ. जइ > ज्युइने सं. उच्चारण साचववा 'य्'नो प्रक्षेप.]

°ज्ये ए. व., °ज्यो ब. व. केड. आज्ञार्थनां भविष्यदर्थे रूप. २-१३ वगेरे [सं. विध्यर्थना °एय प्रत्ययांगनो विकास. सरखावो आ हेमचंद्रनुं नोंधेलुं करिज्जइ ≤ सं. करेय रूप (सि. हे. ८-४-२५१) ए. प. पु.नुं छे. मध्य. गुज.मां बी. पु.ज

વચ્યો છે. એ. વ. °પુચ્છહિ > મધ્ય. ગુજ. °ઇજઇ > °ઇજિ અને °ઇજઉ, °ઇજુ, અને સ્વરભાર અંતે રહેતાં °ઇજે, °ઇજો. આમાં છેકે લઘુપ્રયત્ન 'ય' નો પૂર્વના 'ઇ' ને કારણે પ્રક્ષેપ: °જ્યે, °જ્યો. મધ્ય. ગુજ.ની હાથપ્રતોમાં માત્ર 'યે અને 'યો પણ લખેલા મળે છે, જેનું ઉચ્ચારણ તો °જે અને °જો જ છે. છતાં હિંદીમાં કરિયો, લહિયો વગેરેમાં ય સચવાઈ રહ્યો છે. એ. વ. હિંદીમાં કરિયે, લહિયે વગેરે પ્રયોજાય છે તેનો સંબંધ તો કર્મણિરૂપ સાથે છે, જેને સ્થાને ઉત્તર ગુજ.માં કીજે લીજે–કીજિયે લીજિયે વપરાય છે. વૈકલ્પિક રીતે °જે ને કર્મણિ રૂપમાંથી પણ સાધી શકાય.]

ઝરિ વર્ત. ત્રી. પુ. એ. વ. 'ઝરે, ટપકે' ૨૦-૨ [સં. ક્ષરતિ > પ્રા. ઝરઇ- છેક મધ્ય. ગુજ. સુધી; પછી ટૂંકવાતાં]

ઝંપાવી અ. કૃ. 'ઝંપલાવીને, કૂદી પડીને' ૧૧-૩. [સં. ઝંપા સ્ત્રી. નામ- ધાતુનો પ્રેરક પ્રયોગ + અ. કૃ. 'ઈ' મધ્ય. ગુજ.નો.]

ઝાલુ, ઝાલ્યુ ભૂ. કૃ. પું. 'ઝાલ્યો, પકડ્યો' ૬-૯, ૧૦ [ટર્નર સં. જ્વાલા સાથે આનો સંબંધ માને છે; પણ આજે આ શબ્દમાં 'ળ્'નથી થયો ને 'લ્' સચવાઈ રહ્યો છે તેથી મૂળમાં કોઈ બેવડા લ્વાળો શબ્દ છે. મોદી આ શબ્દનું મૂળ શંકા- સ્પદ માને છે. કાનના ઘરેણાનો વાચક ઝાલિ અને ઝાલ (જુઓ 'ફાગુ')ને આ ઝાલિ સાથે સંબંધ શક્ય છે. આના ભૂ. કૃ. ઝાલિઉનાં ટૂંકાં રૂપ ઝાલ્યુ, ઝાલુ.]

ઝાંખુ વિ. પું. 'ઝાંખો' ૧૧-૫૩, ૩૦-૩૫ [પ્રા.માં ઝંખ ધાતુ 'સંતાપ કરવો' 'વિલાપ કરવો' 'ઠપકો દેવો' 'નિસાસો નાખવો' 'ખુશ રહેવું' એવા અર્થમાં છે. ગુજ. ઝંખવું–'ની તીવ્રતર ઇચ્છા રાખવી' આનો જ વિકાસ છે. એમાંથી જ અર્થનો વિકાસ થયે 'દૂર હોઈ ઓછું દેખાતું' એ અર્થમાં મધ્ય. ગુજ.મા ઝાંખઉં વિ.મળ્યું છે. 'ઝાંખી કરવી' 'પ્રભુનાં સંપૂર્ણ દર્શન કરવાની શક્તિના અભાવે માત્ર દર્શન કરવાં' એ અર્થ પણ વિકસ્યો. ઝાંખઉનું ટૂંકવાયેલું રૂપ.]

ટલવળી ભૂ. કૃ. સ્ત્રી. 'ટળવળી, પરેશાન થઈ' ૧૬-૮ [ધ્વનિવાચક ધાતુ. પ્રા માં ટલટલ એવા અવાજ માટે છે. મધ્ય. ગુજ.મા ટલટલ અને એવી ક્રિયાના અભિભાવનમાં ટલવલ મળ્યો છે.]

ટલ્યુ ભૂ. કૃ. પું. 'ટળ્યો, દૂર થયો' ૪-૪ [અજ્ઞાત મૂળનો આ ધાતુ છે. મધ્ય. ગુજ. ટલિઉનું ટૂંકું રૂપ. એનું પ્રેરક ટાલવઉં 'ટાળવું'– એના ઉપરથી અ. કૃ. ટાલી 'વિના 'ના અર્થમાં ૧૬-૧; દૂરવાત ટાલિ પણ એ અર્થમાં છે ૮-૬; 'ટાળીને' માંથી 'વિના'નો અર્થ આવ્યો છે.]

ટોળૂં નપું. 'ટોળું, માનવ-સમૂહ' ૧૯-૬ [પ્રા. દે. ટોલ શબ્દ છે, પણ 'તીડ' અને 'પિશાચ'નો વાચક છે. સંભવ છે કે 'તીડ' અર્થમાંથી એના સમૂહને

माटे ए शब्द व्यापक थयो होय. टोलडं टूंकवातां टोल्टूं. गुज. टोळवुं ए आना उपरथी नामधातु छे. टोळी-टोळकी वगेरे पण आनो विकास.]

ठाम नपुं. 'ठेकाणुं, जग्या' २-१५ [सं. स्थामन्, (स्थिरता, मजबूती) > प्रा. ठामं > अप. ठामु (जग्या): 'ठामि राख्या = 'ठेकाणे राख्या' अने पछी 'ठेकाणा उपर राख्या —ठार मार्या' ए विकसित अर्थ. जुओ नीचे ठारमां.]

ठार नपुं. 'ठेकाणुं, जग्या' ६-१२ [ठार पडि—ठेकाणे—थाळे पडे; सं. *स्तार-(पथारो, पाथरणुं) > प्रा. *ठार- + सा. ए. व.नो मध्य. गुज. इ = ठारि; पछी ठारय थईने 'य्'नो लोप, थर्वा. गुज.मां ठार मारवुं = ते ने ते ठेकाणे ऊभेल्याने त्यां ने त्यां निष्प्राण करवो' ए अर्थ विकस्यो छे. विकल्पे ठेर मारवुं पण कहेवाय छे.]

ठारु आज्ञार्थ बी. पु., ए. व. 'ठारो, शांत पाडो' ·३-८ [सं. स्थिर- > प्रा. थिर- मध्य. गुज. क्रिया. ठर-नुं प्रेरक थई ठारउ, ने टूंकवायेलुं रूप. आमां पण मूळ. सं. 'स्थिर करवुं' ए अर्थनो 'ठारवुं'मा विकास छे.]

ठालु वि. पुं. 'ठालो, खाली, नकामो' ६-५ [प्रा. दे. ठल्लनो विकास. बेवडा ल्लने कारणे अर्वा.गुज.मां ठालुं छे. एना ठालववुं, ठालवणी वगेरे शब्द मळे छे. ठालुंमूलूं पण एनो वधु विकास छे.]

डगलां नपुं., व.व. 'पगलां' २३-१० [प्रा. देश्य डगमग धातु (पा. स. म.) नोंधायेलो छे. आणे डगवुं धातु पण आप्यो छे— आ ध्वनिमूलक धातु छे. चालती वखते एक पछी एक पगलां भराय छे तेने डग के डगलुं कहे छे.]

डावूं वि. 'जमणाथी ऊलटुं' १६-८ [प्रा. देश्य. डाव (दे. ना. ४-६) पुं. 'डाबो हाथ'; डावअं > अप. डावउं > मध्य. गुज. डावउं; ने संकुचित रूप]

डाही वि. स्त्री. 'बुद्धिवाळी, विदग्ध' २७-२३ [सं. दक्ष- > प्रा. दक्ख- > *दाख- > *दाह- > *डाह—; सरखावो प्रा.मां दक्षिणनुं दाहिण मळे ज छे. (पा. स. म.) अने दनो ड पण थाय छे. सं. दग्ध- शब्द (जुओ विदग्ध) पण 'डाह्या'ना अर्थमां छे. डॉ. दवे टर्नरने अनुसरी आना मूळमां दग्ध शब्द मूके छे. एमणे दाह् (—हिण) प्रा. नोंध्यो छे तेनो संबंध तो दक्षिण साथे छे.]

डांडी स्त्री. 'दांडी' ६-७ [सं. दण्डिका > प्रा. दंडिआ, डंडिआ > अप. दंडिअ, डंडिअ > गुज. दांडी, डांडी]

ઢાલિ વર્ત. ત્રી. પુ. એ. વ. 'ઢાળે' ૧૨-૧૮ [પ્રા. દેશ્ય ધાતુ ઢલ 'ટપકવું, નીચે પડવું' અર્થમાં છે, તેના પ્રેરકનું રૂપ ઢાલ છે. મોદી સં. ધ્વર્ ધાતુ પરથી આ ક્રિયારૂપ સાધે છે.]

ઢીલો વિ. પું. 'શિથિલ, પોચું' ૬-૧૮ [સં. શિથિલકઃ ઉપરથી પ્રા.માં દેશ્ય શબ્દ ઢિલ્લ સ્વીકારાયો છે. સં. શિથ્ અંગને દ્રવિડી ઇલ્લ પ્રત્યયના યોગે *શિથિલ —>*સિઢિલ—અને પછી ઢિલ્લ—આ ક્રમ છે. મૂળમાં બેવડા લ્લને કારણે છેક અર્વા.ગુજ. સુધી 'લ્' ઉચ્ચારણ જળવાઈ રહે છે.]

તતકાલિ ક્રિ વિ. 'તત્કાળ, એ જ વખતે' ૧૧-૬૪ [સં. તત્કાલે સ. એ. વ.નું સીધું રૂપ—જોડાક્ષર છૂટા પાડી અને એ પ્રત્યયનો, 'ઇ' કરી]

તતક્ષણિ 'ક્રિ. વિ.' તત્ક્ષણે, 'એ જ વખતે' ૧૧-૩૫ [જુઓ તતકાલિ; એ જ પ્રમાણે જોડાક્ષરનું છૂટું પડવું સં. તત્ક્ષણેમાંથી ને પ્રત્યય એનો ઇ]

તતખેવ ક્રિ. વિ. 'તત્ક્ષણે, તરત જ' ૯-૨૩ [સં. 'તત્-ક્ષિપ્રમ્માંના ઉત્તર પદ ક્ષિપ્ર-નો પ્રા. ખિપ્પ-દ્વારા વિકાસ. જુઓ આ પૂર્વે ખેવ; ને પૂર્વપદમાં માત્ર ત્ આગો કરી લેવામાં આવ્યો.]

તતખ્યણ ક્રિ. વિ. 'તત્ક્ષણે, તરત જ ૨-૧૧ [સં. તત્ક્ષણેનું તતખેવ જેમ તતખણિ અને પછી 'ખ્'માં 'ય્'નો પ્રક્ષેપ ને છેલ્લા ઇનો લોપ]

તમ સર્વ. 'તમે' ૧૯-૧ [સં. યુષ્મદ્ના મૂળમાં રહેલા *તુષ્મ— અંગના પ્રા. તુમ્હ— અંગનું અપ. માં તુમ્હઇં— તુમ્હે રૂપ થાય છે તેનું અમ્હઇં— અમ્હેના આભાસસામ્યે મધ્ય. ગુજ.માં તમ્હ— તહ્મ— અંગ. એ પ્રમાણે તમ્હે— તહ્મે ઉપરથી મહાપ્રાણના વિનાનું તમ રૂપ. આ રૂપ છઠ્ઠીના અર્થમાં પણ આજ સુધી પ્રચારમાં છે.]

તર સ્ત્રી. 'આહ્રણ' ૫-૪. [સં. તૃ ધાતુના 'તરવું' ગુજરાતી રૂપ ઉપરથી નામ]

તરસ્યાં વિ. નપું. બ.વ. 'તૃષાવાળાં, તૃષિત' ૧૩-૨૨ [સ. તૃષિતકાનિ > પ્રા. *તરમિઆણિ > અપ. *તરમિઅઇં > મધ્ય. ગુજ. તરસ્યાં,' તરસ્યાં. એ. વ.મા તરસિઉં]

તલાઇ સ્ત્રી. 'તળાઈ, ગાદલું' ૩-૫ [સં. *તૂલવની- તૂલવનિકા > પ્રા. *તૂલઅઇઆ > અપ. *તુલાઇઅ > મધ્ય. ગુજ. તલાઈ, તલાઇ]

તવ ક્રિ. વિ. 'ત્યારે' ૬-૧૭ [સં. તદા > પ્રા. તઆ > અપ. તઉ > મધ્ય. ગુજ. તઉ, તવ; હિંદીમાંનો 'તબ' સરખાવો.]

तह्मारी वि. स्त्री. 'तमारी' ३-१९ [जुओ आ पूर्वे तम. प्रा. तुम्हार (< *तुप्मकार-)ने अंते स्वरभारथी अप. तुम्हारउं > मध्य. गुज. तम्हारउं-तह्मारउं एने नारीजातिनो ई]

तह्मो सर्व. 'तमे' ३-१७ [जुओ तम, तुम. अप. तुम्हइं, तुम्हेना विकासमां मध्य.गुज.मां तम्हइं-तह्मइं उपरांत तह्मो रूप पण व्यापक हतुं—जेना तह्मो तम्यो पण. पछीथी यश्रुतिथी बनतां ए ज प्रमाणे अम्हइं-अह्मइं अने अह्मो-अह्म्यो अम्यो-. आणे आपणने अमे (अःमे), तमे (तःमे) अने अमो (अःमो), तमो (तःमो) रूप आप्यां.

ताणिऊं भू. कृ. 'ताण्युं, खेंच्युं' ११-२६ [सं. तन् धातुना प्रेरकना भू. कृ. तानित- < प्रा. ताणिअ- उपरथी मध्य. गुज.मां ताणिउं, ताणिऊं]

ताह्यरि क्रि. वि. 'त्यारे' ७-१० [मध्य. गुज. तेइवारइ > तिह्वारइ > तिहारइ > तहारइ > ताहारइ अने टूंकावेलुं रूप. आमां ह्नुं स्वातंत्र्य नहि पण मात्र महाप्राणित उच्चारण: ताःरि]

तां उभ. अ. 'तो' २-१३ [सं. तावत् > अप. तावँ, ताममांथी]

तांह क्रि. वि. 'त्यां' ४-१५ [सं. तस्मात् > अप. तह्यं > मध्य. गुज. तहां, तांहां, तांह] तांहां ५-४ [आ परिस्थितिमां ह्नुं जुदुं उच्चारण नहि पण महाप्राणित स्वर मात्र: तांः]

ति सर्व. स्त्री. बि. ए. व. 'ते' ६-१९ [सं. त्वया > प्रा. तइ > अप. तइ, तइं > मध्य. गुज. तइं. तिं अने निरनुनासिक ति.]

ति सर्व. 'ते' १०-३ [अप. तेह (तद्नुं)नो मध्य. गुज. ते– टूंकाईने ति]

तिल्ल (सं.) नपुं., पण अहीं क्रि वि. 'तत्मात्र' १३-२२

तियारां क्रि. वि. 'त्यारे' १-४ [जुओ ताहारि. ति-वार ने सा. ए. व.मां °आं (< °म्हां < °स्मात् (सं. पां. ए. व.)]

तिहां क्रि. वि. 'त्यां' ४-१० [सं. तस्मात् > अप. तहां- पछी मानभीना अर्थमां > मध्य. गुज. तहां, तिहां, तांहां]

तीक्षण वि. 'तीक्ष्ण, धारदार' १५-१४ [सं. तीक्ष्णनो अर्वा. विकास]

तुखार पुं. 'घोडो' ११-१८ [फा. तोखार; तुखारिस्ताननो थता घोडा माटे; पछी घोडा सामान्य माटे व्यापक]

तुझ सर्व. वि. 'तारुं' ५-९ [अप.मां तुम्र रूप 'तव'ना आदेशमां स्वीकारायुं छे. आनुं अप.मां ज तुज्झु > मध्य. गुज. तुझ.]

तुम सर्व. वि. 'तमारुं' ११-११ [जुओ तम; अहीं अप. *तुम्ह > मध्य. गुज. तुम्ह, तुझ]

तुह उभ. अ. 'तो ज' ६-२४ [सं. ततः खलु > प्रा. तओ खु > तओ हु > अप. तउ हु > मध्य. गुज. तउ-ह, तुह] तुहि 'तोपण' ६-१३ [आगां इ < प्रा. अवि > सं. अपि]

तुंहनि सर्व. चो. वि. ए. व.नो अर्थ- 'तने' ७-४ ['तव'ने माटे छठ्ठीमां तुह छे, तेने मध्य. गुज. अनुग नइ लागतां तुहनइ अने प. वि. ए. व.ना तुंहुंने कारणे अनुनासिकता ने प्रत्ययसंकोचे तुंहनि]

तूं सर्व. 'तुं' ५-८ [सं. त्वम् > अप. तुंहुं > मध्य. गुज. तउं, तूं, तुं] तूंअ 'तूं पण' २२-८ [जुओ °अ; छतां 'तुं' एटला अर्थमां पण प्रयोजाय.] तूंह 'तुं, हुं पण' १८-९ [आमां सं. खलु > प्रा. खु, हु द्वारा 'ह,' ज्यारे 'पण'नो अर्थ होय; जो न होय तो तुंहुंनो ज विकास.]

तेटलि क्रि. वि. 'तेटले, तेटलामां' २-१४ [सं. *तत्तुल्यके > प्रा. *तत्तुलए > अप. तेत्तुलइ > मध्य. गुज. तेतलइ, तेटलइ, ने पछी टूंकाता]

तेड्या भू. कृ. पुं. ब. व. 'तेडाव्या' ११-४९ [तेडवउं-'केड उपर बेसाडवुं,' 'बोलावी मगाववुं'. अर्वा.गुज. तेडाववुं-'बोलावी मगाववुं'. आ कोई देश्य शब्द लागे छे.]

ते, तेह सर्व. 'ते' ३-१५,१६ वगेरे [सं. एषः > प्रा. एहो, > अप. एहुना आभाससाम्ये जेहु, तेहु ने मध्य.गुज.मां एह, जेह, तेह, पछी 'ह' ना लोपे ए, जे, ते. आने बहुवचनना ये, जे साथे कशो संबंध नथी.]

तेहनि सर्व. 'तेने' ४-४ [जुओ उपर तेह, अनुग °नइ > °नि चोथीना तेमज संबंधना अर्थमां लागतां [जेमां पण सा. ए. व.नो इ रहेलो छे.]

तेहवि क्रि. वि. 'तेवे, ए समये' ५-८ [जुओ तेह; पण अप. मां तेवउं रूप छे; हना प्रवेशे तेहवउं मध्य.गुज.मां ने सा. ए. व. 'इ' थये तेहवइ, ने पछी टूंकाता]

तो उभ. अ. 'तो, तेथी' २-९ [सं. ततः > प्रा. तओ > अप. तउ > मध्य.गुज. तउ, तु, तो] तोहि 'तोपण ४-६ [जुओ तुहमां तुहि.]

तोलि पुं. सा. वि., ए. व. ' तुलनामां, सरखामणीमां ' ९-१० [सं. तोल्यके > प्रा. तुलइ > अप. तुलइ > मध्य.गुज. तोलइ, टूंकवातां तोलि. आमां अर्वा. गुज. मुर्धी ' ल् ' ज उच्चारणमां छे, कारण के मूळमां वेरडो ल हतो.]

त्यजीनि अ.व. ' तजीने, छोडीने ' ६-२३ [सं. त्यज्नो सीधो मध्य. गुज. तत्सम प्रयोग. ने प्रत्यय ई अ. कृ.नो + नइ > नि. मध्य. गुज.मां य्ना संप्रसारणे तिजी, अने पछी तजी पण प्रयोजाय छे.]

त्याहार क्रि. वि. ' त्यारे ' २-१२ [जुओ उपर ताहारि ' तिह्- ' अंगना आभाससाम्ये य्नो प्रक्षेप. अने छेडेना ' इ 'नो य् थई लोप.]

त्रण्य वि. ' त्रण ' ४-११ [सं. त्रीणिनुं सीधुं विकसित रूप; बोलाती भाषामां तण्य पण; ए प्रा. तिण्णि द्वारा.]

त्राहि (सं) आज्ञार्थ बी. पु., ए. व. ' रक्षण कर ' २३-२ [सं. त्रै. धातुनुं तत्सम रूप परस्मैपदी]

थकां अनुग. ' थी ' २४-६ [सं. स्थित- > प्रा. थिअ- > अप. थिअ-आनी साथोसाथ प्रा. थक धातु ' थवुं-होवुं ' ' थाकवुं ' अर्थमां जोवा मळे छे. आना मूळमां पण सं. स्था धातु ज छे. अप.मां थिअमांथी मध्य. गुज. थउं, थी, थउ मळे छे, तो थकअमांथी थकउं, थकी, थकउ मळे छे. अहीं फरी सा. ए. व.नो अव्ययात्मक °आं (< अप. °हां > सं. °स्मान्) प्रत्यय लाग्यो छे.] थकी ' थी ' ६-३ [जुओ उपरनो विकास.]

थवाय वर्त. भावे. त्री. पु. ए. व. ' थवानी क्रिया थाय, बने ' ११-२२ [जुओ नीचे थाइ वगेरे. आमा भावे प्रयोगनो मध्य. गुज. प्रथम आ उमेरायो छे, जे सं. कृष्णायते वगेरे नामधातुओमांना आयना विकासथी मळ्यो छे.]

°था अनुग, वि. ' थी ' २३-८ [जुओ थकां. मध्य. गुज.मां थउं, थी, थउ-नी विशेषणात्मक स्थिति. अहीं सघळ अंग बनी आज्ञार्थे ब. व.]

थाइ वर्त. त्री. पु., ए. व. ' स्थिति करे, बने ' ४-१० [सं. *स्थाति > प्रा. अप. अने मध्य. गुज. थाइ] थायि ६-२५ [वचे यश्रुति] थाऊं प. पु. ए. व. [सं. *स्थामि > प्रा. थामि > अप. थाउं > मध्य. गुज. थाऊं, थाउं, अने पछी पूर्वश्रुति उपर अनुनासिकनो आभास] थाऊं २८-११ [' थाउं 'नो विकास.] थायां भू. कृ. नपुं., ब. व. ३-१६ [मध्य. गुज. धात्वंग था ने भू. कृ.नो इउं > यूं लगाडी ब. व.; पाछी प्रचलित रूपनो सं. स्थितकम् > प्रा. थियअं > अप. थियउं > मध्य. गुज. थियउं, थयउं अने पछी थियूं, थयूं छे.]

थाकी भू. कृ. स्त्री. 'थाक पामी, श्रमित थई' १४-६ [जुओ उपर थकां. एम अप. थक्किअ उपरथी मध्य.गुज. थाकी.]

थाने नपुं. सा. वि. ए. व. 'स्थान उपर, ठेकाणे' ७-१२ [सं. स्थाने उपरथी सीधो विकास.]

थापु आज्ञार्थ. बी. पु., ब. व. 'स्थापो, मूको' १९-६ [सं. स्थाप् (स्थानुं प्रेरक) उपरथी प्रा. थप्प द्वारा विकास. + मध्य.गुज.नो उ (< अप. हु < सं. त (= थ).]

थापणि स्त्री. 'थापण, न्यास' २८-३४ [उपरना प्रा. थप्प- धातुंग उपरथी नारीजातिनो इणि प्रत्यय (< अप. प्रा. 'इणी < सं. इन् + ई) लागतां.]

थीआं अनुग 'थी' ८-१८ [जुओ उपर थकां. आमां थिअ + आं छे.]

थोभ पुं. 'थोभवुं ए, स्थिति' ११-९० [सं. स्तुभ्‌ना स्तोभवुं स्थाप जेम ज पूर्वश्रुतिमां ज मात्र विकार थतां थोभ; नहितर 'भ' न टकी शके. ए माटे तो तो स्तुभ्यते > प्रा. थुब्भइ, थोब्भइ लई पछी थोब्भ द्वारा थोभ एम पण लेवुं पडे, जे अस्वाभाविक नथी.]

थ्यु भू. कृ. पुं. 'थयो' ४-८ [जुओ उपर था. मध्य. गुज. थियु-थयुनो संकोच; आजे पण सौराष्ट्रमां 'थ्यो' थाय छे.]

दडवडी भू. कृ. स्त्री. 'दडवडती, अथडाती' ११-३ [प्रा. देश्य दडवड पुं., झडपी अर्थमां छे-आ ध्वन्यात्मक शब्द छे. अहीं क्रियावाचक रूप तरीके प्रयोग छे.]

दशारण पुं. 'दाशार्ण देश' २५-११ [सं. दाशार्णनो अर्वा. तद्भव]

दंड (सं.) पुं. 'दंड, सजा' २२-१२

दंग्यु भू. कृ. पुं. 'दंड्यो, डंख्यो' २३-११ [सं. दंशितः > प्रा. दंसिओ > अप. दंसिउ अने सानुनासिक दीर्घ न थता मध्य.गुज. दंसिउ, दंस्यु, दंश्युने 'य्'ना लोपे]

दाखि वर्त. त्री. पु., ए.व. 'बतावे' २-१६ [सं. दृश् धातुनुं प्राचीन *स्क प्रत्ययवाळुं प्रेरकरूप *दृक्षयति होय एम प्रा. *दक्खेइ, दक्खइ > अप. दक्खइ > मध्य.गुज. दाखइ, ने पछी टूंकावेलुं रूप] दाखी भू. कृ.स्त्री. 'बतावी, बही बतावी' २७-१६ [मध्य.गुज.ना दाख अंगने अ. कृ. प्रत्यय 'ई (< प्रा. इअ > सं. 'य).]

दाझि वर्त. त्री. पु., ए. व. 'बळे, दाझ पामे' ११-६९ [सं. दह्यति > प्रा. दज्झइ > अप. दज्झइ > मध्य.गुज. दाझइ अने पछी टूंकावायेलुं रूप.]

दाता, दातार वि. 'दान देनार' ४-१४, ४-५ [सं. दाता उपरथी गुज मां दातार]

दाधुं भू. कृ. 'दाझ्युं, बळ्युं, सळग्युं' २४-७ [सं. दग्धकम् > प्रा. दद्धअं अप. > दद्धउं > मध्य.गुज. दाधउं, ने टूंकवायेलुं रूप.]

दाशी स्त्री. 'दासी, नोकरडी' ६-२३ [सं. दासीनुं गुजरातीकरण; तालव्य ईने कारण सनुं पण तालव्य थयुं.]

दि आज्ञार्थ बी. पु., ए. व. 'दे, आप' १०-३ [सं. देहि > प्रा. देहि > अप. दे > मध्य.गुज. दे, दि]

दिशपति पुं. 'दिक्‌पति, देव' ११-६६ [सं. दिशापतिनुं जरा लाघव.]

दिशा स्त्री. 'दशा, हालत, स्थिति' २७-१७ [सं. दशामा गुज. इनो आदि-श्रुतिमां सं. दिशाना आभाससाम्ये प्रक्षेप.]

दिह पुं. 'देह, काया, शरीर' १३-५ [सं. देह शब्दनुं गुज. लघुरूप.]

दिकरी, दिकरी स्त्री. 'पुत्री' ११-६४, २०-५ [गुज.मां दीकरी अने दीकरो बेउ जातिना शब्द छे. अप. मुधीमां क्याय पण आ शब्द जोवामां आव्यो नथी. 'दीकरी'ने माटे सं.मा दुहिता > प्रा. दुहिया > अप. दुहिय > मध्य. गुज *धुअ, *धी द्वारा गीतोमां 'धी' शब्द छे; हिंदिमां 'जी' शब्द मळे छे. एटले आना मूळमां दुहितानी शक्यता छे. आ ज स्थिति छोकरी छोकरोनी पण छे; एमां पण °कर अंगनो पत्तो मेळववो मुश्केल छे; बाकी 'छो-' तो सं. शाव-नो विकास समजाय छे.]

दीजीइ वर्त. कर्मणि त्री. पु., ए. व. 'दीजे' ९-२ [सं. दीयते > प्रा. दिज्जइ > अप. दिज्जइ > मध्य. गुज. दीजइ अने दीजि, पछी फरी °इइ प्रत्यय लागतां. जुओ आ पूर्वे कीजीइ. आनो आज्ञार्थ- बी. पु. ए. व.मा कर्तरि अर्थे प्रयोग पछी व्यापक बन्यो छे. अहीं पण ए अर्थनी संभावना छे ज.]

दीठु भू. कृ. पुं. 'दीठो' ३-७ [सं. दृष्टकः > प्रा. दिट्ठओ > अप. दिट्ठउ > मध्य. गुज. दीठउ ने पछी टूंकवातां.] दीठा ब. व. ५-१२. दीठां नपुं. ब.व. १५-१. दीठिइ सा. ए. व. २८-२५ [सतिसप्तमीनो प्रयोग.दीठइने बदले मध्यश्रुति-मां पण 'इ'नो प्रक्षेप दीठिउं एवुं अंग कल्पी— बीजा कृदंतोना आभाससाम्ये]

दीध   भू. कृ. 'आप्युं, दीधुं' ११-७२; दीधूं २-९ [सं. दत्त- उपरथी प्रा. *दिद्ध- (प्रा. दिन्न छे ज) द्वारा मध्य. गुज.मां दीध- अंग. अंते स्वरभार आवतां दीधउं (टूंकवातां दीधूं). सरखावो अने जुओ आ पहेलां कीधूं. हिंदीए तो दिया मेळव्युं छे..]

दीर्घिका   (सं) स्त्री. 'पगथियांवाळी वाव' ७-७

दीसि   वर्त. (कर्मणि) त्री. पु. ए. व. 'देखाय' १०-१८ [सं. दृश्यते > प्रा. अप. दिस्सइ > मध्य. गुज. दीसइ, ने टूंकवातां.]

दुखायु   भू. कृ. (कर्मणि) पुं. 'दुःखित करायो, दूभवायो' १७-२ [सं. दुःख- > प्रा. अप. दुक्ख द्वारा मळेला नामधातु दूख-नुं 'आ'वाळुं कर्मणि-रूप ने पछी भू. कृ.नो °यउ मळतां.]

दुखिओ   वि. पुं. 'दुखियो' ३-७ [सं. दुःखितकः > प्रा. अप. दुक्खिअउ, > मध्य.गुज. दूखिअउ, ने टूंकवातां.]

दुरजोधन   पुं. 'दुर्योधन राजा, धृतराष्ट्रनो मोटो पुत्र' २-९ [स. दुर्योधननुं अर्वा. तद्भव रूप.]

दुरोदर   पुं. 'जुगार' १२-७,१६ [सं दुरुदर- 'जेनामांथी उद्धार थवो-नीकळवुं मुश्केल छे ते– द्यूत'– एमांथी आ शब्द नीकळ्यो समजाय छे; एने दुर् + उदर साथे संबंध नथी.]

दुस्यासन   पुं. 'धृतराष्ट्रनो बीजो पुत्र, दुःशासन' २-७ [सं. दुःशासननो अर्वा. भ्रष्ट उच्चार].

दुहुलूं   वि. 'दुःखित' २७-८ [स. दुःख + प्रा. द्विवृद्धि °इल्ल- प्रत्यय = *दुक्खिल्ल > *दूखिल- > *दुहिल-नो विकास मध्य. गुज. दुहिलउं; पछी टूंकवातां दुहिलूं ने वच्चे उना प्रक्षेपे दुहुलूं.] दुहुल्यां ब. व. २५-१४ ['य'ना प्रक्षेपे.]

दूखडूं   नपुं. 'दुःख' १४-८ [सं. दुःख- > प्रा. अप. दुक्ख- > मध्य. गुज. दूख-ने स्वरभारयुक्त ड प्रत्यय स्वार्थे =दूखडउं, ने पछी टूंकवातां.] दूखलूं वि. 'दुःखयुक्त' २८-२६ [जुओ दुहुलूं. * दुक्खिल्ल- मांथी विकास.]

दूखिया   वि. ब. व. 'दुःखी' ३ १७ [जुओ उपर दुखिओ.]

देई   अ. कृ. 'दईने' ४-१६. [जुओ आ पूर्वे दि. सं. *दयति > प्रा. अप. देइ द्वारा मध्य. गुज.ने दे धात्वंग मळे छे. तेने अ. कृ.नो ई प्रत्यय (< प्रा.

°इअ < सं. °य) लागतां.] देउं वर्त. प. पु., ए. व. ११-२ [प्रा. देमि > अप. देउं द्वारा]

देखी अ. कृ. 'देखीने, जोईने' २-८ [सं. दृश् धातुमां प्राचीन कोई *स्क प्रत्यय द्वारा प्रा.मां देक्ख- अंग मळे छे (भविष्य.मां द्रक्ष्यति रूप सं.नुं सरखावो.) पछी अ. कृ. °य > प्रा. इअ द्वारा मध्य. गुज.मां देखाडि वर्त. प्रेरक, त्री. पु. ए. व. देखाडे, बतावे' ७-३ [उपरना देक्ख प्रा. अंगने मध्य. गुज. आड (जे अप.मां भमाडमां जोवा मळे छे.) लागतां वर्त. त्री. पु. ए. व. देखाडइ, ने पछी टूंकवातां.]

देवता (सं. स्त्री.) पुं. 'देव' १०-२०

देहडी स्त्री. 'देह, शरीर' १४-१५. [सं. देहनुं गुजराती रूप–'लघुतावाचक' डी लगाडी'] देही स्त्री. 'देह' ४-२. [उपर प्रमाणे गुज. लघुतावाचक 'ई' लगाडी]

दृष्टिबंध विद्या (सं.) स्त्री. 'नजरबंधीनी विद्या' ११-४.

दोख पुं. 'दोष' ९-२४ [सं. दोषनो गुज. उच्चार.]

दोट स्त्री. 'दोडवानी क्रिया, हडी' १६-१२ [सं. धाव् 'दोडवुं' उपरथी शक्य *धावद्वृत्ति : > प्रा. *धाउट्टिमांथी *दाउट्टि द्वारा आ विकास शक्य छे. गुज. दोडवुं ने सौराष्ट्रना धोडवुंमां सं. धाव् जोवा मळे छे. धोडवुं उपरथी धोड स्त्री. 'दोट, दोड' अने धोड पुं. 'मननो वेग, उत्साह, उमंग' लक्ष्यार्थे *सौराष्ट्रमां व्यापक छे.*]

द्याडि पुं. सा. ए. व. 'दहाडे' २९-१२ [सं. दिवस-ना प्रा. दिअस, दिअह, दीह–अंगने स्वार्थे ड लाग्या पछी मध्य.गुज. दीहडउनुं टूंकवाईने द्याड-अंग ने सा. ए. व.नो इ लागतां, गुज. दहाडो ए आनो विकास. सौराष्ट्रमां 'दररोज'-ना अर्थमां द्याडी आजे पण वपराय छे]

द्यामणां वि नपुं, ब. व. 'दयामणां' ६-१० [सं. वर्त. कृ. दयमान-नो *कर्मणि अर्थे आ द्यामण अंगमां विकास छे*]

द्यु आज्ञार्थ, बी. पु., ब. व. 'दो' २-१२ [सं. देहि ए. व.ना आभास-साम्ये मळेला दे अंगनुं अप. देहु > मध्य. गुज. देउ, दिउ ने वधु टूंकवातां द्यु. सौराष्ट्रमां हजी पण द्यो उच्चारित थाय छे.]

धरि वर्त. त्री. पु. ए. 'धरे, धारणा करे, विचारे' ६-१ [सं. धरति > प्रा. अप. ने मध्य. गुज. धरइ; पछी टूंकवातां.]

धव (सं.) नपुं. 'ए नामनुं एक झाड' १८-७

धाइ व. कृ. 'दोडीने' २-१० [सं. धाव्‌ना प्रा. धा-अंगना अ. कृ. धाइअ > मध्य. गुज. धाई, धाइ] धावो आज्ञार्थ बी पु., ब. व. 'दोडो' २२-२ [आमां धाने अप. °हु > मध्य. गुज. °उ थये विकसेलुं रूप.]

धाओडी स्त्री. 'धव नामनुं झाड' १८-७

धांख स्त्री. 'प्रबळ इच्छा' १५-१,२ [सं. ध्वाङ्‌क्षा > प्रा. धंखा > अप. धंख > मध्य. गुज. धांखि, धांख्य ने पछी धांख]

धिरि स्त्री. 'धीरज' ३०-३३ [सं. धैर्य नपुं.नुं *धिरिय द्वारा विकसेलुं रूप] धीरय स्त्री. 'धीरज' ३-१७ [उपर मुजब ज नपुं.मांथी स्त्री.मां मळेलुं, जेमां 'य्'नुं उच्चारण 'ज्' थई चूकेलुं.]

धूओ आज्ञार्थ बी. पु., ब. व. 'धोई नाखो' ८-१८ [सं. धाव्‌ना प्रा. *धु अंगने आज्ञार्थ अप.ना धुहु द्वारा मध्य. गुज. धुउ, ने पछी विकसेलुं रूप.]

धूजतु वर्त. कृ. पुं. 'धूजतो' २३-४ [सं. धूयते > प्रा. धुज्जइ द्वारा मध्य. गुज.मां धूज- अंग मळ्युं तेनुं प्रा. धुज्जंत- द्वारा मध्य. गुज. धूजतउ, ने टूंकवायेलुं.]

ध्याउं वर्त. प. पु., ए. व 'ध्यान धरुं' १-१ [सं ध्यै धातुना सं ध्या अंगने ज आ मध्य. गुज प्रत्यय लाग्यो छे.]

ध्विज पुं. 'ध्वज, वावटो' २८-४४ [सं. ध्वजमां इनो आदिश्रुतिमां निरर्थक प्रक्षेप]

नडि वर्त. त्री पु., ए. व. 'नडे, नडतर करे, अडचण करे' १३-५ [प्रा. णड धातु मळे छे. आ देश्य जणाय छे. मोदी *नडित आपे छे, पण ए फरी स्पष्टता नथी आपता.] नड्यूं भू. कृ. 'नडतर पाम्यु, कष्ट पाम्युं' २९-४६ [अकर्मक प्रयोग. प्रा. णडिअं > अप. णडिउं > मध्य गुज. नडिउं, ने टूंकवातां]

नथि क्रि. 'नथी, छे नहि' ६-४ [सं. न + अस्ति = नास्ति > प्रा. अप. नत्थि > मध्य. गुज. नथि > सौराष्ट्रमां व्यापक नथ्य; मेरनी भाषामां नेथ्य; साहित्यमां नथी] नथी २१-८ [लेखनमां दीर्घान्त अंते स्वरभारने कारणे, व्यापक थई चूक्युं हतुं. मध्य. गुज.मां नत्थिय पण (मोदी) छे.]

ननु पुं. 'नन्नो, नकार' १०-३ [सं. नन्न. एवा द्विर्भाव उपरथी गुज. प्रयोग. आजे नन्नो व्यापक छे.

नरति स्त्री. 'भाळ, खबर, सीध, सूध' २४-१३ [सं निरुक्तिः > प्रा. णिरुत्ती > अप. णिरुत्ति > मध्य. गुज. निरुति, निरति—अर्थ 'मूळ रूप' एना उपरथी विकसेलो अर्थ. सरखावो निरती, निरतु, निरूतउ (फागु.)]

नवि अ. 'नव, नहि ज' २-९ [सं न+अपि = नापि > प्रा. णावि, णवि > मध्य. गुज. नवि अने पछी नव्य > नव पण: 'नव करशो कोई शोक (नर्मद).]

नवी वि. स्त्री. 'नवीन, नवली' ५-१३ [सं. नविका > प्रा. णविआ > अप. णविअ > मध्य. गुज. नवी; नवउंनुं स्त्री- अंग]

नहि (सं.) अ. 'नहि' १४-१०; नहितर 'नकर, नीकर, नहि तो' २-६ [सं. नहि + तर्हि > प्रा. *णहितरहिं अने पछी हूना लोपे मध्य. गुज.-मां नहितरि > नहितर.] नही, नहीं ४-३ वगेरे [अंते स्वरभार आवता विकल्पे अनुनासिकता] नहींतरि ५-१० [जुओ आ उपर नहितर [आमां इ हजी पड्यो छे] नहीनु 'नहितर, नकर' ६-१४ [नहि-नही-नहीं + तु (< मध्य. गुज., अप. तउ < प्रा. तआ > स. तदा)] मध्य. गुज.मां नकर, नीकर पण आ अर्थमां मळे छे, जेमां न + करि (करिउं भू. कृ.नो सतिसप्तमीनो प्रयोग) एवुं मूळ संभवे छे.

नागु वि. पुं. 'नागो, नवस्रो' १५ ४ [सं नग्नकः > प्रा. नग्गओ < अप नग्गउ > मध्य. गुज. नागउ, ने पछी टूंकवातां] नागुईपणुं नपुं. 'नागापणुं. नवस्रापणुं,' १५-३ [सं. नग्न- > प्रा, नग्ग- ने स्वार्थे क लागता नग्गय-> नागय-, > मध्य. गुज. नागय-, नागुई- + 'पणउं (< 'प्पणउं < प्रा. 'प्पणअं < सं. 'त्वनकम् (जूनो प्रत्यय)]

नाठु भू. कृ. पुं. 'नासी गयो, भाग्यो' ३-१२ [सं. नष्टकः > प्रा. नट्ठओ > अप. नट्ठउ > मध्य. गुज. नाठउ, ने पछी टूंकवातां]

नानाविधि वि. 'नानाविध, अनेक प्रकारनु' २५-१२ [सं. नाना विधाः यस्य तद् नानाविधम्-ने पछी गुज. लाक्षणिकताए सं. विधि शब्दना आभास-साम्ये नानाविधि.]

नान्हां वि. नपुं., ब. व. 'नाना' २९-२९ [सं. श्लक्ष्णकानि > प्रा. लण्हआइं > अप. लण्हअइं > मध्य. गु. नाहानां > नान्हां (उच्चारण नान्नां); मराठीमां लहान-]

नापु यर्त. बी. पु., ब. व. 'न आपो' १६-२० [सं. न + अर्पयथ =नार्पयथ > प्रा. णप्पेहु > अप. णप्पहु > मध्य. गुज. नापउ, ने पछी टूंकवातां]

नाप्यु भू. कृ. पुं. 'न आप्यो' ४-८ [उपर मुजबना नाप- मध्य. गुज. ने सं. परंपराथी मळेलो इउ भू. कृ. प्रत्ययविकास– नापिउ, ने पछी टूंकवातां.]

नामूं नपुं. 'नामुं, हिसाब-नोंध' ४-१२ [फा. नामेह्]

नावि वर्त. त्री. पु., ए. व. 'न आवे' १७-१० [जुओ आवि. एमां पूर्वे न अव्यय आवतां नावइ. टूंकवातां नावि.]

नासि वर्त. त्री. पु., ए. व. 'नासी जाय, भागी जाय' १८-२ [सं. नश्यति (अदृश्य थाय छे) > प्रा. अप. णस्सइ > मध्य. गुज. नासइ, ने टूंकवातां]

नाहानी वि. स्त्री. 'नानी' २५-६ [जुओ उपर नान्हां; आ नारीजातिए 'ई' आव्यो.]

नांखि वर्त. त्री. पु., ए. व. 'नाखे, फेंके' २९-२९ [नांखि, नाखि बेउ रूप छे. सं. निक्षिपति > प्रा. अप. णिक्खिवइ > मध्य. गुज. नाखइ, नांखइ, ने टूंकवातां (आमां मने सं. नंक्ष्यति > प्रा. णंखइनुं आभाससाम्य लागे छे. मोदी नांघना > सं. लङ्घयतिनो विकल्प सूचवे छे, पण एनो संबंध समझातो नथी.]

नांखी अ. कृ. 'नाखीने' ७-१० [नाख-नांख + ई अ. कृ. प्रत्यय (< प्रा. °इअ > सं. °य)]

नि उभ. अ. 'ने, अने' २-१३ वगेरे [सं अन्यानि > प्रा. अण्णाइं > अप. अन्नइं > मध्य. गुज. अनइं-इ > नइं-इ, पछी टूंकवाई निं- नि]

°नि अ. 'ने., °ना' ३-१७ [सं. नु > प्रा. अप. णं द्वारा 'वितर्क'ना अर्थमां मध्य. गुज. नइ, ने टूंकवाता. भीमना 'प्रबोधप्रकाश 'मां न मळे छे: 'देख-न दुर्बल देह विवेक (१-८९)'. दक्षिणसौराष्ट्रमां आजे नां ('करय-नां') वपराय छे.]

°नि अनुग '°ने' १-१ [सं. *कर्णस्मिन् > प्रा. कण्णम्हि > अप. कण्णहिं > मध्य. गुज. कन्हइं, > नइं, नइ, पछी टूंकवातां. आ अनुग नजीकतावाचक वैदिक सं. कर्णनो विकास छे. छठ्ठीनो अनुग पण आ ज कर्णनो विकास छे. ज्यारे संप्रदान तेमज तादर्थ्यमां, अने गौण कर्म बतावव, कर्म होय त्यारे, आ अनुग लागे छे; संबंध होय त्यारे छठ्ठीना अनुग नउ + सा. ए. व इ लागी मळे छे: कृष्णनि अनेक संतान.]

निगमि वर्त. त्री. पु., ए. व. 'नीवडे' ११-२९ [सं. निर्गम्यते > प्रा. अप. णिग्गमइ > मध्य. गुज. नीगमइ निगमइ, ने टूंकवातां. अहीं रामलाल मोदीए 'मूरखने गमे' पाठ लीधो छे, पण योग्य लागतो नथी.]

નિહુરા પું. 'નહુષરાજા' ૩-૧૨ [સં. નહુષનું ગુજરાતીકરણ.] આ રાજા તપપ્રભાવે ઈંદ્રાસન પામ્યો હતો, એવી પૌરાણિક કથા છે.]

નિચોઈ ભૂ. કૃ. સ્ત્રી. 'નિચોવી' ૬-૨. [પ્રા. દેશ્ય ણિચ્છુઢ, ણિચ્છૂઢ વિ. 'બહાર નીકળેલું' એ અર્થમાં છે, તો સં. નિસ્ -છોટય્ > પ્રા. ણિચ્છોડ 'છોડાવવું' વગેરે અર્થમાં છે. આપણને આ શબ્દો નિચોડ તો આપે; પણ નિચોવું, નિચોવવું, નીચવવુંનું એકદમ સમાધાન ન મળે. સં. નિ+ચ્યુ 'નીચે ટપકવું 'નું પ્રેરક *નિચ્યાવયતિ, 'નીચે ટપકાવે છે' > પ્રા. *ણિચ્ચાવેઇ, *ણિચ્ચાવઇ > મધ્ય. ગુજ. નીચવઇ રૂપ આપે, જે આજે પણ સૌરાષ્ટ્રમાં નીચવે તરીકે પ્રયોજાય છે; પછી સંપ્રસારણને કારણે નિચો-, અને ફરી 'વ્'ના પ્રક્ષેપે નિચોવ-અંગ મળે; અને એના ઉપરથી લક્ષ્યાર્થે નિચોડ (તારવણી) પું.માં આવે.]

નિત્ય (સં.) નપું. 'નિત્યકર્મ' ૧૨-૭ [સં. નિત્યકર્મને બદલે ગુજરાતીમાં એકલું નિત્ય પ્રયોજાય છે તે આટલું જૂનું છે.]

નિદાન (સં.) ક્રિ. વિ. 'નક્કી' ૪-૭ [સં.માં 'કારણ' અર્થ એક છે તેના ઉપરથી વ્યાપક થયેલો ગુજરાતી પ્રયોગ, 'કારણ કે' એ ભાવથી શરૂ થયેલો.]

નિદેશ (સં) પું. 'આજ્ઞા, સૂચન' ૧૧-૭

નિરખી ભ. કૃ. 'ધ્યાનપૂર્વક જોઈને, નિરીક્ષણ કરી જોઈને' ૫-૧૪ [સં. નિરીક્ષ્ય > પ્રા. અપ. ણિરિક્ખિઅ > મધ્ય. ગુજ. નિરખી.

ધ્યાનમાં રાખો કે આજે ગુજ.માં સ્વીકારેલી 'નીરખ' જોડણી વ્યુત્પત્તિથી અશિદ્ધ છે.]

. નિરવાણિ ક્રિ. વિ. 'નક્કી' ૧૮-૫ [સં. નિર્વાણ શબ્દનો નિદાન જેવો ગુજરાતી પ્રયોગઃ 'છેવટે' એવા ભાવથી; પછી માત્ર 'નક્કી'ના ભાવે. અહીં સા. એ. વ.નો ઇ લાગ્યો છે. જુઓ મોદી : *નિરવાણુ*.]

નિરાલુ વિ. પું. 'નિરાળો, અલગ રહેલો' ૨૩-૬ [સં. નિર્-આલયઃ =નિરાલયઃ (બ.વ્રી. ઠેકાણા વિનાનો) > પ્રા. ણિરાલઓ > અપ. ણિરાલઉ > મધ્ય.ગુજ. *નિરાલઉ, ને ટૂંકાયેલું રૂપ*]

નિરાસ વિ. 'નિરાશ' ૧૦-૧૭ [સં. નિરાશઃ > પ્રા. ણિરાસો > અપ. ણિરાસુ > મધ્ય. ગુજ. નિરાસ]

નિર્ઘોખ પું. 'નિર્ઘોષ, અવાજ' ૨૬-૮ [સં. નિર્ઘોષનું ગુજ. ઉચ્ચારણ]

निशि क्रि. वि. 'निश्चयपूर्वक' ६-२१ [सं. निश्चयेन > प्रा. णिच्छएण > अप. णिच्छएं, णिच्छइ > मध्य. गुज. निछि, निसि, निशि.]

नीकल्या भू. कृ. पुं., ब. व. 'नीकळ्या' ९-५ [सं.मां निस् + कल= निष्कल वि.नो एक अर्थ 'ह्रास पाम्यो, घसाई गयो, ओसर्यो' एवो छे; आ शब्दमां 'कला' शब्द छे: 'नीकळी गई छे कला जेनी एवुं.' आना प्रा. *निक्खल->*निकल- द्वारा मध्य. गुज.मां नीकल- धातवंग आवी शके. टर्नरने अनुसरी मोदी अने दवे निष्कलयति सं. रूप आपे छे ते संस्कृतमां आ अर्थमां जाणीतुं नथी. आना करतां सं. निष्कालिक (जेमां जीवन-समय पूरो थयो छे तेवुं) शब्दनी संभावना वधु छे. नीकल + इउ (भू. कृ. प्रत्यय) नीकलिउ, अने पछी टूंकवातां]

नीगवूं वर्त. प. पु., ए. व. 'निर्गमुं, पसार करुं' २८-२ [सं. निर्गमयामि > प्रा. निग्गमेमि, निग्गमामि अप. निग्गमउं > मध्य. गुज. नीगमउं, नीगवँउं > नीगवउं, ने टूंकवातां]

नीपाई-नि अ. कृ. 'निपजावीने' ६-२१ [सं. निष्पाद्य > प्रा. अप. *णिप्पाइअ > मध्य. गुज. नीपाई + नि < नइ < सं. अन्यानि द्वारा अप. अन्नइं थई मध्य. गुज. अनइं-इ > नइं, नइ)] नीपायां भू. कृ. नपुं., ब. व. 'निपजाव्यां, तैयार कर्यां' २९-२७ [सं. निष्पादितानि > प्रा. निप्पाइआणि > अप. निप्पाइआइं > मध्य. गुज. नीपायां.]

नीम पुं. 'नियम, प्रतिज्ञा' ८-६ [सं. नियमः > प्रा. णियमो > अप. णियमु, *णिइमु > मध्य. गुज. नीम. आजे अर्वा. गुज.मां नपुं.मां प्रयोजाय छे]

नीलज वि. 'निर्लज्ज' ६-२१ [सं. निर्लज्जः > प्रा. णिल्लज्जो > अप. णिल्लज्जु > मध्य. गुज. नीलज.]

नीशरि वर्त. त्री. पु, ए व. 'नीसरे, नीकळे' ९-२ [सं. निस्सरति > प्रा. अप. णिस्सरइ > मध्य. गुज. नीसरइ, अने टूंकवातां नीसरि;— पूर्वना तालव्य ईना बळे पछी श्.]

नीशाण नपुं. 'निशान, सवारी के वरघोडाने मोखरे वागतुं वाद्य' ११-६७ *निःस्वानम् > प्रा. *निस्साणं > अप. निस्साणु > मध्य. गुज. नीसाण, नीशाण– पूर्वे 'ई'ने कारणे 'श्.' सं.मां आ शब्द नथी, पण स्वन् धातुने कारणे शक्य छे. प्रा. णिस्सण (पा. स. म.) 'शब्द, अवाज' अर्थमां छे; एटले *णिस्साणनी पण शक्यता छे. फारसी निशान 'चिह्न' साथे आने कशो संबंध नथी.

आ पाछला निशानना आभाससाम्ये अर्वा. गुज.मां हाल निशान उच्चारण ईको-निशानमां थाय छे.]

नीसासा पुं., ब. व. 'निःश्वासो, निसासा' २७-१५ [सं. निःश्वासकाः > प्रा. अप. णिस्सासआ, णीसासआ < मध्य. गुज. नीसासा.]

नुहि क्रि. वर्त. (विध्यर्थ) त्री. पु., ए. व. 'न होय' ७-१४ [सं. भवति > पालि भोति > प्रा. अप. होइ > मध्य. गुज. होइ, हुइ. आमां पूर्वे न आवतां नहुइ, नुहुइ, नुहोइ, अने टूंकवातां नुहि (गुज मां नोःय एवुं उच्चारण आजे छे ते नोहोइ द्वारा छे.]

नून वि. 'न्यून, ओछुं, ऊणुं' १०-१३ [सं. न्यूनमां उच्चारणलाघवे 'य'नो मात्र गुज. लोप.]

°नूं अनुग. छठ्ठीना अर्थमां— २-१४ [सं. *कर्णकम् > प्रा. *कण्णअं > अप. कण्णउं > मध्य. गुज. नउं, पछी लाघव थतां. आ नूंनो विकास अप.ना तणउं द्वारा साधवानो प्रयत्न थयो छे, जेना मूळमां कोई 'तन प्रत्यय (सनातन वगेरेमांनो) तो कोई वळी जेवा सं तनय (पुत्र) शब्द माने छे. परंतु गुज मां आवेलो 'नू' उच्चार मूळमां बेवडो ण्ण मागी ले छे; तो ज ए आवी शके. तणउं उपरथी *णूं आवी शके; एथी डॉ टेसिटोरी, चेटरजी वगेरे वै. सं. 'नजीक' अर्थना कर्ण- शब्दनो समादर करे छे, जुओ आ पूर्वे °नि (< नइ < कन्हइ > अप. कण्णहिं द्वारा.).]

नेह पुं. 'स्नेह' ९-१९ [सं. स्नेहः > प्रा. णेहो > अप. णेहु > मध्य. गुज. नेह, अने देहना देहिना आभाससाम्ये नेहि; अथवा भारदर्शक 'इ' प्रत्यय.]
नेहो २-१६ [छेल्ले स्वरभारने कारणे नेहउ द्वारा]

न्यहालि वर्त., त्री. पु., ए व. 'निहाळे, नीरखे' १६-१० [सं. नि-भालि-यति > प्रा. णिहालेइ, णिहालइ > मध्य. गुज. निहालइ, ने टूंकवातां. आजे पण सौराष्ट्रमां न्याळे रूप प्रयोजाय छे.]

पकवान नपुं. 'पाकी मीठाई, रांधेलुं अन्न' ११-७३ [सं. पक्व-अन्न= पक्वान्ननो अर्वा. विकास]

पखाली भू. कृ. स्त्री. 'पखाळी, धोई' १७-१२ [सं. प्रक्षालिता > प्रा. पक्खालिआ > अप. पक्खालिअ > मध्य. गुज. पखाली]

पगलुं नपुं. 'पगना पंजानी छाप, एवुं जमीनमां पडतुं चिह्न' १६-६ [सं. पदाग्र- > प्रा. अप. पअग्ग- > मध्य. गुज. पाग-, पग-; आ पाछला शब्दने

स्वार्थे ल (< अप. उल्ल) लागतां अंते स्वरभार साथे पगलडं, पछी टूंकचातां.] डॉ. दवे सं. पद्र- कहे छे, पण एनो अर्थ 'पाळो सिपाई' थाय.]

पचव्यूं भू. कृ. 'पकवेलुं, रांधेलुं' २९-३१ [सं. पच् धातुना मध्य. गुज. तत्सम अंग पचने प्रेरकनो अव (< सं. आप) लागे पचव + इउं (भू. कृ. प्रत्यय < सं. इत द्वारा.]

पछि क्रि. वि., नामयोगी, 'पछी' ९-२ [सं. पश्चात् > अप. पच्छइ > मध्य. गुज. पछइ, ने टूंकवातां. आमांना अनुनासिकने कारणे गुज. बोलचालनी भाषामां पछे उपरांत सौराष्ट्रमां पछे जाणीतुं छे]

पछेडी स्त्री. 'पिछोडी, खेस' २८-२१ [सं :*प्रच्छादिकिका > प्रा. *पच्छाइडिआ > अप. पच्छइडिअ मध्य. गुज. पछेडी. आ शब्दनो पिछोडी एवो विकल्प पण सं. पिच्छना आभाससाम्ये आव्यो जणाय छे. 'ओ' आगंतुक मात्र छे]

पटराणि स्त्री. 'अभिषिक्त मुख्य राणी' ६-२४ [सं पट्टराज्ञिका > प्रा. पट्टराणिआ > अप. पट्टराणिअ > मध्य. गुज. पटराणी- आमां प्रा.मा ण्ण् थवो जोइये ते नथी थयो; ए रीते ए प्रक्रियानो आ अपवाद छे.]

पठवी भू. कृ. स्त्री. 'पाठवी, मोकली' २९-३७ [सं. प्रस्थापिता > प्रा पट्ठाविआ, पट्ठविआ > अप. पट्ठविअ > मध्य गुज पाठवी, पठवी. अर्वा. गुज.मां पाठवयुं रूढ छे.]

पडखि वर्त. त्री. पु , ए. व 'प्रतीक्षा करे, राह जुए' १४-३ [सं. प्रतीक्षते > प्रा अप. पडिक्खइ > मध्य गुज पडखइ, अने टूंकवाईने]

पडि वर्त. त्री पु. ए व 'नंखाय' ८-२० [सं. पतति > प्रा. अप. पडइ > मध्य. गुज. पडइ, अने पछी टूंकवाईने.] पडाविउ भू. कृ. (प्रेरक), पुं. 'पडवानुं कराव्यो' १३-२० [सं *पतापितकः > प्रा पडाविअओ > अप. पडाविअउ > मध्य गुज. पडावियउ, ने टूंकवाता]

पण, पणि उभ. अ. 'य, वळी' ९-१२ [सं पुनर् > अप. पुणु > मध्य. गुज. पणि अने पछी पण्य पण. आमां 'इ' [सं अपि > प्रा. अप. पि. > इ उमेरायो छे.]

पण (सं.) पुं. नपुं. 'होड, दाव' १२-४ [सं.मां पुं. छे, पण गुज.मां नपुं.मां आव्यो छे. एना प्रक्षेपे प्रण ने पछी पोण, प्रोण पण जाणवामां छे.]

*पणूं प्रत्यय- भाववाचक ६-२४ वगेरे [सं. *त्वन- > प्रा. अप. *प्पण-

मध्य. गुज. °पण- अने अंते स्वरभारथी °पणउं, ने टूंकवातां. सं.मां त्व अने त्वन बेउ प्रत्यय भाववाचक छे: वडप्पणु (अप.) ए वृद्धत्वन- उपरथी आ. हेमचंद्रे आप्यो छे (सि. हे. ८-४-३६६]

पद्मिनी स्त्री. 'पद्मिनी, चार प्रकारनी स्त्रीओनी प्रथम प्रकारनी सुलक्षण स्त्री' ९-२ [सं. पद्मिनीमां विश्लेषथी अर्वा. तद्भव]

पधारु आज्ञार्थ. बी. पु., ए. व. 'सिधावो, जाओ' १३-१७ [आवती वखते तेमज जती वखते— बेउ वखते — 'आवो' अने 'सिधावो' ए बेउ अर्थमां आ प्रयोजाय छे: सं. पादौ धारयत, > मध्य. गुज. पाउ धारउ, अने पछी टूंकवातां पधारउ, फरी टूंकवातां पधारु. गुज. हिंदी वगेरेमां मानवाचक अर्थमां 'आववा-जवा' माटे व्यापक रीते प्रयोजाय छे. आ उपरथी पधरामणी (प्रे.पधरावर्वु उपरथी.) 'हिव तुम्हि मई सु घरि पाउधारो' (पंचपंडव रास– मोदी– १०५) पधराव्या भू. कृ. (प्रेरक)-पुं. 'आवकारथी बोलावी बेसाड्या' २९-६ पाउ धराविआनुं टूंकवाई. धार + आय प्रेरकनो (सं. °आप–मांथी) लागतां पूर्व स्वर ह्रस्व थयो छे.]

पनुहुतु वि. पुं. 'पनोतो, मांगलिक' १९-६ [अहीं संबो. पनुहुता. आ शब्द सं. प्रश्नभूत- > प्रा. *पण्हहुत्त- अथवा सं. प्रश्नोक्त- > प्रा. पण्हुत्त- मांथी नीकळ्यो संभवे छे: 'प्रश्नरूप थयेलो' या 'प्रश्नथी कहेवायेलो'— एटले के लोकोने जेनां शुभ काम वगेरे जाणवानी इच्छा होय तेवो'–. पुरुष अने स्त्री बंने माटे ए वपराय छे. शनिनी महादशा माटे वपरातो पनोती शब्द पण आनो विकास *प्रश्नोत्तिका > प्रा. पण्हुत्तिआ > अप. पण्हुत्तिअ > मध्य. गुज. पनुहुती आम आवे. एने विशे लोकोनी जिज्ञासा खूब होई प्रश्नोक्ति थतां पछी 'शनिनी महादशा' माटे व्यापक थयो लागे छे.]

पयोहकी स्त्री. 'पयोष्णी नदी' १५-१३ [सं. पयोष्णीनुं भ्रष्ट रूप]

परऊत (?) १४-१०

परठ पुं. 'नक्कीपणुं, चोक्साई; शरत' २२-१२ [सं. परिस्थापः > प्रा. परिट्ठाव-, परिट्ठव- > मध्य. गुज. परठ. आ ज मूळथी परठवउं मळे ने बीजां रूप थाय.] परठी अ. कृ. 'नक्की करीने' १९-५ [अ. कृ.नो ई प्रत्यय लागतां] परठ्यु भू. कृ. पुं. 'नक्की कर्यो' २-१२ [भू. कृ.नो इउ लागतां परठिउ, ने पछी टूंकवातां.]

परति अ., नामयोगी 'प्रति, तरफ' ११-८४ [अर्वा. तद्भव रूप सं.

तिनुं; अर्वा. गुज.मां प्रत्ये विकस्युं छे.]

परतक्ष वि. 'प्रत्यक्ष' ११-६८ [सं. प्रत्यक्षनुं अर्वा. तद्भव रूप]

परधान पुं. 'प्रधान, मंत्री' १२-६ [सं. प्रधाननुं अर्वा. तद्भव रूप]

परवरु आज्ञार्थ, बी. पु., ब. व. 'परवरो, जाओ' ८-३ [सं. *परिवरत > प्रा. परिवरहु > अप. परिवरहु > मध्य. गुज. परवरउ, ने संकोचातां. सं.मांना 'घेरावुं'मांथी 'जवा'नो अर्थ विकसयो छे. अर्वा. गुज.मां 'नवरा थई रहेवुं' माटे परवारवुं ए कर्मक-प्रेरक रूप छे.]

परवार पुं. 'परिवार, कुटुंबकबीलो, नोकर-चाकर' १०-४२ [जुओ उपरनो परवरु शब्द. आ सं. परिवारनुं अर्वा. तद्भव रूप.]

परशेवु पुं. 'प्रस्वेद, पसीनो' ११-५६ [सं. प्रस्वेद-ना उत्तर अंगनो प्रा. सेओ > अप. सेउ द्वारा अंते स्वरभारथी विकास ने पूर्व अंगनो गुज. विश्लेष. तालव्यता आगंतुकः परसेवउ, परशेवउ, ने पछी टूंकवातां.]

परहरि वर्त. त्री. पु. ए. व. 'परहरे, तजे' १६-२८ [सं. परिहरति > प्रा. अप. परिहरइ > मध्य. गुज. परहरइ, ने पछी टूंकवातां]

परि, पिरि स्त्री., त्री. वि., ए. व. 'प्रकारे, रीते' ४-१ [सं. प्रकारेण > प्रा. पयारेण > अप. पयरें, > मध्य. गुज. पइरि (स्त्री. मां), अने टूंकवातां पिरि, परि; आगळ वधतां पेरय, पेरये]

पलटाणु भू. कृ. (कर्मणि), पुं. 'पलटायो, बदलायो १२-१४ [सं. पर्यस्त- > प्रा. अप. पल्लट्ट- > मध्य. गुज. पलट- धातुअंग मळ्युं, एने सं. मान, दान, म्लान वगेरे प्रकारनां भू. कृ.मांना न प्रत्ययना व्यापक विकासे आकारांत अंगवाळां धातुअंगोने भू. कृ. नो आण प्रत्यय मळ्यो. आजे पण सौराष्ट्रमां कर्मणि-भावेनां साधित कृदंत आ रीते बने छे, जे मध्यकाळमां साहित्यिक भाषामां व्यापक स्वरूपे प्रयोजातां. मध्य. गुज. पलट उपरांत पालट–अंग पण मळे छे. बे वच्चे भेद एटलो ज के पहेलामां अकर्मक अर्थ छे, बीजामां अकर्मक अने सकर्मक बंने अर्थ छे.]

पलि वर्त., त्री. पु., ए. व. 'पळे, जाय' ७-६ [सं. (परा + अयुतुं) पलायते > प्रा. पलायइ, पलइ > अप. अने मध्य. गुज. पलइ पछी टूंकवातां. ल्नो ळ्ई अर्वा. गुज.मां 'ळ' थयो छे.]

पंचास वि. '५० नी संख्यानुं' १०-२७ [सं. पञ्चाशत्नुं प्रा. रूप; मूळमां स्त्री. नाम हतुं ते गुज.मां विशेषण बन्युं. अर्वा. गुज.मां पचास,–सा]

पंथ पुं. 'मार्ग' ७-५. [सं. पथिन्‌ची प. वि., ए. व. पन्थाःनुं टूंकवातां गुज. रूप]

पाऊं वर्त., प. पु., ए. व. 'पान कराvुं, पिवडावुं' १५-१७ [सं. पा धातुनुं कर्मरूप-प्रेरक पाययामि > प्रा. पाएमि, पामि > अप. पाउं > मध्य. गुज. पाउं. पाऊं (अंते स्वरभारथी भ्रांतिए)]

पाखलि क्रि वि., नामयोगी. 'फरते, चोगम' ४-१० [सं. पक्ष- (बाजु) > प्रा पक्ख + द्रविडी इल्ल लागतां *पक्खिल्ल- > मध्य गुज. पाखिल्ल-, पाखल-, ने सा. ए. व.नो इ लागतां. अर्वा. गुज.मां आ शब्द बच्यो नथी.]

पाखि नामयोगी. 'पाखे, विना' ५-१२ [सं. पक्ष- > पक्ख- मध्य. गुज. पाख-मां स्री. वि. ए. व नो इ लागतां. तद्दन अर्वा. गुज.मां हवे आ वपरातो नथी.]

पाग पुं. 'पग' ११-५७ [सं. पदाग्रः > प्रा. *पअग्गो > अप. *पअग्गु > मध्य. गुज. पाग, पग]

पाछूं वि. 'पाछळ रहेलुं–थयेलुं; वळतुं, पाछली बाजु वाळेलुं' १४-३ [सं. पश्चात् > प्रा. पच्छा उपरथी मध्य. गुज.मां विशेषण थतां पाछउं, ने पछी टूंकवातां] २२-१ मां पाछूं 'सुधी'ना अर्थमां छे.

पाजी (फा.) वि. 'लुच्चुं' ११-३७

पाणी नपुं. 'जळ' ६-२४ [सं पानीयम् > प्रा. पाणीअं > अप. पाणिउ > मध्य.गुज. पाणी] पाणी रिहि- रूढिप्रयोग– 'स्वत्व, जोम, वट रहे'

पाथरि वर्त., त्री. पु., ए व 'पाथरणुं विस्तारे, बिछावे' ८-१७. [सं. *प्रस्तरति > प्रा. अप. पत्थरइ > मध्य, गुज. पाथरइ, ने टूंकवातां]

पाधरु वि. पुं. 'पाधरो, सीधो' १५-१२ [प्रा देश्य पद्धर-वि. 'सीधुं' शब्द छे. आना मूळमां द्रविड मूळनो सं. पद्र– 'वसाहत, गाम' नी शक्यता छे. भागोळनी जमीनने पाधर, पादर कहेवामां आवे छे तेनुं मूळ पण पद्र छे–पद्दर थई अंते स्वरभारथी पाधरउ, ने पछी टूंकवातां पाधरु]

पामि वर्त, त्री. पु., ए. व. 'प्राप्त करे, मेळवे' ३-४ [सं. प्राप्नोति > प्रा. अप. पंमइ > मध्य. गुज. पामइ, अने टूंकवातां] पाम्यां-भू. कृ नपुं., ब. व. ३-१६ [पाम–अंगने भू. कृ.नो इअ प्रत्यय मळतां पामिउं, ते पाम्यु द्वारा ब. व. पाम्यां]

पाय पुं. 'पग' १६-२४ [सं. पादः > प्रा. पाओ > अप. पाउ > मध्य. गुज. पाय]

पारखुं नपुं. 'परीक्षण, कसोटी' ८-१८ [सं. परि+ईक्ष्‌ना परीक्ष- प्रा. परिक्ख- द्वारा मध्य. गुज. परख, पारख-, ने नाम बनतां पारखउं, टूंकवातां पारखुं]

पालखी स्त्री. 'म्यानो' ११-५१ [सं. पर्यङ्किका > प्रा. पल्लंकिआ > अप पल्लंकिअ > मध्य. गुज. पालखी (आमां अनुनासिकतानो लोप ने महाप्राणतत्त्वनुं उमेरण थाय छे अने 'पलंगडी'थी जुदुं पडे छे. अर्वा. गुज. सुधी ळ्‌ सचवायेलो होई मूळमां केवळो ल्‌ समजाय छे.]

पालीइ वर्त. कर्मणि. त्री. पु. ए. व. 'पाळवामां आवे' ३०-१ [सं. पा (रक्षण करवुं)ना प्रेरक पाल-नुं कर्मणि रूप पाल्यते > प्रा. > पालिज्जइ > अप. *पालीजइ > पालीअइ > पालिअइ ने मध्य. गुज. पालीइ. अर्वा. गुज.मां पाळ धातुना उपरथी ऊलटी प्रक्रियाए पळवुं मळ्युं छे.]

पालउं वि. 'पगपाळुं' १३-२४ [सं. पालकम्‌ > प्रा. पालअं > अप. पालउं > मध्य. गुज. पालउं, ने टूंकवातां. 'पगे चाली रक्षण करनारो सिपाई' अने पछी 'पगे चाली जनार' ए अर्थ विकस्यो छे. जुओ ३०-२७ 'सैनिक.']

पास नामयोगी. क्रि. वि. 'पासे' ५-६ [सं. पार्श्वे > प्रा. पस्से > अप. परिस > मध्य. गुज. पासि, 'इ' तालव्यने कारणे पासि > पाइय > पास. स्वरभार अंते होय त्यारे पासइ > अर्वा. गुज पासे] पासि ६-१६

पासुं नपुं. 'पासुं, पडखुं' ११-९८ [सं. पार्श्वकम्‌ > प्रा. पस्सअं > अप. पस्सउं > मध्य. गुज. पासउं, अने उपरना पास- अंगना आभाससाम्ये पासउं पण, पछी टूंकवाता]

पासि नामयोगी, क्रि. वि. 'पासे' ३-१६ [जुओ उपर पास- पासि वगेरे.]

पासूं नपुं 'पडखुं; (ला.) हूंफ' १३-२१ [जुओ उपर पासूं.]

पाहाडी स्त्री. 'पहाडनो प्रदेश' ६-१६ [सं. *पाषाणिका > प्रा. *पाहाणिआ > अप. *पाहाणिअ > मध्य. गुज. पाहाडी (पत्थरोनो समूह, डुंगर-पर्वतनो प्रदेश- पाछळथी अनुनासिकता लुप्त थई छे- अर्थफेर थवाने कारणे, अने तेथी पाहाण अने पाहाड बे शब्द मळ्या छे. उच्चारण पाःण, पाःड- (गुज. जोडणी पहाण, पहाड).]

.पांख स्त्री. 'पक्ष, बाजु' ६-१२ [सं. पुं. पक्ष- > प्रा. पंख- उपरथी मध्य. गुज.मां स्त्री. पांख; आनो विकास पांखियुं वगेरे]

पिछ नपुं. 'पीछुं' ५-६ [सं. पिच्छ उपरथी मध्य. गुज. पीछ, पिछ; अं स्वरभारथी पीछउं > पीछुं]

पिठु भू. कृ., पुं. 'पेठो, दाखल थयो' ११-९८ [सं. प्रविष्टकः > प्रा. पइट्ठओ > अप. पइट्ठउ > मध्य. गुज. पइठउ, ने टूंकवातां पिठु]

पिआइ वि. 'पितराई, पितृपक्षे एक वंशनुं' ११-९८ [सं. पितृने गुज. आई लागे.]

पिरि ७-१०, २३-१८ जुओ परि. [आनो 'प्रकार' अने 'प्रकारे' एम बेउ अर्थ थाय, जेमां पाछलामां त्री. वि. ए. व. प्रत्यय 'इ' छे.]

· पिहिरण नपुं. 'पहेरण, कूडतुं' २०-१ [सं परिधानम् > परिहाणं, परिहणं, पहिरणं > अप. पहिरणु > मध्य. गुज. पहिरण अने आदिश्रुतिमां 'इ'ना प्रक्षेपे पिहिरण. आम सं. परिधा धातुए परिह अने पहिर धात्वंग प्राकृतमां ज 'थांप्यां छे.] पिहिरामणी स्त्री. 'पहेरामणी' ११-७३ [सं. परि + धाना प्रेरक परिधापन- उपरथी *पहिरावण- > अप. *पहिरावँण- > मध्य. गुज. पहिरामण- अंग उपरथी नारी जातिनो 'ई' लागतां] पिहिरी अ. कृ. 'पहेरीने' १६-४ [मध्य. गुज. पिहिर धात्वंगने अ. कृ.अंनो 'ई' लागे] पिहिरु आज्ञार्थ. बी. पु., ब. व. 'पहेरो' २५-१२ [उपरना अंगने आज्ञार्थ बी. पु. ब. व.नो उ (< अप. हु) लागे,ने पछी संकोचातां] पिहिरयां भू. कृ. नपुं. ब. व. 'पहेर्यां' ११-५० [उपरना पिहिर धात्वंगने (कर्मणि) भू. कृ.नो 'इउं' लागतां पिहिरिआं > पिहिरयां]

पिहिलूं वि. 'पहेलुं, प्रथम' ११-५२ [सं. प्रथ- अंगने द्रविडी इल्ल- प्रत्यय लागीने प्रा. *पहिल्ल (सं. *प्रथिल) नो मध्य.गुज. विकास पहिलउं, पिहिलउं, ने पछी संकोचातां पहिलूं, पिहिलूं]

पीडाणु भू. कृ. (कर्मणि), पुं. 'पीडायो' २८-३८ [सं. पीड- धात्वंगने मध्य. गुज.नो भू. कृ.नो व्यापक आण- प्रत्यय (सरखावो सं. म्लान, ग्लान वगेरे) लागतां पीडाणउ, ने टूंकवातां. जुओ आ पूर्वे पलटाणु परनी नोंध.]

पीहर नपुं. 'पितृघर, पीयर' १३-४ [सं. पितृगृहम् > प्रा. पिअहरं > अप. पिअहरु > मध्य. गुज. पीहर]

पुकार पुं. 'पोकार, बूम, अवाज' २२-३ [सं. पुत्स्कारः > प्रा. पुक्कारो, पोक्कारो > अप. पुक्कारु, पोकारु, > मध्य. गुज. पुकार, पोकार. आना उपरथी पोकारवुं क्रियारूप पण गुज.मां मळ्युं; एम पोकारणी पण.]

पुढीइ वर्त. कर्मणि; त्री. पु., ए. व. 'पोटवामां आवे, सुवामां आवे' ८-१७ [सं. प्रवर्धते ('प्रकर्ष पामे छे' एम मानवाचकमांथी) > प्रा. पवड्डइ, *पउड्डइ > मध्य. गुज. (पोटवाना अर्थमां) पउडइ, अने टूंकवातां पुढइ, आमां पुढ-धात्वंगने 'ईइ लागतांने]

पुराणिक वि. 'पौराणिक आख्यान- कथा कहेनार, पुराणी' ८-११ [सं. पौराणिक-नुं गुज. लाघव]

पुहुच अ. क्रि. 'पहोंचवुं' ११-१४, २८-३० [सं. प्र-भूत-नो प्रा. पहुच्च-ए उपरथी मध्य. गुज.मां पहुचइ, पुहुचइ, ने टूंकवातां पहुचि ११-१४] पुहुचाइं वर्त. प्रेरक. प. पु., ए. व. 'पहोंचाडुं' २८-३० [आमां पुहुच- धात्वंगने अप. भमाडइ वगेरेमां छे ते °आड प्रेरक प्रत्यय लागतां ने वर्त. प. पु., ए. व.नो उं लागतां पुहुचाडउं, पछी टूंकवातां]

पूछिअं= पूछिउं भू. कृ. 'पूछ्युं' ८-५ [आवां °अं धरावनां रूप पूछिउं प्रकारनां वैकल्पिक रूप जोडणीमां वपरातां हतां. जुओ टेसिसटोरी.] आना मूळमां सं. पृष्-पृच्छ् धातु छे. प्रा. पुच्छइ द्वारा मध्य. गुज.मां पूछ-अंग मळ्युं तेनां इउं वगेरेथी बनेला भू. कृ. वगेरे.] पूछ्रं = पूछ्यूं २३-२६; जुओ पुच्छिउं ज उपर. आ एनो संकोच छे.]

पूजु = पूज्यु भू. कृ. पुं. 'पूज्यो' ४-१६ [सं. तत्सम पूज- धात्वंगने मध्य. गुज. इउ भू. कृ.नो लगाडी पूजिउ, ने पछी टूंकवातां]

पूठि स्त्री. 'पूंठ' १३-१७ [सं. *पृष्टिः > प्रा. पुट्ठी > अप. पुट्ठि > मध्य. गुज. पूठि; आ शब्दमां अनुनासिकना उमेरणे पूंठि पण]

पूतली स्त्री. 'पूतळी' ११-४८ [सं. पुत्रिका > प्रा. पुत्तलिआ > अप. पुत्तलिअ > मध्य. गुज. पूतली. सं.मां आकारमात्रथी पुत्रिका शब्द व्यापक बन्यो छे.]

पूरण वि. 'पूर्ण' ४-५ [सं. भू. कृ. पूर्णनो अर्थ, तद्भव, विश्लेष द्वारा]

पूंठ, पूंठि ७-९; जुओ पूठि.

पोठी पुं. पोठियो, भारवाहक बळद' ३१-१३ [सं. पृष्ठिवाहिकः > प्रा.

*पुट्टियाहिओ, *पुट्टिआहिओ, * पुट्टाहिओ, *पुट्टहिओ > *पुट्टिओ > अप. पुट्टिउ > मध्य. गुज. पोटी. अंते विशेष स्वरभारथी पोटियो अर्थ. गुज.मां मळ्यो छे. पोठियाओना समूहने पोठ्य कहे छे : ' वणजार ']

पोतिं स्व. सर्व. ' पोते ' २५-१२ [सं. *आत्मात्मा > प्रा. *अप्पोत्ता > अप. *अप्पोत्तु > मध्य. गुज. पोत अने स्त्री. वि. ए. व. ना ' इ ' प्रत्यये पोतइ > पोतिं. पछी ए मूळ शब्द स्त्रीत्वराई एनां बीजां रूपाख्यान पण सधाय छे. जुओ टेसिटोरी. डॉ. दवे सं. आत्म-त्वच सूचवे छे, जेनो पण प्रा. *अप्पोत्त– थाय. परंतु गुज.मां अप्पोप्पु द्वारा– ' आपोप ' अंग मळ्युं ज होई डॉ. टेसि- टोरीए कहेलो विकास वधु स्वाभाविक छे.]

पोतिं वर्त. त्री. पु. ए. व. ' पहोंचे, आवी मळे ' १९-१२ [सं. प्र-भूत उपरथी पहुच अने पहुत्त- बंने मळे छे. एमांथी पुहुतइ, पुहुतइ थई मध्य. गुज.मां पोहोतइ,ने टूंकवातां पोतिं. आमां सौराष्ट्रमां आजे पण पोस्युं बोलाय छे.]

पोलि स्त्री ' (पोळनो) दरवाजो ' २९-३ [सं. प्रतोली > प्रा. पओली > अप. पओलि > मध्य. गुज. पोलि. आ शब्द गुजरातीमां दरवाजानी अंदरनां आखा लत्तानो वाचक बन्यो छे, ज्यारे राजस्थानीमां रकारना पुन:स्थापने प्रोल्य हजी पण दरवाजानो वाचक छे.]

प्राणी पु. ' प्राण, आत्मा ' ८-८ [सं. प्राणी–' प्राणयुक्त–देहधारी 'मांथी अर्थसंकोच. प्राणियो = जीवात्मा सरखावो.]

प्रीउ पुं. ' प्रिय, पति ' १२-१३ [सं. प्रियः > प्रा. पिओ > अप. पिउ ने प्रिउ पण (रकारना फरी प्रवेशे) > मध्य. गुज.मां पिउ, प्रिउ, पीउ, प्रीउ.]

प्रीछवा = प्रीछववा सा. कृ.नुं विभक्त्यंग (' माटे 'ना अध्याहारे) ' प्रीछव- वा, प्रतीति करावबा, वाकेफ करावबा ' १-२ [मध्य गुज. प्रीछ-नो अर्थ जाणवुं थाय छे अने ए, डॉ. दवे बतावे छे तेम, स. परीक्षते > प्रा. *परिच्छइ > मध्य. गुज. *परीच्छइ > प्रीछइ आम आवे. ए पछी प्रेरक अंग प्रीछव—जेना उपरथी सा. कृ.नो वउं लागतां प्रीछववउं ने मध्य.गुज.मां प्रेरकनो बचेनो ' व ' पद्यमां लुप्त पण थतो होई प्रीछवउं–एनुं विभक्ति-अंग प्रीछवा (माटे)] प्रीछवी अ. कृ. ' प्रीछवीने, ' ' वाकेफ करीने ' १०-६ [अ. कृ.नो ' ई ' लगाडीने]

प्रूढ वि. ' प्रौढ ' २०-११ [सं. प्र-वह् ना भू. कृ. प्रौढनुं गुज. लाघव]

प्रेमदा स्त्री. ' प्रमदा, जुवान मस्त स्त्री, जोबनवती ' ५-५ [सं. प्रमदा नो सं. प्रेम शब्दना आभाससाम्ये थयेलो गुज. विकास]

प्रेर्युं भू. कृ. नपुं. 'प्रेर्युं, प्रेरणा करी' १६-११ [सं. प्र-ईर्=प्रेर् धातुनो तत्सम उपयोग करी मध्य. गुज.नो भू. कृ.नो इउं लागये प्रेरिउं, ने पछी टूंकवातां]

फणधर (सं.) पुं. (वि.) 'फणीधर सर्प' १८-१८ [सं. फणाधर के फणधर तत्सम]

फाल्यु भू. कृ. पुं. 'फाल्यो' २८-१४ [सं. फल् धातुनो अर्थविकास थये फलयते > प्रा. फलइ > मध्य गुज. फालइ आम फाल- धात्वंग मळे छे. एनुं इउ लागी भू. कृ. फालिउ, एनुं टूंकवायेलुं रूप; गुज.मां 'ऌ' उच्चारण होई मूळमां बेवडो ल अनिवार्य छे. वस्त्रवाचक फाळ शब्द जुदो विकास छे.]

फिरी अ. कृ, क्रि. वि. 'फरीने, फरीथी' १३-१२ [सं. स्फुर् अने स्फर् ए बेउ धातु मळे छे. स्फुरति के स्फरति उपरथी प्रा.थी मध्य. गुज. सुधी *फरइ, फिरइ मळे; फुरइ तो छे ज. फिर–ने अ. कृ.नो ई (< प्रा. अप 'इअ > सं. °य) लागतां फिरी. आ पाछो क्रि. वि. तरीके पण प्रयोजाय छे. अर्वा. गुज.मां फरी.]

फूल्यु भू. कृ. पुं 'पुष्पित थयो, फूलो पाम्यो' २८-२४ [सं. फुल्ल् धातु 'खीलवुं' अर्थमां छे. स्वरूप उपरथी आ कोई प्रा. धातुरूप ज लागे छे, जेनो संबंध पण सं. स्फुर् धातु साथे शक्य छे. सं. भू. कृ. फुल्लितः > प्रा. फुल्लिओ > अप. फुल्लिउ अने मध्य. गुज. फूलिउ; एनुं टूंकवाता]

फेर पुं. 'तफावत' १०-१८ [जुओ फरी. एना प्रेरक फेरव- उपरथी नाम-विकास. श्री. मोदी *स्फेरयति मूळ आपे छे, पण एवुं रूप जोवा मळतुं नथी.]

बकी अ. कृ 'बोलीने' ८-२१ [ध्वन्यात्मक आ धातु प्रा. देश्य बुक्क 'गर्जना करवी' साथे मळतो छे, अने हिंदी–मराठी वगेरेमां पण मळे छे. अप. प्रा. भूमिकामां जोवा नथी मळ्यो. 'बकवउं' धातु मूळने अ. कृ.नो 'ई' लागतां.]

बलवंत वि. 'बलवान' १५. ७ [सं. बलवत्नुं प्रा. अंग बलवंत अकारात छे, तेनो प्रा. तत्समप्रयोग.]

बाओलियु पुं 'बावळनुं झाड' १८-७ [सं. बकुल (बोरसली-वृक्ष) शब्द साथे आनो संबंध छे के नहि ए कहेवुं मुश्केल छे. देश्य मूळ *बाउल- जणाय छे, जे बावळ- अर्वा. गुज.मां आपे. उपर इउ स्वार्थे लाग्यो छे (< सं. इक) = 'बावळियो' अर्वा. गुज.]

बालि वर्त. (प्रेरक) त्री. पु., ए. व. 'बाळे, सळगावे, जलावे' ८-९

[सं. *ज्वलति > वळइ धातु छे जेनुं कर्मक–प्रेरक *वाल- अंग छे. मूळमां एकवडा 'ल'ने कारणे अर्वा. गुज.मां वळवुं– वाळवुं. प्रा., अप., मध्य. गुज. *वालइ; टूंकवातां]

वाली स्त्री. 'बालिका; सुकुमार स्त्री' १७-१२ [सं. बालिका > प्रा. बालिआ > अप. बालिअ > मध्य. गुज. बाली]

बाहरि क्रि वि., नामयोगी 'बहार' २३-८ [सं. बहिर् उपरथी मध्य. गुज. विकास: बाहिर + इ स. ए. व. (प्राकृतमां बहि अने बाहि बंने रूप मळे छे.) = बाहिरि > बाहरि > बाहारि पण]

बांध्या भू. कृ., पुं., ब. व. 'बांधी लीधा, जकड्या' ४-७ [सं. बन्ध् धातुना *बन्धित– भू. कृ. उपरथी > प्रा. बंधिआ > मध्य. गुज. बांधिआ- टूंकवातां.]

बि वि. 'बे, २ नी संख्यानुं' ४-७ [सं. द्वे > प्रा. अप. बे > मध्य. गुज. बे, बि]

बिठा भू. कृ., पु. ब व. 'बेठा' २-१६ [सं. उपविष्टकाः > प्रा. उवइट्ठआ > अप. बइट्ठआ > मध्य. गुज. बइठा, ने टूंकवातां] बिठु ए. व. ११-५० (उपर मुजब ज बइठउ थये टूंकवातां)

बिढूं नपुं. 'बहेडांनुं झाड' २८-२४ [सं. बिभीतकम् > प्रा. बिहीडअं > अप. बिहिडउं > मध्य. गुज. बिहिडउं, ने पछी संकोचातां 'ड्'ना पूर्व महाप्राण साथे एकभाव पामतां 'ढ्' थये.]

बिशी अ. कृ 'बेसीने' ९-१८ [जुओ उपर बिठा. बइस– अंगने अ. कृ.नो ई लागतां ने ए तालव्य ईने लई तालव्य श् थतां; बीजुं रूप बिसी वगेरे]

बिसारिया भू. कृ. (प्रेरक), पुं. ब. व. 'बेसाड्या, बेसार्या' ९-७ [जुओ उपर बिठा; बइस अंगने स. *कार > प्रा. आर द्वारा मळेल प्रेरकना आर प्रत्ययथी बइसार अंग– एने भू. कृ नो इअ- लागतां बइसारिउ; ब. व. बइसारिआ,– 'या, ने पछी टूंकवातां] बिसारी अ. कृ. 'बेसाडीने' १२-१० [उपर मुजब बइसार अंगने अ. कृ.नो ई लागतां बइसारी, ने पछी टूंकवातां]

बिसीइ वर्त (कर्तरि), प. पु., ब. व. 'बेसिये' १४-६ [उपर मुजब बइस अंगने कर्मणि त्री. पु., ए. व नो ईइ प्रत्यय लागी बइसीइ, पछी टूंकवातां. अहीं आ कर्मणि रूप कर्तरि अर्थमां प. पु., ब व.मां वपरातुं जोवा मळे छे– ए सूचक छे.]

बिहितु वर्त. कृ., पुं. 'बीतो' ११-८७ [सं. बिभीते > प्रा. विहइ छेक मध्य. गुज. सुधी. आम बिह– अंगनुं बिहि थया पछी °तु प्रत्यय वर्त. कृ.नो पुं.मां]

बिहिडु पुं. 'बहेडानुं झाड' ११-३४ [जुओ उपर बिहूं. अहीं ह्–इ जुदा रह्या छे.]

बिहिन स्त्री. 'बहेन' ११-९० [सं. भगिनी > पा. बहिणी > अप. बहिणि > मध्य. गुज. बहिन, बिहिन; आमां णनो न् थाय छे ए चालुथी सामान्य अपवाद छे. कच्छीमां भेण स्वाभाविक छे.]

बीजु वि. पुं. 'बीजो' ४-५ [सं. द्वितीयकः > प्रा. बिइजओ > अप. बिइजउ > मध्य. गुज बीजउ, ने टूंकवातां]

बीहामणूं वि. 'बिहामणुं, भयकारक' १६-२२ [जुओ उपर बिहितु. बिह अंगने °आमणउं (> सं आप-प्रेरक प्रत्ययनो विकास) लागतां बिहामणउं, ने टूंकवातां बिहामणु. आदिश्रुतिनो दीर्घरूपे लेखनभेद मात्र.]

बीहाबि वर्त. (प्रेरक), त्री. पु., ए. व. 'बिवडावे' १६-२६ [उपर मुजबना बिह- अगने प्रेरकनो °आव (< स आप.) लागतां बिहावइ, ने पछी टूंकवातां अने आदिश्रुति निरर्थक दीर्घ लखाता.]

बुधि स्त्री. 'बुद्धि' ११-५० [सं 'बुद्धि' नो अर्वा. मात्र विकास]

बुद्धिमान नपु 'बुद्धिनुं माप' ३०-५३ [सं. बुद्धि + मान (= माप)नुं अर्वा. रूप]

बुहि, बुहे वि. 'बेउ' ३०-४८, ९-२० वगेरे [सं. द्वे + खलु > प्रा. बे-खु, *बे-हुनो मध्य. गुज.मां बेहू अने बिहूमांथी पूर्वश्रुतिमां उत्तरना उनो प्रवेश थता बुह, अने पछी भारदर्शक इ लागता बुहि, एना विकासे बुहे.]

बुंब स्त्री. 'बूम' १७-४ [प्रा. देश्य बुंबा स्त्री. > अप. बुंब; पछी गुज.मां मात्र सानुनासिक उच्चारण बुँब.]

बुडतो अव्ययरूप सा. ए. व. 'डूबतां' १६-१७ [प्रा. दे. बुड्ड धातुअंगने वर्त. कृ नो मध्य. गुज. 'त' लागता बुडत–अने सतिसप्तमीना प्रयोगे अव्ययात्मक स. ए. व. प्रत्यय ओं (< अप. हां < स. स्मात् पाचमी ए. व.नो)

बूंब जुओ उपर बुंब. २१-१२.

बेह, बेहू, बेहि जुओ उपर बुहि, बुहे : ३-१५, १६; ७-१२.

बोर नपुं., स्त्री. 'बोरडी,' बोरनुं झाड' १८-७ [सं. बदरी > प्रा. बअरी > अप. बअरि > मध्य. गुज. बउरि > बोरि > बोर. हिंदीमां बेर मळे छे ते अप. बअरि > बयरि द्वारा. यनो स्वाभाविक क्रममां इ थये.]

बोला = बोल्या भू. कृ., पुं., ब. व. बोल्या. बया ' ४-१ [सं. ब्रू धातुना कोई विकासमां प्रा. बोल्ल– धात्वंग मळे छे. भू. कृ. बोल्लिअ– > मध्य. गुज. बोलिअ–ने प. वि. ब. व. नो आ उमेरातां बोलिआ > बोलिया > बोल्या, ने 'य्' ना लोपे.] बोले. वर्त., त्री. पु., ए. व. 'वदे' < [प्रा. बोल्लइ > मध्य. गुज. बोलइ, ए टूंकवातां बोलि अने बोले. आ पाछलुं छेक अर्वाचीन बनी गयुं छे]

भइ, भै पुं. 'भाई' ६-२ [सं. भ्राता > प्रा. भाआ > अप. भाय > मध्य गुज. भाई, अने टूंकवातां]

भक्षि वि. 'भक्ष्य, खोराकरूप' १७-६ [सं. भक्ष्यना यनो गुज. रीते 'इ' सीधेसीधो करी]

भजूं वर्त., प. पु., ए. व. 'भजुं, 'आश्रय करुं' १५-२ [सं. भज् धातुनो तत्सम प्रयोग. एमां उं गुज. प्रत्यय लागतां भजउं, ने टूंकवातां]

भणि वर्त., त्री.पुं., ए. व. 'भणे, कहे' ५-१ [सं. भणति > प्रा. अप. मध्य. गुज. भणइ, ने टूंकवातां] भणी भू. कृ., स्त्री. 'अभ्यास कर्यो' ८-१४ [सं. भणित–भू. कृ.नो गुज. सुधीनो भणिअ–विकास, तेने नारीजातिनो ई लागतां भणी.]

भणी नामयोगी. 'तरफ; माटे' ९-६, १४-५ [सं. भगना *भण्य > प्रा. भणिअ > मध्य. गुज. भणी–आनो 'ने उद्देशी' ए अर्थमां विकास थतां मध्य. गुज.मां –'ना प्रति, तरफ' अने –'ने उद्देशी, माटे' ए अर्थ मळ्या छे.]

भरतार, भरथार पुं. 'भर्ता, स्वामी, धणी' १२-११, १३-१, २. [सं. भर्ता नो अर्वा. विकास. पाछला शब्दमां 'र्' ना जोर उपर महाप्राणता उमेराई छे. बंने शब्द अर्वा. गुज.मां पण मळे छे.]

भराशि भविष्य. (कर्मणि) त्रि. पु., ए. व. 'भरवामां आवशे' ८-१२ [सं. भर– अंग छेक मध्य. गुज. सुधी ऊतरी आव्युं छे. एने मध्य. गुज.नो कर्मणि प्रत्यय आ लागतां भरा- अंग + भविष्य. त्री. पु. ए. सइ (< अप. °स्सइ > सं. °स्यति) लागतां भरासइ, ए टूंकवातां भरासि अने तालव्य इना जोरे भराशि]

भरि अव्ययात्मक अनुग. ' 'भर, 'भेर, मात्रथी ' १३-२३ सं. भर-अंगना *भर्य अ. कृ. उपरथी प्रा. भरिअ > अप. भरिअ, भरि द्वारा मध्य. गुज. भरि (अर्वा. गुज.मां उच्चारण भरय, भेरय. पाछला शब्दमां ए आव्यो छे ते पिरि त्रिरि नी जेम भिरि थया पछी. आनो प्रयोग ' नीरभरि = पाणी मात्र उपर रही ']

भर्त्तार पुं. ' भर्ता, स्वामी, धणी ' ११-२३ [जुओ उपर भरतार, भरथार.]

भर्म पुं. 'भ्रम, भ्रांति' २९-३८ [सं. भ्रम शब्दनो प्रास खातर भर्म विकार.]

भल्लिउं भू. कृ. ' भळ्युं, दाखल थयुं ' ६-८ [सं. ह्मल् धातु जवुं, हलवुं, खसवुं ' अर्थमां छे. ह्मलति > *भलइ. आम भल- धात्वंग मळे. एनुं मध्य. गुज. भू. कृ. भल्लिअउं, ने टूंकवातां.]

भली वि. स्त्री. ' भला स्वभावनी, भद्र प्रकृतिनी ' ५-१,२ [सं. भद्रिका > प्रा. भल्लिआ > अप. भल्लिअ मध्य. गुज. भली]

भाखि वर्त., त्री. पु., ए. व. ' भाखे, कहे ' ५-१२ [सं. भाष् धातुनो तत्सम प्रयोग—गुज. लाक्षणिकता प्रमाणे ष् नो ख् उच्चारतां; भाखइनुं टूंकवाता.]

भागि नपुं. ' भाग्य, नसीब ' १४-२ [जुओ उपर भक्ति; ए ज प्रकारे ' य् ' नो मध्य. गुज. लाक्षणिकताए इ् थये. आगळ वधी *भाइग एम व्यत्यय थये ' भाएग, भायग ' पण मळे छे.]

भागि अ. क्रि., वर्त., त्री. पु., ए. व. ' भाग पडे, टुकडा थाय ' ४-६ [स. भग्न- > प्रा. भग्ग- भू. कृ. उपरथी मध्य. गुज ने भाग- धात्वंग मळ्युं छे; भागइ, पछी टूंकवातां. आनो स. क्रि. तरीके पण उपयोग विकस्यो छे: ' भाग पाडे. '] भागो भू. कृ., पुं. ' भाग्यो, दूर थयो. ' ३८-३१ [सं. भग्नकः > प्रा. भग्गओ > अप. भग्गउ > मध्य. गुज. भागउ, ने पछी टूंकवातां ने अर्वाचीनता प्रवेशतां. ' भाग्यो ' चालु रीते मध्य. गुज. इउ भू. कृ. प्रत्यय द्वारा. आ भाग- धात्वंग अर्वा. गुज मां ' भाग पाडवा 'ना अर्थमां निरनुनासिक छे, ज्यारे ' तोडवा 'ना अर्थमां भांग- एम सानुनासिक छे. सं.मां पण भाग अने भङ्ग एम बेउ रूप आम जुदा जुदा अर्थे मळे ज छे.]

भाणेज पुं. ' बहेननो पुत्र ' ११-८९ [सं. भागिनेयः > प्रा. भाइणेज्जो

> अप. भाइणेज्जु. > मध्य. गुज. भाणेज, जुओ बहेन अने भाणेजना विकासमां तफावत.]

भात नपुं. 'भातुं'. २८-१० [सं. भक्तम् > प्रा. भत्तं > अप. भत्तु > मध्य. गुज. भात. अंतें स्वरभार आवता भातउं. 'रांधेला चोखा' माटे अर्वा. गुज मां भात आव्यो छे ते पुं बन्यो छे वारी 'भाता-'ने माटे तो भात, भातुं, भाथुं, त्रणे प्रयोजाय छे, जेमानो 'भात' शब्द खेड़तने माटे खेतरे लई जवामां आवता रांधेला खाद्य माटे, ज्यारे भातुं- भाथुं प्रवासमां लई जवाना खाद्य माटे छे]

भांगरधरि पुं. '*भांगासुरि राजा, भांगासुर राजानो पुत्र ऋतुपर्ण राजा*' २८-२१ [सं. भांगासुरि अशुद्ध हशे एम मानी कृत्रिम संस्कृतीकरण.]

भावि वर्त., त्री. पु., ए व. 'भावे, गमे, रुचे' १४-७ [सं. भाव शब्द 'प्रेम, रुचि, इच्छा' अर्थ विकस्या पछी एने आधारे मध्य. गुज.मां विकसेलो *क्रियावाचक प्रयोगः भावइ, ने टूंकवातां*] *भाविया भू. कृ.*, पुं., *ब. व. 'भाव्या, गम्या,'* ७ ६ [उपरने क्रमे भाव + भू. कृ.नो इअ लागतां भाविआ, भाविया ब. व.]

भिदि पुं., त्री. वि., ए. व. 'भेदथी' २९-१३ [सं. भेदनो मध्य. गुज. लाघव भिद् अने एना त्री. वि. ए. व नो इ मळतां. अहीं करी जुओ; भिदि करी- 'भेदे करी.' करी त्री वि.नो अर्थ पोषवा छे.]

भीजि वर्त. त्री. पु., ए. व 'भींजे, भींजाय' २२-४ [प्रा. देश्य भिंजा स्त्री. अभ्यंगवाचक शब्द छे. आना उपरथी मध्य. गुज.मां भीज-, भींज- धातुंग मळ्युं छे; *भीजइ, भींजइनुं टूंकवाता.*]

भीमी स्त्री. 'भैमी, भीमकनी पुत्री दमयंती' ५-१२. [रुक्मिणी पण एवा बीजा भीमकनी पुत्री होई 'भमी' कहेवाती. आ शब्दनुं मध्य. गुज. रूप टूंकवातां.]

भूखि स्त्री 'भूख, क्षुधा' ८-८ [सं बुभुक्षा > प्रा. *बुहुक्खा > भुक्खा > अप. भुक्ख > मध्य. गुज. भूख. पछी स्त्री.ने कारणे इनो प्रवेश., जोके अर्वा. गुज.मां उच्चारण *भूख्य नथी आव्युं*] *भूख्यां वि. नपुं., ब. व. क्षुधायुक्त'* १३-२२ [सं. बुभुक्षितानि > प्रा. भुक्खिआणि > अप. भुक्खिआइं > अप. भूखिआं, ने टूंकवाता.]

भेळी वि. 'भेळी, भेगी' २०-१३ [जुओ उपर भलिउं. भल-ना प्रेरक-रूप भेल-नुं भू. कृ भेलिउं, ने स्त्री.नो ई लागतां.]

भेव पुं. 'भेद' २९-२६ [सं. भेदः > प्रा. भेओ > अप. भेउ ने मध्य. गुज. विकास भेव]

भोगव्या भू. कृ., पुं., ब. व. 'भोग कर्यो, माण्या' १४-८ [सं. भुज्‌ना भूतकृदंत भुग्न- द्वारा भुग्ग- अने पछी प्रेरक आव- लागतां मध्य. गुज. भोगव; एने भू. कृ.नो इअ- लागतां भोगविआ (ब. व.), ने टूंकवातां.]

भ्रंग पुं. 'भमरो' ५-१५ [सं. भृंगनो मध्य. गुज. उच्चार]

भ्रूअ स्त्री. 'भमां' २५-६ [सं. भ्रूने स्वार्थे मध्य. गुज. 'अ' लागी. जुओ °अ.]

मटि नामयोगी 'माटे, काजे' ८-१५ [जुओ नीचे यथाक्रम माटि. अहीं प्रास खातर आदि श्रुति ह्रस्व करी छे.]

मत्य स्त्री. 'मति, बुद्धि' १५-११ [सं. मतिनो अर्वा. उच्चार : लघुप्रयत्न यश्रुति]

मद्दि नपुं., सा. ए. व. 'मध्ये, वचमां' ११-५० [सं. मध्ये > प्रा. मज्झे > अप. मद्धि-; अहीं अप. तत्सम प्रयोग]

मलपता वि., पुं., ब. व. 'माणता, महालता' ९-४ [ध्वन्यात्मक धातवंग मलप- + वर्त. कृ. त ने ब. व.नो आ मळतां; प्रा. देश्य मलंपिअ 'गर्वा'—आनी साथे सरखावी शकाय.]

मली भू. कृ., स्त्री. 'मळी' १७-३ [सं. मिलित- > प्रा. अप. मिलिअ- > मध्य. गुज. मिलिअ, मलिअ- ने स्त्री. 'ई' लागतां]

महिलि वर्त., त्री. पु., ए. व. (अहीं अर्थ बी. पु. ए. व.नो छे.) 'मूके' २३-९ [प्रा.मां मिल-, मेल्ल- धातवंग 'मूकवुं, छोडवुं' ना अर्थमां मळे छे. आने सं. मिल् 'मळवुं' साथे संबंध नथी लागतो. मध्य. गुज.मां आवतां ह्नो प्रक्षेप थाय छे अने मिहिल- धातवंग मळे छे. आदिश्रुतिना अकारे पछी महिलइ, ने टूंकवातां]

महुरत नपुं. 'मुहूर्त, शुभ टांकणुं' २८-७ [सं. मुहूर्तनो अर्वा. तद्भव.]

मागि वर्त., त्री. पु., ए. व. 'मागे, याचना करे' ४ ६ [सं. मार्गयति > प्रा. मग्गेइ, मग्गइ, > अप. मग्गइ > मध्य. गुज. मागइ, ने टूंकावातां. सं.नो 'शोधवुं' अर्थ विकसी 'याचवा'मां परिणम्यो छे. आमां अनुनासिकता पण उमेराई अर्वा. गुज.मां मांगवुं पण मळे छे.]

माछली स्त्री. 'नानुं माछलुं' १६-१५ [सं. मत्स्य- > प्रा. मच्छ- > मध्य. गुज. माछ- एने लघुतावाचक अप. उल- प्रत्यय द्वारा स्त्री-ना ई साथे माछली.]

माटि नामयोगी, 'माटे, काजे, कारणे' ६-८,२३-५ [डॉ. टेसिटोरी निमित्तेन उपरथी साधे छे. मने सं.ना. मात्र प्रत्यय– "निमित्तमात्रं भव (भ. गी)" मांथी *मत्त- > *मट्ट- अने सा. ए. व. प्रत्यय इ थी मध्य. गुज.मां माटइ, ने टूंकवातां]

माणि आज्ञार्थ बी. पु, ए. व. 'म आण, न लाव' २९-४७ [सं. मा + आनय > प्रा. मा- आणहि अप म- आणि > मध्य. गुज. म आणि अने माणि बेउ; संधि थई छे]

माणिस नपुं. 'माणस' १७-१ [सं. मानुष पुं.नो प्रा. माणुस द्वारा मध्य. गुज,मां माणस; छतां वच्चे 'इ'नो प्रक्षेप थतां माणिस; सौराष्ट्रना दरियाकिनारे मणीस एवो उच्चार आजे पण मळे छे.]

मानि वर्त., त्री, पु., ए. व. 'माने, मनमां गमे' १३-९ [सं. मन्यते > प्रा. मण्णइ > अप. मण्णइ > गुज. मानइ, ने टूंकवातां]

माय वर्त., त्री. पु., ए. व. 'समाय' ३०-२४ [सं. मानि > प्रा. अप. माइ > मध्य गुज. माइ, माय (वधु विकासे)]

माया स्त्री 'मया, प्रेम' १६-१३ [सं. माया 'भ्रांति 'थी, पछी थती भौतिक प्रेमनी लागणी ममतामा अर्थपलटो थे छे.]

मारग पुं. 'मार्ग, रस्तो' ७-४ [सं.नो अर्वा. तद्भव विशेषथी]

मारुआड पुं., स्त्री. 'मारवाड, मरु भूमि, सूको प्रदेश, ४-९ [सं. मरुवाट- > प्रा. मरुआड-, ने मध्य गुज.मां आदिश्रुतिनी दीर्घताए मारुआड (अर्वा. गुज. मारवाड)]

मालीइ नपुं., सा ए. व. 'माळिये' २२-६ [प्रा. देश्य माल- पुं. शब्द छे, एना उपरथी मध्य. गुज. मालिउं नपुं मा. + सा. ए. व. इ; वचेनी श्रुति लेतनमां मात्र दीर्घ]

मासी स्त्री. 'मातानी बहेन' २९-१६ [सं मातृ-स्वसा > प्रा. माउसिआ > मासिआ > अप. मासिअ > मध्य. गुज. मासी, अने ई तालव्यने कारणे 'स' नो तालव्य श]

माहा वि. 'मोटुं' १-२, ७ वगेरे [सं. महत्-नो समासमां महा' भाव छे. मध्य. गुज.मां दूना स्वरित उच्चारणने कारणे 'मा:' बोलाय अने लखाय

माहा. महा॰ धरावता बधा ज शब्दोमां एकश्रुत्यात्मक दीर्घ उच्चार छे.]

माहाले वर्त., त्री. पु., ए. व. 'महाले, माणे' ९-४ [प्रा. दे. मल्ह (पा. स. म.) धात्वंग अ. क्रि. छे : मल्हइ > मध्य. गुज. माहाल्हइनुं अर्वा. थतां माहाले (उच्चारथी माःले.) छे. मल्ह शब्दनो संबंध सं. मह् धातु साथे जणाय छेः *महिल- [< सं. महित- मोटुं थयेलुं, पूजायेलुं] नो मल्ह संभवे छे.]

माहि जुओ नीचे मांहां. ३-४ [उपरना क्रममां सं. मध्ये > प्रा. मज्झे > अप. मज्झि > मध्य. गुज. माझि (टेसिटोरी) > माहि अने मांहि > अर्वा. गुज.ए सानुनासिक उच्चारण ज साचव्युं छे.]

माहिं सर्व., सा. ए. व. 'मारे' ४-१६ [सं. *मम-कारकं > अप. महारउं (महु + आरउं) > मध्य. गुज. माहारउं (माःरउं). एने सा. ए. व.नो इ लागतां माहारइ, ने टूंकावातां माहिं (= माःरे). आ रूपो चोथीनो अर्थ साधवा मध्य. गुज.थी प्रयोजाय छे.]

मांचा पुं. ब. व. 'माचडा, ऊंची बेठकोनी मांडणी' ११-४८ [सं. मञ्चकाः > प्रा. अप. मंचआ > मध्य. गुज. मांचा. ए व. मांचउ > मांचु.]

मांडी अ कृ. 'मांडीने, मूकीने' ६-७ [सं. मण्ड् धातु 'शोभा करवी' अर्थमां छे, ज्यारे प्रा. देश्य मंड स. क्रि. 'सामे मूकवुं, शरू करवुं' ए अर्थमां छे. आ बे मूळमां जुदा धातु जणाता नथी *मण्ड्य > प्रा. मंडिअ > मध्य. गुज मांडी]

मांहलु वि. पुं. 'मांह्यलो, अंदरनो' ८-११ [सं. मध्य- > प्रा. अप. मज्झ- > मध्य. गुज. माझ- > माह + द्रविडी इल- लागतां *माहिल- > माहिल-, पुं. माहिलउ, ने टूंकावातां सानुनासिकता वैकल्पिक. 'इ'ए अर्वा. गुज.मां मांह्यलुं आप्युं.]

मांहां अनुग. 'मां, अंदर' ३-८ [जुओ मांहलु. ए प्रमाणे मळेला माह-अंग ने सा. ए. व.नो इ लागतां माहि-, ने टूंकावातां मांहां (मां > मां)—आमां 'इ' लुप्त थयो छे, मांहे ए पछीनो विकास पण लक्ष्यमां लेवो.]

मांहोमांहि क्रि. वि. 'अंदर अंदर' ५-१२ [जुओ उपर मांहां, माहि, मांहलु. मांह + हु (अप.) + मांहि = अर्वा. गुज. मांहोमांह्य]

मि सर्व., त्री. वि. ए. व. 'में' ४-८ [सं. मया > प्रा. मइ > अप. मइ, मइं, मध्य. गुज. मइं, टूंकावातां मिं, अने पछी सानुनासिकता विकल्पे जतां]

मिइ ११-२७ [मध्य. गुज. मइंमां इ पूर्वश्रुतिमां जतां मिइं, ने अनुनासिकता न लखातां]

मिया क्रि. वि. 'मिथ्या, फोगट' १६-१८ [सं. मिथ्यानो लेखन-दोष] मिथ्यां ८-११ [सं. मिथ्या ने सा. ए. व. नो आं (< अप. °हां > सं. °स्मात्–पांचमीनो) लागतां]

मिल पुं. 'मेल, शरीर उपर जामतो आछो गंदो थर' २५-७, ८ [सं. मलिन साथे संबंध राखतो प्रा. मइल-शब्द मळे छे जे *मइल्ल होवानी शक्यता छे. एणे मध्य. गुज.ने मेल, मिल शब्द आप्यो. अर्वा. गुज.मां हजी 'ल्' ज होई मूळमां बेवडा लनी असर रहे छे.]

मिहिली, मेहिली, मेहेली भू. कृ., स्त्री. 'मेली, मूकी, छोडी दीधी' ३-१६ [जुओ उपर महिली. प्रा. मिल्ल, मेल्ल, धात्वंगमां पाछळथी हश्रुति मळी छे. भू. कृ. मध्य. गुज °इउ ने पछी स्त्री. ई.]

मीटि स्त्री. 'मींट, मांडेली नजर' १६-२० [मूळ जाणीतुं नथी.]

मीठूं वि. 'मिष्ट, हृद्य स्वादनुं' ६-३ [सं. मिष्टकम् > प्रा. मिट्ठअं > अप. मिट्ठउं > मध्य. गुज. मीठउं, ने पछी टूंकवातां.]

मींच्यां भू. कृ., नपुं., ब. व. 'बंध कर्यां' ११-२ [प्रा. दे. मिंच धातु: मिंचिआणि > अप. मिंचिआइं > मध्य. गुज. मींचिआं, ने टूंकवातां]

मुखामुखि क्रि. वि. 'मोढामोढ, सामसामे' २९-२९ [सं. तत्सम मुखना द्विर्भावथी थयेलो गुज. प्रयोग. छेडे सा. ए व.नो इ लाग्यो छे. वच्चे श्रुति दीर्घ थई छे. आवां अर्वाचीन गुज.मां घोलाघोल, ऊभाऊभ, हमाहम वगेरे नामो पण तैयार थया छे. ए ब. व्री. समासनो एक प्रकार थई रहे छे.]

मुझनि सर्व. 'मने' ६-१८ [अप. मज्झु छे. आ शब्द अप. तुज्झ > तुज्झना आभाससाम्ये ऊभो थयो छे अने मध्य. गुज.मां आवता मु° ने लई मु° पण थाय छे. एने पछी 'नइ > नि' अनुग लाग्यो छे; ने चो. वि नो अर्थ मळ्यो छे.]

मुझारि नामयोगी, 'मोझार, मां, अंदर' ३-३ [अर्वा. गुज.मां 'मोझार' हवे प्रचारमां नथी रह्यो. सं. मध्यागारे > प्रा. मज्झआरे > अप. *मज्झारि > मध्य. गुज. *मझारि > मुझारि प्रा. दे. मज्झआर 'मध्य, अंतराल' अर्थनो नोंधायेलो छे; अने ए मध्यागारमांथी ज विकस्यो छे (दे. ना. ६-१२१).]

मूओ भू. कृ. 'मरी गयो' २८-४ [सं. मृतकः > प्रा. मुअओ > अप. मुअउ > मध्य. गुज. मुअउ, मूअउ, अने टूंकवातां मूउ, पछी मूओ.]

मूकि, मुंकि वर्त., त्री. पु., ए. व. 'मूके, मेले, छोडे' ६-१३ [सं. मुक्त-(भू. कृ.) > प्रा. मुक्क- > मध्य. गुज. धात्वंग मूक-, मुंक-, एने त्री. पु. ए. व.नो इ, अने पछी टूंकवाला] मूकावो आज्ञार्थ (प्रेरक), बी. पु., ब. व. 'छोडावो' [सं. मुक्त- > प्रा. मुक्कने सं. °आप-(प्रेरक प्रत्यय) > प्रा. आव- लागतां *मुकाव- > मध्य. गुज. मूकाव + आज्ञार्थ बी पु., ब. व.नो उ थये मूकावउ, ए टूंकवातां मूकावु ने मूकावो]

मूरखता स्त्री. 'मूर्खता, मूर्खाई' ११-२७ [सं. मूर्खतानो विश्लेषथी गु. अर्वा. तद्भव]

मूहनि सर्व. 'मने' ७-४ [अप. महुनो अप. तुहु ने आभाससाम्ये *मुहु थई मध्य. गुज.ने मळतां अनुग नइथी मुहुनइ रूप मळे; एनुं टूंकवाईने मूहनि; पछी मूहि मूंहि पण] मूहि ३-१९

मृत्य नपुं. 'मृत्यु' ३०-८ [सं. मृत्यु पुं.नो अर्वा. तद्भव, पण नपुं.मा आपणने ए मळे.]

मेहेलि आज्ञार्थ, बी. पु., ए. व. २३-९ [जुओ महिलि; अहीं आज्ञार्थ बी. पु., ए. व. नो इ (> सं. हि) लाग्यो छे.] मेहिल्यु भू. कृ., पुं. 'मेल्यो, मूक्यो' ६-१८ [अंगने भू. कृ.नो इउ (< सं. इत) लागतां मेहिलिउ, ने टूंकवातां]

मोकली भू. कृ. (प्रेरक). स्त्री. 'रवाना करी' ९-३ [जुओ मूकि. मुक्कनो ज प्रा.मां मोक्कल-प्रेरक अर्थे मळे छे, एनो विकास मध्य. गुज. मोकल-; बेवडा ल्ने कारणे अर्वा. गुज. मां पण 'ल' ज रह्यो छे + इअ (भू. कृ. नो प्रत्यय) + ई (स्त्री. प्रत्यय)] मोकलु वि. पुं.' मोकलो ' १५-१० [अप.मां मोक्कल वि.' (स्वार्थे ल), मध्य. गुज. मोकल + उ प. वि. ए. व.नो मोकलउ, ने टूंकवातां; अहीं एकवडा ल्-ने लईं अर्वा. गुज.मां ळ् थयो.]

मोख पुं. मुख्यता, मोखो' ९-२४, २९-८ [सं. मौख्य- > प्रा. *मोक्ख-> मध्य. गुज. मोख; स.ना नपुं.नो पुं. विकास]

मोटी वि., स्त्री. 'विस्तार प्रमाण स्वरूप आदिमां महा' ४-८ [एक प्रा. देश्य मुट्टिम पुं. स्त्री. 'मोटाई' ना अर्थमां मळे छे (अर्वा. गुज. मोटम्प), एना मूळमां *मुट्ट शब्द विशेषणात्मक छे. संभव छे के आनो संबंध मूळमां

सं महत् साथे होय. पण प्रा.मां महाप्राणता नथी; त्यारथी अत्यार सुधी महाप्राणता नथी; छतां वचला युगमां मोहोट-अंग पण मळे छे. एने लईे मोटुं, म्होःटुं (मोःटुं) आवां बे उच्चारण, व्यापक छे, हिंदीमां 'मोटी' ज छे—अर्थ 'जाडुं']

मोरारी पुं. 'मुरारि, भगवान विष्णु' ६-१५ [सं. मुरारिनो गुज. विकार]

मोहो पुं. 'मोह' १-६ [सं. मोह शब्दमां मध्य. गुज मां 'ह्'नुं स्वरित उच्चारण थतां एकश्रुत्यात्मक म्हो(मोः), ने लेखनपद्धतिए जुदा बताववा होई मोहो.]

म्यल्लि वर्त. त्री. पु., ए. व. 'मळे' ८-१९ [जुओ आ पूर्वे मल्ही; ए रीते मिल-ना वर्त., त्री. पु , ए.. व. मिलइ तपने टूंकवतां मिल्लि अने आदि इनां संप्रसारणे–वस्तुस्थितिए लघुप्रयत्न यश्रुतिथी-म्यल्लि.]

॰य सा. ए. व.नो विकसित प्रत्यय ९-१२ [सं. इ > प्रा. ए > अप. इ, ए ज मध्य. गुज.मां आव्या पछी वधु पछीना विकासमां एनो लघुप्रयत्न य् थयो: गामि > गाम्य; अहीं स्वर्ग्य < स्वर्गि (सं तत्सम स्वर्गने इ लाग्या पछी)-'स्वर्गमां']

यणियु भू. कृ., पुं. 'जण्यो' ४ ८ [सं. जनितकः > प्रा. जणिअओ > अप. जणिअउ > मध्य. गुज. जणिअउ, जणियउ, ने टूंकवातां. उच्चार 'जणियु.']

यम क्रि. वि. 'जेम' ६-२५ [जुओ ज्यिम. एनुं ज्यम थया पछी लेखनमां 'य्' थये]

यमूं वर्त., प. पु., ए. व. 'जमुं' २२-१० [लेखनमां य् छे, पण उच्चार 'ज्'. सं. जिम् धातुनुं जेमामि > प्रा. जेमामि > अप. जेमउं > मध्य. गुज. जिमउं, जमउं, ने पछी टूंकवातां]

यशूं वि. 'जशूं, जेवुं' ६-६ [सं. यादृशकम् > अप. जिसिउं > मध्य. गुज. जिसिउं, जसिउं, ने लाघव थतां जशूं. लेखनमां मात्र 'यशूं']

यांह क्रि. वि. 'ज्यां' ४-१५ [अप. जहांनुं मध्य. गुज. ज्यांह थया पछी ज्यांहने बदले लेखनमां यांह. सं. यस्मात् > अप. जहां पां. वि. ए. व. उपरथी स्थळवाचक, सातमीनो अर्थ विकस्यो छे.]

यि सर्व. 'जे' ६-२७ [जुओ नीचे ये. उच्चारण जि छे.]

॰यि अव्यय 'य, पण' ३-९ [सं. अपि > प्रा. अवि > अप. वि, इ > मध्य. गुज. इ, पछी एनो लघुप्रयत्न य् साथे यि. सदापि–आवा शब्दोमां इनो

य थया पछी फरी इतुं उमेरण पण शक्य छे. आम आनो वेवडो प्रयोग आजे य व्यापक छे; जेम के 'रामेय आवशे (राम + ए (< इ) + य)']

यिम क्रि. वि. 'जेम' ७-१२ [उच्चारण जिम. जुओ जिम.]

यिहां क्रि. वि. 'ज्यां' ४-३ [जुओ यांह. जहांनो जिहां मध्य गुज.मां; उच्चारण जिहां.]

युग नपुं., 'जग' ४-५, १२-१ [सं. जगत्‌ना जग अर्वा. तद्‌भवनो जुग; मात्र लेखनमां य्]

युग (सं.) नपुं. वि. 'बे' २३-२२.

युगतां नपुं. ब. व. 'जुगतां, युक्त, योग्य' २२-९ [सं. युक्त-नो विश्लेषथी विकास; पण अहीं उच्चारण 'जुगतां' छे. नपुं. ब. व.नो 'आं' (> अप. आइं > सं. आनि)]

ये सर्व. 'जे' १०-५ [जुओ जे उभ. अव्यय. आ सं. एषः > प्रा. एहो > अप. एहुना आभाससाम्ये ऊभां थयेलां जे ते वगेरे रूप छे; अने ब. व.नां सं. पुं. रूप ये ते साथे विकाससंबंध नथी. जेत्तल, तेत्तुल, केत्तुल, एत्तुल वगेरे सरखावो.]

येटलि क्रि. वि 'जेटले' १५-२. [उच्चारण जेटलि. [सं. *यत्तल्यकम् > प्रा. *जत्तलअ > अप. जेत्तुलउं > मध्य. गुज. जेतलउं, जेटलउं अने सा. ए. व. नो इ. आनो समयवाचक अर्थमां क्रि. वि नो प्रयोग]

यौवॅन नपुं., सा. वि., ए. व. 'यौवनमां' ९-१ [सं. यौवन ने सा. वि. ए. व.नो मध्य. गुज. इ लाग्या पछी यौवनि > यौवन्य > यौवन ने मात्र खातर अनुस्वारनो लेखनमां प्रवेश. *अबला थई यौवॅन–अबला जुवानीमां थई–आवी–* पद्यरचनानी दृष्टिए मात्र आवो प्रयोग.]

रखवाल वि. 'रखेवाळ, चोकीदार' १०-२२, ब. व. रखवाला ११-४२ [सं. रक्षित-पालक > प्रा. रक्खिअ-वालअ- > मध्य. गुज. *रखिवालअ-, स्वरभारने अभावे *रखिवाल-, आणे रखवाल अने रखवालउ आप्यां; अर्वा गुज.मां रखवाळुं नपुं.मां 'ख' छे. पण वि.नो रखेवाळ छे, 'ए' नो विकास 'इ' मांथी शक्य छे.]

रखि पुं. 'ऋषि' ७-१ [सं. ऋषिनुं गुज. उच्चारण; वर्णी रखि; रखी पण पद्यार्थी]

रगत-लोचन नपुं, ' रातुं लोचन ' १३-२५ [' राते लोचने ' ए अर्थ लेवानो छे; त्यां त्री., ए. व.नो इ लाग्या पछी य थई लोपाई जाय. सं. रक्तनुं रगत अर्वा. तद्भव. लोचन सं. तत्सम]

रचिऊं भू. कृ. ' रच्युं ' ५४ [सं. रच् धातुनो तत्सम प्रयोग करी पछी मध्य. गुज. भू. कृ. नो प्रत्यय इउं लगाडी-अंते स्वरभारथी.]

रणियु वि. पुं. ' ऋणी ' ४-४ [सं. ऋणिकक: > प्रा. रणिअओ > अप. रणिअउ > मध्य. गुज. रणिअउ ने यश्रुति थई टूंकवातां]

रदि नपुं.; सा. वि .ए. व. २९-१९ [सं. हृदयेनो अर्वा. तद्भव-पूर्वनी बे श्रुतिओमां, छेल्ली श्रुतिनो इ थई टूंकवातां]

रली स्त्री. ' खुशी, आनंद ' ११-१ [रली ने रुली बेउ शब्द मळे छे. सं. रुचि शब्द उपरथी प्रा. वि. रुइल (> सं. रुचिर) छे. आना विकासमां रली अने रुली अंते स्वरभार साथे. आ शब्दनुं मूळ सं. रतिने स्वार्थे ल लगाडी मोदीए सं. *रतली > प्रा. *रयली द्वारा, तो सांडेसरा (फागु) सं. रति > प्रा. रइ, रय + लीं द्वारा साध्युं छे.] रलियाति, रलियाअति वि. ' खुश ' ८-७ अने १६-४ [उपरना रली शब्दने *आअतिअ (प्रा. *आवृत्तिअ < सं. *आवृत्तिक- वारंवार जेने आनंद थयो छे तेवुं) लागी तैयार थयेलुं रूप समजाय छे. जुओ मोदी: रलिआउति. आजे अर्वा. गुज.मां स्त्रीओनां नाम ' रळियात ' पडे छे; तो विशे.' रळियामणुं ' छे.]

रसोई स्त्री. ' रांधेलो पाक ' २९-३२ [सं. रसवती (स्त्री. रसोई) नो आ प्रा. रसवई द्वारा अर्वाविकास छे. सं. रसवतिका > प्रा. *रसवइआ > अप. *रसवइअ > मध्य. गुज. रसोईः आगे पछी रसोइयो-रसोयो ' रांधनार, ' रसोडुं ' रांधणियुं ' शब्दो साध्या छे.]

रहा = रह्या भू. कृ. पुं , ब. व. ' स्थिति करी ' २-३ [प्रा. देश्य धातु रह रहेवा 'ना अर्थमां मळे छे, सं.मां रह् धातु ' छोडवा ' ना अर्थमां छे. सं. रह् धातुनुं आ रूप ज जूनुं प्राकृत रूप होई शके. प्रा. भू. कृ. रहिआ > अप. रहिआ > मध्य. गुज. रहिआ ए टूंकवातां रह्या > रहा. लेखनमां यश्रुतिनो लोप]

राइ, राय, रायि पुं. ' राजा ' २-१८ [सं. राजा > प्रा. राआ (>राय- (समासमां) >. अप. राअ, रा > मध्य गुज. राय, राइ, रायि, ' यश्रुतिना प्रयोगे'. अर्वा. गुज.मां ' रायजी 'मां ए ' राय ' छे.] रायि स्त्री. वि., ए. व. ' राजाए ' २-१५ [आमां स्त्री. वि. ए. व. इ प्रत्यय लाग्यो छे. अने ' राइ पण स्त्री. वि., ए. व. थाय]

राखो = राख्यो भू. कृ., पुं. 'सांचव्यो; रोक्यो अटकाव्यो' २-८ [सं. रक्षितकः > प्रा. रक्खिअओ > अप. रक्खिअउ > मध्य. गुज. राखिअउ, ने पछी टूंकवातां-छेक अर्वा. रूप.]

राचशि भविष्य. बी. पु., ए. व. 'राचशे, आनंद पामशे.' ११-२३ [प्रा. देश्य धातु रच्च 'रंजन पामवुं' अर्थमां मळे छे. मोदीए *रक्तति (भू. कृ. + ति) एवुं मूळ रूप सूचव्युं छे. संभावना सं. रज्यतेनुं पैशाचिक असरे रच्चइ थाय-एनी विशेष शक्यता छे. बेशक, रक्त अने रज्यते बेउ रञ्ज् धातुनां ज रूप छे. 'राचर्चीलुंने पण आ रच्च साथे संबंध छे; डॉ. दवे तो रच्च-ना मूळमां सं. रच 'रचना करवी' धातु स्वीकारे छे. प्रा. रचिस्सइ > मध्य. गुज. राचिसइ, राचिसिइ, राचसि > राचशि (लाघव अने तालव्यताथी)]

राजान पुं., संबोधन विभक्ति 'हे राजा' ४-१ [प्रास मेळववा राजंन, राजान एम प. वि.मां प्रयोजाय छे. अहीं सं. राजन् संबोधननुं सीधुं रूप गुज. लाक्षणिकताए लव्युं छे.]

राजि नपुं. 'राज्य' २-११ [सं. राज्यना यनो सीधो इ, अर्वा. विकार.]

राजि वर्त., त्री. पु., ए. व. 'शोभे' ११-४९ [सं. राज् धातुने तत्सम लेखे प्रयोजी त्री. पु., ए. व.नो इ लगाडी राजइ, ने पछी टूंकवातां]

राटि स्त्री. 'राड्य, झगडो' २३-६ [प्रा. देश्य राडि स्त्री. 'लडाई'ना अर्थमां छे. सं. रट् 'बोलवुं' उपरथी राटि 'बूम'ना अर्थमां छे. संभव छे के 'राडि'ना मूळमां आ राटि होय. महाप्राणत्व पाछळथी उमेराई मध्य. गुज.मां राढि थयो छे, ते पाछो अर्वा. गुज मां महाप्राणित नहि एवो राड्य शब्द मूळ छे, लेखनमां राड.]

राणी स्त्री. 'राज्ञी, राजानी पत्नी' ३-१६ [सं. राज्ञिका > प्रा. राणिआ > अप. राणिअ > मध्य. गुज. राणी, प्रा.मां बेवडा ण्णमां जै. महा. उच्चारण न होवाने कारणे मध्य. गुज.मां एवा शब्दोमां अपभ्रंश द्वारा 'न' ऊतरी आवे छे, छतां आण जेम आ शब्दमां पण ण मळ्यो छे ए अपवाद छे. राणो ए आनो विकास पुं. छे.]

राशि स्त्री. 'राश, घोडा-बळदनुं दोरडुं' २८-१७ [सं. रश्मि पुं. स्त्री > प्रा. रस्मी > अप. रसि > मध्य. गुज. रासि, राशि ('इ' तालव्यने लई 'श')]

राही (?) ७-१६

रांड स्त्री. 'रांडीरांड, विधवा; (ला.) कुलटा' २२-२ [सं. रण्डा > अप. रंड > मध्य. गुज. रांड, आकारांत होई अर्वा. गुज.मा यश्रुति नथी.]

रिदि ३-१ [जुओ रदि.; ३-१९मां प. वि.नुं ए. व. ज छे, ज्यारे ३-१मां सा. वि. ए. व. छे.]

रिधि स्त्री. 'ऋद्धि, समृद्धि' ४-६ [सं. ऋद्धिः > प्रा. रिद्धी > अप. रिद्धि > मध्य. गुज. रीधि, रिधि, रीध्य, रिध्य.]

रीस स्त्री. 'खीज, क्रोध' २८-४४ [सं.मां रिष् धातुनो अर्थ 'ईजा करवी.' वगेरे छे. सं. रिष्यति > प्रा. अप. रिस्सइ > मध्य. गुज. रीसइना विकासे आ नाम मळ्युं छे. गुज.मां धातु रीसनो भावे प्रयोग रिसावुं प्रयोग–' खीजने लई अबोला लेवा ' एवी रीतनो छे. रिसामणुं ए आनो विकास. टर्नर रुषमांथी रीस काढे छे.]

रींछ नपुं. 'शरीरे वाळवाळुं एक जंगली हिंस्र प्राणी' १८-६ [स. ऋक्षः > प्रा. रिच्छो, रिंछो > अप. रिंछु > मध्य. गुज. रींछ]

रूइ वर्त., त्री. पु., ए. व. 'रडे' २२-१ [सं. रोदिति > प्रा. रोअइ > अप. रोइ मध्य. गुज. रोइ, रुइ, रूइ. अर्वा. गुज.मां रुए अने रोय बंने प्रयोजाय छे].

रूडुं वि. 'सारुं, उत्तम' २६-५१ [सं. रूपककम् > प्रा. *रूअडअं > अप. रूअडउं > मध्य. गुज. रूयडउं, रूडउं, ने टूंकवानां]

रूंओ नपुं. 'आंसुनुं बिंदु' १४-७ [आनुं मूळ जाणवामां नथी. बेशक, मूळमां सं. रुद् धातु तो आदिश्रुतिमां छे ज.]

रोय १२-२५ (जुओ रूइ.) रोसि भविष्य त्री. पु., ए व. ६-१६ [रो-अंगने क्रमिक विकासे मळेलो °सइ > °सिइ > °सि]

लखिउं भू. कृ. 'लख्युं' १८-२ [सं. *लिख्यति > प्रा. *लिक्खइ > मध्य. गुज. लिखइ, लखइमां मळेला लख धात्वंगने भू. कृ.नो अंते स्वरभार-वाळो इउं लागतां.]

लगन नपुं. 'लग्न, विवाह' ११-४० [सं भू. कृ. लग्ननो नाम तरीके प्रचलित प्रयोग. लग्न = मुहूर्त, पछी, 'परिणय, विवाह']

लगाडूं वर्त., (प्रेरक). प. पु., ए. व. ६-२५ [सं. लग्न उपरथी प्रा. लग्ग द्वारा अमाड-नी जेम लगाड प्रेरक अंग. एनुं मध्य गुज., प पु., ए. व.नो उं लागतां लगाडउं, ने पछी टूंकवातां.]

લડથડિ વર્તે., ત્રી. પુ., એ. વ. 'લથડે' ૮-૨૦ [ધ્વન્યાત્મક ધાતુ-રૂપ]

લડાવતાં વર્ત. કૃ. અવ્યયાત્મક સા. વિ. એ. વ. 'લાડ કરતાં' ૧-૧૦ [પ્રા. દેશ્ય લડ્ડિય નપું. 'લાડ, પ્યાર' અર્થમાં છે. સં.માં લલ્ ધાતુ (મૂળમાં ધ્વન્યાત્મક) છે. એનો આની સાથે સંબંધ શક્ય છે. આણે મધ્ય. ગુજ માં લાડ અને પ્રેરક અર્થમાં લડાવવઉં આપ્યાં છે. આમાં ડનું ઉચ્ચારણ શુદ્ધ મૂર્ધન્ય છે. મૂર્ધન્યતર ઉચ્ચારણનો લડવુંનું લડાવવું (લડાઈ કરવી-કરાવવી,) જુદો જ શબ્દ છે. 'એક બાજુ નમવું'નો વાચક લડ- મૂર્ધન્ય ઉચ્ચારણવાળો હોઈ પ્રા. દેશ્ય લડ્ડિય સાથે એકાત્મક હશે; ઉપર 'લડાવતાં'માં વર્ત. કૃ.નો તઉ લાગ્યા પછી સા. એ. વ.નો અવ્યયાત્મક આં લાગ્યો છે.]

લવિ વર્ત., ત્રી. પુ., એ. વ. 'ફરકે' ૧૬-૮ [પ્રા. દેશ્ય જેવો લવ ધાતુ 'પ્રવૃત્તિ કરવી'ના અર્થનો છે. સં. લપ્- 'બોલવું'-નો સંબંધ આના મૂળમાં હોય. મધ્ય. ગુજ. લવઇ > લવિ લાઘવથી. 'લવકારો' શબ્દ આના વિકાસમાં શક્ય છે.]

લહિ વર્ત., ત્રી. પુ., એ. વ 'લે, જાણે' ૧૧-૧૦૧ [સં. લભતે > પ્રા. અપ. લહઇ > મધ્ય. ગુજ. પણ લહઇ, ને ટૂંકવાતાં. પ્રાકૃતમાં 'લે' ધાત્વંગ પણ છે, જેનો સંબંધ સં. લા 'લેવું' સાથે છે.] લહ્યુ ભૂ. કૃ , પું. 'લીધો. જાણ્યો' ૭ ૨ [લહ ને મધ્ય. ગુજ.નો ભૂ. કૃ.નો ઇઉ લાગતા લહિઉ, ને પછી ટૂંકવાતાં]

લાઈ અ. કૃ 'લગાડીને, જગાવીને' ૬-૧૬ [સં. લા-ધાતુના પ્રેરકનું રૂપ પ્રા. લાઅ- એને અ કૃ.નો ઇઅ લાગતાં લાઇઅ- દ્વારા મધ્ય. ગુજ. લાઈ]

લાગ (?) વિ , ક્રિ. વિ. 'ઘણા, એવું' ૧૧-૫૭ [સં. લગ્ન- > પ્રા. લગ્ગ- ઉપરથી -'વળગેલું' ને પછી 'ઘણા' સૌરાષ્ટ્રમાં 'લાગ મઝા પડે છે !' એવો પ્રયોગ સામાન્ય છે.] લાગ પું. 'મોકો, કારી, અનુકૂળ પરિસ્થિતિ' ૧૫-૧૦ [આમાં પણ ઉપરનો જ વિકાસ છે; 'લાગવું' 'વળગી રહેવું' એ અર્થ છે.] લાગિ વર્ત., ત્રી. પુ , એ. વ. 'લાગણી થાય, અનુભવાય, થાય' ૫-૧૦, ૧૪-૮. [સં. લગ્યતે > પ્રા. અપ. લગ્ગઇ > મધ્ય. ગુજ. લાગઇ, ને પછી ટૂંકવાતાં.] લાગી ભૂ. કૃ. સ્ત્રી. 'ચાલુ થઈ, મંડાઈ' ૩-૮ [ઉપર મુજબના મધ્ય. ગુજ. ધાત્વંગ લાગ-ને ભૂ. કૃ.નો ઇઉ, ને પછી સ્ત્રી. ઈ લાગતા]

લાજ સ્ત્રી. 'લજ્જા, શરમ' ૮-૧૬ [સં. લજ્જા > પ્રા. લજ્જા > અપ. લજ્જ > મધ્ય ગુજ. લાજ. આકારાંત હોઈ યશ્રુતિ અંતે નથી.]

લાડિલૂં વિ. 'લાડવાળું, લાડીલું' ૩-૫. જુઓ ઉપર લડાવતાં. આણે

લાડો અને લાડી પુત્ર અને પુત્રીના વાચક શબ્દ આપ્યા છે; સં. લાલ-લાલી સરખાવો. લાડણી પણ જાણીતો શબ્દ છે. લાડ + *ઇકડં (સ્વાર્થે) લાડિકડં, ને ટૂંકવતાં]

લાધી ભૂ. કૃ., સ્ત્રી 'મળી' ૨૬-૧ [સં. લબ્ધકઃ > પ્રા. લદ્ધઅ > મધ્ય. ગુજ. લાધઅ, ને છેડે સ્ત્રી.નો ઈ. આને લાધવું કિ. પ. આપ્યું છે.]

લાલ સ્ત્રી. 'લાલ્મા' ૬ ૧૩ [સં. લાલમાનું ટૂંકાવાયેલું ગુજ. રૂપ.]

લિ વર્ત., ત્રી. પુ., એ. વ. 'લે' ૨૨-૧૩ [સં. લા ધાતુનો પ્રા. લે. લેઇ દ્વારા મધ્ય. ગુજ.માં લિઇ ને લિ.] લીધો ભૂ. કૃ. સ્ત્રી. 'સ્વીકારી, ગ્રહી' ૫-૪. [જુઓ લીધ.] લીધું ભૂ. કૃ. ૩-૨

લીન (સં.) ભૂ. કૃ. 'મગ્ન, ડૂબેલું,' ૧૦-૧૬

લુઇ અ. કૃ. 'લોઈ, લૂંછીને' ૨૬-૪૩ [સં. લોપયિત્વા > પ્રા. લોવિઇ, લોવઇ, *લોમઇ > અપ. *લોઇ > મધ્ય. ગુજ. લોઇ, લુઇ; આમ મળેલા લો અને લુ અંગને અ. કૃ.નો 'ઈ' લાગ્યો.]

લેઇનિ, લેઈ અ. કૃ. 'લઈને' ૪-૧૨, ૧૫-૩ [જુઓ ઉપર લિ. લે ધાત્વંગને અ. કૃ.નો 'ઈ'. વધારામાં નઇ > નિ અને એને કારણે ઈની હ્રસ્વતા]

લેખું નપું. 'ગણતરી' ૧૭-૧૦ [સં. લેખ્યકમ્ > પ્રા. લેક્ખઅં > અપ. લેક્ખડં > મધ્ય ગુજ. લેખડં, ને ટૂંકવાતાં]

લોપી ભૂ. કૃ., સ્ત્રી. 'લોપ કર્યો, ઢાંકી' ૧૬-૨૬ [સ. લોપ– ધાત્વંગનો તત્સમ પ્રયોગ + મધ્ય. ગુજ. ભૂ. કૃ. નો ઇઉ + સ્ત્રી. ઈ]

લ્યાવિઇ વર્ત., ત્રી. પુ., એ. વ. 'લાવે' ૨૪-૨ [જુઓ લિ અને લેઇ-ઈ. લેઈ + આવઇનું ટૂંકવાઈ *લિયાવઇ > લ્યાવઇ, ને 'વ્'માં ઇના પ્રક્ષેપે લ્યાવિઇ. ડૉ. ટેસ્સિટોરી અને મોદી આ રૂપને લા ધાતુનું પ્રેરક રૂપ ગણે છે; મને એ સંયુક્ત-સંધિયુક્ત રૂપ લાગે છે. આજે પણ સૌરાષ્ટ્રમાં લ્યાવવું, જયાવવું (જઈ + આવવું) જાણીતાં છે.] લ્યાવ્યુ ભૂ. કૃ. પું 'લાવ્યો' ૨૩–૮ [લ્યાવ– અંગને ભૂ. કૃ. ઇઉ= લ્યાવિઉ, ને પછી ટૂંકવાતાં. આ લ્યાવ- અંગનું લ્યાર- વૈકલ્પિક રૂપ પણ મધ્ય. ગુજ.માં મળે છે.]

વખાણ નપું. 'પ્રશંસા' ૬-૧૭ [સં. વ્યાખ્યાનમ્ 'વિશદ વિવરણ' > પ્રા. વક્ખાણં > અપ. વક્ખાણુ > મધ્ય. ગુજ. વખાણ ('સામાન્ય વિવરણ-કથા-વાચન' અને પછી 'પ્રશંસા') – એણે વખાણવડં કિ. પ. પણ આપ્યું.]

वगूता भू. कृ., पुं., ब. व. 'निंदाया' ३-६ [सं. वि + गुप् धातु उपरथी पा. इ. स., डॉ. दवे, मोदी, सांडेसरा (फागु) वगेरे साधे छे. सं. मां आ अर्थ व्यापक नथी, पाछळथी मळ्यो छे. वि-गुप्त- > प्रा. विग्गुत्त- > मध्य. गुज. विगूत- + उ (पुं. प्रत्यय) अने ब. व.नो आ; वैकल्पिक रूप वगूता. 'वगोवुं, वगोववुं ए आ सं. वि + गोपयति > प्रा. विग्गोवइनो विकास छे.]

वडाई स्री. 'मोटापणुं, महत्ता, गौरव' २०-८ [सं. वृद्ध- > प्रा. अप. वड्ड > मध्य. गुज. वड + आई (स्त्री. प्रत्यय).]

वधामणी स्त्री. 'अभिनंदन' २६-१ [सं. *वर्धापनिका > प्रा. वद्धावणिआ > अप. वद्धावणिअ > मध्य. गुज. वधामणी. 'वधावबुं' ए सं. *वर्धापयतिनो विकास]

वधारुं = वधारवूं भू. कृ. 'लांबुं कर्युं; (ला.) काप्युं, वधेर्युं' १६-८ [सं. *वृद्धाकार- > प्रा. वड्ढार- > मध्य. गुज. वधार-. मोदी वगेरे वर्ध + प्रेरकनो कार-गणे छे एने मध्य. गुज. इउं भू. कृ.नो लागतां वधारिउं, ने टूंकवातां वधारवूं-वधारुं. वधारवुं आजे उपरना बेउ अर्थमां प्रयोजाय छे, ज्यारे वधेरवुं मात्र 'फोडवुं, कापवुं'मां वपराय छे.] वधारी भू. कृ , स्त्री. ३ १६ [वधे निरर्थक य-श्रुतिनो प्रक्षेप.]

वरजी भू. कृ , स्त्री. 'छोडी दीधी' ६-२१ [सं. वृज्‌—वर्ज्‌नो तत्सम लेखे स्वीकार करी पछी विश्लेष थये + भू. कृ.नो इउ + स्त्री. प्रत्यय ई]

वरणवो = वरणव्यो भू. कृ., पुं. 'वर्णित कर्यो' १-७ [सं. वर्ण्‌नो तत्सम लेखे स्वीकार करी 'व्‌'ना उमेरणे वर्णव- अने विश्लेषे वरणव- बेउ अंग. एने भू. कृ.नो इउ = वरणविउ, ए टूंकवातां वरणव्यु, ने पछी अर्वा. भूमिका माटे वरणव्यो.]

वरटा-पति (सं.) पुं. 'हंस' ६-६

वरूण स्त्री. 'वरणी, पसंदगी, वरोणी' ४-९ [सं. वृ धातु उपरथी सं. नाम वरण छे; पण लोकोमां वरणी प्रचारमां छे, जेना उपरथी ब्राह्मणोने विधि माटे निमंत्रवामां आवे छे त्यारे वरूणी, वरोणी वपराय छे; वरूण अने वरोण पण प्रचलित छे.]

वरस नपुं. 'वर्ष, साल' ६-५ [सं. वर्षनो विश्लेषथी प्रा. वरिस थया पछी मध्य. गुज.]

वरसाति पुं., सा. वि. ए. व. 'वरसाद वखते' ४-१० [मराठीमां पण 'वरसात' छे; अर्वा. गुज.मां वरसाद छे. आना मूळमां प्रा. वरिसारत्त- (सं. वर्षारात्र-) हशे एम मानी शकाय. दवे जणावे छे के रनो लोप नियमित नथी. मने लागे छे के वर्षा + आर्द्र (वि.) = वर्षार्द्रम् > प्रा. *वरिसद्द > अप. *वरिसद्दु > मध्य. गुज. वरसाद, जे पछी प्रयोगथी पुं.मां आव्यो हशे. वर्षार्द्र जातम्-मांथी आ विकास संभवित हशे. विशेषण होई पुं. थवामां मुश्केली नथी.]

वराइ वर्त. (कर्मणि), त्री. पु., ए. व. 'वराय, वरवामां आवे' [सं. *वरयति > प्रा. वरेइ, वरइ > अप., मध्य. गुज. वरइथी मळेला वर- धातुने मध्य. गुज. कर्मणि प्रत्यय आ अने त्री. पु. ए. व.नो इ लागतां.] वरावु आज्ञार्थ. (प्रेरक), बी. पु., ब. व. 'वरावो' १०-६ [सं. *वरापयत > प्रा. वरावेह > अप. वरावहु > मध्य. गुज. वरावउ, ने टूंकवातां.]

वलगां भू. कृ., नपुं., ब. व. 'वळग्यां' ३-९ [सं. वि-लग्नकानि > प्रा. विलग्गआणि > अप. विलग्गाइं > मध्य. गुज. वलगां, ने इउ फरी लागतां वल्गिमां थई वलग्यां पण.]

वलतु वर्त. कृ., पुं. ए. व. 'वळतो (जवाबमां)' ७-१ [सं. वलयत्- > प्रा. वलेंत- वलेत- > मध्य गुज. वलत- + प्र. वि., ए. व.नो उ = वलतउ, ने टूंकवातां.]

वशि क्रि. वि. 'वशमां' ८-१८ [सं. वशे- > प्रा. वसे > अप. वसि > मध्य. गुज. वसि, वशि (इने लई तालव्य श).]

वशी भू. कृ., स्त्री 'वसी, आवी रही' ९-११ [सं *वसित- > प्रा. वसिअ- > मध्य. गुज. पण वसिअ + स्त्री. प्रत्यय ई = वसी अने पछी ईने लई तालव्य श.] वसे वर्त., त्री. पु., ए. व. 'आवी रहे' २३-१६ [सं. वसति > प्रा. अप., मध्य. गुज. वसइ अने पछी अर्वा. वसे]

वहि वर्त., त्री. पु., ए. व. 'वहे, धारण करे, उठावे' ११-१०१ [सं. वहति > प्रा. अप., मध्य. गुज. वहइ, ने टूंकवातां.] वहींनि अ. कृ. 'वाणी जईने' ८-४ [सं. *वह्य- > प्रा. वहिअ > मध्य. गुज. वही अने वधारामां नई > नि (सं. अन्यद् उपरथी)]

वा, वाइ पु. 'वायु' २६-१३, ११ [सं. वायुः > प्रा. वाऊ > अप. वाउ > मध्य. गुज. वा, ने पछी 'इ' नो उमेरो]

वाग्यां = वाग्यो भू. कृ., नपुं., ब. व. 'वाग्यां, वगड्यां.' ११-६७ [सं.

वाग्यते > प्रा. वज्जइ द्वारा मध्य. गुज. वाजइ; एम वाज- अंग आव्या पछी विकल्पे ‘ ज् ’ नो ‘ ग् ’ थाय छे. वाग + भू. कृ.नो इउं = वागिउं ने ब. व. वागिआं, ने टूंकवातां वाग्यां > वागां; ज्यारे वाज- अंग छेक अर्वा गुज.मां नष्ट थयुं छे, हिंदी वगेरेमां वज- अंग ज छे. वाग- पछीथी ‘ मार लागवो ’ना अर्थमां पण विकस्यो छे.]

वाघ पुं. ‘ एक हिंस्र पशु ’ १६-११ [सं. व्याघ्रः > प्रा. वग्घो > अप. वग्घु > मध्य. गुज. वाघ]

वाट स्त्री. ‘ मार्ग, ’ केडो ’ ३-४ [सं. वर्त्मा > प्रा. वट्टा > अप. वट्ट > मध्य. गुज. वाट. पण गुज. सुधीमां- ए स्त्री मां आवी रहे छे. आमां अंते यश्रुति नथी, तेथी मूळमां अंते आ जोइये अने ए स. वर्त्मा पुं.मां छे ज. वाट्य एटले ‘ दिवेट ’ ए सं. वर्तिः-मांथी विकसेल छे. उपरनो वाट शब्द रूढिथी वाट जोउं ‘ राह जोउं ’ एम पण वपराय छे.] वाटि सा. वि., ए. व. ‘ मार्गमां. ’ [+ सा. वि. ए व.नो इ]

वाणिक पुं. ‘ वाणियो ’ ४-१२ [सं. वणिक् नो तत्सम गुज. वणिक (अकारांत)- एनी आदिश्रुतिनी दीर्घता निष्कारण.]

वात स्त्री. ‘ वारता, हकीकत ’ ९-२० [सं. वार्ता > प्रा. वत्ता > अप. वत्त > मध्य. गुज. वात. आमां मूलमा अंते आ होईने छेडे यश्रुति नथी.]

वाधसि भविष्य., त्री. पु , ए. व. ‘ वधशे ’ ३०-२३ [सं. वर्धिष्यते > प्रा. अप. वड्ढिस्सइ > मध्य. गुज. वाधिसइ, वाधसइ, ने टूंकवातां वाधसि; ‘ इ ’ना योगे तालव्य श्.] वाधि वर्त., त्री. पु , ए. व. ‘ वधे ’ ६-१२ [सं. वर्धते > प्रा. अप. वड्ढइ > मध्य. गुज वाधइ, ने टूंकवातां. मध्य. गुज. मां आम वाध धात्वंग छे जेनुं छेक अर्वा. गुज. मां वध निश्चितरूपे आवी रहे छे.]

वामसि भविष्य., त्री, पु., ए. व. ‘ पसार करशे, पार करशे, काढी नाखशे ’ १६-१ [सं. मां वमयति, पण *वामयति गणी प्रा. मां वामइ ‘ ओके छे; फेंकी दे छे ’ उपरथी वाम अंग. प्रा. वामिस्सइ > मध्य. गुज. वामिसइ, वामसइ, ने टूंकवातां]. वामिउ भू. कृ., पुं. ‘ काढी नाख्यो ’ ११-७१ [प्रा. वामिअओ > अप. वामिअउ > मध्य. गुज. वामियउ, ने टूंकवातां.]

वारिवारि क्रि. वि. ‘ वारंवार ’. १५ २३ [सं. वारंवारम् ने सा. वि., ए. व.नो मध्य. गुज. ‘ इ ’ लागी वारइ-वारइ, ने पछी टूंकवातां. मध्य. गुज.मां वारोवारि पण प्रयोजाय छे, तो अर्वा. गुज.मां अलग रीते. वारे वारे]

વારુ, વારુ ક્રિ. વિ., વિ. 'ઠીક, યોગ્ય, સારું' ૩-૮ [સં. વરમ્ ઉપરથી મધ્ય. ગુજ.માં વારુ-વારુ જે અપ વરડનું ટૂંકુ થયેલું છે]

વારોવારિ ક્રિ. વિ. 'વારંવાર' ૧૬-૧૧ [જુઓ ઉપર વારિવારિમાં. વારઉ-વાર ને સા. વિ., એ. વ. નો ઇ. આમાં વચ્ચે ઉ છે તે પ. વિ. એ. વ.નો છેઃ અન્યઃ + અન્યઃ = અન્યોન્યઃ ને ગુજ. અન્યોન્ય (તત્સમ); સરખાવો અપ. પરોપ્પરુ (સં. પરઃ+પરઃ), અપ્પોપ્પુ (સં. આત્મા + આત્માનું *આત્મઃ + *આત્મઃ)]

વાર્યુ ભૂ. કૃ., પું. 'વાર્યો, અટકાવ્યો' ૩-૧૮ [સં. વૃના પ્રેરક વારયતિનું ભૂ. કૃ. વારિતઃ > પ્રા. વારિઓ > અપ. અને મધ્ય ગુજ. વારિઉ; એ ટૂંકવાતાં]

વાલી ભૂ. કૃ., સ્ત્રી. 'વાળી, વળાંક લેવડાવ્યો' ૧૬-૧૨ [સં. વલ્ ધાતુના પ્રેરક ઉપરથી વાલિત- > પ્રા. અપ., મધ્ય. ગુજ. વાલિઅ- ને સ્ત્રી.-નો ઈ લગતાં. મૂળમાં એકવડો લ્ હોઈ અર્વા. ગુજ.માં 'ળ્' આવ્યો છે]

વાહાર સ્ત્રી. 'મદદ, સહાય' ૧૧-૪ [સં. વ્યાહરતિ (વિ + આ + હૃ 'બોલાવવું') ઉપરથી પ્રા. વાહર- ધાત્વંગ, એણે મધ્ય. ગુજ.માં નામ વાહરિ, વાહારિ આપ્યું. જેવું વાહરવ- વાહારવ દ્વારા વાહર, વાહાર આવે + સા વિ. એ. વ. ઇ = વાહારિ વહારમાં, મદદમાં. આમાં હ ઉચ્ચારણમાં માત્ર મહાપ્રાણ સ્વરરૂપેઃ વાઃરિ]

વાહાલ્યા વિ., પું., બ. વ. 'વહાલા, પ્રિય' ૧૬-૧૬ [સં. વલ્લભકઃ > પ્રા. અપ. વલહઅ > મધ્ય. ગુજ. વાહલઆ, વાહાલઆ, ને ટૂંકવાતાં ઉચ્ચારણમાં વા લા એમ માત્ર મહાપ્રાણિત સ્વર જ.]

વાહિ પું., સા. વિ., એ વ. 'માર્ગમાં' ૧૧-૭૮ [સં. વાહ તત્સમ + મધ્ય. ગુજ. સા. વિ. એ. વ. 'ઇ']

વાહુ વર્ત., ત્રી. પુ., બ. વ. 'છેતરે' ૧૬-૨૦ [સં. વહ્‌ના પ્રેરક વાહયતિ ઉપરથી પ્રા. વાહઇ દ્વારા મધ્ય. ગુજ.માં વાહ- 'છેતરવા' ના અર્થમાં છે. વાહઉ (< સં. વાહયય)નું ટૂંકવાતાં]

વાંકુ વિ., પું. 'વાંકો' ૧૧-૩૦ [સં. વક્રકઃ > પ્રા. વંકઓ > અપ. વંકઉ > મધ્ય ગુજ. વાંકઉ, એ ટૂંકવાતા]

વિગાણૂં = વિગાણ્યૂં ભૂ. કૃ. 'વખાણ્યું' ૬-૪ [જુઓ આ પૂર્વે વખાણ. મધ્ય. ગુજ.માં વિખાણ-વખાણ બંને. એ નામધાતુ ઉપરથી ભૂ કૃ. વિગાણિઉં, એ ટૂંકવાતાં વિગાણ્યૂં, ને પછી યશ્રુતિના લોપે.]

विखिइ नामयोगी. 'विशे' ११-३० [सं. विषये (स. वि., ए. व.)नो सीधो विकार लेखनमां मध्य. गुज मां विखइ, पण उच्चारण विखइ, एमां वच्चेनी श्रुतिमां 'इ' नो प्रक्षेप पण. गुज.मां विषे जोडणीमां परंपरा विखे छे; विसइ द्वारा विशे छे.]

विगूती भू. कृ., स्त्री. 'व्याकुल थई' १९-१ [जुओ आ पूर्वे वगूता. अहीं 'निंदा'ने बदले 'व्याकुलता'नो अर्थ आवी रह्यो छे. स्त्री. नो ई प्रत्यय.]

विगूंचु वर्त., बी. पु., ब. व. 'दुःख भोगवो' १५-१६ [जुओ वगूता अने विगूती. आ वैकल्पिक उच्चारणवाळुं रूप जणाय छे.]

विछोही भू. कृ., स्त्री. 'छूटेली, विनानी' १९-८ [सं. वि-क्षुभ्‌ना प्रेरकनुं भू. कृ. वि-क्षोभित- > प्रा. विच्छोहिअ > मध्य. गुज. विछोहिअ ने स्त्री. प्रत्यय ई. 'मानसिक खळभळाट पामवो' ए अर्थमांथी 'छूटा पडवुं' ए अर्थ विकसी आव्यो छे.]

विणज नपुं. 'वाणिज्य, वेपार' २१-५ [सं. वाणिज्यम् > प्रा. वणिज्जं > अप. वाणिज्जु > मध्य. गुज. वाणिज, विणज (इना व्यत्ययथी)]

विणजार पुं. 'वणजारो, वेपारी' २०-१३. [सं. वाणिज्यकारः > प्रा. वाणिज्जआरो > अप. वाणिज्जारु > मध्य. गुज. वणिजार, विणजार (इना व्यत्ययथी); अंते स्वरभारथी विणजारउ = वणजारो २१-५]

विणि नामयोगी. 'विना' ११-२७ [सं. विना > अप. विणु > मध्य. गुज. विण अने निरर्थक स. वि. ए. व नो इ]

विदित (सं.) भू. कृ. 'जाणेलुं' २५-३

विध स्त्री. 'विधा, प्रकार' २५-१९ [सं. विधानो अर्वा. तद्‌भव.]

विध्य पुं. 'विधि, ब्रह्मा' ६-२४ [सं. तत्सम विधिना इनो य् थये अर्वा. तद्‌भव]

विध्याता पुं. 'विधाता, विधि, ब्रह्मा' ७-१० [सं. विधातानो युना निरर्थक प्रक्षेपे अर्वा. तद्‌भव]

विनाण नपुं. 'ज्ञान, समज, सूझ' ११-१५ [सं. विज्ञानम् > प्रा. विण्णाणं > अप. विण्णाणु > मध्य. गुज. विनाण, घेवडा ण्‌ने कारणे 'न्' आव्यो.]

विमांशी भू. कृ., स्त्री. 'विमाशी, विचारी' १५-११ [सं. *विमर्शति > प्रा. विमंसइ उपरथी मध्य. गुज. विमांस अने विमास चे जातनां अंग मळ्यां. एने भ. कृ.नो ई ने पछी एने कारणे तालव्य श्.]

विरहि पुं. 'विरह' ६-२५ [सं. देहना देहीनी जेम निरर्थक इ लागी विरहि.]

विरी वि. पुं. 'वैरी, शत्रु' ८-२ [सं. वैरीनुं गुजरातीकरण गेना लाघवे, जे भविष्यमां विवृत उच्चारणमां परिणम्युं : वेरी.]

विविधि वि. 'विविध, अनेक प्रकारनुं' १०-२३ [सं. विधिना रूपसाम्ये छेडे 'इ'नो निरर्थक प्रक्षेप.]

विसमु वि. 'विषम, आकरुं, अघरुं' ३०-४५ [सं. विषमकः > प्रा. विसमओ > अप. विसमउ > मध्य. गुज. विसमउ ने वसमउ, ने टूंकवातां विसमु, वसमु पण.]

विस्मि, विरिमय पुं. 'विस्मय, आश्चर्य' २३-११, ११-६ [सं. विस्मयनुं गुजरातीकरण.]

विहिची अ. कृ. 'वहेंची, भाग पाडी' ४-८ [सं. विभक्त- > प्रा. विहत्त अने विहंज- उपरथी मध्य. गुज.मां विहिच अने विंहिंच. एने अ. कृ.नो ई लागता. प्रा.मां विहंज रूप छे ते आना विकासमा कारणभूत छे.]

विहिरु पुं. 'वहेरो, तफावत' १०-१८ [सं. व्यभिचारः > *व्यभिचारकः 'नियमभंग' > प्रा. *वहिभरओ > अप. *वहिअरउ > मध्य. गुज. वहिरउ, विहिरउ, ने टूंकवातां.]

विहिलु वि., पुं. 'वहेलो' ७-४ [प्रा. देश्य वहिल्ल- शब्द छे. वहिल्लओ > अप. वहिल्लउ > मध्य. गुज. वहिल्लउ, ने टूंकवातां. मूळमां बेवडा ल्ल ने लई अर्वा. गुज.मां पण 'ळ' ज मळ्यो.] आना मूळमां पहिलउना मूळमां रहेलो सं. प्रथ- शब्द संभवित छे: प्रा. पह- > *वह-; एने इल्ल तो द्रविडी मूळनो प्रत्यय लाग्यो छे, जे सं.मां इल्ल तरीके शिथिल वगेरेमां मळे छे ज.]

विहिवा पुं. 'विवाह, लग्न' ९-१ [सं. विवाहना आंतरिक स्वर-व्यंजनना व्यत्ययथी: विहवा ने पछी विहिवा.]

विहिवार पुं. 'व्यवहार' १०-२३ [विहिवामां छे तेवो स्वर-व्यंजन-व्यत्यय : सं. व्यवहार > *विवहार > विहवार, विहिवार, 'वहेवार'नो

जनक.]

विंठी भू. कृ. स्त्री. 'वंठी, भ्रष्ट थई, नष्ट थई' २७-१७ [सं. वि-नष्ट- > प्रा. विणट्ठ- अने मध्य. गुज.मां लाघव थतां विंठ-अंग. एने भू. कृ.नो इउ ने स्त्री.नो ई लागतां].

वीती, भू. कृ., स्त्री. 'व्यतीत थई, पसार थई, वटी गई' २२-१ [सं. विवृत- (ऊतरवुं, जुदा थवुं) > प्रा. *विअत्त- उपरथी मध्य. गुज. वीत-अंग; एने भू. कृ.नो इउ अने पछी स्त्री.नो ई.]

वीननी, वीनतडी स्त्री. 'विनंति, आजीजी' ११-१६, २७-१६ [सं. विज्ञप्तिका > प्रा. विण्णत्तिआ > अप. विण्णत्तिअ > मध्य. गुज. वीनती; अने स्वार्थे ड लागता वीनतडी. अर्वा. गुज. मां विनंती-विनंति नवो विकास छे.]

वीनव्यु भू. कृ., पुं. 'वीनव्यो' ३०-४६ [सं. *विज्ञपितः > प्रा. विण्णविओ > अप. विण्णविउ > मध्य. गुज. वीनविउ, ने टूंकवातां]

वीसर्यु भू. कृ., पुं. 'वीसर्यो, भुलायो' १०-३ [सं. *विस्मरितः > प्रा. विस्सरिओ > वीसरिओ > अप. वीसरिउ > मध्य. गुज. वीसरिउ, ने पछी टूंकवाता वीसर्यु; आसपासना तालव्य उच्चारोने लई पछी स् नो श्.]

वुलावु आज्ञार्थ बी. पु., ब. व. 'वोळावो' २५-१४ [सं. वल् धातुनुं प्रेरक *वलापयति > प्रा. वलावेइ, वलावइ > अप. वलावइ > मध्य. गुज. वलावइ, वुलावइथी वुलाव अंग अने आज्ञार्थ बी. पु., ब. व.नो उ थये]

वेगलु वि., पुं. 'वेगळो, छेटो, दूरनो' १८-१ [डॉ. दवे आना मूळमां सं. व्यग्र शब्द सूचवे छे. आ. हेमचंद्र (सि.हे. ८-४-३७०) वेगलु शब्द बताव्यो छे. प्रा.मां व्यग्रनुं विअग्ग- रूप वग्ग साथोसाथ मळे छे. अर्थ 'वधु आगळ, दूर' एम अभीष्ट छे, तो विअग्ग + स्वार्थे लथी आ *विअग्गलओ > अप. वेगलउ द्वारा मध्य. गुज. वेगलउ, ने टूंकवातां वेगलउ आवी शके. मूळमां एकवडा 'ल्'ने कारणे अर्वा. गुज.मां 'ळ्' आव्यो छे.]

वेठी भू. कृ., स्त्री. 'सहन करी, खमी' २६-११ [सं. वेष्ट् 'वींटळाई वळवुं' उपरथी 'सहन करवुं' अर्थ विकस्यो लागे छे. सं. वेष्टित- > प्रा. वेट्ठिअ- > मध्य. गुज. वेट्ठिअ- ने स्त्री. ई प्रत्यय. बदला विनानुं फरजियात काम वेठ्य ए आनो विकास छे.]

वेतन (सं.) नपुं. 'पगार' २३-२८

वेदन स्त्री. 'वेदना, पीडा' ८-५, २६-११ [सं. वेदनानो अर्वा. तद्भव.]

वेध्या पु. 'वेधा, ब्रह्मा' ५-४ [सं. वेधामां निरर्थक यश्रुतिनो प्रक्षेप. सरखावो विध्याता.]

वैसंपा पुं. 'वैशंपायन ऋषि, महाभारतना वक्ता' २-१ [सं. वैशंपायननुं गुज. टूंकवायेलुं रूप]

व्यभचार पुं. 'व्यभिचार' ११-६२ [सं. व्यभिचारनो अर्वा. तद्भव.]

व्यंठ्‌यूं भू. कृ. 'वंठ्युं, बगड्युं' ११-३२ [जुओ आ पहेलां विंठी. आ अहीं नपुं. व्यंटिउं, ने पछी टूंकवातां]

व्रांसु पुं. 'वरांसो, भरोसो' ११-८८ [अज्ञात मूळ वरांसउनुं टूंकवायेलुं रूप. हिंदीमां भरोसा मळे छे. गुज.मां भरोसो- भरांसो, भरूसो- भरूंसो आवां, चार शब्दस्वरूप प्रचारमां छे; वरांसो अत्यारे लुप्त थई गयो छे.]

शके अव्यय 'जाणे के' ११-९ [सं. शङ्के ए शङ्क धातुनुं वर्त. कर्तरि प. पु., ए. व. नुं रूप उत्प्रेक्षा अलंकारमां वपराय छे तेनुं आ निरनुनासिक गुज. रूप छे. एने शक् धातु साथे संबंध नथी. सरखावो सं. जाने > मध्य. गुज. जाणे.]

शणगार पुं 'शृंगार, शोभा; घरेणां' ११-२० [सं. शृङ्गारनुं सीधुं अर्वा. गुज. रूप]

शबला नपुं. 'शंबल, भातुं, अन्न' १५-२ [सं. शम्बलनुं विकृत गुज. रूप.]

शबिका स्त्री. 'शिबिका, पालखी' २५-१८ [सं. शिबिकानुं अर्वा. विकृत रूप]

शमावि वर्त., त्री. पु., ए. व. 'शमावे, शांत करे' २२-४ [सं. शम् धातुना शाम- अंगने गुज. 'आव' प्रेरकनो लाग्ये साधेलुं रूप: शमावइ, ने टूंकवातां]

शरखूं वि. 'सरखुं, जेवुं' ५-२ [सं. सदृक्षकम् > प्रा. सरिक्खअं > अप. सरिक्खउं > मध्य. गुज. सरीखउं, सरिखउं ने शरिखउं > शरखउं, पछी टूंकवातां; सनी तालव्यता आगंतुक मात्र]

शरजी भू. कृ., स्त्री. 'सरजी, उत्पन्न करी' ६-२१ [सं. सृज् धातुना सर्ज- नो गुज.मां सरज- प्रयोग; एने भू. कृ. नो इउ + स्त्री. ई; पछी निरर्थक तालव्यताथी श्.]

शरिखूं वि. 'सरखुं, जेवुं' ७-५ [जुओ शरखुं.]

शर्म पुं. 'श्रम' ८-१७ [सं. श्रमनुं भ्रमना भर्म जेम ग्रास माटे शर्म.]

शाप्यु भू. कृ. पुं., 'शाप्यो, भांड्यो' २८-३७ [सं. शाप तत्सम नामनो गुज.मां भू. कृ. नो प्रयोग : शापिउ, ने टूंकवातां]

शाम वि. 'काळुं' ४-७ [सं. श्याममांथी यनो गुज. लोप.]

शाहनि सर्व., चोथीना अर्थना अनुग साथे 'शा माटे' ६-११. [जुओ नीचे शूं. विभक्ति अंग शा- थाय छे अने एमा एह, जेह, तेह, केह जेम ह श्रुतिना श्रवणे स्वर महाप्राणित बने छे.]

शाहि वर्त., त्री. पु., ए. व. 'साहे, पकडे' ६-१२ [सं. साहयति > प्रा. साहेइ, साहइ, > अप., मध्य. गुज. साहइ, टूंकवाता साहि, ने पछी सूनी निरर्थक तालव्यता.]

शांभलि आज्ञार्थ बी. पु., ए. व. 'सांभळ' ११-२४ [सं. सं-भाल् 'जोवुं' 'ध्यानमां लेवुं'नुं *संभल् थई प्रा. अप. सं-भलइ > मध्य. गुज. सांभलइ, ने पछी टूंकवातां अने आदि सूनो निरर्थक श् थतां]

शिखि पुं. 'मोर' ५-६ [सं. शिखीना अंत्य स्वरनुं गुज. लाघव.]

शिर नपुं. 'माथुं' ४-७ [सं. शिरस्‌ना स्‌ना लोपे गुज. अंग]

शिहिजि कि. वि. 'सहेजमां' ११-८ [सं. सह्य 'खमाय तेटलुं'नुं प्रा. *स-हिज्ज- > मध्य. गुज. सहिज, सिहिज 'जरा, थोडुं'ने पछी 'थोडामां' माटे स. वि, ए. व. इ्. आने सं. सहज साथे कशो संबंध नथी.]

शीकोतरी स्त्री. 'शिकोतरी, दुर्गामाता' २२-२ [शिकोतरा समुद्रना कांठे आवेला कोई मंदिरमानी दुर्गादेवीनुं नाम]

शीख स्त्री. 'रजा' ११-३९ [सं. शिक्षा-'शिखामण' > प्रा. सिक्खा > अप. सिक्ख > मध्य. गुज. सीख- करी 'इ'ने कारण तालव्य श्. विदाय वखते आपवामां आवती दक्षिणा, तेमज यजमानो उपरनो गोरनो वार्षिक लागो ते पण 'शीख'.]

शीझतुं वर्त. कृ., नपुं. 'सिद्ध थतुं' १०-१५ [सं. सिध्यत् नुं प्रा. सिज्झंत- थई मध्य. गुज. सीझत-शीझत- अंग.]

शीदादि भविष्य., (कर्मणि), त्री. पु., ए. व. 'झूरी मरशे' १५-९ [सं. सद्-शीद् धातुनुं सीधुं रूप. एना उपरथी भविष्य, कर्मणि 'आ'शी सीदासइ, ने टूंकवातां तेमज तालव्य श् थतां.]

शीम स्त्री. 'सीमा, हद' ११-७२ [सं. सीमानो गुज. विकार; ने 'ई'ने कारणे श्.]

शीशि नपुं., स. वि., ए. व. 'शीश उपर' ३०-४३ [सं. शीर्षके > प्रा. सिस्सए > अप. सिस्सइ > मध्य. गुज. सीसइ, टूंकवाता सीसि, अने वंने इ कारने लई तालव्यता.]

शुणु आज्ञार्थ. बी पु., ब. व. 'सांभळो' ४-२ [सं. *शृणत > प्रा. सुणह (< थ) > अप. सुणहु > मध्य. गुज. सुणउ, ने टूंकवाता सुणु. पछी थादि सुनी निरर्थक तालव्यता.]

शुभवयणी वि. स्त्री. 'शुभ वचनवाळी' २०-१३ [सं. शुभ + सं. वचन- > प्रा. वयण, ने स्त्री. नो गुज. ई लागतां]

शूं सर्व. प्रश्नार्थ. ३-१७ [सं. कीदृशकम् > प्रा. केरिसअं > मध्य. गुज. किसिउं > सिउं > स्यूं > शूं अने सूं एनुं अंग पुं. ए. व-., ब. व.मां शा-, अने नपुं. ए. व. मां शा-, पण ब. व.मां शां-, स्त्री. शी थाय. आमांना शा-, शां- अंगमां महाप्राणितता उमेरातां शाहा-, शांहां- एम लखाय.]

शूं नामयोगी. 'साथे थी,' ३-१९ [सं. सहितम् > प्रा. सहिअं > अप. सहिउं > मध्य. गुज. सिउं, स्यूं, अने तालव्य यने कारणे तालव्य श्ः शूं. अने सूं पण मळे ज छे. अप. मां सहुं रूप पण मळे छे (सि. हे. ८-४-४१९) जेनो संबंध साकम् साथे बतावायो छे. डॉ. दवे अने मोदी ब्लोकने अनुसरी सहितम्ने स्वीकारे छे. नरसिंहराव समम् अथवा सह बेउ सूचवे छे. समम् > प्रा. समं > अप. *सवुँ > मध्य. गुज. सउं अने सह > अप. सहुं आवी शके, पण सिउं थवा माटे इकार जोईए ते सहितम् ज आपी शके; अने तेथी ज सहितम् आना मूळमां तर्कशुद्ध छे. हिंदीनो सें ए आनो विकास छे.]

शेय्या = शेज्या स्त्री. 'शय्या, पथारी' ८-१७ [सं. शय्यामांना य् ना वळे शेज्जा रूप, ने पछी मध्य गुज. मां जूना लाक्षणिक उच्चारण माटे यनो प्रक्षेपः शेज्या, ने विकल्पे लखाय शेय्या.]

शेरी स्त्री. 'पाके लत्तामांनी गली' २७-९ [प्रा. देश्य सेरी महोल्ला-वाचक छे. सेरडो 'मार्ग' ए आनो ज विकास छे. संभव छे के आ शब्दनो संबंध

सं. स्वैर- 'स्वच्छंदी, स्वेच्छ, मरजी माफक हिलचाल करनार' साथे होय. ज्यां बीजां वाहन वगेरेनी अड्चण न होय तेवुं स्थान ते स्वैर- > प्रा. सेर. अने एना उपरथी एवो मार्ग, गली वगेरे.]

शेव स्त्री. 'सेवा' १५-२७ [सं. सेवा > अप. सेव > मध्य. गुज. सेव अने ए तालव्य स्वरने कारणे शेव पण-]

सगपण नपुं. 'सगापणुं, कौटुंबिक संबंध' २९-५२ [सं. स्वक- > शौ. प्रा. सग + सं. °त्वन- > प्रा. प्पण- > मध्य. गुज. सगपण.] सगूं वि. 'सगपणवाळुं, कौटुंबिक-संबंधी' १५-२२ [सं. स्वककम् > शौ. प्रा. सगअं > अप. सगउं > मध्य. गुज. सगउं, ने टूंकवातां सगूं.]

सघलूं वि. 'सघळुं, बधुं' ३-१७ [अहीं सघला पुं., ब. व., सं. सकलकम् > प्रा. सघलअं > अप. सघलउं > मध्य. गुज. सघलउं, ने टूंकवातां.] सघली वि. स्त्री. ८-१९ [स्त्री.नो ई लागतां.]

सजाइ स्त्री. 'तैयारी' २५-१८ [सं. सज्ज (भू. कृ.) 'तैयार' नुं मध्य. गुज. *साज थई भाववाचक 'आई लाग्ये, पछी उच्चारलाघव]

सणमणु वि. पुं. 'सूनमून' ८-८ [सं. शून्यमौनकः > प्रा सुण्णमुणओ > अप. सुण्णमुणउ > मध्य. गुज. सूनमणउ, ने लाघवथी, तेमज फरी ण थये. सणमणउ, ने टूंकवातां आम लागे छे]

सपराणु वि. पुं. 'प्राणवाळो, बलिष्ठ' २०-५ [सं. सप्राणकः > प्रा. *सप्पराणओ > अप. *सप्पराणउ > मध्य. गुज. सपराणउ, ने टूंकवाता]

सभा (सं.) स्त्री. 'स्थान, ठेकाणुं, कचेरी; धर्मशाळा' १५-२४

समइ पुं., सा. वि., ए. व. 'समये' ७-४ [सं. समये > प्रा. समए > अप. समइ]

समय (सं.) पुं. 'शरत' ११-८५

समरथ वि. 'समर्थ' ३०-४३ [सं समर्थनो अर्वा. तद्भव, विश्लेषथी]

समि पुं., सा. वि., ए. व. 'समये; खास समये' ६-७, १५-२२ [जुओ उपर समइ. एनो ज संकोच.] समिय पुं., सा. वि. ए. व. 'समये' २१-११ [समयेना मध्य. गुज. समयिमांथी ईना स्थानांतरे]

सरखु वि., पुं. 'सरखो, जेवो' ३-७ [सं. स-दृक्षकः > प्रा. सरिक्खओ > अप. सरिक्खउ > मध्य. गुज. सरीखउ, सरिखउ, सरखउ, ने टूंकवातां.] सरखी वि. स्त्री. ९-१४ [स्त्री. नो ई लाग्ये.]

सरज्यां भू. कृ., नपुं., ब. व. 'उत्पन्न कर्यां' ४-२ [जुओ सारजी. सं. सृज्-सर्ज्‌नो तत्सम लेखे प्रयोग ने मध्य. गुज.ना प्रत्यय.]

सरसि भविष्य., त्री. पुं., ए. व. 'सरशे, काम पार पडशे' ११-८ [सं. सृ-सर् 'जवुं, खसवुं'ना सरिष्यति > प्रा. सरिस्सइ > अप. सरिस्सइ > मध्य. गुज. सरिसइ, सरसइ, ने टूंकवातां.]

सर्वि सर्व., प. वि., ब. व. 'सर्वे, बधा' ११-२७ [सं. सर्वेमां मध्य. गुज.नी रीते ह्रस्व इ.]

सबला वि., पुं., ब. व. 'सबळा, मरखा बळना' १३-५ [सं. स-बलकाः > प्रा. सबलआ > मध्य. गुज. सबला. एकवडा ल् ने लई अर्वा. गुज.मां 'ळ्']

सव वि. 'बधा' ९-१८ [सं. सर्वे > प्रा. सव्वे > अप. सव्वि > मध्य. गुज. सवि > सव; हिंदीमां सब.] सवि ११-५.

सही अव्यय. 'खरेखर' ६-४ [अरबी सहीह]

सहीली स्त्री. 'सहियर, सखी' १३-७ [सं. सखी > प्रा. अप. सही. शाने स्वार्थे उल्ल > अल्ल > ल्ल लागतां विकसतां सहीली > *साहीली > साहेली सुधीना शब्द मळे.]

सहू सर्व., वि. 'सौ' ९-३ [अप. मां साहु मळे छे. आ विकास टे. दवे प्रमाणे, सं. सर्वः खलु > प्रा. सव्वो खु > अप. सव्व-हु > *सव-हु > *सउ-हु द्वारा शक्य छे. पिशले सं. शश्वत् आना मूळमां मान्यो छे; अर्थथी आ बरोबर बंध बेसे नहि. स्वरभार अंते होई सहू आवे छे.] सहू-इ 'सौए, बधाए' १४-१०

संकेतु पुं. 'संकेत' १०-९ [सं. तत्सम संकेतने मध्य. गुज. प. वि., ए. व. नो उ (अपभ्रंशमांथी)]

संखेप पुं. 'संक्षेप, टूंकामणी' १-९ [सं. संक्षेप- मांना 'क्ष्' नो सीधो 'ख्' अथवा 'ष्' करी उच्चारण 'ख्' थये, अने ष् ने संस्कृतवत् राखी मूर्धा–एम अर्वा. तद्भव.]

संचरया भ. कृ., पुं., ब. व. 'सांचर्या, गया' ८-७ [सं. संचरिताः > प्रा. संचरिआ > मध्य. गुज. सांचरिआनो संक्षेप. पण आमां अप. सुधीनी लाक्षणिकतानो अनुस्वार जीवतो रखायो छे, तेथी दीर्घ आ नथी कर्यो.]

संच पुं. 'युक्ति' २७-२२ [फारसी शकंचह् साथे आने संबंध नथी. सं. संचय 'संग्रह' उपरथी 'संचायक वृत्ति' अने पछी 'युक्ति' ए अर्थविकास जणाय छे; छेल्ली श्रुतिनो लोप.

संतोख्यु भू. कृ., पुं., ए. व. 'संतोष्यो' ५-१० [सं. सं-तोष्- धातुनो तत्सम लेखे प्रयोग ने मध्य. गुज. भू. कृ. प्रत्यय 'इउ, साथे ष् नुं उच्चारण ख् = संतोखिउ, ने टूंकवातां] संतोख्या ब. व. ११-७२

संदे पुं. 'संदेह, शंका' २९-२२ [सं. संदेहना हनो मध्य. गुज. लाघवथी लोप.]

संभारे वर्त., त्री. पु., ए. व. 'याद करे' ७-४ [सं. संस्मारयति > प्रा. संभारेइ, संभारइ > अप. संभारइ > मध्य. गुज.मां सँभारइने टूंकवातां अहीं आदि श्रुतिमां दीर्घता नथी आवी, केम के अकर्मक रूप सांभरइ पण मध्य. गुज.ने मळ्युं छे; सं मां अकर्मक रूप नथी डॉ दवे आने सं. संभरतिनो विकास कहे छे, जे बरोबर नथी.]

संभालु आज्ञार्थ., बी. पु., ब व. 'संभळावो' ३-८ [सं. सं-भालयत > प्रा. संभालेह, संभालह (< थ) > अप. संभालहु > मध्य. गुज. सँभालउ, ने टूंकवातां. अहीं पण सां थतो नथी, केम के सांभल- मूळ धात्वंग तरीके आवे छे; गुज.मां आनुं प्रेरक सँभळाववुं आव्युं छे. मूळ सं. धातुमां 'जोवुं, धारण करवुं' अर्थ छे, जे 'सांभळवुं' अर्थमां मळ्यो छे. सं-भाळवुं 'रक्षण करवुं, हवालो लेवो, समालवुं' ए पण आनो अर्थभेदे विकास छे]

संवरु आज्ञार्थ., बी. पु., ब. व. 'संवरो, संकेलो' २८-३७ [सं. सं-वृना संवर् नो सीधो तत्सम प्रयोग + मध्य. गुज. उ]

संसार (सं.) पुं. 'जगत' [हाल हिंदीमां जे अर्थ व्यापक छे ते 'जगत'; सं. रूढि प्रमाणे 'अहंता-ममतात्मक संबंध']

साखिया वि., पुं. ब. व. 'साक्षी' ३०-८ [सं. साक्षिकाः > प्रा. अप. सक्खिआ > मध्य. गुज. साखिआ ने यश्रुति. ए. व. साखिउ > साखियु.]

साखी वि. 'साक्षी, साखियुं' [सं. साक्षिकः > प्रा. सक्खिओ > अप. सक्खिउ > मध्य. गुज. साखी.]

साचवि वर्त., त्री. पु., ए. व. 'सांचवे, वचावे' २९-११ [सं. संचिनोति > प्रा. संचिणइ; परंतु अप. संचइ > मध्य. गुज. सांचइ आने प्रेरकनो भाव अच लाग्ये सांचवइ अने अनुनासिकताना वैकल्पिक लोपे साचवइ, ने टूंकवातां. 'कीडी संचे, ते नर खाय' एमां गुज.मां 'संचे' छे, जे रुढ 'सांचवे' छे.]

साचूं वि. 'सत्य, खरुं' ४-२ [सं. सत्यकम् > प्रा. सच्चअं > अप. सच्चउं > मध्य. गुज. साचउं, ने टूंकवातां.]

साज पुं. 'तैयारी, सजावट; सजावटनी सामग्री' ११-४९ [सं. सज्ज- (भू. कृ.) ना आधारे प्रा. अप.मां थई मध्य. गुज.मां नाम तरीके. सजवुं 'सज्ज करवुं–हथियारनी धार तैयार करवी, लूगडां घरेणां पहेरवां', मजाई 'तैयारी; घोडा हाथी उपरनी बेसवा माटेनी सामग्री. आ अर्थविकास छे.]

साथ पुं. 'साथेनुं माणस, सथवारो; टोळुं' २१-३, ४ [सं. सार्थः > प्रा. सत्थो > अप. सत्थु > मध्य. गुज. साथ. 'साथे' नामयोगी ए आनो ज विकास छे, ने 'साथी–साथीदार' पण.] साथि नामयोगी, 'साथे' ६-३ [मध्य. गुज. साथइ त्री. वि., ए. व. टूंकवातां] साथी वि., पुं. 'साथीदार' ६-१६ ['साथ'मां विशेषण बनावनार ई (< सं. इक-) लागतां]

साधवी स्त्री. 'साधु स्त्री, पवित्र स्त्री' ६-१५ [सं. साधुना स्त्री. साध्वीनो अर्वा. तद्भव, विश्लेषथी]

साद पुं., 'शब्द, आज्ञा, हेलो' १३-२० [साद पडाविधु 'गाममां के देशमां आज्ञा जाहेर करावी–पडो वजडाववो के टंडेरो पिटाववो.' सं. शब्दः > प्रा. सद्दो > अप. सद्दु > मध्य गुज. साद. 'अवाज' माटे आ शब्द आजे व्यापक छे.]

साधि वि. 'साध्य' ११-२९ [सं. साध्यना यूनो अर्वा. रीते इ.]

सान स्त्री. 'संज्ञा, निशान; समझ' १२-६ [सं. संज्ञा > प्रा. सण्णा > अप. सण्ण > मध्य. गुज. सान. अंते आ होवाने कारणे 'सान्य' उच्चारण य श्रुतिथी नथी.

सामरा पुं., ब. व. 'सावर नामनां पशु' १८-६ [सं. शम्बर 'हरणना जेवुं पण जरा मोटुं–शिंगडांमां अनेक फांटा होय तेवुं पशु' > प्रा. संबर- > मध्य. गुज. *सांबर- > सांवँर- > सामर; आजे गुज.मां निरनुनासिक साबर छे.]

साहामूं वि. 'सामे रहेलुं, संमुख' १२-९ [सं. संमुखकम् > प्रा. संमुहअं > अप. संमुहउं > मध्य. गुज. सांमुहउं, सामहउं, साहामउं (लेखनमां साहांमउं)ने

ટૂંકવાતાં] સાહામો વિ. પું. 'સામે રહેલો' ૨-૧૧. [આ શબ્દમાં મહાપ્રાણ સ્વર છે, જો કે આજે લેખનમાં સામું લખાય છે.]

સાહય સ્ત્રી. 'મદદ, સહાય' ૧૧-૮૪ [સં. સહાય 'મદદગાર' ઉપરથી નામ સાહાય્ય, સાહ્ય નપું., એના ઉપરથી ગુજ.માં સ્ત્રી.]

સાંઈં નપું. 'ભેટવું એ, સાંયું' ૫-૧૫ [સં. સ્વાગતમ્ > પ્રા. સાઅઅં > > અપ. સાયઉં > મધ્ય. ગુજ. *સાઇઉં ને ટૂંકવાતાં સાંયૂં અને સાંઈં. અર્વા. ગુજ. માં સાંયહું પણ છે. 'સામે આવનારને ભેટવા'માં આ શબ્દ પરિણમ્યો છે.]

સાંનિધિ નપું., સા. વિ., એ. વ. 'સાંનિધ્યમાં, નજીક' ૧૬-૧૩ [સં. સંનિધિ ઉપરથી સાંનિધ્ય, ને મધ્ય. ગુજ.માં તત્સમ સાઁનિધ + સા. વિ., એ. વ. પ્રત્યય ઇ]

સાંભલિયુ ભૂ. કૃ., પું. એ. વ. 'સાંભળ્યો' ૩-૭ [જુઓ આ પૂર્વે સંભાલુ. સં. સં + ભલ્- 'જોવું, લક્ષ્યમાં લેવું, ધારણ કરવું' નો અર્થવિકાસ. મધ્ય. ગુજ. સાંભલિઅઉ, ને યશ્રુતિ.]

સાંસતાં વિ., નપું., બ. વ. 'સ્વસ્થ થતાં' ૨૬-૧૬ [સં. વર્ત. કૃ. શ્વસત્‌નું પ્રા. સસંત-; પાછળથી પહેલી શ્રુતિમાં અનુનાસિક ઉમેરાય છે : મધ્ય. ગુજ. સાંસત- ને નપું. બ. વ. 'આં'. હિંદીમાં સં. શ્વાસનું સાસ સરખાવો.]

સાંસુ પું. 'સંશય' ૨૮-૮ [સં. સંશય : > પ્રા. સંસઓ > અપ. સંસઉ > મધ્ય. ગુજ. સાંસઉ, ને ટૂંકવાતાં. આની અને ઉપરના સાંસતાંમાના સાંસ-ને કશો સંબંધ નથી.]

સિ સર્વ., સ્ત્રી. વિ., એ. વ. 'શે, કેવી રીતે' ૮-૧૨ [જુઓ આ પૂર્વે શું સર્વ. અહીં સ્ત્રી. વિ., એ. વ. નો ઇ લાગતાં સઇ, ને ટૂંકવાતાં સિ. આનું શિ પણ લખે જ.]

સિધિ સ્ત્રી. 'સિદ્ધિ, સફળતા.' ૧૦-૭ [સં. સિદ્ધિનું જોડાક્ષરલોપે મધ્ય. ગુજ. સરળ રૂપ] 'ખબર, અંતર' ૨૪-૩, ૨. [આમાં અર્થવિકાસ થયો છે.]

સીખ સ્ત્રી. 'શીખ; રજા' ૮-૭ [જુઓ આ પૂર્વે શીખ.]

સુઇ, સુયિ વર્ત., સ્ત્રી. પુ., એ. વ. 'સૂએ' ૩-૫ [સં. સ્વપિતિ > અપ. સુઅઇ > મધ્ય. ગુજ. સુઇ, સૂઈ, સુયિ]

सुए वि. ' सो पण ' २६-७ [सं. शतम् > प्रा. सअं > अप. सउ > मध्य. गुज. सउ, ने टूंकवातां सु + मध्य. गुज. इ ' पण ' (< अप. वि.) > ए = सुए]

सुखडी स्त्री. ' गोळचोपडी जेवी मीठाई ' ५-६ [सं. *शुष्क-पुटिका > प्रा. *सुक्ख-उडिआ > अप. *सुक्खुडिअ > मध्य. गुज. सूखडी, सुखडी. गोळ, घी अने घउंना लोटनी गोळचोपडी, पकवान, पछीथी हरेक प्रकारनी मीठाईने माटे आ शब्द वपरायो छे अने ' कदोई 'ने माटे ' सुखडियउ ' पण व्यापक थयो.

सुखिऊं वि. ' सुखियुं, सुखी ' १४-२ [सं. सुखिकम् उपरथी सीधो विकास; मध्य. गुज. सुखिउं ने अंते स्वरभारथी दीर्घ. सीधो विकास न होय तो ' सुहिऊं ' थाय.]

सु-चंग वि ' सुंदर ' २२-५ [प्रा. देश्य चंग ने सं. सु उपसर्ग लागी थयेलुं रूप; ' खूब सुंदर '.]

सुणि वर्त., त्री. पु., ए. व. ' सांभळे ' ५-१ [जुओ आ पूर्वे शुणु. आ प्रा. अप. सुणइ उपरथी टूंकवातां.]

सुत्रामणि पुं. ' सौत्रामणी नामनो यज्ञ ' ११-९२ [सं. सौत्रामणी ' एक यज्ञ ']

सुहर नपुं. ' शूकर, वराह, डुक्कर ' १८-६ [सं. शूकरः > प्रा. सूअरो > अप. सूअरु > मध्य. गुज. सूअर अने ह् ना प्रक्षेपे सूहर > सुहर]

सुहुलं वि. ' सुलभ, सोहलुं ' २७-८ [सं. सुलभकम् > प्रा. सुलहअं > अप. सुलहउं > मध्य. गुज. सुहलउं, सुहुलउं, ने पछी टूंकवातां. आमा सुहेलउं सोहिलउं जेवां रूप (पष्टि.) पण मळे छे.]

सुंपिया भू. कृ., पुं., ब. व. ' सोंप्या ' १३-११ [सं. समर्पिताः > प्रा. समप्पिआ > अप. *समप्पिआ > *सवँप्पिआ- > मध्य. गुज. सउंपिआ > सूंपिआ, सुंपिआ ने यश्रुतिए.]

सूइ वर्त., त्री. पु., ए. व. ' सूए ' ६-४ [जुओ आ पूर्वे सुइ.]

सूझि वर्त., त्री. पु., ए. व. ' सूझे, मनमां समजाय के सडुं थाय ' ८-९ [सं. शुध्यते (' शुद्धि-शोध कराय ') > प्रा. अप. सुज्झइ > मध्य. गुज. सूझइ, ने टूंकवातां.]

सूधूं वि. ' सीधुं, सरळ, सारुं ' ९-२ [सं शुद्धकम् > प्रा. सुद्धअं > अप. सुद्धउं > मध्य. गुज. सूधउं, ने टूंकवातां.]

सूनी वि. स्त्री. 'शून्य थयेली, एकली अटूली' ८-२० [सं. शून्यक- > प्रा. अप. सुण्णअ- > मध्य. गुज. सूनअ- ने स्त्री.नो ई लागतां]

सूरय पुं. 'सूर्य' ४-१० उच्चार सूरज, विश्लेषथी 'सूरय' थया पछी; अर्वा. तद्भव.]

सेइंद्री स्त्री. 'सैरिंध्री, दासी' २४-२० [सं. सैरिन्ध्रीनुं उच्चारलाघव थये.]

सेन्य स्त्री. 'सेना' २५-१८ [सं. सैन्य]

सोधु = सोध्यु भू. कृ., पुं., ए. व. 'शोध्यो' १६-१३ [सं. शुध्‌ना शोध्‌नो गुज. प्रयोग सोध- करी + इउ [भू. कृ. नो पुं. प्रत्यय] = सोधिउ; एने टूंकवतां सोध्यु, ने पछी यश्रुतिनो लोप.] सोधूं = सोध्यूं नपुं., ए. व. ११-८५.

सोभागी वि. 'सौभाग्यवान' १९-२ [सं. सौभाग्य- उपरथी अर्वा. तद्भव सौभाग- अने एने तद्धितनो ई (> सं. इक-) लागी.]

सोलमइ वि, स. वि. ए. व. 'सोळमे' ९-१० [सं. षोडश > प्रा. अप. सोलह > मध्य. गुज. सोल; एने आवृत्तिवाचक सं. म. गुजराती रीते थतां सोलमउं + स. वि., ए. व. नो इ. अहीं सोलमीइ जोईये, कलानुं वि होई.]

सोहामणूं वि. 'शोभीतुं' १७-१० [सं. शोभापयति > प्रा. सोहावइना विकासमां नाम बनतां *सोहावणउं ने सोहामणउं, टूंकवातां.]

स्कंधावार (सं.) पुं. 'छावणी' ११-४६

स्थंभ पुं. 'थांभलो' ११-४८ [सं. स्तम्भमां स् ना योगे गुज. रीते स्थंभ]

स्वसुर पुं. 'ससरो' १५-१२ [सं. श्वशुरनुं अर्वा. तद्भव रूप.]

स्वाम पुं. 'स्वामी, धणी' ९-२२ [सं. स्वामीनुं गुज. रीते स्वामि > स्वाम्य, थये स्वाम, यश्रुतिने लोपे.]

हइ नपुं. 'हैयुं, हृदय' ३-३ [सं. हृदयम् > प्रा. हिअअं > अप. हिअउं > मध्य. गुज. हइउं > हैयुं. अंते स्वरभार लुंजतां हइ.]

हउओ, हुओ, हूओ भू. कृ., पुं., ए. व. 'थयो' ३-८ [सं. भूतकः > प्रा. हूअओ > अप. हूअउ > मध्य. गुज. हूयउ > हुअउ > हउओ, ए पण टूंकवातां हुओ, ने हुअउना संयोगमां हूओ. पौराणिकोनी भाषामां अर्वा. गुज. हवो भू. का. ना रूप तरीके वपराय छे ते आनो विकास छे; अर्वा. गुज.मां आ रूप, बाकी, नष्ट थयुं छे.]

हत वर्त. कृ. (अविकारी) ' होत ' १७-९ [क्रियातिपत्त्यर्थे वपरातुं क्रियापद छेल्ले स्वरभार विनानुं वर्त. कृ. छे. सं. भवत् > प्रा. होंत- मांथी मध्य. गुज. मां होत, हूअत, हुउत, हूत, हुत अने हत आवां रूप ऊतरी आव्यां छे. ' उपदेशमाला 'मां होत्त अने हत सिवायनां रूप (डॉ. दवे) मळे छे. अर्वा. गुज.मां होत अने हत बे रह्यां छे. आ जातनां अविकारी रूपोनो कृदंत तरीकेनो उपयोग आजे नथी रह्यो, जे मध्य. गुज. मांथी ज नष्ट थयो हतो.]

हराव्यु = हराव्युं भू. कृ (प्रेरक), पुं., ए. व. ' हराव्यो ' १५-४ [सं. हृ-हरनुं प्रा. अप. द्वारा हर- रूप मळ्युं छे. एनुं *हरावित- > प्रा. हराविअ- द्वारा गुज. मां पण हराविअ- अंग ने पुं. ए. व. नुं रूप हराविउ-, एने टूंकवातां हराव्यु, ने यश्रुति जतां]

हरिख पुं. ' हर्ष ' २४-९ [सं. हर्षनुं प्रा.मा हरिस थाय छे तेने आभास-साम्ये सीधुं हरिष- ने त्यां ' ष् 'नुं उच्चारण ' ख् '; आम आ अर्वा. तद्भव. आजे तो हरख अने हरखवुं रह्यां छे.] हरखी अ. कृ ' हर्ष पामीने, राजी थईने ' ५-१४ [हरख + ई (अ. कृ. < अप. प्रा. °इअ > सं. °य)]

हलुआपणूं नपुं. ' हळवापणुं, लघुता ' १०-२ [सं. लघुक- > प्रा. लहुअ- अने व्यत्ययथी हलुअ- > अप. हलुअ-; अंते स्वरभारने कारणे + सं. त्वन- > प्रा. °प्पण- लागी हलुआपण- + नपुं. उं, ने टूंकवातां. हलुअउं अर्वा. गुज. हळवुं आव्युं छे. जुओ आ नीचे तरत ज.] हलुइ-सूं क्रि. वि. ' हळवेथी ' १६-३. [मध्य. गुज. हलुअ + त्री. वि. ए. व. नो इ अने वधारामां सूं (' साथे, थी ') = अर्वा. गुज. हळवे-शुं = ' हळवेथी, हळवेकथी ']

हवडां क्रि. वि. ' हमणां, अत्यारे, अत्रणे ' २-७ [सं. अधुना > प्रा. अहुणा > अप. *हउणा > मध्य. गुज. हउणां, *हवँडां, हवडां ने बीजी बाजु हमणां. आ छेल्लां बेउ रूप अर्वा. गुज.मां छे. मध्य. गुज.मा हिवडां रूप पण मळे छे. आने लई हिव+डां (स्वार्थे) एम टेसिटोरी जणावे छे. अने आ हिवनो संबंध एमणे एहवइ (< सं. एतादृशक- > अप. एइवअ-) साथे कर्यो छे. मने सं. अथवा > अप. *अहव- ने सा. वि., ए. व.नो इ लागे हवइ > हवि > हिव, अर्वा. गुज.मा हवे (कवितामां हवां, हावां) अने सौराष्ट्रना मेरोमां हेव. परंतु हिवडां तो हिवना आभाससाम्ये हवडांनुं रूपांतर छे. नरसिंहराव एने अधुनानो विकास ज माने छे; डॉ. दवे आ संबंध स्पष्ट करता नथी. मोदी हवइ > हवि > हिवने टेसिटोरी प्रमाणे साधी हवडां माटे पण टेसिटोरीना मतनो समादर करे छे. हमणां रूप मध्यवर्ती *हउणा > *हवँणा > हवँणानो प्रा. अहुणा < सं.

अधुनानो अने अंते सानुनासिकता ण् ने कारणे उमेरायानो बोध करे छे. अने डां ए णां ज छे, तेथी हवडां ए हवँडां ज छे.]

हवि क्रि. वि. 'हवे, आ पछी; अत्यारे' ८-३ [जुओ हवडां. डॉ. टेसिटोरी बतावे छे तेम एहवइमांथी नहि, पण सं. अथवा > प्रा. अहवा > अप. अहवनी आदिश्रुति अस्वरित थये लुप्त थतां ने सा. वि. ए. व.नो इ लागतां हवइ थई मळ्युं छे; व्यत्यये हिव.]

हशी अ. कृ. 'हसीने' ८-५ [सं. हसना *हस्य > प्रा. अप. हसिअ > मध्य गुज. हसी, अने ईने लई स नो श्.]

हाड नपुं. 'शरीर' ४-९ [प्रा. देश्य हड्डमांथी. 'हाडकुं' अर्थ एमांथी 'शरीर' अर्थ गुज. मां विकस्यो.]

हारि स्त्री. 'हार, पंक्ति' ११-५२ [सं. धारानुं धारिका थई प्रा. *हारिआ > अप. *हारिअ > मध्य. गुज. *हारी अने अंते स्वरभार न रहेतां हारि-हारय.

हारयु भू. कृ., पुं. 'हार्यो, पराज्य पाम्यो' ३-१८. [सं. हना प्रेरक हार् अंगनुं भू. कृ. हारितः > प्रा. हारिओ > अप. हारिउ > मध्य. गुज. पण हारिऊ, ने टूंकवातां. 'पराजय'ना अर्थनो हारव शब्द आमांथी छे.]

हालि वर्त., त्री. पु. ए. व. 'हाले, चाले; हले' ८-४ [प्रा. देश्य धातु हल्ल. एना हल्लइ रूप उपरथी मध्य. गुज. हालइ, ने टूंकवातां हालि. मूळमां बेवडा ल्लने लई अर्वा. गुज.मां पण 'ळ्'. सं. चल् साथे आ प्रा. देश्य धातु-मूळनो संबंध जणाय छे.

हाश नपुं. 'हास्य, मश्करी' ९-१८ [सं. हास्यना यनो सीधेसीधो इ थये हासि अने इना योगे श् थये, 'इ'ना लोपे.] हासूं नपुं. 'हास्य' २२-१२ [सं. हास्यकम् > प्रा. हस्सअं > अप. हस्सउं > मध्य. गुज. हासउं, ने टूंकवातां]

हि पुं. 'हय, घोडो' १२-८ [सं. हय- > प्रा. हय, ने य् नो इ थये हइ द्वारा मध्य. गुज. हि.]

हुइ, हुई वर्त. त्री. पु., ए. व. 'होय, थाय' ३-८, ४-१६ [सं. भवति > प्रा. अप. होइ > मध्य. गुज होइ, हुइ ने छेल्ली श्रुति लेखनमां दीर्घ थतां हुई.] हुयि ४-१३ [हुइमां य् प्रवेशतां] हुशि भविष्य. त्री. पु. ए. व. 'हशे, थशे' ४-१७ [सं. भविष्यति > प्रा. होस्सइ > मध्य. गुज. होसइ, हुसइ अने टूंकवातां होसि-हुसि; पछी इ ने लई श्. अर्वा. गुज.मां 'हशे' मात्र संशयार्थे रह्युं छे.]

हूं सर्व. 'हुं' ६-११ [सं. अहकम् > प्रा. अहकं > अप. हउं > मध्य. गुज. पण हउं, ने टूंकवातां.]

हदि नपुं. सा. वि., ए. व. 'हृदयमां' १२-५ [सं. हृदय- नुं अर्वा. रीते टूंकवातां हद + सा. वि., ए. व.नो इ.]

हेठलि क्रि वि. 'हेठळ, नीचे' २२-३ [सं. अधस्तात् > प्रा. *अहट्ठा > *हअट्ठा- > *हयट्ठा > *हइट्ठा > *हेट्ठा > हेट्ठ + स्वार्थे ल लागे. हेट्ठल- > मध्य. गुज. हेट्ठल + सा. वि., ए. व.नो इ = हेट्ठलइ, ने टूंकवातां. मूळमां एकवडा ल् ने कारणे अर्वा. गुज.मां ळ्. परंतु हेट्ठ + इल- थतां हेट्ठिल- द्वारा मळना विशे. हेटलुं- हेठलुंमां बेवडा ल ने लई 'ल्' ज मात्र.]

हित वि. 'मूकेलुं, राखेलुं, सारमात्र' १-९ [सं. धातुं भू. कृ. हित एनुं गुजरातीकरण. आने हेतु साथे सीधो संबंध नथी. अहीं ए नपुं.मां छे.]

हेतु (सं.) 'कारण' १०-९ [अहीं सा. वि., ए व.नो प्रत्यय लुप्त थयो छे]

हैं केवलप्रयोगी. 'हायनो उद्‌गार' १७-७ .

हो केवलप्रयोगी. 'अहो' २४-१ [सं. अहो]

होय वर्त. त्री. पु., ए. व. 'होय, रहे, थाय' ५-९ [जुओ आ पहेलां हुइ वगेरे. होइनो विकास होय.]

हौआ भू. कृ., पुं., ब. व. 'थया' ११-६८ [जुओ आ पहेलां हउआ. हउअ- नो आ विकास ब. व.मां.]

शुद्धिपत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
		प्रस्तावना	
१८	१५	(......५मं)	(...... ५मुं)
४९	२४	धोळी	भोळी
५६	३	ब्रह्मर्पिना	ब्रह्मर्पिना
५६	५	दूबडो...दूबडापणाना	कूबडो...कूबडापणाना
५६	१५	विरणनुं	विरहनुं
५७	२७	......घ्रतियता॰	......घ्रतिमता॰
		काव्य	
७७	१७ (पुष्पिका)	मोटर्झामसुद्भव.	मोटजातीमसुद्भवः

'प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाला'ना प्रथम प्रकाशन विषे केटलाक अभिप्रायो

Shri G. V. Mavlankar (Speaker, Indian Parliament; President, Gujarat Vidya Sabha, Ahmedabad)—" It was a new thing to me to know that our old literature has a number of works in prose. Then there are a couple of points which I appreciate very much. The first is that the book is printed in Devanagari script. The other point is the gradual compilation of a vocabulary consisting of words of special importance. It is essential to have such a vocabularly for the study of our old literature. "

Dr. Suniti Kumar Chatterji (Emeritus Professor of Comparative Philology, University of Calcutta; Chairman, West Bengal Legislative Council)—" I congratulate you on the very fine piece of work which you have brought under the auspices of the University of Baroda. This is a very auspicious start. The book, because of both its language and subject-matter has very great interest for all the students of Indian linguistics and philosophy as well as general culture, and the editing has been done in a very fine scholarly style, and on the top of that, the printing and the get-up are excellent. It was a very good idea to print the Introduction and everything in Gujarati in the Devanagari character. Your work is a valuable addition to the mass of texts in early Gujarati which has been made already available by other scholars. The University of Baroda can be most heartily felicitated for inaugurating this series of *Prācina Gurjara Granthamālā*, which I feel perfectly confident, will become a very honoured series among the various well-known series of texts published by different institutions of India. "

Dr. R. L. Turner (Director, School of Oriental and African Studies, London University)—" I have now been very carefully through your Shashtishataka Prakarana and I should like to take this further opportunity of saying how much I appreciate

the additions you have made and how useful this type of work will be for elucidating the history of the modern Indo-Aryan languages. I have found the vocabulary in particular of the greatest use for my work for the Comparative Dictionary of Indo-Aryan. I would like to congratulate you on so successfully initiating this series of old Gujarati texts."

Professor Alfred Master (Retired Professor of Indian Philology, School of Oriental and African Studies, London Univesity)—" The edition as the part of a planned series is very welcome, as the number of critical texts in old Gujarati published is still very small, considering the vast amount of manuscripts extant. As it is still necessary to emphasise the linguistic rather than the literary significance of old Gujarati texts, the publication of a manuscript of Somasundarasūri's commentary written only fourteen years after his death is of particular importance. The book is well-planned, clearly printed and well-bound, so that it is a pleasure to the student to handle and read."

Professor G. H. Bhatt (Director, Oriental Institute, Baroda; in the *Journal of the Oriental Institute*, Vol. II, p. 405)—" We congratulate Dr. Sandesara on his excellent edition, and we are sure, the new series under his able guidance will, in course of time, supply the necessary sources of a Gujarati Dictionary to be prepared on historical Principles—a long-felt desideratum."

Dr. A. N. Upadhye (Rajaram College, Kolhapur, President, Prakrit and Jainism Section, 11th All India Oriental Conference)—" The Introduction gives useful material, and the text of the Bālāvabodhas is very well presented.......I am sure, you will bring out many such books which would give us a connected account of the development of Apabhramśa prose."

Dr. J. Filliozat (Professor of Sanskrit, College de France; in *Journal Asiatique*, no. 2 of 1953)—

"Premier volume d'une Prācīna Gurjar Granthamālā" "Serie d'ouvrages anciens du Gujarāt," publiée á Baroda par L' Université Mahārāja Sayājī Rāo, avec une préface en gujarāti par

Mme, Hamsa Mheta, Vice Chancelier.... L' édition est trés soigneuse et très bien présentée....." (First volume of Prācina Gurjar Granthmālā 'series of ancient works of Gujarat' published at Baroda by the Maharaja Sayajirao University, with a preface in Gujarati by Mrs. Hansa Mehta, Vice-Chancellor...The edition is very careful and very well presented..).

श्री. कनैयालाल माणेकलाल मुनशी (गवर्नर, उत्तर प्रदेश; प्रमुख, भारतीय विद्याभवन, मुंबई)—"तमे तो खूब काम करी रह्या छो; अने प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाला घणी ज उपयोगी थशे. तमारा प्रयत्नोने सफळता इच्छुं छुं."

श्री. हरसिद्धभाई दिवेटिया (वाइस-चान्सेलर, गुजरात युनिवर्सिटी—'भाषा तेम ज विवेचन बन्नेनी दृष्टिए पुस्तक मूल्यवान छे अने तमारा विवेचन अने विद्वत्तापूर्ण शब्दकोशथी ते वधारे मूल्यवान बन्युं छे."

श्री. कृष्णलाल मोहनलाल झवेरी (वाइस-चान्सेलर, शेठ ना. दा. ठा. महिला विद्यापीठ)-"साधारण रीते एवी मान्यता प्रसरी गयेली के जूना गुजरातीमां गद्य हतुं ज नहि.......आ संशोधन, ने ते पण शास्त्रीय रीते करीने तमे आपणा साहित्यनी परंपरा पर नवो ज प्रकाश पाड्यो छे."

विख्यात विवेचक **प्रो. रामनारायण विश्वनाथ पाठक**—"वांचतां संपूर्ण संतोष थयो. तमे जे उद्देशथी ग्रन्थमाला शरू करी छे तेने सिद्ध करवा बधी रीते उपयोगी नीवडे तेवी संपादनपद्धति योजी छे. आ पुस्तक हवे पछी प्राचीन गुजराती भाषाना पुस्तकसंपादननो एक सारो नमूनो थई पडशे. मुद्रण चोख्खुं अने मूळ पाठ अने बालावबोध स्पष्ट जुदा तरी आवे एवी रीते करेलुं छे ते योग्य ज कर्युं छे. अने आपेलो शब्द-कोश भविष्यमां गुजराती भाषानो पूर्ण कोश करवो हशे त्यारे पूरो उपयोगी थशे."

प्रो. रसिकलाल छोटालाल परीख (अध्यक्ष, भो. जे. अध्ययन-संशोधन विद्याभवन गुजरात विद्यासभा, अमदावाद)—"महाराजा

सयाजीराव विश्वविद्यालय स्थापी मुंबई राज्ये युनिवर्सिटीना साचा अर्थमां —'गुरुशिष्यमंडल'ना अर्थमां—विद्याकीय संस्थानो अखतरो आदर्यो छे. आ युनिवर्सिटी अनेक विद्याशाखाओ विकसाववा प्रयत्न करे छे, तेमां तेनो प्रशंसनीय अने सौथी वधारे आवश्यक प्रयत्न गुजराती विद्याविभाग खोलवानो छे. सद्भाग्ये आ विभागना अध्यक्ष तरीके डॉ. सांडेसरा जेवा कृतपरिश्रम संशोधनकुशळ विद्वाननी निमणूक थई छे. डॉ. सांडेसराए प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाळानी योजना करी तेना पहेला ग्रन्थ तरीके नेमिचन्द्र भंडारी-विरचित 'षष्टिशतक प्रकरण' अने तेना त्रण बालावबोधोनुं संपादन करी प्रकाशन कर्युं छे ते तेमनी कार्यपरायणता अने संशोधनदक्षता व्यक्त करे छे.

गुजराती भाषानुं वास्तविक स्वरूप जाणवा माटे तेनां विकास अने घडतरने जाणवां जरूरी छे. सुनीतिकुमार चातुर्ज्याए बंगाळी भाषानुं अने फ्रेन्च भाषाशास्त्री सद्गत ब्लोके मराठी भाषानुं जे शास्त्रीय पद्धतिए निरूपण कर्युं छे तेवुं गुजरातीनुं थवुं हजी बाकी छे. अंग्रेजी भाषानो जेवो शब्दकोश ऑक्सफर्ड युनिवर्सिटी तरफथी बहार पड्यो छे तेवो गुजराती भाषानो शब्दकोश संशोधकोनी प्रतीक्षा करे छे. पण आ प्रवृत्तिओ हाथ धराय ते पहेला कालक्रममां प्राचीन गुजराती साहित्यनी कृतिओनुं शास्त्रीय पद्धतिए संशोधन अने प्रकाशन वहोळा प्रमाणमां थवुं जरूरी छे. आ जरूरियातने लक्ष्य करी डॉ. सांडेसराए आ ग्रन्थमाळानी योजना अने आ ग्रन्थनुं संपादन कर्यां छे ते शास्त्रीयताना साचा मार्गे जाय छे एवो मारो अभिप्राय छे.......

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालयना, प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाळाना आ पहेला प्रकाशनने आवकार आपतां अने तेना संपादकने धन्यवाद आपतां मने आनंद थाय छे. आवी ग्रन्थमाळाने अवकाश आपवा माटे गुजराती भाषाना अभ्यासीओ वाइस-चान्सेलर श्रीमती हंसाबहेनने अभिनंदन आपशे."

विख्यात साहित्यकार **श्री० रमणलाल वसंतलाल देसाई** ('सयाजी-विजय', (ता. २९मी मार्च १९५३ना अंकमां) "वडोदरा राज्यनी

'प्राचीन काव्यमाला'नी श्रेणीनी याद आपती अने ए श्रेणीना कार्य उद्देशने विस्तार आपती 'प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाला'ना पहेला ग्रन्थ तरीके प्रसिद्ध थयेलुं 'षष्टिशतक प्रकरण' संपादनकार्यनो एक यशस्वी नमूनो बनी रहयुं छे."

प्रो. विष्णुप्रसाद र. त्रिवेदी (अध्यक्ष, श्री. चुनीलाल गांधी विद्याभवन, एम. टी. बी. कॉलेज, सूरत) "संपादननी समग्र पद्धति नमूनेदार छे........ग्रन्थनो देखाव आकर्षक छे, तेनुं संपादन प्रशंसापात्र छे; अने तेनुं तात्पर्य सद्वृत्ति अने सद्धर्मना शोधकने उपयोगी नीवडे तेम छे."

प्रो. अनंतराय म. रावळ (गुजरात कॉलेज, अमदावाद)—"आपणी भाषाना अभ्यासीओने भाषाविकासना इतिहासमां खूटता अंकोडा पूरा पाडनी तेम ज साहित्यना अभ्यासीओने अभ्यास अने विवेचन माटे नवो भंडार संपडावती प्राचीन गुजराती कृतिओनुं प्रकाशन आ पुस्तकथी प्रारंभती, तमारा विश्वविद्यालयनी 'प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाला' गुजराती साहित्यनी मोटी सेवा करशे."

प्रो. डोलरराय मांकड (आचार्य, दरबार गोपाळदास महाविद्यालय, अलियाबाडा)—"युनिवर्सिटीने योग्य ए प्रकाशन छे. आपणा प्राचीन गद्यना अभ्यासमां ए बधुं उपयोगी नीवडशे, एमां शंका नथी. संस्कृतनी पेठे जूनी गुजरातीमां पण आवी विवरणशैली हती ते पण आ प्रकाशनथी स्पष्ट थाय छे."

प्रो. गौरीप्रसाद चु. झाला (सेन्ट झेवियर्स कॉलेज, मुंबई)—"प्रस्तावना अने शब्दकोश बन्नेमां तमारी लाक्षणिकता—विद्वत्तानी, विचारनी अने शैलीनी—अंकाई छे. अभिनन्दन अने 'ग्रन्थमाला'ने शुभेच्छा!"

डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल (कॉलेज ऑफ इन्डोलोजी, बनारस हिन्दु युनिवर्सिटी)—"नेमिचन्द्र भंडारी-विरचित 'षष्टिशतक' ग्रन्थ

को तीन बालावबोध टीकाओं के साथ प्रकाशित देख कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई. आपने बडोदा विश्वविद्यालय से प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाला का संपादन आरम्भ कर के अपने लिये उत्तम कार्य का सूत्रपात किया है। **गुजराती भाषा में जैसा आपने भूमिका में लिखा है इतना अधिक प्राचीन साहित्य बच गया है जितना अन्य किसी प्रादेशिक भाषा में नहीं।** गुजराती का यह साहित्य गुजराती के लिये ही नहीं, *हिन्दी की प्राचीन व्युत्पत्तियों के लिये भी अनमोल है।* शब्दनिरुक्ति की जो समस्या गुजराती के लिये है, वही हिन्दी के लिये है, वही बंगला और मराठी, पंजाबी के लिये भी है। असम और उड़िया भाषा के लिये भी अपभ्रंशजन्य शब्दों की व्युत्पत्ति की सामग्री प्राचीन भाषा-साहित्य में से उपलब्ध हो सकेगी। मेरी दृष्टि से ११वीं शती से १५-१६वीं शती तक का साहित्य संस्कृत परिवार की भाषाओं के लिये एक जैसा उपयोगी है। इस गुजराती 'षष्टिशतक' में कितने ही हिन्दी *शब्दों की व्युत्पत्ति मुझे मिल रही है। इस ग्रन्थ से मेरा परिचय कराने* के लिये आप का कृतज्ञ हूं।"

प्राचीन गुर्जर ग्रंथमालानां प्रकाशनो

१. नेमिचन्द्र भंडारी-विरचित **षष्टिशतक प्रकरण**—त्रण बालावबोध सहित. एक ज प्राकृत प्रकरणग्रन्थना पंदरमा-सोळमा शतक आसपास थयेला त्रण जूना गुजराती गद्यानुवादो; प्रस्तावना, परिशिष्टो अने शब्दकोश सहित. संपादक: डॉ. भोगीलाल सांडेसरा. पृ. ३०+१९२. मूल्य पांच रूपिया.

२. महीराजकृत **नल-दवदंती रास**—सं. १६४१मां कर्ताना हस्ताक्षरोमां लखायेली प्रति अनुसार. संपादक: डॉ. भोगीलाल सांडेसरा. पृ. २४+१७४. मूल्य सवाचार रूपिया.

३. **प्राचीन फागु-संग्रह**—विक्रमना चौदमाथी अढारमा शतक सुधी रचायेलां आडत्रीस फागु-काव्योनो समुच्चय; प्रतिपरिचय अने कृति-

परिचय, फागुविषयक अभ्यासलेख अने शब्दकोश सहित. संपादकः डॉ. भोगीलाल सांडेसरा अने श्री. सोमाभाई पारेख. पृ. ७२+२९०. मूल्य आठ रूपिया.

४. **वर्णक-समुच्चय**—सांस्कृतिक अने साहित्यिक इतिहास माटे महत्त्वना पद्यानुकारी गद्य-वर्णकोनो समुच्चय. भाग १—मूळ पाठ. संपादकः डॉ. भोगीलाल सांडेसरा. पृ. १२+२२०. मूल्य साडासात रूपिया.

५. भालणकृत **नलाख्यान**— मध्यकालीन गुजरातीनां लक्षणो जाळवती श्रद्धेय प्रति अनुसार पुनःसंपादन; प्रस्तावना अने शब्दकोश सहित. संपादकः प्रो. केशवराम का. शास्त्री. पृ. ७६ + १७६ = २५२. मूल्य आठ रूपिया.

प्राप्तिस्थान—**प्राच्य विद्यामन्दिर, वडोदरा**

*

हवे पछीनां प्रकाशनो

६. **वर्णक-समुच्चय-भाग २**—सांस्कृतिक अने साहित्यिक अध्ययन तथा शब्दसूचिओ.

७. उदयभानुकृत **विक्रमचरित्र रास**—शामळना एक पुरोगामी कवि-रचित पद्यवारता. संपादकः स्व. प्रो. बलवंतराय क. ठाकोर.

८. नरहरिकृत **ज्ञानगीता**—अखाना वृद्ध समकालीननुं वेदान्त-विषयक काव्य; संतकविओनी परंपराना अभ्यास सहित.

९. वस्ताकृत **वस्तुगीता**—वेदान्ती कविनी सुंदर काव्यरचना.

१०. **प्राचीन पद-संग्रह**—संत कविओनां काव्यगुणयुक्त पदोनो संग्रह.

११. यशोधरकृत **पंचाख्यान**—एक ब्राह्मण विद्वाने १६मा सैकामां करेलो 'पंचतंत्र'नो गद्यानुवाद.

१२. **विल्हणपंचाशिका**—सुप्रसिद्ध संस्कृत शृंगारकाव्यना जूना गुजराती गद्य अने पद्य-अनुवादो.

१३. **चाणक्य नीतिशास्त्र**—संस्कृत नीतिग्रन्थना जूना गुजराती गद्यानुवादो.

१४. **रत्नचूड रास**— सं. १५१०मां रचायेल एक विशिष्ट कथाकाव्य.

१५. मलयचन्द्रकृत **सिंहासनबत्रीसी**—सं. १५१९मां रचायेली, सिं० ब० विषेनी सौथी जूनी उपलब्ध गुजराती कृति, सिं० ब० विषयक वार्ताचक्रना तुलनात्मक अभ्यास सहित.

१६. **भालण: एक अध्ययन**—भालणना जीवन अने कवननुं अद्यतन ऐतिहासिक अने विवेचनात्मक अध्ययन.

आ उपरांत प्राचीन गुजराती साहित्यनी बीजी केटलीक विशिष्ट कृतिओना संपादननी आयोजना थई रही छे.
